पालि महाव्याकरण

Mr. & Mrs. Wijayakoon, Colombo	30/-
Small amounts	42/12/-

निवेदक
ब्रह्मचारी देवप्रिय वलिसिंह, बी० ए०
मन्त्री
महाबोधि सभा, सारनाथ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पालि-महाव्याकरण

लेखक

भिक्षु जगदीश काश्यप

महाबोधि सभा, सारनाथ

बनारस

मुद्रक
जे० के० शर्म्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
१९४० ई०

प्रकाशक
महाबोधि सभा, सारनाथ
बनारस

समर्पण

जिन्होंने बड़े स्नेह से मा के समान मेरा लालन-पालन
किया, जिनकी प्रेरणा से 'तारा' को पढ़ाने के
लिए हिन्दी में पालि-व्याकरण लिखने
का संकल्प हुआ, उन्हीं दिवं-
गत 'उपासिका' की
स्मृति में।

भूमिका

पालि-व्याकरणो मे 'मोग्गल्लान' अत्यन्त पूर्ण और प्रौढ है। इसी के सारे सूत्रो को मै ने इस तरह सजा कर सरल भाषा मे समझाने का प्रयत्न किया है, कि **क्रमश प्रवेश कर व्याकरण पर पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया जा सके।**

पुस्तक के वृहत आकार को देख कर ऐसा न समझ ले, कि इसका स्टैण्डर्ड बहुत ऊँचा है, और यह स्कूल-कालेज के विद्यार्थियो के काम की चीज नही है। मूल-पुस्तक केवल २८६ पृष्ठो मे समाप्त हो जाती है, और, उस मे भी आधी से अधिक पाद-टिप्पणिया है। स्कूल-कालेज के विद्यार्थी इन पाद-टिप्पणियो को छोड कर ऊपर ही ऊपर मजे मे पढ सकते है, जो उनके स्टैण्डर्ड के बिलकुल अनुकूल है। साथ ही साथ, जो कुछ गहराई से अध्ययन करना चाहते है, वे पाद-टिप्पणियो को भी देख सकते है।

प्रत्येक 'पाठ' के अन्त मे एक अभ्यास दे दिया गया है, जो विद्यार्थियो के लिए बडा उपयोगी होगा। अभ्यास की भाषा तथा शैली को त्रिपिटक से अधिक से अधिक निकट रखने का प्रयत्न किया है। पुस्तक के अन्त मे, विद्यार्थियो की सहायता के लिए, **अभ्यासो के लिए संकेत** भी दे दिए है।

  

श्री ब्रह्मचारी देवप्रिय वलिसिह, मत्री, महाबोधि सभा, ने पुस्तक के प्रकाशन का भार ग्रहण कर बडा उत्साहित किया है।

मित्रवर श्री तपस्वी जी ने आदि से अन्त तक पुस्तक लिखने, अभ्यास बनाने, तथा 'वस्तु-कथा' लिखने मे बडी ही सहायता की।

हमारे श्रद्धेय नाना, पण्डित अयोध्या प्रसाद, वैदिक रिसर्च स्कालर, तथा राहुल जी ने अनेक सलाहे दी है।

परम पूज्य भाई आनन्द कौशल्यायन जी ने प्रूफ देख कर तथा भाषा मे जहाँ तहाँ संशोधन कर बडी सहायता की है।

श्री भवानी शरण, साहित्यरत्न, मारकण्डेय शुक्ल, और जगन्नाथ प्रसाद जायसवाल प्रभृति हमारी शिष्य-मण्डली ने सूची तथा अनुक्रमणिका तैयार करने में काफी परिश्रम किया है ।

सभी को इस उपकार के लिए मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ ।

भिक्षु जगदीश काश्यप

सारनाथ

२९–४–४०

वस्तु-कथा

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पालि-व्याकरण की वस्तु-कथा

पहला खण्ड

बुद्धत्व लाभ करने के बाद से भगवान् ४५ साल तक कोसी-कुरुक्षेत्र तथा हिमाचल-विध्य के भीतर घूम-घूम कर अपने धर्म का प्रचार करते रहे। साधारण से साधारण मनुष्य से लेकर उस समय के बडे से बडे राजकुमार तक अपना सर्वस्व त्याग भगवान् के सघ मे सम्मिलित हुए। जिस प्रकार सभी दिशाओ से नाना नदियाँ बह कर आती है, और समुद्र मे एक हो जाती है, उसी तरह नाना प्रान्त के, नाना जाति के, नाना मत के, तथा नाना गोत्र के कुलपुत्र, परम शान्त निर्वाण के उद्देश्य से भगवान् के सघ मे आ, एक हो कर विहार करते थे।

भगवान् जहाँ कही भी चारिका करते थे, बडी-बडी सख्या मे उनकी शिष्य-मण्डली साथ रहती थी। तत्कालीन मगधराज विम्बिसार ने भी भगवान् के धर्म को स्वीकार कर लिया था, और बडी श्रद्धा से बुद्ध तथा सघ के निमित्त एक सुरम्य विहार बनवा दिया था, जो 'वेळुवनाराम' नाम से प्रसिद्ध हुआ। श्रावस्ती के विख्यात श्रेष्ठी अनाथपिण्डिक ने भी उसी तरह, बुद्ध तथा सघ के लिए श्रावस्ती से कुछ हट कर एक रम्य स्थान मे जेतवनाराम बनवाया था। इस तरह, बुद्ध तथा सघ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूमने से सारा उत्तर भारत एक हो रहा था।

बुद्ध का धर्मोपदेश करने का तरीका अत्यन्त सरल था। तैयारी और आडम्बर के बिना ही, जहाँ कही जब कभी उचित अवसर आता था, बुद्ध अत्यन्त सरल भाषा मे, अत्यन्त सरल ढग से गम्भीर तथा लोकोत्तर धर्मोपदेश करते थे। उनके शिष्य उन उपदेशो को कण्ठ कर लिया करते थे। जब किसी भिक्षु को कुछ शका होती थी तो वह बुद्ध के पास जाता था और अपनी शका निवारण कर लेता था।

बुद्ध के सारे उपदेश मौखिक ही हुए थे। उन्होने अपने उपदेशो को लिख रखने की कभी कोई बात कही हो इसका उल्लेख नही आता है । बुद्ध का अभिप्राय था कि उनका धर्म केवल कुछ पण्डित लोगो या भिक्षुओ की ही चीज हो कर न रहे । वे चाहते थे कि उनके धर्म का सदेश सूरज की किरण की तरह, झोपडी से लेकर प्रासाद तक समान रूप से व्याप्त हो ।

मागधी

इस अभिप्राय से, सारे मध्य मण्डल मे उस समय जो भाषा सामान्य रूप से बोली जाती थी, उसी मे बुद्ध ने समस्त उपदेश दिए। ऊपर कहा जा चुका है कि, बुद्ध के सघ मे उत्तर भारत के सभी प्रदेशो के, सभी वर्गो के कुलपुत्र प्रव्रजित हो सम्मिलित हुए थे । मगध के भी, वैशाली के भी, मिथिला के भी, काशी के भी, कोशल के भी, राजकुल के भी, श्रेष्ठी कुल के भी, शूद्र कुल के भी, सब भिक्षु समान रूप से एक साथ रहते थे । यह निश्चय है कि भिन्न-भिन्न प्रान्त और समाज के अनुसार उनकी अपनी-अपनी बोली भी भिन्न-भिन्न रही होगी, किंतु, सभी साथ रहने पर साधारण भाषा मागधी का ही प्रयोग करते थे । आज-कल भी, यदि एक मगही, एक भोजपुरी, एक अवधी, तथा एक मैथिल एक जगह मिले तो आपस मे हिन्दी का ही प्रयोग करेगे—मगही, या भोजपुरी का नही । हाँ, इतना अवश्य होगा कि, मगही की हिन्दी मे कुछ न कुछ मगहिपन, और भोजपुरी की हिन्दी मे कुछ न कुछ भोजपुरीपन रहेगा ही। ठीक उसी तरह, भिक्षुसघ मे सामान्य रूप से एक भाषा मागधी का व्यवहार होने पर भी, भिन्न-भिन्न प्रान्त के भिक्षु उसमे अपनी अपनी पुट लगा ही देते थे । यही कारण है कि पालि के 'नाम' तथा 'धातु' के रूपो मे हम इतनी भिन्नता पाते है ।

'कार्य' शब्द के लिए 'कय्य' तथा 'करिय' भी, 'आर्य' शब्द के लिए 'अय्य' तथा 'अरिय' भी रूप मिलते है । 'ह्रस्व' शब्द के लिए 'रस्स'; किंतु 'ह्रद' शब्द के लिए 'रहदो' रूप मिलता है । 'रश्मि' शब्द के लिए 'रस्मि'; किंतु, 'अस्मि' के लिए 'अम्हि' हो जाता है ।

इन विभिन्नताओ को देखने से, यह बात दृढ होती है कि इसका कारण भिक्षुओ का **भिन्न भिन्न प्रान्तो से** आकर एक साथ रहना ही था। मागधी भाषा का पूरा

विकास भिक्षु-सघ मे ही हुआ। यह भाषा सारे मध्य-मण्डल की एक जीवित अन्तर्प्रान्तीय भाषा थी, जिसे सभ्य समुदाय बडे गौरव से बोलता था।

यही भाषा मगध सम्राटो की राज्य-भाषा बनी, क्योकि मगध राज्य के विस्तार के बाद ऐसी ही व्यापक भाषा की आवश्यकता थी। राज-भाषा होने से इस भाषा का सम्मान और भी बढ गया, तथा मगध-राज्य की भाषा होने के कारण इसका नाम भी 'मागधी' पडा।

यह 'मागधी भाषा' मगध की खास अपनी भाषा न थी, किंतु सारे मध्य-मण्डल मे बोली जाने वाली वह भाषा थी जिसे मगध-सम्राटो ने अधिक उपयोगी देख कर अपनी राज-भाषा बनाया था। हाँ, इतना तो जरूर हुआ कि मगध की राज-भाषा बनने के बाद इस पर 'मगध' की अपनी बोली की काफी छाप पड गई।

इसी मागधी भाषा को बुद्ध ने धर्म-प्रचार का सर्वोत्तम माध्यम समझ, इसी मे अपने सारे उपदेश दिए।

चुल्लवग्ग ५ § ६।१ मे एक कथा आती है, जिससे साफ प्रकट होता है कि 'मागधी-भाषा' अपनाने मे बुद्ध का क्या प्रयोजन था —

अपनी अपनी भाषा में धर्म सीखने की आज्ञा

"उस समय यमेळ यमेळते-कुल नामक ब्राह्मण जाति के सुन्दर (=कल्याण) वचन वाले, सुन्दर वचन बोलने वाले दो भाई भिक्षु थे। वे जहाँ भगवान् थे वहाँ गए, जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे उन भिक्षुओ ने भगवान् से कहा—

"भन्ते! इस समय नाना नाम, गोत्र, जाति, कुल के (पुरुष) प्रव्रजित होते है। वह अपनी भाषा मे बुद्ध वचन को (कह कर उसे) दूषित करते है। अच्छा हो भन्ते! हम बुद्ध-वचन को छन्द[1] मे बना दे।

"भगवान् ने फटकारा—भिक्षुओ! यह अयुक्त है, अनुचित है.. । भिक्षुओ! न यह अप्रसन्नो (=श्रद्धा रहितो) को प्रसन्न करने के लिए है, न प्रसन्नो की (श्रद्धा को) और बढाने के लिए है, बल्कि भिक्षुओ! यह अप्रसन्नो

---

[1] वैदिक छन्द में—अट्ठकथा।

को और भी अप्रसन्न करने के लिए है, और प्रसन्नो (=श्रद्धालुओ) मे से भी किसी-किसी की श्रद्धा को उल्टा करने वाला है।

"फटकार कर धार्मिक कथा कह भगवान् ने भिक्षुओ को सबोधित किया—

"भिक्षुओ! बुद्ध-वचन को छन्द[1] मे न करना चाहिए। जो करेगा उसे 'दुष्कृत' अपराध लगेगा।

"भिक्षुओ! **अनुमति देता हूँ अपनी भाषा में बुद्ध-वचन सीखने की।**[2]"

बुद्धघोषाचार्य ने अपनी अट्ठकथा मे 'सकाय निरुत्तिया' का अर्थ 'मागधी भाषा में' किया है। किंतु, स्थल को देख कर साफ प्रकट होता है कि यहा बुद्ध की इच्छा 'अपनी-अपनी भाषा मे धर्म सीखने की अनुमति' देने की ही है। बुद्ध-सघ मे बडे-बडे पण्डित से ले कर निरक्षर लोग तक—जिन किन्ही को निर्वाण की उच्च प्रेरणा मिली—सम्मिलित थे। हो सकता है कि उनमे कुछ अपढ लोग शुद्ध 'मागधी' न बोल कर अपनी-अपनी प्रान्तीय बोली बोलते रहे हो। आज कल भी कितने ठेठ मगही या भोजपुरी दूसरे प्रान्त मे जाने पर, या पढ़े लिखे लोगो के समाज मे भी अपनी ही बोली बोलते है। उन दो शिक्षित ब्राह्मण भिक्षुओ को अपनी अपनी भाषा मे बुद्ध-वचन कहना स्वाभाविक तौर पर बुरा जान पडा, इसी लिए उनने बुद्ध-वचनको वैदिक-छन्दो मे करने का प्रस्ताव रखा। किंतु, बुद्ध तो अपनी शिक्षा को सरल से सरल और सुबोध से सुबोध बना कर जनता को देना चाहते थे। उनने उस प्रस्ताव को अस्वीकार किया, और अपनी-अपनी भाषा मे धर्म सीखने की अनुमति दी।

पालि

अब प्रश्न होता है कि, इस भाषा का नाम पालि कैसे पडा? किसी भी ग्रन्थ मे 'मागधी भाषा' के लिए 'पालि' नाम का व्यवहार नही हुआ है। मोग्गल्लान व्याकरण का आदि श्लोक है—

सिद्धमिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागत
सधम्मसङ्घं भासिस्सं मा ग ध स द्द ल क्ख ण।

---

[1] **वैदिक छन्द में—अट्ठकथा।**

[2] **"अनुजानामि भिक्खवे, सकाय निरुत्तिया बुद्धवचन परियापुणितु।"**

यहाँ भी ग्रन्थ का नाम **'मागध** शब्द लक्षण' बताया है—'पालि-शब्द लक्षण' नही।

'पालि' शब्द का प्रयोग केवल मूल त्रिपिटक के लिए आता है; जैसे—**दीघ निकाय पालि, उदान पालि,** इत्यादि। "पालिमत्त इध आनीत, नत्थि अट्ठकथा इध"=यहाँ केवल पालि लाई गई है, यहाँ अर्थकथा नही है, "नेव पालिय न अट्ठकथाय दिस्सति"=न तो पालि मे और न अर्थकथा ही मे यह देखा जाता है, "इमिस्सा पन पालिया एवमत्थो वेदितब्बो"=इस पालि का यह अर्थ समझना चाहिए—इत्यादि वाक्यो के देखने से साफ मालूम होता है कि 'पालि' शब्द का प्रयोग **मूल त्रिपिटक** के लिए होता था।

धीरे धीरे उस भाषा का ही नाम—जिस में बुद्ध-वचन सुरक्षित था—'पालि' हो गया जान पडता है।

जब 'मागधी भाषा' का नाम 'पालि भाषा' हो गया, तब लोगो ने इसके विषय मे तरह-तरह की हास्यास्पद कल्पनाएँ करनी आरम्भ कर दी जैसे—पालि भाषा पाटलिपुत्र की भाषा थी, इसलिए इसका नाम 'पाटलि भाषा' पडा, 'पाटलि भाषा' ही धीरे-धीरे बिगड कर 'पालि भाषा' कही जाने लगी। कुछ लोगो ने 'पालि भाषा' की व्युत्पत्ति 'पल्लि भाषा' से करने की कोशिश की, पल्लि भाषा, अर्थात् गाँव की भाषा   इत्यादि

यह स्मरण रखना चाहिए कि 'पालि' शब्द कभी भी भाषा के लिए नही आया है। भाषा के लिए सदैव 'मागधी' नाम ही आता है।

पालि=पंक्ति

आचार्य मोग्गल्लान तथा दूसरे वैयाकरण भी 'पालि' शब्द को 'पा' धातु से परे ण्वादि का 'लि' प्रत्यय लगा कर सिद्ध करते है, और उसका अर्थ पक्ति तथा श्रेणी बताते है।

इसी अर्थ को ले कर, मान्य श्री विधुशेखर शास्त्री प्रभृति कुछ विद्वानो का मत है कि 'पालि' का अर्थ 'मूल ग्रन्थ की पक्ति' है। आज कल भी, पण्डितो को जब किसी मूल ग्रन्थ का हवाला देना होता है तो झट कह देते है—पक्ति मे भी यह बात इस तरह है। ऐसा लोग अक्सर कहते देखे जाते हैं—गोसाई जी की पाँत मे ऐसा है।

किंतु, यह सिद्धान्त युक्ति-युक्त प्रतीत नही होता।

२

(१) इसका कोई प्रमाण नही मिलता कि राजगृह मे सगीति हो जाने के बाद 'दीघनिकाय', 'मज्झिम निकाय' आदि मूल ग्रन्थ लिखे गए हो। बल्कि, भिक्षुओ मे ऐसी परिपाटी थी कि वे सारे निकाय के निकाय को कण्ठ कर लेते थे। जो भिक्षु दीघनिकाय को याद कर लेता था उसे **दीघ भाणक** अर्थात् 'दीघ-निकाय सुनाने वाला' कहते थे। इसी तरह, **मज्झिम-भाणक, अगुत्तर-भाणक** आदि हुआ करते थे। त्रिपिटक के सभी ग्रन्थ जो '**भाणवारो** मे विभक्त किए गए है, उनका उद्देश्य यही था कि उतना हिस्सा एक बार याद कर सुनाना चाहिए।

ऐसी हालत मे, सम्भव नही है कि इन ग्रन्थो के साथ लगने वाला शब्द 'पालि' पक्ति के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ हो। 'पक्ति' का प्रयोग केवल उसी ग्रन्थ के साथ होना समझ मे आता है जो लिखित हो। जो ग्रन्थ केवल सुना सुनाया जाता है उसके विषय मे 'पक्ति' शब्द का व्यवहार करना जँचता नही है।

(२) 'पालि' साहित्य मे, कही भी 'पालि' शब्द 'ग्रन्थ की पक्ति' के अर्थ मे प्रयुक्त नही हुआ है। यह ध्यान देने लायक बात है कि मूल त्रिपिटक के ग्रन्थो के अन्दर कही 'पालि' शब्द का प्रयोग नही देखा जाता है। हाँ, ग्रन्थ के नाम के साथ 'पालि' शब्द लगा दिया जाता है—जैसे, **उदान पालि, पाचित्तिय पालि** आदि। अब, यदि 'पालि' का अर्थ 'पक्ति' ले तो 'उदान-**पक्ति**', पाराजिक-**पक्ति** आदि शब्दो का कोई अर्थ ही नही निकलता है।

(३) यदि 'पालि' शब्द का अर्थ 'पक्ति' होता तो उसे बहुवचन मे भी प्रयुक्त होना चाहिए था; जैसे—'उदानस्स पालीसु'=उदान ग्रन्थ की पक्तियो मे, इत्यादि। किंतु, सभी जगह, 'उदान पालिय' ऐसा एक वचनान्त ही पाठ आता है।

तब, 'पालि' का क्या अर्थ है

त्रिपिटक के मूल ग्रन्थो मे जगह-जगह पर बुद्ध-देशना=बुद्ध-उपदेश=बुद्ध-वचन के अर्थ मे '**धम्म-परियाय**' शब्द का पाठ मिलता है। जैसे.—

"परियाय"

(क) "**तस्मातिह त्व आनन्द ! इम धम्म-परियायं अत्थ जालन्ति पि न धारेहि अनुत्तरो सगामविजयो ति पि न धारेहि।**

दीघनिकाय, ब्रह्मजाल सूत्र

अर्थात्—आनन्द ! इस 'धम्म-परियाय' (=मेरे उपदेश) को अर्थजाल भी समझो अलौकिक सग्रामविजय भी समझो।"

(ख) "**एव वुत्ते मुण्डो राजा आयस्मन्त नारदं एतदवोच—को नु खो अय भन्ते ! धम्मपरियायो ति ?**

"**सोकसल्लहरणो नाम अय महाराज धम्मपरियायो ति।**

"**तग्घ भन्ते ! सोकसल्लहरणो, तग्घ भन्ते ! सोकसल्लहरणो—इम हि मे भन्ते धम्मपरियाय सुत्वा सोकसल्लं पहीनन्ति।**

अगुत्तर निकाय

(P T S III 62)

अर्थात्—ऐसा कहने पर मुण्ड राजा ने आयुष्मान् नारद को कहा, "भन्ते ! इस 'धम्मपरियाय' (=धर्म देशना=सूत्र) का क्या नाम है ?

महाराज ! इस 'धम्मपरियाय' का नाम 'शोकशल्यहरण' है।

भन्ते ! ठीक है, ठीक है, यह 'शोकशल्य' हरण ही है। भन्ते ! इस 'धम्म-परियाय' को सुन कर 'शोकशल्य' प्रहीण हो गया।"

ऊपर के उद्धरणो से यह साफ मालूम होता है कि **'परियाय' का अर्थ बुद्धोप-देश=सूत्र है।**

पलियाय

अशोक ने भी, इसी अर्थ मे अपने धर्म-लेख मे इस शब्द का प्रयोग किया है। जैसे —

भब्रू शिला लेख

पियदसि लाजा मागधं संघं अभिवादनं आहा, अपावाधतं च फासु-विहालतं चा। विदितं वे भंते आवतके हमा बुधसि धंमसि संघसीति

गलवे च पसादे च ए केचि भंते भगवता बुधेन भासिते सवे से सुभासिते वा ए चु खो भंते हमियाये दिसेया देवं सधंमे चिलठिनीके होसतीति अलहामि हकं तं वतवे। इमानि भंते धं म-प लि या या नि विनयसमुकसे, अलियवसानि, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेयसूते, उपतिसपसिने ए चा लाहुलोवादे मुसावादं अधिगिच्य भगवता बुधेन भासिते। एतान भंते धं म-प लि या या नि इछामि। किं ति बहुके भिखुपाये च भिखुनिये चा अभिखिन सुनयु चा उपधालेयेयु चा। हेवं हेवा उपासका चा उपासिका चा एतेनि भंते इमं लिखापयामि अभिहेतं म जानंताति।

ऊपर के मूल शिला-लेख का पालि-रूपान्तर इस प्रकार होगा —

पियदसी राजा मागधं संघं अभिवादेनं आह, अप्पाबाधतं च फासुविहारत च। विदितं वो भन्ते! यावतको अम्हाक बुद्धस्मि, धम्मस्मि सघस्मि गारवो च पसादो च। यो कोचि भन्ते! भगवता बुद्धेन भासितो (धम्पपलियायो), सब्बो सो सुभासितो एव। यो तु खो भन्ते अम्हेहि देसेय्यो, हेवं सद्धम्मो चिरट्ठितिको हेस्सतीति, अरहामि अहं तं वत्तवे।

इमानि भन्ते! धम्म-पलियायानि :—विनय-समुकसो, अरियवंसा, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेय्यसुत्तं, उपतिस्स-पसिनो (पञ्हो), ये च राहुलोवादे मुसावादं अधिकिच्च।

भगवता बुद्धेन भासितो (धम्मपलियायो)।

एतानि भन्ते! धम्म-पलियायानि इच्छामि कि ति बहुका भिक्खवो भिक्खुनियो च अभिक्खणं सुनेय्युं च उपधारेय्युं च; हेवं हेव उपासका च उपासिका च। एतेन भन्ते! इमं लेखापयामि अभिहेतं मे जानन्तू ति।

अर्थात्—प्रियदर्शी (=हितकामी) राजा मगध के सघ को अभिवादन करता है, तथा उनका कुशल-मगल चाहता है। भन्ते! आप को मालूम ही है कि बुद्ध, धर्म, तथा सघ के प्रति मेरे हृदय मे कितना आदर और श्रद्धा है। भन्ते! भगवान् ने जो कुछ कहा है सभी सुन्दर ही कहा है। भन्ते! जो कुछ मुझे कहना है उसे कहता हूँ, जिससे सद्धर्म चिरस्थायी हो।

भन्ते! ये धम्म-पलियाय है —

१. विनय समुत्कर्ष, २ आर्यवश, ३ अनागत भय, ४. मुनिगाथा, ५. मोनेय्य

सूत्र, ६ उपतिष्य-प्रश्न, और ७ 'राहुलोवाद' सूत्र मे भगवान् ने जो मृषावाद के विषय मे उपदेश दिया है भन्ते! मै चाहता हूँ कि सभी भिक्षु, भिक्षुणियाँ, उपासक तथा उपासिकाये इन्हे सदा सुने और पालन करे। भन्ते! इसी लिए मै यह लेख लिखवा रहा हूँ—ऐसा समझे।

पालियाय=पालि

इससे साफ प्रकट होता है कि बुद्ध-वचन के अर्थ मे ही 'परियाय=पलियाय' शब्द का प्रयोग किया गया है।

पालि भाषा मे बहुधा **परि** या **'पटि'** उपसर्ग का दीर्घ हो कर **'पारि'** या **'पाटि'** हो जाता है। जैसे—

परि+लेय्यकं=पारिलेय्यकं

पटि+कङ्खा=पाटिकङ्खा

पटि+भोगो=पाटि भोगो इत्यादि

इसी तरह, **'पलियाय'** शब्द का रूप धीरे-धीरे **'पालियाय'** हो गया। बाद मे, इसी शब्द का लघु-रूप **'पालि'** हो गया, और इसका अर्थ हुआ **'बुद्धवचन'।**

'दीघनिकाय-पालि', 'उदानपालि', 'पाचित्तिय-पालि' आदि कहने से यह मतलब है कि ये ग्रन्थ 'बुद्धवचन' है। 'पालि' का अर्थ 'बुद्धवचन' होने से, यह शब्द केवल मूल त्रिपिटक ग्रन्थो के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, अट्ठकथा के लिए नही।

मागधी भाषा के आधार पर बुद्ध की अपनी शैली की छाप लग कर पालि भाषा का विकास हुआ। पीछे, जनता मे त्रिपिटक के साथ-साथ पालि भाषा का खूब प्रचार हुआ।

ए बेरियेडल कीथ महोदय लिखते है—

The speech of the Buddha, which is assumed to be reproduced in the canon, was doubtless the educated lingua franca which had been devised for the needs of the intercourse of learned men in India.

'Ceylon Daily News', May 1939.

अर्थात्—बुद्ध-भाषा, जो त्रिपिटक मे आती है, निस्सन्देह शिक्षित समाज

की बोलचाल की भाषा थी, जिसका गठन भारत के शिक्षित समुदाय के व्यवहार की आवश्यकता की दृष्टि से ही हुआ था।

रायस डेविड्स और गाइगर दोनो विद्वान् इस मे बिलकुल सहमत है।

लका मे जब त्रिपिटक के साथ 'पालि' शब्द पहुँचा, उस समय 'परियाय = पलियाय = पालियाय' से इसका सम्बन्ध छूट चुका था, और लोगो को यह एक पृथक् नया शब्द मालूम हुआ। वैयाकरणो ने इसका अर्थ 'पा = रक्खणे' धातु से करना प्रारम्भ किया। जैसे —**"पा—पालेति रक्खतीति पालि = पक्ति[1]।"**

---

[1] **'पक्ति' का अर्थ यहाँ 'श्रेणी' है। खीच-खाँच कर इसका अर्थ 'ग्रन्थ-पक्ति' भी किया जा सकता है।**

दूसरा खण्ड

पालि और वैदिक भाषा

वैदिक भाषा बोलचाल की भाषा थी। वैदिक काल मे आर्यो का जहाँ जहाँ प्रसार हुआ सभी जगह यह भापा गई। उस समय, भाषा ने व्याकरण की बेडी नही पहनी थी। बोलने के समय लोगो को गल्ती हो जाने का डर नही लगा रहता था। भावो की अधिक से अधिक अभिव्यञ्जना ही भाषा का अभिप्राय था। यही जीती जागती भाषा का प्रथम लक्षण होता है।

भाषा की स्वतंत्रता

जैसे जैसे आर्य लोग आगे बढते गए इस भाषा का विस्तार होता गया। फलत, नियम मे बाँध रखने वाले एक व्याकरण के अभाव मे—भाषा मे तरह तरह के नये रूप धडल्ले से आने लगे। 'भवति' को कोई 'भवाति' कोई 'भवत्' कोई 'भवात्', जिसको जैसा मन होता था, बोलता था। अर्थ समझा देना भर उनका प्रयोजन था। वैसे ही, कोई षष्ठी के स्थान मे चतुर्थी का, तो कोई चतुर्थी के स्थान मे षष्ठी का व्यवहार करता था।

वैदिक भाषा की स्वतत्रता तथा व्यापकता दिखाते हुए पाणिनि सूत्रो के भाष्य-कार पतञ्जलि लिखते है —

व्यत्ययो बहुलम् ३।१। ८५। योग-विभागः कर्त्तव्यः। छन्दसि विषये सर्वे विधयो भवन्तीति। सुपां व्यत्ययः। तिङां व्यत्ययः। वर्ण-व्यत्ययः। लिङ्ग-व्यत्ययः। पुरुप-व्यत्ययः। काल-व्यत्ययः। आत्मनेपद-व्यत्ययः। परस्मैपद-व्यत्ययः इति।

सुपाम् व्यत्ययः— दक्षिणायाः—दक्षिणस्याम् इति प्राप्ते। तिङां व्यत्ययः तक्षति—तक्षन्ति इति प्राप्ते।

वर्णव्यत्ययः— शुभितम् —शुधितम् इति प्राप्ते। लिङ्गव्यत्ययः— मधो—मधुनः इति प्राप्ते। पुरुषव्यत्ययः— . वि यू या—वियूयात् इति प्राप्ते। कालव्यत्ययः— श्वः सोमेन य क्ष्य मा णे न—यष्टेता इति प्राप्ते। आत्मनेपद व्यत्ययः— . इ च्छ ते—इच्छति इति प्राप्ते। परस्मैपद व्यत्ययः— यु ध्य ति—युध्यते इति प्राप्ते।

नाम-विभक्तियो का, क्रिया-विभक्तियो का, वर्णो का, लिङ्गो का, पुरुषो का, काल का, आत्मने पद का, तथा परस्मैपद का व्यत्यय (=उल्टा-पुल्टा) होता है।

सुप्-तिङ्-उपग्रह-लिङ्ग-नराणां काल-हल्-अच्-स्वर-कर्त्तृ-यङां च। व्यत्यय मिच्छति शास्त्र-कृद् एषां सोपि च सिध्यति बाहुलकेन ॥१॥

(महा भाष्य)

नाम-विभक्ति, क्रिया-विभक्ति, उपग्रह, लिङ्ग, पुरुष, काल, व्यञ्जन, स्वर, वैदिक स्वर (Accent), कर्त्तृ (कारकादि एव वाच्यादि), यङन्त इत्यादि का व्यत्यय, (उल्टा-पुल्टा, व्यतिक्रम) होना पाणिनि-आदि व्याकरण-शास्त्रकार निर्देश करते है। वह व्यत्यय भी कहाँ और कैसे होगा इसका कोई नियम नही है।

नाम-विभक्तियों के प्रयोग में स्वच्छन्दता

वैदिक भाषा मे नाम-विभक्यिो के प्रयोग मे कितनी स्वतन्त्रता थी उसका पता हमे 'महाभाष्य' से मिलता है —

सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ७।१।३९ सुपां च सुपो भवन्तीति वक्तव्यम्॥ तिङां च तिङो भवन्तीति वक्तव्यम्॥ इयाडियाजी काराणामुपसंख्यानम्॥ आङ्याजयारां चोपसंख्यानं कर्तव्यम्॥

नाम-विभक्तियो के स्थान मे सु[1] (प्रथमा), लुक् (भिक्ति-लोप), पूर्व-सवर्ण

---

[1] सु शब्द को आदेश कहने का अभिप्राय यह है, कि सु प्रत्यय आदेश होने पर अन्य नाम-विभक्तियाँ नही होगीं। यह सब 'व्यत्ययो बहुलम्' इसके अनुसार भी व्यत्यय से सिद्ध हो सकता है। (कैयट)।

(पूर्व-सवर्ण-दीर्घ), **आ, आत् शे, या, डा, ड्या, या आल्** [शे=ए। या, याच्, ड्या=या। डा, आल्, आ, (आत्)=आ] इन प्रत्ययो का आदेश होता है।[1] नाम-विभक्तियोमे व्यत्यय होने के उदाहरण—

ऋजवः सन्तु पन्थाः (पन्थानः)। परमे व्योमन् (व्योमनि)। लोहिते चर्मन् (चर्मणि)। आर्द्रे चर्मन् (चर्मणि)। धीती (धीत्या), मती (मत्या)। या सुरथा रथी-तमा दिविस्पृशा अश्विना (यौ सुरथौ दिविस्पृशौ अश्विनौ)। नताद् ब्राह्मणम् (नतंब्राह्मणम्)। यादेव (यमेव) विद्म तात्त्वा (तंत्वा)। युष्मे। (युष्मासु)। अस्मे (अस्मभ्यम्) इन्द्राबृहस्पती। उरुया (उरुणा), धृष्णुया (धृष्णुना) नाभा (नाभौ) पृथिव्याः। साधुया (साधु)। वसन्ता यजेत (वसन्ते यजेत)।

उर्विया (उरुणा), दार्विया (दारुणा), सुक्षेत्रिया (सुक्षेत्रिणा-इति)। सुगात्रिया (सुगात्रेण)। दृतिं नशुष्कं सरसी शयानम् (सप्तमी एक वचन के स्थान मे ईकार का आदेश)।

प्र बाह्वा (बाहुना)। स्वप्नया (स्वप्नेन)। नावया (नावा)।

(महाभाष्य—सिद्धान्त-कौमुदी)

काल तथा लकार की स्वच्छन्दता

वैदिक भाषा मे काल तथा लकार के प्रयोग मे बडा अनियम था। एक-एक क्रिया-पद के लिए कितने अधिक रूप व्यवहृत होते थे, उसे देख कर माथा चकरा जाता है। जैसे.—

---

[1] इया, डियाच्, (इया, डियाच्=इया), ईकार भी आदेश होते हैं। तृतीया एक वचन में अयाच्, अयार (=अया) भी आदेश होते है।

(महाभाष्य)

छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः ।३।४।६
धात्वर्थानां सम्बन्धे सर्वकालेषु एते वास्युः ।
लुङ्-लङ्-लिट् का प्रयोग सभी काल मे हो सकता है।
देवो देवेभि आगमत् (आगच्छतु) ।

अद्य ममार (म्रियते) ।

लिङ्-अर्थे लेट् ३।४।७। उपवादऽऽशङ्कयोश्च ३।४।८। लेट् । सिब्-बहुलं लेटि ३।१।३४। सिब्-बहुल णिद् वक्तव्यः । इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ३।४।९७। लेटोऽड्-आटौ ३।४।९४। आगमौ स्तः स उत्तमस्य ३।४।९८। लोपो वा स्यात् ।

लेट् का धातुरूप

प्रथम पुरुष एक वचन मे

भवति, भवाति । भवत्, भवात् । भवते, भवाते । भविषति, भाविषति । भविषत्, भाविषत् । भविषाति, भाविषाति । भविषात्, भाविषात् । भविषते, भाविषते, भविषाते, भाविषाते ।

इस तरह, प्रथम तथा मध्यम पुरुष मे ५४।५४ रूप, एव उत्तम पुरुष मे २७+१२ (व, म) कुल १४७ रूप होगे।
पताति विद्युत् (विद्युत् पतेत्) । प्रियःसूर्य्ये प्रियो अग्ना भवाति (भवेत्) ।

लेट् लकार (Subjunctive mood) ऋग्वेद और अथर्व-वेद मे बहुतायत से आता है। विधि लिङ् (optative) की अपेक्षा यह तिगुणा अथवा चारगुणा अधिक प्रयुक्त हुआ है ।

निमित्तार्थक प्रत्यय

निमित्तार्थक (तु-प्रत्यय प्रत्यय के स्थान मे) वैदिक भाषा मे विभिन्न प्रत्यय पाये जाते है, परन्तु सस्कृत भाषा मे केवल तु-प्रत्यय का प्रयोग होता है ।

– सत्रह –

निमित्तार्थक प्रत्यय

तुमर्थक प्रत्यय	वैदिक उदाहरण[1]	ऋक् तथा यजुर्वेद मे प्रत्यय-प्रयोग-सख्या[2]
तुं	कत्तु, गन्तु, दातु	२६
से[3], असे[3]	चक्षसे, जीवसे, वक्षे	१८३
ध्यै[3], अध्यै[3]	पृणध्यै, पिबध्यै, यजध्यै	१०१
अः[3] तोः[3]	निमिष , गन्तो , हन्तो , कर्त्तो , विलिख	३३
अ[3]	शुभ, प्रतिधा, समिध	७२
ए[3]	दृशे, भुवे, परादै, ग्रभे	३४८
तये	पीतवे, सातये,	३३६
वने, मने	त्रामणे, दावने, विद्मने	५२
त्यै	इत्यै	४
तवे[3], तवै[3]	कर्त्तवे, गन्तवे दातवे, मन्तवै, पातवै, दातवै,	२८४
अये	चितये युद्धये	५५
इ, सनि	दृशि, बुधि, नेपणि, अभिभूषणि, गृणीषणि	२८

[1] 'A A. Macdonell's Vedic Grammar for Students' से उद्धृत।

[2] E V Arnold's Historical Vedic Grammar' से सकलित।

[3] तुमर्थे से-सेन्-असे-असेन्-कसे-कसेन्-अध्यै-अध्यैन्-कध्यै-कध्यैन् शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवेङ्-तवेनः ३।४।९ ३।४।१३

(अष्टाध्यायी)

कृत्य

उसी तरह, 'कृत्य' प्रत्यय भी वैदिक भाषा मे 'तवे', 'केन', 'केन्य', 'त्वेन' यह चार व्यवहृत होते थे। जैसे —

कृत्यार्थे तवै—केन—केन्य—त्वन ३।४।१४ न म्लेच्छितवै (=न म्लेच्छित व्यम्)। **अवगाहे** (अवगाहितव्यम्, अवगाढ्यम्)। दिदृक्षेण्य (=द्रष्टव्य)। कर्त्वम् (=कृत्यम्)। अवचक्षे (=अवख्यातव्यम्)।

प्रयोगों की विभिन्नता का कारण

ऊपर के उदाहरणो मे हमने जो वैदिक भाषा मे स्वच्छन्दता, अनियमितता, तथा प्रयोगो की विभिन्नता देखी है, उसका कारण भाषा बोलने वालो के प्रान्त तथा समाज की विषमता ही हो सकती है। यो तो कहने के लिए आज हम कह देते है कि विहार तथा युक्तप्रान्त की भाषा हिन्दी है, किन्तु, यदि इन प्रान्तो की भिन्न भिन्न जगहो की सच्ची बोलचाल की भाषाओ को देखे, तो उसके अनेक रूप मिलेगे। एक ही शब्द के उच्चारण के कई भेद मिलेगे। 'मै जाता हूँ', इसी एक वाक्य के रूप मगध मे 'हम जा ही', मिथिला मे 'हम जाई छी', तथा भोजपुर मे 'हम जात बानी, जातानि, जाताणि' आदि होगे। भाषा मूलत एक ही है, किन्तु प्रान्त तथा समाज के भेद से उसके इतने रूप हो गए। ठीक उसी तरह, वैदिक भाषा मूलत एक होने पर भी, प्रान्त-भेद से उसमे इतने व्यत्यय, तथा एकार्थक विभिन्न प्रत्यय दीखते है।

व्याकरण से मँजी 'खडी बोली' की तरह उस समय कोई एक भाषा नही बनी थी, अत, सभी तरह के प्रयोग भाषा मे मिलते जाते थे। धीरे धीरे एक एक प्रत्यय के लिए—जैसे हमने अभी ऊपर देखा है—चार चार पॉच पॉच प्रत्यय व्यवहृत होने लगे। सभी के उदाहरण वेद मे मिलते है।

भाषा मे इतनी अधिक विभिन्नता होने का एक और प्रबल कारण रहा। जब आर्य लोग सिन्धु देश मे फैल रहे थे, तब उनका समागम वहाँ के मूल-निवासियो से हुआ। एक जगह साथ रहने से उनकी भाषा का प्रभाव वैदिक भाषा पर कुछ न कुछ अवश्य पडा, ठीक उसी तरह, जैसे अँगरेजी साहित्य मे लाठी, लूट, राजा, जनाना, पर्दा, आदि बहुत शब्द प्रयुक्त होने लगे है। यदि अँगरेजी भाषा का

केन्द्र (इगलेण्ड) बाहर नही होता, तो निश्चय है कि अँगरेजी भापा का रूप आज बिल्कुल दूसरा ही हो गया होता। वैदिक भाषा का केन्द्र कही बाहर नही, किन्तु यही था, इसलिए इस भाषा पर यहाँ की मूल भाषा का प्रभाव अत्यन्त अधिक पडा होगा, जिससे इसमे इतनी विभिन्नता आ गई।

जब बाहर से भारतवर्ष मे मुसलमान आए और यही रहने लगे, तो उनकी भाषा और यहाँ की भाषा मिल कर एक तीसरी भाषा 'उर्दू' का जन्म हुआ। यदि वही लोग इस देश मे बस न जा कर, अपने देश ही से यहाँ का शासन करते, तो एक नई भाषा 'उर्दू' का जन्म न हो कर, उनकी भाषा फारसी ही मे सस्कृत के कुछ शब्द आ कर रह जाते, जैसा अँगरेजी मे हुआ।

उच्चारण में परिवर्तन

उसी तरह, जब आर्य लोग यहाँ बाहर से आए और यही बस गए, तो वैदिक भाषा और यहाँ की मूल भाषाओ के मिलने से कई छोटी मोटी भाषाओ की उत्पत्ति हुई। आर्य लोग विजयी, और यहाँ वाले विजित थे, इसलिए, इन भाषाओ मे प्राधान्य वैदिक भाषा का ही रहा। यहाँ वाले वैदिक भाषा के क्लिष्ट शब्दो को सरल तथा मुलायम करके बोलने लगे। 'अग्नि' का अग्गि', 'रश्मि' का 'रसि', 'भार्या' का 'भरिया', 'कृत्य' का 'किच्च', 'सिह' का 'सीह', 'ब्याघ्र' का 'ब्यग्घ', 'सस्थान' का 'सठान' आदि आदि रूप हो गए। यह विकास किन्ही खास नियमो के आधार पर नही हुआ। जहाँ जिनको जैसा सरल प्रतीत हुआ बोलते गए।

वैदिक भाषा के शब्द किस तरह बदल कर बोले जाने लगे उसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते है।

१ 'ऋ' कही-कही 'अ' कर दिया गया। जैसे—

कृतं—कतं। घृतं—घतं। ऋक्षः—अच्छो। नृत्यं—नच्चं।

२ 'ऋ' कही-कही 'इ' कर दिया गया। जैसे—

ऋणं—इणं। कृत्य—किच्चं। दृष्ट—दिट्ठ।

३ 'ऋ' कही-कही 'उ' कर दिया गया। जैसे—

ऋतु—उतु। ऋजु—उजु। वृष्टि—वुट्ठि।

४ 'ऐ' का 'ए', 'इ', तथा 'ई' हो गया। जैसे—**वैमानिक—वेमानिको। ऐश्वर्य—**

इस्सरिय। ग्रैवेय्य—गीवेय्य।

५ 'औ' का 'ओ' तथा 'उ' हो गया। जैसे—

पौरः—पोरो; मौद्गल्लायनः—मोग्गलायनो। औद्धत्य—उद्धच्चं; औद्देशिकः—उद्देसिको।

६ 'श' तथा 'ष' के बदले 'स' का ही व्यवहार होने लगा। जैसे—

शिष्यः—सिस्सो। श्रमणः—समणो।

७ शब्द के अन्तस्थित व्यञ्जन को लोप कर देने लगे। जैसे—

गुणवान्—गुणवा। कश्चित्—कोचि। यावत्—याव। तावत्—ताव।

८ अकारान्त शब्दो से परे विसर्ग का 'ओ', तथा इकारान्त या उकारान्त शब्दो से परे विसर्ग का लोप होने लगा। जैसे—

देवः—देवो। कः—को। अग्निः—अग्गि। धेनुः—धेनु।

९ विसर्ग से परे यदि स, श, या ष हुआ तो विसर्ग के स्थान मे 'स' हो गया। जैसे—

दुःसह—दुस्सहो। निःशोकः—निस्सोको।

१० सयुक्त वर्ण से पूर्व दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो गया। जैसे—

मार्दव—मद्दवं। तीर्थं—तित्थं। धार्मिकः—धम्मिको। शून्य—सुञ्ञं।

११ रेफ का लोप हो गया, तथा रेफ वाले वर्ण का द्वित्व हो गया। जैसे—

कर्म—कम्मं। निर्जलः—निज्जलो। सर्वः—सब्बो। वर्गः—वग्गो।

१२ 'ह्' के साथ रेफ का 'र' हो गया। जैसे—

तर्हि—तरहि। एतर्हि—एतरहि।

१३ पद के आदि वर्ण मे सयुक्त 'र' का लोप हो गया। जैसे—

क्रीतः—कीतो। क्रुध्यति—कुज्झति। ग्रामः—गामो। त्रिपिटक—तिपिटक। श्रावकः—सावको।

१४. पद के मध्य मे किसी व्यञ्जन के साथ सयुक्त 'र' का लोप हो गया, तथा कही-कही उस व्यञ्जन का द्वित्व हो गया। जैसे—

प्रक्रमः—पक्कमो। सूत्रं—सुत्तं। समुद्रः—समुद्दो। इन्द्रः—इन्दो।

१५ 'र्य' का कही-कही 'रिय' हो गया। जैसे—

कार्य—करियं। कदर्यं—कदरिय।

१६ पद के आदिस्थित 'क्ष' का 'ख' हो गया। जैसे—

क्षीरं—खीर। क्षेमः—खेमो।

१७ पद के मध्य मे 'क्ष' का कही-कही 'क्ख' या 'च्छ' हो गया। जैसे—

दक्षिणः—दक्खिणो। मोक्षः—मोक्खो। पक्ष.—पच्छो। अक्षि—अच्छि, अक्खि।

१८ पद के आदिस्थित 'द्य' का 'ज', तथा मध्यस्थित का 'ज्ज' हो गया। जैसे—

द्युतिः—जुति। अद्य—अज्ज। विद्यते—विज्जते।

१९ पद के आदिस्थित 'ध्य' का 'झ', तथा मध्यस्थित का 'ज्झ' हो गया। जैसे—

ध्यान—झानं। बुध्यते—वुज्झते।

२० पद के आदिस्थित 'त्य' का 'च', तथा मध्यस्थित का 'च्च' हो गया। जैसे—

त्यजति—चजति। प्रत्ययः—पच्चयो। नृत्यं—नच्च। सत्यं—सच्चं। अत्ययः—अच्चयो।

२१ 'न्य' तथा 'ण्य' का 'ञ्ञ' हो गया। जैसे—

धान्य—धञ्ञं। शून्यं—सुञ्ञं। हीरण्यं—हिरञ्ञं।

२२ पद के आदिस्थित 'ज्ञ' का 'ञ', तथा मध्यस्थित का 'ञ्ञ' हो गया। जैसे.—

ज्ञातिः—ञाति। ज्ञानं—ञाण। संज्ञा—संञ्ञा। प्रज्ञा—पञ्ञा।

२३ 'ष्ट' या 'ष्ठ' के स्थान मे 'ट्ठ', 'स्त' के स्थान मे 'थ' या 'त्थ', या 'त्त' हो गया। जैसे—

तुष्टः—तुट्ठो। षष्ठः—छट्ठो। स्तम्भः—थम्भो। हस्ती—हत्थी। दुस्तरं—दुत्तरं।

२४ कुछ गौण परिवर्तनो के उदाहरण—

स्थूल:—थूलो। स्थान—ठानं। अस्थि—अट्ठि। मत्स्य:—मच्छो। उल्का—उक्का। जल्प:—जप्पो। फल्गु—फग्गु। ग्लान:—गिलानो। क्लेश:—किलेसो। ज्वलति—जलति।

पक्वं—पक्क। अध्वा—अद्धा। ह्रस्व:—रस्सो। जिह्वा—जिव्हा। स्कन्ध:—खन्धो। निष्क्रम:—निक्खमो। शुष्कं—सुक्खं। पश्चात्—पच्छा। अप्सरा—अच्छरा। स्पृशति—फुसति। पुष्प—पुप्फं। देयं—देय्यं। श्रेय:—सेय्यो। भुक्त—भुत्तं। सप्त—सत्त। लवण—लोणं। स्नेह:—सिनेहो। शक्नोति—सक्कोति। चन्द्रमा—चन्दिमा। असूया—उसूया। मातृका—मेत्तिका। गुरु—गरु। पुरुष:—पुरिसो। कील:—खीलो। मूक:—मूगो। प्रसेनजित्—पसेनदि। प्रति—पटि। पृथिवी—पठवी। दहति—डहति।

व्याकरण की आवश्यकता

भिन्न-भिन्न प्रान्त तथा समाज मे आ कर विकास का यह प्रवाह फूट कर कई दिशाओ मे बहने लगा। कही-कही वर्णो का लोप हो गया, कही-कही उनका विपर्यास हो गया, कही-कही व्यञ्जन-वर्णो के स्थान मे स्वर-वर्ण हो गया, कही-कही कुछ वर्णो का आगम हुआ इत्यादि। इस तरह, यही आगे चल कर पालि तथा प्राकृत भाषाओ के रूप मे प्रकट हुआ।

बोल-चाल की भाषा मे रूपो की विभिन्नता हद से ज्यादा बढ़ गई। यहाँ तक, कि समाज को दैनिक व्यवहार मे बडी कठिनाई पडने लगी। लोगो को अनुभव होने लगा कि यदि भाषा की इस उच्छृड्खलता को रोक कर उसमें कुछ नियमन न किया गया, तो कुछ समय के बाद सामाजिक जीवन असभव हो जायगा। यही 'सस्कृत भाषा' के निर्माण का कारण हुआ।

शब्द-शास्त्र के पण्डितो ने इधर काफी ध्यान दिया, और वे भाषा को काट-छाँट कर हलका तथा उपयोगी बनाने के फेर मे पड गए। भाषा का व्याकरण बनने लगा। विभिन्न प्रयोगो मे से अधिक प्रचलित कुछ एक-दो ही रखे गए, और बाकी छोड़ दिए गए। वैयाकरणो के कई वर्षो तक परिश्रम करते रहने के बाद लगभग ईसा-पूर्व ४०० मे (बुद्ध से प्राय ३५० वर्ष बाद) पाणिनि ने इस शास्त्र को सर्वाङ्ग-

पूर्ण बनाया। भाष्यकार पतञ्जलि, पाणिनि के सूत्र '**भ्वादयो धातवः**' १।३।१ का भाष्य करते हुए लिखते है कि पाणिनि के समय लोगो मे—'**आणवयति**' (=आज्ञा देना), **वट्टति** (=वर्तमान होना), **वड्ढयति** (=बढना) आदि क्रिया के रूप बोले जाते थे, तथा 'कृषि' के अर्थ मे '**कसि**', 'दृशि' के अर्थ मे '**दसि**' का प्रयोग करते थे। व्याकरण के निर्माण के समय इन प्रयोगो को गौण समझ कर छोड दिया।

[यह ध्यान देने लायक बात है कि ये तमाम प्रयोग पालि भाषा में व्यवहृत होने वाले बड़े ही साधारण रूप है]

उपयोगी समझ कर, लोगो ने व्याकरणानुकूल बोलने लिखने पर बडा जोर दिया। धीरे-धीरे लोगो मे यह भाव बडा पुष्ट हो गया, और वे व्याकरण के अननुकूल किसी प्रयोग को त्याज्य और हीन समझने लगे। आज तक वह भाव पण्डितो मे वैसा ही है। सस्कृत का बडा से बडा विद्वान भी सस्कृत बोलते समय डरता है कि कही व्याकरण की अशुद्धि न हो जाय। यदि कभी कोई अशुद्ध प्रयोग मुँह से निकल जाय तो उसके लिए उसे लज्जित होना पडता है।

सस्कृत भाषा के निर्माण से यह तो लाभ हुआ कि भाषा की उच्छृङ्खलता दूर हो गई, तथा उसमे नियमन आया। किंतु, साथ ही साथ यह भी हुआ कि भाषा बँध कर जकडी गई, और कठिन होने तथा प्रगतिशील न होने के कारण बोल-चाल की भाषा न रह सकी। बोल-चाल की भाषा न रहने पर भी इसके सम्मान मे कोई अन्तर नही हुआ। पण्डित विद्वानो की यही भाषा रही। ग्रन्थ लिखने तथा शिष्ट व्यवहार के लिए पण्डितो ने सस्कृत का ही प्रयोग किया।

वैदिक, पालि, संस्कृत

देश तथा अवस्था के प्रभाव से वैदिक भाषा की सतान पालि तथा प्राकृत भाषाएँ हुईं। इन भाषाओ मे शब्दो के उच्चारण मुलायम तो हुए, किंतु प्रत्ययो के व्यवहार वैसे ही बने रहे। इसके विपरीत, सस्कृत व्याकरण ने वैदिक शब्दो को—मुलायम न होने दे—ज्यो के त्यो ले लिया; किंतु एक ही अर्थ मे आने वाले अनेक प्रत्ययों मे से केवल प्रचलित एक-दो को छोड सभी को रद्द कर दिया।

वैदिक, पालि, तथा सस्कृत के रूपो का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए निम्न तालिका देखे—

१. व्यत्यय

वैदिक	पालि	सस्कृत
व्यत्ययो बहुलम् ३।१।८५ **१. सुपा व्यत्ययः**। वेद मे सुबन्त विभक्तियो के प्रयोग मे उलट पलट हो जाया करता है। जैसे —सप्तमी के स्थान पर षष्ठी का, सप्तमी के स्थान पर प्रथमा का, इत्यादि । **२. तिडां व्यत्ययः**। वेद मे तिङ्न्त के प्रयोग मे उलट पलट हो जाया करता है। जैसे — "चषाल ये अश्वयूपाय **तक्षति** ।" यहाँ 'तक्षन्ति' बहुवचन के स्थान पर एक वचन हो गया है । **३. वर्णव्यत्ययः**। वेद मे किसी वर्ण के स्थान मे कभी कभी कोई दूसरा वर्ण चला आता है । जैसे —"**शुभितम्**"—शुधितम् इति प्राप्ते।" "तमसो गा **अदुन्तत्**"—अधुक्षत् इति प्राप्ते। "**गृभाय**"—गृहाण इति प्राप्ते इत्यादि। ४ **काल व्यत्ययः**। वेद मे एक काल के स्थान मे दूसरे काल का भी कही कही प्रयोग हो जाता है।	१ पालि मे भी, वेद के समान ही सुबन्त प्रत्ययो का व्यत्यय हो जाता है। जैसे —"**एकं समय**" (=एकस्मि समयस्मि)। "**तेन समयेन**" (तस्मि समयस्मि)। "**अचिरपक्कंतस्स भगवतो**" (अचिर-पक्कते भगवति)। "**तेलस्स पिवित्वा**" (=तेल पिवित्वा)। "**तस्स पटिसुत्वा**" (=त पटिसुत्वा)। २ पालि मे भी वेद के समान ही तिङ्न्त प्रत्ययो का व्यत्यय हो जाता है। जैसे —"**अत्थि इमस्मि काये केसा लोमा नखा इत्यादि**"। यहाँ 'सन्ति' बहुवचन के स्थान पर एक वचन हो गया है। ३. पालि मे भी वेद के समान ही वर्णो का व्यत्यय हो जाया करता है। जैसे — '**बुद्धेभि**' (=बुद्धेहि)। "**दुक्कट**" (=**दुक्कत**)। "**ञाणं**" (=ञान)। "**पलिघो**" (=**परिघो**) इत्यादि। ४. पालि मे भी वेद के समान ही अक्सर काल का व्यत्यय देखा जाता है। जैसे —भूतकाल के अर्थ मे—**पुरे अधम्मो दिप्पति**। "**अनेक जाति संसारं सन्धाविस्स**"—भूतकाल के अर्थ मे भविष्यकाल। "अति वेल नमस्सिस्सति"—वर्तमान के अर्थ मे भविष्यत्काल।	सस्कृत मे ऐसे व्यत्यय नही होते है, क्योकि इन व्यत्ययो को रोकने के लिए ही सस्कृत व्याकरण का निर्माण हुआ था।

२. नाम

वैदिक प्रयोग	पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	वैदिक प्रत्यय	ऋक्+अथर्व वेद मे प्रत्यय-प्रयोग सख्या†	पालि समानता	संस्कृत
१. देवासः	७।१।५०	असुक	१७३८	**देवासे। धम्मासे। बुद्धासे।**	प्रथमा बहुवचन का यह रूप है। **संस्कृत व्याकरण के निर्माण के समय यह रूप नही लिया गया।**
२. देवेभिः	७।१।८	**एभिः**	९२०	**देवेभि।*** सदा यह रूप होता है।	तृतीया बहुवचन का यह रूप है।०
३. गोनाम्	७।१।५७	**नाम्**	३६	**गोनं। गुन्नं।**	'गो' शब्द के षष्ठी बहुवचनका रूप।०
४. पतिना	१।४।९	**टा**		**समान**	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।

द्रष्टव्य—शेश्छन्दसि बहुलम् ६।१।७०। छन्दसि नपुंसकस्य पुंवद्भावो वक्तव्यः—इति महाभाष्ये। वैदिक भाषा मे नपुसक लिङ्ग के शब्द का बहुधा पुल्लिङ्ग रूप हो जाता है।

पालि मे भी ऐसा होता है। 'फल' शब्द के प्रथमा बहुवचन मे **'फला'** और **'फलानि'** दोनो रूप होते है। सस्कृत व्याकरण के निर्माण के समय यह रूप छोड दिया गया। ऋग्वेद और अथर्ववेद मे ऐसे रूप २५७२ बार प्रयुक्त हुए है।

† E V. Arnold's Historical Vedic Grammar से

* वैदिक प्रक्रिया के सूत्र ३।१।८४ के अनुसार **'ह'** के स्थान मे **'भ'** हो जाता है। जैसे —**गृहाण=गृभाय।**

पालि मे भी ऐसा **'भ-ह'** का परिवर्तन होता है। जैसे —**देवेहि=देवेभि।**

संस्कृत व्याकरण ने ऐसे परिवर्तन को रोक दिया।

विशेष द्रष्टव्यः—चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि २।३।६२। षष्ठ्यर्थे चतुर्थीति वाच्यम् (वार्तिक)। वेद मे बहुधा चतुर्थी के अर्थ मे षष्ठी, तथा षष्ठी के अर्थ मे चतुर्थी होती है।

पालि मे चतुर्थी तथा षष्ठी के रूप प्राय समान रहते है। जैसे —**ब्राह्मणस्स धनं दाति। ब्राह्मणस्स सिस्सो।**
संस्कृत व्याकरण ने इस अदल-बदल को रोक दिया।

३. क्रिया

वैदिक प्रयोग	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि-समानता	संस्कृत
इच्छते युध्यति	३।१।८५ **परस्मैपद व्यत्ययः।** **'इच्छति'** इति प्राप्ते। ,, **आत्मनेपद व्यत्ययः।** **'युध्यते'** इति प्राप्ते।	**समान**	**संस्कृत व्याकरण ने इस व्यत्यय को रोक कर, धातु के पद का निश्चय कर दिया।**
शृणुधी	६।४।१०२ अनुज्ञा मध्यम पुरुष एक वचन का रूप है। इसी तरह, **'कृधि'**, **'अपावृधि'** इत्यादि।	**सुणुहि।** पालि मे यह रूप बडा साधारण है।	**संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।**
शृणोत	७।१।४५ अनुज्ञा मध्यम पुरुष बहु-वचन का रूप है।	**सुणोथ।** "	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।
एमसि	७।१।४६ वर्तमान काल उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है।	**एमसे। भवामसे।**	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।
बधीं	७।१।४० **लुड** लकार मे उत्तम पुरुष एक वचन का रूप है।	**बंधि।** पालि मे यह रूप बडा साधारण है।	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।
वधीं	६।४।७५ **लुड्** लकार मे उत्तम पुरुष एक वचन का रूप है। **इस लकार में धातु के पहले जो 'अ' का आगम होता है, वह वेद में विकल्प से नहीं भी होता है।**	**बंधि।** वैदिक भाषा और पालि मे यह बडी भारी समानता है।	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।

क्रमशः

वैदिक प्रयोग	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि-समानता	संस्कृत
वर्धन्तु वर्धयन्तु	३।४।११७ वेद मे सार्वधातुक तथा आर्धधातुक दोनो ही नियमो के अनुसार धातु-प्रत्यय जोड़े जाते है।	**बड्ढन्तु** **बड्ढयन्तु** **समान**	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।
दाति ददाति	२।४।७५-७६ वेद मे द्वित्व होने वाले धातुओ का द्वित्व विकल्प से होता है।	**समान**	सस्कृत व्याकरण ने द्वित्व न होनेवाले प्रयोग को छोड दिया।
भेदति मरति	३।१।८५ विकरण व्यत्यय।	**समान**	सस्कृत व्याकरण ने 'विकरण व्यत्यय' रोक दिए।
हनति	२।४।७२-७३।	**समान**	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

विशेष द्रष्टव्यः—'लुड्' का प्रयोग ब्राह्मणो मे तथा Classical Sanskrit (नवीन निर्मित) सस्कृत मे प्राय. लुप्त हो गया, जो सभी जानते ही है। वैदिक भाषा मे **'लुङ्'** का प्रयोग बडा साधारण है। **'लुङ'** का प्रयोग **ऋग्वेद और अथर्ववेद** मे ५५१८ बार हुआ है, जो **'लिट्'** तथा **'लड्'** लकार से भी अधिक है।

E V Arnold's Historical eadic Garmmar Page 323.

पालि मे भी **'लुङ्'** (=अज्जतनी=भूत) का प्रयोग वैदिक भाषा ही की तरह प्रचुरता से पाया जाता है। जैसे — **अहोसि। अकासि। अगच्छि।**

नीचे E. V Arnold के Historical Vedical Grammar से वैदिक-धातु-प्रयोग के आँकडे दिये गये है, जिनसे उनके आपेक्षिक प्रयोग मालूम हो जायेंगे।

क्रिया	ऋक् तथा अथर्व वेद मे धातु-प्रयोग-सख्या	विवरण
वर्तमान काल (लट्)	१३४२१	परस्मै पद ९५७९ आत्मने पद ३८४२
भूत काल (लुङ्)	५५१८	पालि मे बहुत अधिक प्रयोग है।
,, ,, (लिट्)	७६	पालि मे बहुत कम प्रयोग।
भविष्यत् काल (लृट्)	७६५	पालि मे भी प्रयोग।
,, ,, (लुट्)	०	पालि मे भी नही। किंतु सस्कृत मे प्रयोग होता है।
सप्तमी लिङ्	१८१७	पालि मे अधिक प्रयोग।
(लेट्)	८९२	पालि, प्राकृत, सस्कृत मे प्रयोग नही होता है।
कालातिपत्ति (लृङ्)	०	पालि, सस्कृत मे प्रयोग।
प्रेरणार्थक (आय)	२७१३	पालि मे प्रयोग।
,, (आप)	१४८	पालि मे समान रूप से प्रयोग।
नामधातु	९३८	पालि मे प्रयोग।
सनन्त (इच्छार्थक)	४३०	पालि मे कम प्रयोग।
यङन्त	५२०	पालि मे बहुत कम प्रयोग।
भाव-कर्म वाचक (लुङ् को छोडकर)	१७७७	पालि मे प्रयोग।
निमित्तार्थक	१३४५	पालि मे अधिक प्रयोग।
पूर्वकालिक	२२२७	पालि मे अधिक प्रयोग।

भूतकालिक क्रियापद के आदि में 'अकार' का आगम ८१४० स्थान पर हुआ है, और १७०४ स्थान पर नही हुआ है। पालि तथा प्राकृत में भी अकार का आगम विकल्प से होता है। सस्कृत में ऐसा नही है।

४. कृदन्त

वैदिक प्रयोग के उदाहरण	प्रत्यय	किस अर्थ मे	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि समानता	संस्कृत
दातवै दातवे	तवै तवे	निमित्तार्थक	३।४।८। वेद मे निमित्तार्थक और १४ प्रत्यय है। जैसे—**से, सेन, असे, असेन, कसे, कसेन, अध्यै, अध्यैन, कध्यै, कध्यैन, शध्यै, शध्यैन, तवेन तुं।**	**दातवे**। पालि मे 'दातु' रूप भी होता है। किंतु, शेष प्रत्यय नही होते। वेद मे निमित्तार्थक प्रत्ययो की सख्या आश्चर्यजनक अधिक है। भिन्न भिन्न प्रान्तो मे ये रूप व्यवहृत होते होगें।	**संस्कृत व्याकरण ने केवल एक 'तु' प्रत्यय को रख कर बाकी सभी को छोड़ दिया।**
परिधापयित्वा	त्वा	पूर्वकालिक	७।१।३८। **ल्यप के स्थान में भी 'त्वा' का प्रयोग होता है।**	**समान**। पालि मे 'ल्यप' के स्थान मे 'त्वा का प्रयोग बहुत साधारण है।	सस्कृत मे ऐसा नही होता है।
गत्वाय	त्वाय	,,	७।१।४७। **'त्वा'** से परे **'य'** का आगम होता है।	**गत्वान**। **त्वा** से परे **'न'** का आगम होता है।	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।
इष्ट्वीन	त्वीन	,,	७।१।४८। इष्ट+**त्वीन**	**कातून**। पालि मे **'त्वीन'** का **'तून'** हो गया	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।
जनित्वन	त्वन	भावार्थक	Macdonell §218। यह प्रत्यय ऋक् और अथर्व वेद मे ३३ बार प्रयुक्त हुआ है।	**जायत्तन। त्वन'** का **'त्तन'** हो गया है।	सस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड दिया।

वेद और अशोक-पालि

१ वेद मे ह्रस्वान्त क्रिया-पदो का कभी कभी दीर्घ हो जाता है। ६।३।१३५। जैसे —**विद्मा**—विद्मइति प्राप्ते। **चक्रा**—चक्रइति प्राप्ते।

विद्मा ते॑ अग्ने त्रे॒धा त्र॒यासिं॑
वि॒द्मा ते॒ धाम॒ विभृ॑ता पुरु॒त्रा
वि॒द्मा ते॒ नाम॑ पर॒मं गुहा॒ यद्
वि॒द्मा तमुत्सं॒ यत॑ आज॒गंथं॑।

ऋ० म० १०। सू० ४५। म० २

अशोक-पालि मे भी इसी तरह दीर्घ होता है। जैसे —

"पियदसि लाजा मागधं संघं अभिवादनं आहा (=आह)। अपा बाधतं च फासु विहालतं चा"—भाब्रू शिला-लेख।

संस्कृत व्याकरण ने इस तरह के प्रयोग छोड़ दिए।

निपातस्य च ६।३।१३६—यह बताता है कि वैदिक भाषा मे निपात का भी दीर्घ हो जाता है। जैसे —

"एवा (=एव) हि ते"

अशोक-पालि मे भी इस तरह निपात का दीर्घ होता है। जैसे—

"अपाबाधतं च फासु विहालतं चा"।

संस्कृत व्याकरण ने इस तरह निपात का दीर्घ होना रोक दिया।

× × ×

ऊपर की तालिकाओं को देख कर हम इसका कुछ अनुमान कर सकते है, कि भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे बोली जाने वाली वैदिक भाषाओ की अगाध विभिन्नताओ को ले, उनका नियमन करने मे सस्कृत व्याकरण बनाने वाले आचार्यों को कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ा होगा। व्याकरण ऐसा होना चाहिए था, कि जो सरल तथा उपयोगी होने के साथ-साथ तमाम वैदिक प्रयोगो को भी सिद्ध कर सके।

सस्कृत व्याकरण ने इस कठिनाई का सामना मुख्यत दो प्रकार से किया —

१ प्रयोगो की विभिन्नता के विषय मे स्पष्ट उल्लेख कर, कि अमुक प्रयोग इस प्रान्त मे व्यवहृत होते है। जैसे —

इति प्राचाम्; इति उदीचाम्।

२ धातु-पाठ मे सभी धातुओ का सकलन कर, जो कही न कही प्रयुक्त होते थे। इसी लिए, धातु-पाठ मे हम ऐसे धातु अधिक पाते है, जिनका उपयोग सस्कृत मे बिल्कुल नही मिलता।

वेद मे ऐसे-ऐसे मन्त्र आते है, जो साधारण वैदिक भाषा से बिल्कुल भिन्न भाषा मे लिखे मालूम होते है। वह अवश्य किसी **गौण** प्रान्तीय भाषा का उदाहरण है, जो साधारण भाषा से बहुत दूर मालूम होती है।

संस्कृत-व्याकरण का ऐसा होना आवश्यक था जो इस प्रकार के सभी प्रयोगो को सिद्ध कर सके।

उदाहरण के लिए, हम नीचे ऋग्वेद के मन्त्र देते है, जो देखने मे बडे विलक्षण मालूम होते है, किंतु जिन्हे सायणाचार्य ने पाणिनीय व्याकरण से ही सिद्ध किया है।

सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका।
उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु॥
पज्रेव चर्चरं जारं मरायु क्षद्मेवार्थेषु तर्तरीथ उग्रा
ऋभू नापत्खरमज्रा खरज्रुर्वायुर्न पर्फरत्क्षयद्रयीणाम्

मं० १०। अ० ९। सू० १०६

तीसरा खण्ड

पालि के विकृत रूप

धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे वहाँ की अपनी बोली का प्रभाव शुद्ध पालि पर पडने लगा, और अशोक के काल तक एक ही पालि के अनेक विकृत रूप हो गए। इन्ही विकृत रूपो को हम अशोक के भिन्न-भिन्न शिला-लेखो मे पाते हैं। किसी एक ही लेख के कई पाठो को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि वे एक ही भाषा के भिन्न रूप हैं, जो वहाँ-वहाँ की प्रान्तीय बोली के प्रभाव के कारण विकृत हो गई है। किंतु, सभी उसे साधारण रूप से समझते होंगे। ठीक वैसे ही, जैसे आज भी मगही, भोजपुरी, मैथली, तथा अवधी आपस मे काफी भिन्नता रखती है, तो भी सभी की समझ मे आ जाती है। उदाहरण के लिए, हम अशोक के एक लेख को ले, जो तीन भिन्न-भिन्न स्थानो मे मिलता है—

क

गिरनार का प्रथम शिला-लेख

(पश्चिम)

इयं धंमलिपी देवानं प्रियेन प्रियदसिना राञा लेखापिता। इध न किंचि जीवं आरभित्या प्रजूहितव्यं। न च समाज्ये कतव्यो। बहुकं हि दोसं समाजम्हि पसति देवानं प्रियो प्रियदसि राजा। अस्ति पितु एकचा समाजा साधुमता देवानं प्रियस प्रियदसिनो राञो। पुरा महानसम्हि देवानं प्रियस प्रियदसिनो राञो अनुदिवसं बहूनि प्राणसतसहस्रानि आरभिसु सूपाथाय। से अज यदा अयं धंमलिपि लिखिता ती एव प्राणा आरभरे सूपाथाय—द्वे मोरा, एको मगो। सोपि मगो न ध्रुवो। एतेपि त्री प्राणा पछा न आरभिसरे।

ख

जौगढ मे उसी लेख का दूसरा पाठ

(पूर्व)

इयं धम्मलिपि खपिंगलसि पवतसि देवानं पियेन लाजिना लिखापिता। हिद नो किछि जीवं आलभितु पजोहितविये, नापि समाज कटविये। बहुकं हि दोसं समाजस दखति देवानं पिये पियदसि लाजा। अथि चु एकतिया समाजा साधुमता देवानं पियस पियदसिने लाजिने। पुलुवं महानससि देवानं पियस पियदसिने लाजिने अनुदिवसं बहूनि पानसत सहसानि आलभियिसु सुपठाये। से अज अदा इयं धंमलिपी लिखिता तिनि येव पानानि आलभियंति—दुवे मजुला एक मिगे। से पि चु मिगे नो धुवं। एतानि पि चु तिनि पानानि पछा नो आलभियिसंति।

ग

मनसेहर मे उसी लेख का तीसरा पाठ

(उत्तर)

अयि ध्रमदिपि देवन प्रियेन प्रियद्रशिन राजिन लिखपित। हिद नो किचि जिवे आरभितु प्रयुहोतविये। नो पिच समज कटविय। बहुक हि दोष समजस देवनं प्रिये प्रियदर्शि रज देखति। अस्ति पिचु एकतिय समज साधुमत देवनं प्रियस प्रियदर्शिने राजिने। पुर महनससि देवन प्रियस प्रियदर्शिस राजिने अनुदिवसं बहुनि प्रणशत-सहस्रानि आरभिसु सुपथये। से इदनि यद अपि ध्रमदिपि लिखित तद तिनि येव प्रणनि अरभिषंति—दुवे मजर एके म्रिगे। से पि चु म्रिगे नो ध्रुवं। एतनि पि चु तिनि प्रणनि पच नो आरभिसंति।

पालि और गाथा-संस्कृत

पालि भाषा से बिल्कुल मिलती-जुलती, सस्कृत का कुछ स्वरूप लिए एक सुन्दर भाषा मे लिखे 'महावस्तु', 'ललित विस्तर' आदि अनेक ग्रन्थ प्राप्त होते

है, जिनके विषय तथा रग-ढग त्रिपिटक के ही है। त्रिपिटक की प्राचीनता तथा मौलिकता का प्रभाव इन ग्रन्थो पर भी वैसा ही है। त्रिपिटक के कितने सूत्र तथा गाथा इन ग्रन्थो मे हूबहू वैसे ही मिलते है। केवल, उनकी भाषा पर थोडा सस्कृत का रग चढा है। इस भाषा को 'गाथा सस्कृत' कहते है।

गाथा-सस्कृत का उदाहरण निम्न पदो मे देखिए, जो पालि धम्मपद से एकदम मिलते है —

सहस्रमपि वाचानां अनर्थपदसंहिता।
एका अर्थवती श्रेया यां श्रुत्वा उपशाम्यति ॥
यो शतानि सहस्राणां संग्रामे मनुजा जये।
यो चैकं जये आत्मानं स वै संग्रामजित् वरः ॥
यत्किंचिदिष्टं च हुतं च लोके,
संवत्सरं यजति पुण्यप्रेक्षी।
सर्व पि तं न चतुर्भागमेति,
अभिवादनं उज्जुगतेषु श्रेयं ॥

('पेरिस' से प्रकाशित) महावस्तु, पृष्ठ-४३४-४३५

इन्ही गाथाओ का पालि धम्मपद मे निम्न प्रकार पाठ है —

सहस्समपि चे वाचा अनत्थपदसंहिता
एकं अत्थपदं सेय्यो यं सुत्वा उपसम्मति ।८।१
यो सहस्सं सहस्सेन सङ्गामे मानुसे जिने
एकं च जेय्यमत्तानं स वे सङ्गामजुत्तमो ॥८।४
यं किंचि यिट्ठं च हुतं च लोके
संवच्छरं यजेथ पुञ्ञपेक्खो।
सब्बम्पि तं न चतुभागमेति,
अभिवादना उज्जुगतेसु सेय्यो ॥८।६

पालि और अर्धमागधी

जैन धर्म के ग्रन्थ अर्धमागधी मे लिखे है, अत. उसे जैन-मागधी भी कहते है। जैन-मागधी त्रिपिटक पालि से भाषा और शैली दोनो में घनिष्ट समानता रखती है।

किसी जैन सूत्र को देखने से मालूम पडता है, कि इसमे वही शैली वर्ती गई है जो पालि सूत्रो मे है। उदाहरण के लिए——

मूल

१. सुयं मे, आवुसं! तेण भगवया एवं अक्खायं। इहं एगेसिं नो सन्ना भवति। एव एगेसिं नो नातं भवति। तं जहा:—"के अहं आसी? के वा इओ चुए पेच्चा भविस्सामि?"

(आचारंग-सुत्ते—सत्थ परिन्ना)

२. ततो णं सक्के देविन्दे देवराया सणियं सणियं जान-विमाणं पट्ठवेइ। पट्ठवेत्ता सणियं सणियं जान-विमाणाओ पच्चोतरति। पच्चोतरित्ता जेनेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छति। तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं कारेति। कारेत्ता वन्दति, नमस्सति।

३. ततो णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स बारस वासा वितिक्कन्ता। तेरसमस य वासस्स परियाए वत्तमाणस्स. . . . साल-रुक्खस्स अदूर-सामन्ते,. . . . . निव्वाणे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे अनुत्तरे समुपन्ने।

४. से भगवं अरहा जिणे जाए सव्वन्नू सव्वभाव-दरिसी सव्वदेव-मणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाये जाणती। तं जहा:—आगतिं, गतिं, ठितिं, चवणं, उववायं, आवि-कम्मं, रहोकम्मं जाणमाणे पासमाणे एवं विहरइ।

(आचारंग-सुत्ते—भावना)

५. तहा विमुक्खस्स परिन्नचारिणो।
धितीमतो दुक्ख-खमस्स भिक्खुणो॥
विसुज्झती जंसि मलं पुरे कडं।
समीरियं रुप्पमलं व जोतिणा॥१॥
इमम्मि लोए परतो य दोसु वि।
न विज्जती बन्धणं जस्स किंचि वि॥

सेहु निरालम्बणे अप्पतिट्ठिते।
कलं-कली-भाव-पहं विमुच्चइ ॥२॥

(आचारंग-सुत्ते—विमुत्ती)

मूलकी पालि-छाया

१ सुत मे (मया), आवुसो! तेन भगवता एवं अक्खातं। इह एकेसं नो सञ्ञा भवति। एवं एकेसं नो ञातं भवति। त यथा :—"को अहं आसिं? को वा इतो चुतो पेच्चा भविस्सामि?

(आचारंग-सुत्ते—सत्थपरिञ्ञा)

२. ततो णं सक्को देविन्दो देवराजा सनिक सनिकं यान-विमान पट्ठपेति। पट्ठपेत्वा, सनिक सनिकं यान-विमानतो पच्चोतरति। पच्चो तरित्वा, येनेव समणो भगवं महावीरो, तेनेव उपागच्छति। तेनेव उपागच्छित्वा समणं भगवन्तं महावीरं तिक्खत्तुं आदाहिण पदाहिणं (पदक्खिणं) कारेति। कारेत्वा वंदति, नमस्सति।

३. ततो णं समणस्स भगवतो महावीरस्स एतेन विहारेण विहरमानस्स, बारस वस्सा वितिक्कन्ता। तेरसमस्स च वस्सस्स परियायो वत्तमान— साल-रुक्खस्स अदूर-सामन्ते, निब्बाणं कसिणं परिपुण्णं निरावरणं अनुत्तरं समुन्नं।

४. सो भगवं अरहा जिनो जातो, सब्बञ्ञू सब्बभाव-दस्सी सब्ब-देव-मनुज-असुरस्स लोकस्स पञ्ञाय जानाति। तं यथा :—'आगतिं, गतिं, ठितिं, चवनं, उपपादं, आविकम्मं, रहोकम्मं जानमानो पस्समानो एवं विहरति।

(आचारंग-सुत्ते—भावना।)

५. तथा विमुत्तस्स परिञ्ञ-चारिणो।
धीतिमतो दुक्ख-खमस्स भिक्खुनो॥
विसुज्झति यंस्मि (येन) मलं पुरे कतं।
समीरितं रुप्प-मलं व जोतिना ॥१॥

इमस्मिं लोके परतो च द्वेसु पि।
न विज्जति बन्धनं यस्स किंचि पि॥
सो हि निरालम्बने अप्पतिट्ठिते।
कथं-कथी-भाव-पहं विमुच्चति॥२॥

(आचारंग-सुत्ते—विमुत्ति)

चौथा खण्ड

साहित्य

बुद्ध के अपने सारे उपदेश मौखिक ही थे। उनके शिष्य उन उपदेशो को याद कर लेते थे। जब किसी को कुछ शका होती थी तो स्वय बुद्ध के पास जा कर उसका निवारण कर लेता था।

त्रिपिटक

बुद्ध के महापरिनिर्वाण प्राप्त कर लेने पर **महाकाश्यप, आनन्द** आदि उनके प्रमुख शिष्यो ने आपस मे तै किया कि सभी बडे-बडे स्थविर भिक्षुओ की एक सभा बुलाई जाय और भगवान् के सारे उपदेशो का सग्रह कर लिया जाय। उस सभा के लिए पाँच सौ अर्हत् स्थविर चुने गए। सभा के लिए राजगृह की **सप्तपर्णी गुहा** ठीक की गई। प्रथम मास मे स्थान की मरम्मत आदि सारी तैयारियाँ कर ली गई; और दूसरे मास मे बैठक शुरू हुई। यही बैठक प्रथम **संगीति** के नाम से प्रसिद्ध है। सौ वर्ष बाद वैशाली मे इसी तरह की दूसरी, और अशोक की प्रेरणा से पाटलिपुत्र मे तीसरी **संगीति** हुई।

भगवान् के सारे उपदेश सग्रह कर लिए गए। इस सग्रह का नाम **'त्रिपिटक'**, अर्थात् तीन पिटारी है—**१. सुत्तपिटक, २. विनयपिटक, ३. अभिधम्म पिटक।** जब **सम्राट् अशोक** के पुत्र **कुमार महेन्द्र** भिक्षु बन कर प्रचार के उद्देश्य से लका गए तो उन्होने वहाँ इसी त्रिपिटक का उपदेश दिया। लका के विख्यात राजा **वट्टगामनी** के सरक्षण मे त्रिपिटक के सारे ग्रन्थ लिख लिए गए।

लका, वर्मा, स्याम आदि बौद्ध राष्ट्रो मे त्रिपिटिक का स्थान सर्वोच्च है। वहा इन ग्रन्थो का प्रचार तथा आदर उतना ही अधिक है जितना भारतवर्ष मे आज रामायण-महाभारत का है। उन देशो ने त्रिपिटक के मूल पालि-ग्रन्थो को

अपनी-अपनी लिपि मे कर लिया है। त्रिपिटक के प्रति बौद्ध राष्ट्रो की श्रद्धा का अन्दाजा तब लगता है, जब हम देखते है कि वर्मा के राजा मैण्डुम ने महाभारत से तिगुने बडे त्रिपिटक के सारे ग्रन्थो को पत्थल की पट्टियो पर खुदवा कर सुरक्षित रख दिया है।

पश्चिम देशो मे भी आज-कल इन ग्रन्थो का प्रचार खूब हो रहा है। रायस डेविड्स जैसे पालि-विद्वानो की प्रेरणा से लन्दन मे एक समिति स्थापित की गई थी, जिसका नाम 'पालि-टेक्स्ट सोसाइटी' है। इस सोसाइटी ने त्रिपिटक के प्राय सारे ग्रन्थो को रोमन लिपि मे प्रकाशित कर दिया है। पालि-भाषा के और भी अनेक ग्रन्थ तथा अगरेजी अनुवाद मुद्रित कर इस सोसाइटी ने पालि-पाण्डित्य की बडी सेवा की है।

आज ससार के प्राय सभी बडे-बडे विश्वविद्यालयो मे पालि-भाषा की पढाई होती है। अमेरिका के हरबर्ट विश्वविद्यालय से पालि-ग्रन्थो के मूल तथा अनुवाद का सुन्दर प्रकाशन हो रहा है। हौलेण्ड के विश्वविद्यालय से पालि की एक पाण्डित्यपूर्ण डिक्शनरी निकाली जा रही है। पेरिस, बर्लिन, मास्को आदि सभी विश्वविद्यालयो मे पालि भाषा की ऊँचे दर्जे की पढाई है।

भारतवर्ष मे, पालि-भाषा की पढाई केवल कलकत्ता तथा बम्बई विश्वविद्यालयो मे है। **बिहार तथा युक्त-प्रान्त के—ठीक वही जहाँ पालि भाषा का जन्म तथा विकास हुआ—विश्वविद्यालयो में पालि की पढ़ाई नही के बराबर है।** किमाश्चर्य्य अत पर!

नव अङ्ग

त्रिपिटक मे जगह-जगह पर साहित्य के नव अङ्गो का जिक्र आता है। (१) **सूत्र**—भगवान् के दिए हुए धार्मिक उपदेश, जो गद्य मे सग्रह किए गए है। (२) **गेय्य**—उपदेश जो गद्य-पद्य मे सग्रह किए गए है। (३) **वेय्याकरण**—व्याख्या, भाष्य। (४) **गाथा**—पद-बद्ध सग्रह। (५) **उदान**—भावातिरेक के कारण सन्तो के मुँह से अनायास निकले वाक्य। (६) **इतिवुत्तक**—छोटी-छोटी भगवान् की उक्तियो का सग्रह। (७) **जातक**—भगवान् के पूर्व-जन्म की कथाएँ। (८) **अब्भुतधम्म**—यौगिक सिद्धियो का वर्णन। (९) **वेदल्ल**—प्रश्न-उत्तर के ढग पर लिखे गए।

इन नव अगो का जिक्र आने से पता चलता है कि त्रिपिटक के निर्माण के समय यह सारे अग मौजूद थे। ये सभी नव अङ्ग 'सूत्र पिटक' ही मे मिलते है।

१. सुत्त पिटक

सूत्र पिटक मे पाँच निकाय है—**१. दीघ निकाय, २. मज्झिम निकाय, ३. संयुत्त निकाय, ४. अङ्गुत्तर निकाय, और ५. खुद्दक निकाय।** खुद्दक निकाय मे पन्द्रह ग्रन्थ है—**१. खुद्दक पाठ, २. धम्मपद, ३. उदान, ४. इतिवुत्तक, ५. सुत्तनिपात, ६. विमानवत्थु, ७. पेतवत्थु, ८. थेरगाथा, ९. थेरीगाथा, १०. जातक, ११. निद्देस, १२. पटिसम्भिदामग्ग, १३. अपदान, १४. बुद्धवंस, १५. चरियापिटक।**

सूत्रों की शैली

सूत्र-पिटक के प्राय सभी सूत्र भगवान् के दिए उपदेश हैं। **सारिपुत्र, मोग्गल्लान** आदि भगवान् के प्रधान शिष्यो के द्वारा भी उपदिष्ट कुछ सूत्र शामिल कर लिए गए है, जिनका अनुमोदन भगवान् ने अत मे कर दिया है। प्रत्येक सूत्र के प्रारम्भ मे उस स्थान का नाम दे दिया जाता है, जहाँ भगवान् ने उसका उपदेश दिया; जैसे—"**एक समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे।**" धर्म्मोपदेश शुरू करने के पूर्व, इस बात का सविस्तार वर्णन रहता है कि किस अवसर पर किस सिलसिले मे वह उपदेश दिया गया था। उपदेश के समय जो प्रश्नोत्तर होते थे उनका भी पूरा-पूरा हवाला मिलता है। उपदेश के अन्त मे श्रद्धा से गद्गद हो कर श्रावक जो सतोष प्रकट करता था उसके बारे मे भी बडे सुन्दर वाक्य आते है; जैसे—

"**अभिकन्तं भो गोतम, अभिकन्तं भो गोतम, सेय्यथापि भो गोतम निक्कुजितं वा उक्कुज्जेय्य, पतिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूळ्हस्स वा मग्गं आचिक्खेय्य, अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य, चक्खुमन्तो रूपानि दक्खिन्तीति** ।

अर्थात्—हे गौतम ! आप ने खूब कहा ! जैसे उल्टे को सीधा कर दे, ढके को खोल दे, भटके को राह दिखा दे, अन्धकार में तेल-प्रदीप जला दे कि आँख वाले रूपों को देख ले.. .. ।

कुछ सूत्रो के अन्त मे ऐसा भी आता है—"**इदमवोच भगवा। अत्तमना ते**

भिक्खू भगवतो भासित अभिनन्दुं ति।" अर्थात्—भगवान् ने यह कहा। सतुष्ट हो कर उन भिक्षुओ ने भगवान् के कहे का अभिनन्दन किया।

सूत्रों की भाषा

साधारणत सभी सूत्र गद्य मे है, कितु कही-कही गाथाएँ भी काफी आती है। कितने सूत्र तो पद्य ही मे है। भाषा बडी सजीव और प्रभावपूर्ण है।

'धम्मचक्क पवत्तन सूत्र' मे भोगवाद की निन्दा करते हुए भगवान् कहते है—"....**यो चाय भिक्खवे! कामेसु कामसु सुखल्लिकानुयोगो हीनो, गम्मो, पोथुज्जनिको, अनरियो, अनत्थसंहितो....।"** अर्थात्—भिक्षुओ! जो यह खाओ-पीओ-मौज करो का सिद्धान्त है वह हीन है, ग्राम्य है, अनार्य, अनर्थकर है....।

सतिपट्ठान सूत्र उपदेश करते हुए भगवान् कहते है—**"एकायनो अयं भिक्खवे मग्गो, सत्तानं विसुद्धिया, सोकपरिद्दवानं समतिक्कमाय, दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमाय, ञाणस्स अधिगमाय, निब्बाणस्स सच्छिकिरियाय, यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना"**।

अर्थात्, भिक्षुओ! यही अकेला एक मार्ग है—जीवो की विशुद्धि के लिए, शोक और व्याकुलता के समतिक्रमण के लिए, दु ख और दौर्मनस्य को अस्त करने के लिए, ज्ञान की प्राप्ति के लिए, तथा निर्वाण को साक्षात्कार करने के लिए—जो यह चार स्मृति-उपस्थान है।

राजा से, एक साधारण सिपाही से, वेश्या से, डाकू से, विद्यार्थी से, तर्क करने के लिए आए बड़े-बडे पण्डितो से, अपनी जाति के अभिमान मे चूर ब्राह्मणो से, भिखमगे कोढी से, मुक्ति के लिए लालायित सत्यगवेषको से, सभी से जो बुद्ध की बात-चीत हुई है उसे पढने से **उसमें बड़ी जान मालूम होती है। भाषा इतनी सरल और सहज है कि कृत्रिमता की उसमें गन्ध तक नही आती।**

ऊपर कहा जा चुका है कि ये ग्रन्थ लिखे नही जाते थे। आचार्य-शिष्य परम्परा से निकाय के निकाय भिक्षुओ को कण्ठ रहते थे। भाषा की सब से बडी विशेषता यह है कि **सूत्रो को कण्ठ करना बड़ा आसान है**। मिलने, विदा लेने, कुशल क्षेम पूछने, बिगडने, आश्चर्य करने, परिताप करने, लोगो से सम्मानित होने, आदि साधारण-साधारण अवसरो पर जो वाक्य या वाक्यावली आती हैं वह सभी जगहो पर एक ही ढग की होती हैं। वही वाक्य बार-बार आने से अना-

यास ही जीभ पर चढ जाता है। जैसे सूत के गोले को फेकने से वह उघरता हुआ बढता जाता है, वैसे ही पाली के सूत्रो को पढने से आगे के वाक्य स्वय जीभ पर आने लगते है। शायद इसी लिए इस भाषा-शैली को "तन्ति"=तन्त्री=सूत कहते है।

पेय्याल

प्राय , किसी एक ही वाक्य के बार-बार आने पर सरलता के लिए एक **दो** शब्द लिखने के बाद **"पेय्याल"** लिख कर छोड देते है, जिससे समझ लिया जात है कि इसका पाठ ऊपर बार-बार आए वाक्य के समान ही होगा। 'पेय्याल' का अर्थ लका मे करते है, "पातु अल"—अर्थात्, इतने से वावय समझ लिया जा सकता है, और यह पाठ को बचाए रखने के लिए पर्याप्त है।

रायस डेविड्स अपनी डिक्शनरी मे इस शब्द का अर्थ लिखते हुए कहते है— **" 'परियाय' शब्द का मागधी स्वरूप"**। हमने 'पालि' शब्द की जो उत्पत्ति बताई है उससे रायस डेविड्स का अर्थ बिलकुल मिल जाता है। **'पालि' और 'पेय्याल' एक ही चीज है** जो मूल बुद्ध-वचन को बोध करता है।

पाँच निकाय

सूत्र-पिटक के ग्रन्थो को पाँच निकायो मे विभक्त करने मे सूत्रो के विषय का नही, किंतु उनके आकार-प्रकार का विचार किया गया है। लम्बे-लम्बे सूत्रो का सग्रह करके उसका नाम **'दीघनिकाय'** रक्खा गया। उसी तरह, मध्यम प्रमाण के सूत्रो के सग्रह को **'मज्झिम निकाय'**, तथा छोटे-छोटे सूत्रो के सग्रह को **'खुद्दक निकाय'** कहा। कुछ छोटे बडे दोनो प्रकार के सूत्रो के सग्रह का नाम **'संयुत्त निकाय'** रक्खा गया। सयुत्त निकाय मे पाँच वर्ग हैं, १ सगाथ वर्ग, २. निदान वर्ग, ३. स्कन्ध वर्ग, ४ षडायतन वर्ग, ५. महावर्ग। इसी निकाय के भीतर वर्गों का विभाजन विषय की दृष्टि से किया गया है। दूसरे निकायो मे भाग या वर्ग का विभाजन विषय की नही, किंतु सूत्रो के आकार की ही दृष्टि से किया गया है।

एकक निपात, द्विक निपात, तिक निपात आदि **अङ्गुत्तर निकाय** मे ग्यारह निपात है। एक-एक धर्म बताने वाले सूत्र एकक निपात मे, दो-दो धर्म बताने

वाले सूत्र द्विक निपात मे—तथा ग्यारह-ग्यारह धर्म बताने वाले सूत्र एकादस निपात मे है। जैसे —

एकक निपात—

नाहं भिक्खवे अञ्ञं एकधम्मम्पि समनुपस्सामि, यो एवं महतो अनत्थाय संवत्तति, यदिदं भिक्खवे पापमित्तता। पापमित्तता भिक्खवे महतो अनत्थाय संवत्तति।"

अर्थात्—भिक्षुओ ! मै किसी भी दूसरी चीज को नही देखता हूँ, जो इतनी ज्यादा अनर्थकर हो, जितनी 'पाप मित्रता'। भिक्षुओ ! पापमित्रता बहुत अनर्थकारी है।

द्विक निपात—

"द्वे मे भिक्खवे, असनिया फलन्तिया न सन्तसन्ति। कतमे द्वे? भिक्खू च खीणासवो, सीहो च मिगराजा। इमे० खो भिक्खवे, द्वे असनिया फलन्तिया न सन्तसन्तीति।"

अर्थात्—भिक्षुओ ! बिजली कडकने पर दो ही प्राणी चौक नही पडते है। कौन से दो ? क्षीणाश्रव भिक्षु और मृगराज सिह। भिक्षुओ ! यही दो बिजली कडकने पर चौक नही पडते[1]।

२. विनय-पिटक

विनय-पिटक मे भगवान् की उन शिक्षाओ का सग्रह है जो उन्होने समय-समय पर सघ-सचालन को नियमित करने के लिए दी थी। प्रव्रज्या की दीक्षा कैसे देनी चाहिए, शिष्य तथा आचार्य का परस्पर व्यवहार कैसा होना चाहिए, भिक्षुओ को कैसे रहना चाहिए, कैसे भिक्षाटन के लिए गॉव मे जाना चाहिए, कैसे उठना-बैठना, खाना-पीना चाहिए, क्या दोष करने से भिक्षु को क्या दण्ड देना चाहिए,

---

[1] **क्षीणाश्रव भिक्षु नहीं चौक पड़ता है, क्योकि उसका 'अहं-भाव' बिलकुल निरुद्ध हुआ रहता है। मृगराज सिंह नही चौक पडता है, क्योंकि उसका 'अहं-भाव' अत्यन्त प्रबल होता है; चौंकने के बदले वह और गरज उठता है कि कौन दूसरा उसकी बराबरी करने आ रहा है।**

किन-किन चीजो का व्यवहार भिक्षु को विहित है और किन-किन चीजो का निषिद्ध, आदि-आदि दैनिक जीवन की छोटी-छोटी बातो तक के विषय मे भगवान् की शिक्षाएँ इस पिटक मे मिलती है। जैसे राज्य के शासन के लिए 'पेनल कोड' है, वैसे ही सघ-शासन के लिए यह विनय-पिटक है। किस किस अवसर पर तथा परिस्थिति मे ये शिक्षाएँ बनी, रद्द की गई, या सशोधित की गई—इसका भी विशद वर्णन किया गया है।

विनय-पिटक मे निम्नलिखित ग्रन्थ है—

१. महावग्ग
२. चुल्लवग्ग
३. पाचित्तिय
४. पाराजिक
५. परिवार

प्रकरणों को छोड, इन ग्रन्थो से केवल मूल शिक्षापदो का भी एक सग्रह कर दिया गया है, जिसका नाम '**पातिमोक्ख**' है। भिक्षुओ के लिए उपदिष्ट शिक्षापदो का सग्रह 'भिक्खु-पातिमोक्ख', तथा भिक्षुणियो के लिए उपदिष्ट शिक्षापदो का सग्रह 'भिक्खुनी पातिमोक्ख' कहा जाता है। शिक्षापदो की सख्या कुल २२७ है।

३. अभिधम्म पिटक

अभिधम्म पिटक मे सात ग्रन्थ है—

१. धम्मसङ्गणी, २. विभङ्ग, ३. धातुकथा, ४. पुग्गलपञ्ञत्ति, ५. कथावत्थु, ६. यमक, ७. पट्ठान।

अभिधम्म-पिटक में चित्त, चैतसिक, आदि धर्मों का विशद विश्लेषण किया गया है। विज्ञान क्या है, सस्कार क्या है, वेदना क्या है, सज्ञा क्या है आदि आध्यात्मिक विषयो पर दार्शनिक गवेषणा की गई है, और आश्रवहीन निर्वाण की प्राप्ति का साधन बताया गया है। सूत्र-पिटक मे भगवान् ने जो धर्म बताया है उसी का यह दर्शन-शास्त्र है।

त्रिपिटक से अन्य ग्रन्थ

अट्ठकथा :—जैसे, वेदो के अर्थ स्पष्ट करने के लिए सायणाचार्य ने वृहद् भाष्य लिखा है, वैसे ही आचार्य बुद्धघोष तथा दूसरे आचार्य्यो ने सारे त्रिपिटक पर सुन्दर भाष्य लिखे है जिन्हे 'अट्ठकथा' कहते है। भिन्न-भिन्न ग्रन्थो की अट्ठकथा के नाम भिन्न-भिन्न है। जैसे —

सूत्रपिटक—दीघनिकाय—सुमङ्गल विलासिनी
मज्झिम निकाय—पपच सूदिनी
अगुत्तर निकाय—मनोरथ पूरणी
सयुत्त निकाय—सारत्थपकासिनी

खुद्दक निकाय के ग्रन्थो पर भी अट्ठकथा लिखी है।

विनय-पिटक—समन्तपासादिका
पातिमोक्ख—कङ्खावितरणी
धम्मसगणी—अट्ठसालिनी
विभङ्ग—सम्मोह विनोदिनी
धातुकथा—धातुकथाप्पकरण अट्ठकथा
पुग्गलपञ्ञत्ति—पकरण-अट्ठकथा
कथावत्थु—कथावत्थुप्पकरण अट्ठकथा
यमक—यमकप्पकरण अट्ठकथा
पट्ठान—पट्ठानप्पकरण अट्ठकथा

बौद्ध देशो मे अट्ठकथा को भी उसी गौरव की दृष्टि से देखते है जिससे पालि को। अट्ठकथा की भाषा अत्यन्त सुन्दर तथा सरल है। तत्कालीन भारतीय सस्कृति, राजनीति, समाज आदि ऐतिहासिक बातो की खोज के लिए त्रिपिटक तथा अट्ठकथा दोनो मे प्रचुर सामग्री है। हमारे गुरुभाई भिक्षु नागार्जुन ने त्रिपिटक-युग की आर्थिक अवस्था पर एक खोज-पूर्ण लेख महाबोधि सभा, सारनाथ से प्रकाशित होने वाले बौद्ध मासिक पत्र 'धर्मदूत' के ३।८ अक मे लिखा है।

विसुद्धिमग्गो :—यह ग्रन्थ भी आचार्य बुद्धघोष द्वारा लिखा गया है। लका के स्थविरो ने इनकी परीक्षा लेने के लिए इनको सयुत्त निकाय की दो गाथाएँ

दी, और उन्ही पर एक ग्रन्थ लिखने के लिए कहा। वे दो गाथाएँ यह थी—

प्रश्न—अन्तो जटा बहि जटा,
जटाय जटिता पजा।
तं तं गोतम पुच्छामि,
को इमं विजटये जटन्ति ?

अर्थात्—भीतर भी जटा है, बाहर भी जटा है, जटा से मनुष्य बेतरह जकडा हुआ है। अत, हे गौतम! मै आप से पूछता हूँ—कौन इस जटा को सुलझा सकता है ?

भगवान् का उत्तर—

सीले पतिट्ठाय नरो सपञ्ञो,
चित्तं पञ्ञञ्च भावयं,
आतापी निपको भिक्खु
सो इमं विजटये जटन्ति॥

अर्थात्—शील पर प्रतिष्ठित हो, अपने चित्त के क्लेशो को तपाने वाला, पण्डित भिक्षु चित्त और प्रज्ञा की भावना करते हुए इस जटा को सुलझा सकता है।

इन्ही दो गाथाओ पर आचार्य बुद्धघोष ने 'विसुद्धिमग्गो' लिखा है। ग्रन्थ का विषय योगाभ्यास है। योगाभ्यास की तैयारी से ले कर सिद्धि तक की सारी बाते सुन्दर ढग से समझाई गई है। पातञ्जल योग सूत्र मे योग विषयक सिद्धान्त भर दिए है, अभ्यास कैसे शुरू करना चाहिए और उसे धीरे-धीरे कैसे बढाना चाहिए यह नही बताया गया है। 'विसुद्धिमग्गो' प्रथम तैयारी के दिन से ले कर सिद्धि तक गुरु के ऐसा निर्देश करता जाता है।

बौद्ध देशो मे इस ग्रन्थ का सम्मान उतना ही है जितना त्रिपिटक का।

मिलिन्द पञ्हो :—

बौद्ध धर्म का अध्ययन करने वालो के मन मे जिस प्रकार की शकाये उठती है, कुछ वैसी शकाये आज से कोई डेढ हजार वर्ष पहले ग्रीस (यवन देश) के राजा 'मिलिन्द' के मन मे उठी थी। राजा को अपनी बुद्धि का बड़ा अभिमान था। वह अपने समय के विद्वानो से बहुत चकरा देने वाले प्रश्न किया करता था।

इस ग्रथ मे महा स्थविर 'नागसेन' ने उस राजा के प्रश्नो के मुँहतोड उत्तर दिये है। सिहल, वरमा, श्याम आदि बौद्ध देशो मे यह ग्रथ बुद्ध के अपने उपदेशो की तरह मान्य है।

अन्य ग्रन्थ :—पालि भाषा मे जितने ग्रन्थ मिलते है, सभी का सीधे, या घुमा फिरा कर बौद्ध धर्म से सम्बन्ध है। लका के इतिहास पर स्थविर **महानाम-कृत 'महावंस'** नामक एक सुन्दर ग्रन्थ मिलता है, जो पद्य-मय है। लका के इतिहास के साथ-साथ इसमे भारतवर्ष के इतिहास का भी वह अश चला आया है, जो बौद्ध सम्राटो से सम्बन्ध रखता है।

काशी, विद्यापीठ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'विद्यापीठ' के १९९३ आश्विन पौष-चैत्र अक मे 'पालि वाड्मय की अनुक्रमिका' शीर्षक एक सुन्दर लेख हमारे ज्येष्ठ गुरुभाई पूज्य भदन्त आनन्द कौसल्यायन जी ने लिखा है। उसमे उनने पालि वाड्मय के ग्रन्थो का सुन्दर परिचय दिया है।

पाँचवाँ खण्ड

व्याकरण

(क)

जिस तरह ऐन्द्र, चान्द्र, पाणिनीय, सारस्वत आदि सस्कृत भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण है, वैसे ही कच्चान, मोग्गलान, सद्दनीति आदि पालि भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण है। सज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, तथा अधिकार—इन छ प्रकार के सूत्रो से जैसे सस्कृत व्याकरण रचे गये है, वैसे ही पालि-व्याकरण भी।

पालि सरल तथा उस समय की बोल-चाल की भाषा होने के कारण, उसके व्याकरण मे उतने अधिक सूत्र नही है जितने सस्कृत व्याकरण मे। पालि भाषा के कच्चान व्याकरण मे ६७५ सूत्र, मोग्गलान मे ८१७ सूत्र, तथा सद्दनीति मे १३९१ सूत्र है।

पालि-व्याकरण का क्षेत्र

पालि भाषा, वैदिक भाषा की तरह, जीवित बोलचाल की भाषा थी। वैदिक भाषा के सभी प्रयोगो को पाणिनि ने अपने व्याकरण के सूत्रो मे सगृहीत करने का प्रयत्न किया, किंतु जीवित भाषा होने के कारण इतने अधिक अपवाद निकल आते थे कि सूत्र उनको नियम मे न ला सके। अत, **'बहुलं', 'नाम-व्यत्यय', 'क्रिया व्यत्यय'** करके छोड दिया। ठीक उसी तरह, पालि व्याकरण मे भी **'क्वचि', 'बहुल', 'वा'**, तथा **'विभाषा'** से अधिक काम लिया गया है। व्याकरण ही अधिक पढ़ कर कोई यदि पालि-भाषा के सभी प्रयोगो से परिचित होना चाहे तो यह सम्भव नही।

'सरो लोपो सरे १.२६—इस सूत्र से पर्व स्वर का लोप होता है; जैसे—

मद्धा+इध=सद्ध्+इध=**सद्धिध**। ठीक उसके बाद आने वाले सूत्र **'परो क्वचि'** १.२७ से पर स्वर का लोप होता है, जैसे—सो+एव=**सो'व**।

अब, कोई प्रश्न कर सकता है कि—किन-किन स्थानो मे पूर्व स्वर का, और किन-किन स्थानो मे पर स्वर का लोप होता है ? इसके उत्तर मे यही कहा जा सकता है कि इसका ज्ञान साहित्य-अवलोकन से होगा। व्याकरण, भाषा के गठन तथा आकृति भर को बताता है। उसमे प्रवेश करने के लिए, साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है।

व्याकरणकार

ऐसा जिक्र आता है कि भगवान् बुद्ध के प्रधान शिष्य **महाकच्चान** ने भी एक व्याकरण बनाया था, किंतु वह नही मिलता है। **बोधिसत्त** और **सब्बगुणाकर** नाम के भी दो प्राचीन व्याकरण थे, जो आजकल उपलब्ध नही हैं। आज-कल, **कच्चान, मोग्गल्लान, और सद्दनीति**—इन्ही तीन व्याकरणो का अधिक प्रचार है। इन तीनो मे अधिक प्राचीन 'कच्चान' व्याकरण है, जो शायद लका ही मे लिखा गया था। यह व्याकरण बडे सरल ढग से लिखा गया है।

पालि व्याकरण के कुछ और ग्रन्थो के नाम ये है—**रूपसिद्धि। बालावतार। महानिरुत्ति। चूलनिरुत्ति। निरुत्ति पिटक। सम्बन्ध चिन्ता। सद्दसारत्थजालिनी। कच्चान भेद। सद्दत्थ भेद चिन्ता। कारिका। कारिका-वुत्ति। विभत्यत्थ। गन्धत्थी। वाचकोपदेस। नयलक्खण विभावनी। निरुत्तिसंगह। सद्दवुत्ति। कारकपुप्फ मञ्जरी। गूलत्थदीपनी। मुखमत्तसार। सद्दबिन्दु। सद्दकलिका। सद्दविनिच्छिय** इत्यादि।

मोग्गल्लान

मोग्गल्लान व्याकरण आज से प्राय ७५० वर्ष पहले, प्रथम पराक्रम बाहु के समय लका मे लिखा गया था। व्याकरण-कर्ता मोग्गल्लान महाथेर अपने समय के संघ-राज थे। वे अनुराधपुर के थूपाराम विहार मे रहते थे, जहाँ ही सम्भवत. यह व्याकरण लिखा गया होगा। मोग्गल्लान की गिनती पाणिनि, चान्द्र, कात्यायन आदि महान् वैयाकरणो मे है।

पालि-व्याकरणों में, 'मोग्गल्लान' व्याकरण पूर्णता तथा गम्भीरता में श्रेष्ठ है।

इस व्याकरण का प्रचार लका और बर्मा दोनो जगह समान रूप से है। मोग्गल्लान व्याकरण के इर्द-गिर्द आगे चल कर कई ग्रन्थ लिखे गए—जैसे, पियदस्सी महाथेर-कृत **'पद-साधन'**; सघराज श्री सारिपुत्र-कृत **'पदावतार'**; सघराज सघरक्खित महाथेर-कृत **'सुसद्दसिद्धि'**; **'सम्बन्ध चिन्ता'** और **'सारत्थविलासनी'**; सघराज वनरत्न महाथेर-कृत **'पयोगसिद्धि'**; सघराज श्री राहुल-कृत **'बुद्धिप्प-सादनी टीका'**; और **'पञ्जिका प्रदीप'** इत्यादि।

साधारणत, वैयाकरण सूत्र ही लिख कर छोड देते थे; बाद मे कोई दूसरा उन पर वृत्ति लिखा करता था। किंतु, मोग्गलान महा थेर ने स्वयं सूत्र लिख कर उन पर वृत्ति भी लिखी, और फिर उस वृति पर 'पञ्चिका' (=व्याख्या) भी। इसी से मोग्गलान व्याकरण इतना पुष्ट तथा पूर्ण है।

अभी हाल तक 'मोग्गल्लान व्याकरण सूत्र-वृत्ति' तो मिलता था, किंतु 'पञ्चिका' लुप्त थी। हमारे दादा-गुरु **आचार्य श्री धम्माराम नायक महाथेर** ने १८९६ ई० मे **'पञ्चिका प्रदीप'** का सम्पादन करते हुए भूमिका मे लिखा था, **"मोग्गलान व्याकरण के अध्ययन करने में जो विद्यार्थियों का उत्साह इतना बढ़ रहा है उसमें 'पञ्चिका' का खो जाना बडा बाधक हो रहा है।"** सौभाग्य से हमारे गुरु **परमपूज्य विद्वद्वर श्री धर्मानन्द नायक महास्थविर को** ताल-पत्र पर लिखी 'पञ्चिका' की एक पुरानी पुस्तक लका के किसी विहार मे मिल गई। उन्होने उसे सम्पादित कर **विद्यालंकार परिवेण,** लका से प्रकाशित कराया। बडे परिश्रम से उनने इसमे गण-पाठ, ण्वादिपाठ (**उणादि पाठ**) आदि सुन्दर ढग से दिया है। पालि-व्याकरण का पाण्डित्य-पूर्ण अध्ययन करने के लिए यह ग्रन्थ परम आवश्यक है।

मोग्गल्लान व्याकरण में इन विशेषताओं को देख कर ही, मैंने अपनी इस पुस्तक में उसीका अनुसरण किया है। हर एक नियम के साथ, उसका सूत्र दे दिया है, तथा सूत्र की सख्या भी लिख दी है।

मोग्गल्लान व्याकरण के अन्तिम पृष्ठ पर एक गाथा आती है:—

सुत्त-धातु-गणो-ण्वादि
नामलिङ्गानुसासनं।
यस्स तिट्ठति जिह्वग्गे
सो व्याकरणकेसरी ॥

अर्थात्—जिसकी जीभ के अग्र भाग पर सूत्र-पाठ, धातु-पाठ, गण-पाठ,

'ण्वादि-पाठ', तथा कोष उपस्थित रहता है वही व्याकरण-केशरी है ।

'सूत्र पाठ', 'धातु पाठ', 'गण पाठ', तथा 'ण्वादि पाठ' हमने पुस्तक के अन्त मे दे दिए हैं ।

कोष के लिए, सब से उत्तम ग्रन्थ **'अभिधानप्पदीपिका'** है जो बम्बई से नागरी अक्षरो मे प्रकाशित हो गया है ।

(ख)

अअादयो तितालीस वण्णा १.१ :—पालि मे 'अ' आदि ४३ वर्ण है ।

दसादो सरा १.२ :—आदि के १० **स्वर** है

अ आ, इ ई, उ ऊ, एँ (ह्रस्व) ए, ओँ (ह्रस्व) ओ।

द्वे द्वे सवण्णा१.३ :—दो दो स्वर **सवर्ण** कहे जाते है ।

पुब्बो रस्सो १.४ :—उनके (=सवर्णो के) पूर्व वर्ण **ह्रस्व** हैं । जैसे— **अ, इ, उ, एँ, ओँ ।**

"संयुक्त अक्षर के पूर्व आने वाले 'ए' तथा 'ओ' ह्रस्व होते हैं ।" मोग्गलान

परो दीघो १.५ :—उनके (=सवर्णो के) दूसरे वर्ण **दीर्घ** होते है । जैसे.— **आ, ई, ऊ, ए, ओ ।**

कादयो व्यञ्जना १.६ :—'क' आदि ३३ वर्ण **व्यञ्जन** है। जैसे—

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य, र, ल, व, स, ह, ळ, अं।

नवीन सस्कृत ने 'ळ' वर्ण को छोड दिया ।

पञ्च पञ्चका वग्गा १.७ :—पॉच-पॉच के पाँच वर्ग है । जैसे— **कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग,** तवर्ग, **पवर्ग ।**

विन्दु निग्गहीतं १.८ :—'अं' को **निग्गहीत** कहते है ।

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स

पालि महाव्याकरण

विषय-सूची

वस्तु कथा

पहला खण्ड

दूसरा खण्ड

तीसरा खण्ड

चौथा खण्ड

पाँचवाँ खण्ड

पहला काण्ड

१ पाठ

नाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण शब्द)

२ पाठ

नाम-प्रकरण

(दूसरा भाग—साधारण शब्द)

३ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण सर्वनाम)

४ पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण नियम)

५ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण प्रयोग)

दूसरा काण्ड

१ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पहला भाग—वर्तमान काल)

२ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(दूसरा भाग)

३ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(दूसरा भाग—भविष्यत्काल)

४ पाठ

नाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—विशेष शब्द)

५ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(तीसरा भाग—परिसमाप्त्यर्थक भूत)

६ पाठ

नाम-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष शब्द)

७ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(दूसरा भाग—उपसर्ग)

तीसरा काण्ड

१ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(चौथा भाग—गण विचार)

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पाँचवाँ भाग—विधिलिङ्ग, अनुज्ञा)

३ पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(दूसरा भाग—शेष नियम)

४ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(पहला भाग—निष्ठा)

५ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(दूसरा भाग—तब्ब, तु, त्वा)

६ पाठ

विशेषण-प्रकरण

७ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—सख्या-वाचक)

चौथा काण्ड

१ पाठ

वाच्य-प्रकरण

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(छठा भाग—अनद्यतन, परोक्ष, हेतु० भूत)

३ पाठ

'वाला'-वाचक प्रत्यय

(क)

(कृदन्त-प्रकरण—तीसरा भाग)

(ख)

(तद्धित-प्रकरण—पहला भाग)

४ पाठ

भाववाचक प्रत्यय

(क)

(कृदन्त-प्रकरण—चौथा भाग)

(ख)

(तद्धित-प्रकरण—दूसरा भाग)

५ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(सातवाँ भाग—प्रेरणार्थक)

(ख)

(विभक्ति-प्रकरण—तीसरा भाग)

६ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(तीसरा भाग—अव्यय)

(तद्धित प्रकरण—तीसरा भाग)

पाँचवाँ काण्ड

१ पाठ

सन्धि-प्रकरण

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(आठवाँ भाग—सनन्त)

३ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(नवाँ भाग—नाम धातु)

४ पाठ

स्त्री-प्रत्यय

छठा काण्ड

१ पाठ

(क)

तद्धित-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष प्रत्यय)

२ पाठ

(ख)

तद्धित-प्रकरण

३ पाठ

समास-प्रकरण

४ पाठ

समासान्त-प्रत्यय

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पालि महाव्याकरण

पहला काण्ड

पहला पाठ

नाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण शब्द)

§ १ जैसे, हिन्दी मे कारक प्रकट करने के लिए, शब्द के आगे 'ने', 'को', 'से', 'के लिए' इत्यादि, कारक के चिन्ह व्यवहृत होते है, उसी तरह, पालि मे—कारक तथा वचन प्रकट करने के लिए—शब्द से परे 'सि', 'यो', 'अ' इत्यादि विभक्तियाँ लगती है। विभक्तियो के लगने से शब्द के जो रूप बनते है, उन्हे 'पद' कहते है।

साधारणत, 'पठमा' विभक्ति कर्ता मे, 'दुतिया' कम मे, 'ततिया' करण मे, 'चतुत्थी' सम्प्रदान मे, 'पञ्चमी' अपादान मे, 'छट्ठी' सम्बन्ध मे, 'सत्तमी' अधिकरण में, तथा 'आलपन' सम्बोधन मे प्रयुक्त होती है।

विभक्तियो के लगने से शब्द के रूप निम्न प्रकार होते है —

§२. अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द[1]

बुद्ध

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	बुद्धो[2] (बुद्धे[3])	बुद्धा[4]
दुतिया	बुद्ध	बुद्धे[4]
ततिया	बुद्धेन[5]	बुद्धेहि,[6] बुद्धेभि[7]
चतुत्थी	बुद्धाय,[8] बुद्धस्स[9]	बुद्धान[9]
पञ्चमी	बुद्धा,[11] बुद्धम्हा,[7] बुद्धस्मा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
छट्ठी	बुद्धस्स	बुद्धान
सत्तमी	बुद्धे[11] बुद्धम्हि,[7] बुद्धस्मि	बुद्धेसु[6]
आलपन	बुद्ध,[12] बुद्धा[13]	बुद्धा

---

१ द्वेद्वेकानेकेसु नामस्मा सियो अयो नाहि सन स्माहि सन स्मिसु २ १—नामसे परे, ये विभक्तियाँ होती है। जैसे —

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा } आलपन	सि (ग)	यो
दुतिया	अ	यो
ततिया	ना	हि
चतुत्थी	स	न
पञ्चमी	स्मा	हि
छट्ठी	स	न
सत्तमी	स्मि	सु

२ सिस्सो २ १११—अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम से परे, 'सि' विभक्ति का 'ओ' आदेश हो जाता है। जैसे —बुद्ध+सि=बुद्ध+ओ=बुद्धो।

३ क्वचे वा २ ११२—अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम से परे, 'सि' विभक्ति का कही कही विकल्पसे 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे — "वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे" ('खुद्दक-पाठ', 'रतन' सूत्र)।

४ अतो यो न टा टे २ ४३—अकारान्त नाम से परे, पठमा की 'यो' विभक्ति का 'टा' (='आ'), तथा दुतिया की 'यो' विभक्ति का 'टे' (='ए') आदेश हो जाता है। जैसे —*पठमा* —बुद्ध+यो=बुद्ध+आ=**बुद्धा**। *दुतिया* —बुद्ध+यो=बुद्ध+ए=**बुद्धे**।

५ अ ते न २ ११०—अकारान्त नाम से परे, 'ना' विभक्ति का 'एन' आदेश हो जाता है। जैसे —बुद्ध+ना=बुद्ध+एन=**बुद्धेन**।

६ सु हि स्व स्से २ १००—'सु' तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, नाम के अन्त्य 'अ' का 'ए' हो जाता है। जैसे —बुद्ध+सु=**बुद्धेसु**। बुद्ध+हि=**बुद्धेहि**।

७ स्मा हि स्मि न म्हा भि म्हि २ ९९—नाम से परे, 'स्मा', 'हि', तथा 'स्मि' विभक्तियो का, विकल्प से क्रमश 'म्हा', 'भि', तथा 'म्हि' आदेश हो जाता है। जैसे —**बुद्धम्हा=बुद्धस्मा**। **बुद्धेहि=बुद्धेभि**। **बुद्धम्हि=बुद्धस्मि**।

८ अ-स्साय चतुत्थिया २ ४६—'चतुत्थी' मे, अकारान्त नाम से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'आय' आदेश हो जाता है। जैसे —बुद्ध+स= बुद्ध+आय=**बुद्धाय**, **बुद्धस्स**।

९ सुञ् स स्स २ ५३—नाम से परे, 'स' विभक्ति का 'स्स' आदेश हो जाता है। जैसे —बुद्ध+स=**बुद्धस्स**।

१० सु न हि सु २ ९१—'सु', 'न' तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, नाम के अन्त्य स्वर का कही कही दीघ होता है। जैसे —**मुनीसु**। **मुनीन**, **बुद्धान**। **अग्गीहि**।

११ स्मा स्मि न २ ४५—अकारान्त नाम से परे, 'स्मा' तथा 'स्मि' विभक्तियो का विकल्प से क्रमश 'टा' (='आ') तथा 'टे' (='ए') आदेश हो जाता है। जैसे —बुद्ध+स्मा=बुद्ध+आ=**बुद्धा**, **बुद्धस्मा**। बुद्ध+स्मि=बुद्ध+ए=**बुद्धे**, **बुद्धस्मि**।

१२ ग सी न २ ११९—यदि और कोई दूसरी विधि न की गई हो, तो 'ग' तथा 'सि' विभक्तियो का लोप होता है। जैसे —

बुद्ध+सि (=ग)=**बुद्ध**! दण्डी+सि=**दण्डी**।

१३ अयू न वा दीघो २ ६१—तीनो लिङ्गो मे, अकारान्त, इकारान्त, तथा उकारान्त नाम से परे, 'ग' (=सि) विभक्ति आने पर, नामका अन्त्य स्वर विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे —बुद्ध+ग=**बुद्धा**, **बुद्ध**! **हे मुनी**, **मुनि**! **हे भिक्खू**, **भिक्खु**!

शब्दावली —सुर, असुर, नर, उरग, नाग, यक्ख (=यक्ष), गन्धब्ब (=गन्धव), किन्नर, मनुस्स, पिसाच, पेत, मातङ्ग (=हाथी), तुरङ्ग, वराह, सीह (=सिह), व्यग्घ (=बाघ), अच्छ (=भालू), कच्छप, सोन (=कुत्ता), आलोक, लोक, निलय, चाग, (=त्याग), योग, वायाम (=व्यायाम), गाम (=गाँव), निगम (=कस्बा), धम्म (=धम), सघ, ओघ (=बाढ), पटिघ (=द्वेष), सारम्भ (=झगडा), थम्भ (=स्तम्भ), पमाद (=प्रमाद), मक्ख (=कजूसी), रुक्ख (=वृक्ष), इत्यादि अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान होते है।

§ ३. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द—फल

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	फल[१४]	फला,[१५] फलानि[१६]
दुतिया	फल	फले,[१५] फलानि[१६]
आलपन	फल, फला	फलानि

शेष रूप 'बुद्ध' शब्द के समान

शब्दावली—चित्त, पुञ्ञ (=पुण्य), पाप, रूप, सोत (=कान), घाण (=घ्राण), सुख, दुक्ख, कारण, दान, सील, धन, झान (=ध्यान), लोचन, मूल,

---

१४ अ नपुसके २ ११३—नपुसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, 'सि' विभक्ति का 'अ' आदेश हो जाता है। जैसे—फल+सि=फल।

१५ नीन वा २ ४४—नपुसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, विकल्प से 'पठमा' के 'नि' का 'टा' (='आ'), तथा 'दुतिया' के 'नि' का 'टे' (='ए') आदेश हो जाता है। जैसे—फल+नि=फल+आ=फला। फल+नि=फल+ए=फले।

१६ योन नि २ ११४—नपुसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, 'यो' विभक्ति का 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे—फल+यो=फलानि।

योलोपनिसु दीघो २ ९०—'यो' विभक्ति के लोप होने, अथवा 'नि' परे होने से, नाम का अन्त्य स्वर दीघ हो जाता है। जैसे—मुनि+यो=मुनी। *फलानि*। अट्ठीनि। आयूनि।

कुल, बल, जाल, मङ्गल, लिङ्ग, मुख, अङ्ग, जल, पुलिन, धञ्ञ (=धान), **हिरञ्ञ** (=सोना), **अमत** (=अमृत), **पदुम** (=कमल), **पण्ण** (=पत्ता), **सुसान** (=स्मशान), **वन, आयुध** (=अस्त्रशस्त्र), **हदय** (=हृदय), **चीवर** (=काषाय वस्त्र), **वत्थ** (=वस्त्र), **इन्द्रिय, नयन, वदन, यान** (=रथ), **ओदन** (=भात), **सोपान** (=सीढी), **पाण** (=प्राण), **भवन, भुवन, तुण्ड** (=चोच), **अण्ड, पीठ** (=पीढा), **मरण, ञाण** (=ज्ञान), **आरम्मण** (=आलम्बन), **अरञ्ञ** (=जगल), **नगर, तगर** (=एक सुगन्ध), **छत्त** (=छाता), **छिद्द** (=छेद), **उदक** (=पानी), इत्यादि अकारान्त नपुसक लिङ्ग शब्द के रूप 'फल' शब्द के समान होते है।

§ ४. इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

मुनि (=साधु)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	मुनि	मुनी,[17] मुनयो[18]
दुतिया	मुनि	मुनी, मुनयो
ततिया	मुनिना	मुनीहि, मुनीभि
चतुत्थी	मुनिनो,[19] मुनिस्स	मुनीन
पञ्चमी	मुनिना,[20] मुनिम्हा, मुनिस्मा	मुनीहि,[21] मुनीभि
छट्ठी	मुनिनो, मुनिस्स	मुनीन[21]
सत्तमी	मुनिम्हि, मुनिस्मि	मुनिसु, मुनीसु[21]
आलपन	मुनि, मुनी	मुनी, मुनयो

---

१७ **लोपो २ ११६**—'झ' (='इ', 'ई') तथा 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का लोप होजाता है। जैसे —मुनि+यो=**मुनी। अट्ठी। दण्डी। आयू।**

१८ **योसु झिस्स पुमे २ ९५**—'यो' विभक्ति आने से, पुल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य 'इ' का विकल्प से 'अ' हो जाता है। जैसे —मुनि+यो=**मुनयो।**

१९ **झला सस्स नो २ ८३**—'झ' तथा 'ल' से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'नो' आदेश हो जाता है। जैसे —**मुनिनो। दण्डिनो। भिक्खुनो। सयम्भुनो।**

शब्दावली—पाणि (=प्राणी), गण्ठि (=गाठ), मुट्ठि (=मुक्का), कुच्छि (=पेट), सालि (=एक चावल), वीहि (=धान), व्याधि (=रोग), सन्धि (=जोड), रासि (=राशि), दीपि (=बाघ), इसि (=ऋषि), मणि, धनि, गिरि, रवि, कवि, कपि, असि, मसि (=राख), निधि, विधि, अहि (=साँप), किमि (=कीडा), पति, हरि, अरि, कलि (=काला), बलि, जलनिधि, गहपति (=गृहपति), वरमति (=श्रेष्ठ बुद्धि वाला), अधिपति, इत्यादि इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'मुनि' शब्द के समान होते है।

§ ५. इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

अट्ठि (=हड्डी)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अट्ठि	अट्ठीनि,[२२] अट्ठी[२२]
दुतिया	अट्ठि	अट्ठीनि,[२२] अट्ठी
आलपन	अट्ठि	अट्ठीनि, अट्ठी

शेष रूप 'मुनि' शब्द के समान

---

२० **ना स्मास्स** २ ८४—'झ' (='इ', 'ई') तथा 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'स्मा' विभक्ति का विकल्प से 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे —मुनि+स्मा =**मुनिना। दण्डिना, दण्डिस्मा। भिक्खुना, भिक्खुस्मा। सयम्भुना, सयम्भुस्मा।**

२१ **सुनहिसु** २ ६१—'सु', 'न' तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, नाम के अन्त्य स्वर का दीघ हो जाता है। जैसे —**मुनीसु। मुनीन। मुनीहि।**

२२ **झला वा** २ ११५—नपुसक लिङ्गमे, 'झ' (='इ', 'ई') तथा 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे —अट्ठि+यो=**अट्ठीनि, अट्ठी। आयूनि, आयू।**

लोपो २ ११६—'झ' (='इ', 'ई') तथा 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे —**अट्ठी, दण्डी, आयू, अग्गी, भिक्खू।**

शब्दावली—**दधि** (=दही), **वारि** (=पानी), **अक्खि** (=आँख), **अच्चि** (=आँच) आदि इकारान्त नपुसक लिङ्ग शब्द के रूप 'अट्ठि' शब्द के समान होते हैं।

§ ६. उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भिक्खु (=*भिक्षु*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	भिक्खु	भिक्खू, भिक्खवो[23] *
दुतिया	भिक्खु	भिक्खू, भिक्खवो
ततिया	भिक्खुना	भिक्खूहि, भिक्खूभि
चतुत्थी	भिक्खुनो, भिक्खुस्स	भिक्खून
पञ्चमी	भिक्खुना, भिक्खुस्मा, भिक्खुम्हा	भिक्खूहि, भिक्खूभि
छट्ठी	भिक्खुनो, भिक्खुस्स	भिक्खून
सत्तमी	भिक्खुस्मि, भिक्खुम्हि	भिक्खुसु, भिक्खूसु
आलपन	भिक्खु	भिक्खू, भिक्खवे, भिक्खवो[24] *

शब्दावली—**सेतु** (=पुल), **केतु** (=पताका), **भानु** (=सूर्य), **राहु**, **उच्छु** (=ईख), **वेलु** (=बाँस), **मच्चु** (=मार, मृत्यु), **सिन्धु** (=समुद्र), **मधु**, **मेरु** (=पहाड), **सत्तु** (=शत्रु), **कारु** (=विश्वकर्मा), **हेतु**, **जन्तु**, **पटु**, आदि उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'भिक्खु' शब्द के समान होते हैं।

---

२३ **लायोन वो पुमे २८५**—पुल्लिङ्ग 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'वो' आदेश होता है। जैसे—भिक्खु+यो=**भिक्खवो, भिक्खू। सयम्भूवो, सयम्भू।**

२४ **पुमालपने वेवो २९८**—यदि आलपन मे 'यो' विभक्ति आवे, तो पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द से परे, उसका 'वे' तथा 'वो' आदेश होता है। जैसे—हे **भिक्खवे, भिक्खवो।**

*** वे वो सु लुस्स २९९**—पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द से परे, यदि 'वे' या 'वो' आवे, तो उसके 'उ' का 'अ' हो जाता है। जैसे—**भिक्खवे, भिक्खवो।**

§ ७. उकारान्त नपुसकलिङ्ग शब्द

आयु

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	आयु	आयूनि, आयू
दुतिया	आयु	आयूनि, आयू
आलपन	आयु	आयूनि, आयू

शेष रूप 'भिक्खु' शब्द के समान

शब्दावली—**चक्खु** (=आख), **वसु** (=धन), **धनु** (=तीर), **दारु** (=लकडी), **तिपु** (=सीसा), **मधु**, **वत्थु** (=कहानी), **जतु** (=लाह), **अम्बु** (=पानी), **अस्सु** (=आँसू) आदि उकारान्त नपुसकलिङ्ग शब्द के रूप 'आयु' शब्द के समान होते है।

§ ८. विशेषण

विशेष्यमे जो लिङ्ग, विभक्ति, और वचन होते है, वही लिङ्ग, विभक्ति, और वचन उसके विशेषणमे भी होते है। जैसे —

लिङ्ग मे

पुल्लिङ्ग	इत्थिलिङ्ग	नपुसकलिङ्ग
सुन्दरो बालको	सुन्दरी बालिका	सुन्दर फल

विभक्ति मे

पठमा	सुन्दरो बालको
दुतिया	सुन्दर बालक
ततिया	सुन्दरेन बालकेन
चतुत्थी	सुन्दराय बालकाय इत्यादि

वचन मे

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सुन्दरो बालको	सुन्दरा बालका
दुतिया	सुन्दर बालक	सुन्दरे बालके इत्यादि

विशेषण—शब्दावली—**अखिल** (=सारा), **अगाध, अटल, अतीत** (=बीता हुआ), **अब्भुत** (=अद्भुत), **अधम** (=नीच), **अनुत्तर** (=सर्वोत्तम), **अनुरत्त** (=राग मे पडा हुआ), **अन्ध** (=अन्धा), **अलस** (=आलसी), **अप्प** (=अल्प), **अड्ढ** (=धनी), **अज्झत्तिक** (=आध्यात्मिक), **उग्ग** (=उग्र), **उच्च** (=ऊँचा), **उस्सुक** (=उत्सुक), **उम्मत्त** (=पागल), **उण्ह** (=गम), **उजु** (=सीधा), **एकच्च** (=कोई), **कटुक** (=कडुआ), **काण** (=काना), **कन्त** (=प्रिय), **कुटिल** (=टेढा), **कपण** (=कृपण), **गभीर** या **गम्भीर** (=गहरा), **गरु** (=भारी), **गोल** (=गोला), **घोर** (=भयङ्कर), **चञ्चल, चपल, चारु** (=सुन्दर), **जटिल** (=जटाधारी, उलझा), **दारुण, दिब्ब** (=दिव्य), **दुग्गम** (=दुगम), **दुब्बल** (=दुबल), **दुक्कर** (=दुष्कर), **धम्मिक** (=धार्मिक), **धुत्त** (=व्यसनी), **नग्ग** (=नगा), **नव-नवीन** (=नया), **निच्च** (=नित्य), **निसित** (=तेज), **नूतन** (=नया), **पक्क** (=पका हुआ), **पटु** (=चालाक), **पोराण** (=पुराना), **पुथु** (=फैला हुआ), **पेत्तिक** (=पैतृक), **पगब्भ** (=प्रगल्भ), **पहूत** (=अधिक), **पाकट** (=प्रसिद्ध), **पिय** (=प्रिय), **फरुस** (=कठोर), **बधिर** (=बहरा), **बहु** (=बहुत), **भस्सर** (=चमकीला), **भीरु** (=डरपोक), **भुस** (=बहुत), **मत** (=मृत), **मनञ्ञ** (=मनोज्ञ), **मलिन,** (=मैला), **मह** (=बडा), **महग्घ** (=कीमती), **मूग** (=गूँगा), **मुदु** (=मृदु), **रम्म** (=रम्य), **रस्स** (=ह्रस्व), **रित्त** (=रिक्त), **रुण्ण** (=रुग्न), **लहु** (=हलका), **विचक्खण** (=होशियार), **विचित्त** (=विचित्र), **विनीत, विसाल, वित्थत** (=विस्तृत), **सन्त** (=शान्त), **सीतल** (=शीतल), **सुक्क** (=उजला), **सुचि** (=पवित्र), **सुभ** (=शुभ), **सुक्ख** (=सूखा), **सुञ्ञ** (=शून्य), **सेत** (=उजला), **सकल** (=सभी), **सफल, समान, सित** (=उजला), **सुगम, हट्ठ** (=प्रसन्न) इत्यादि विशेषण है।

पुल्लिङ्ग में—अकारान्त विशेषण के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान, इकारान्त विशेषण के रूप 'मुनि' शब्द के समान, तथा उकारान्त विशेषण के रूप 'भिक्खु' शब्द के समान होगे। **नपुसक लिङ्ग में**—अकारान्त विशेषण के रूप 'फल' शब्द के समान, इकारान्त विशेषण के रूप 'अट्ठि' शब्द के समान, तथा उकारान्त विशेषण के रूप 'आयु' शब्द के समान होगे। जैसे —

पुल्लिङ्ग'—अतीतो भूपो, अतीता भूपा। सुचि कूपो, सुचयो कूपा। मुदु बालको, मुदवो बालका।

नपुंसक'—अतीत नगर, अतीतानि नगरानि। सुचि जल, सुचीनि जलानि। मुदु फल, मुदूनि फलानि।

[स्त्रीलिङ्ग विशेषण शब्द के रूप के लिए देखिए—पृ० १५८]

१. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्धान **सासन**। बुद्धान **धम्मो**। बुद्धस्स **सावको**। **देवान** इन्दो। बुद्धस्स सरण। धम्मस्स सरण। सङ्घस्स सरण। बुद्धो देवान च **मनुस्सान** च नायको। ब्राह्मणान **गामो**। बुद्धस्स सावका। सङ्घाय **दान**। निब्बाणाय धम्मो। देवान झानानि।

(ख) **मुनयो** बुद्धस्स सावका। भिक्खून सङ्घो। इसीन झान। अट्ठीन सघातो। **आयुनो** खयो। भिक्खुस्स दान। झाना निब्बाण। आयुनो सहानि।

(ग) बुद्धो विहरति (=विहार करते है)। **देवा** नन्दन्ति (=आनन्द करते है)। भिक्खू झायन्ति (=ध्यान करते है)। मनुस्सा पस्सन्ति (=प्रशसा करते है)। सक्को देवान इन्दो बुद्ध नमस्सति (=प्रणाम करता है)। मुनयो वदन्ति (=बोलते है)। फलानि पतन्ति (=गिरते है)। भिक्खवो सज्झायन्ति (=पाठ करते है)।

(घ) बुद्धो भिक्खून धम्म देसेति (=उपदेश करते है)। देवा बुद्धस्स सरण गच्छन्ति (=जाते है)। बुद्धो धम्म पकासेति (=प्रकाशित करते है)। भिक्खू **अरञ्ञे** झायन्ति (=ध्यान करते है)। बुद्धो निब्बाणाय भिक्खून धम्म देसेति (=उपदेश करते है)। भिक्खवो सङ्घे वसन्ति (=वास करते है)। मुनयो बुद्ध नमस्सन्ति (=प्रणाम करते है)। सावका बुद्धस्स सरण गच्छन्ति (=जाते है)। देवा देवे पस्सन्ति (=देखते है)। मनुस्सा फलानि खादन्ति (=खाते है)। देवा **सग्ग** गच्छन्ति (=जाते है)। भिक्खू झान भावेन्ति (=भावना करते है)। सावका भिक्खुना सह गच्छन्ति (=जाते है)।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे पदो के रूप पठमा, ततिया तथा छट्ठी विभक्ति में लिखिए।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

बुद्धो का धम्म। देवो का ध्यान। बुद्धो की शरण। भिक्खुओ का नायक। देवो का सङ्घ। ऋषियो का ध्यान। बुद्ध के श्रावको का ग्राम। भिक्खुओ के

लिए दान। सङ्घ के लिए दान। निर्वाण के लिए बुद्धो का शासन। देवो के लिए बुद्ध का धम्म। ग्राम से ग्राम को। विहार से विहार को। बुद्धो के शासन मे लगन (=योगो)।

भिक्षु लोग ध्यान करते है (=झायन्ति)। मनुष्य लोग बुद्ध को नमस्कार करते है (=नमस्सन्ति)। बुद्ध धम्म को प्रकाशित करते है (=पकासति)। ऋषि लोग स्वर्ग के लिए ध्यान करते है (=झायन्ति)। मुनि लोग बुद्धो के धर्म की प्रशसा करते है (=पससन्ति)। देवता बुद्ध को नमस्कार करते है (=नमस्सन्ति)। बुद्ध के साथ भिक्षु लोग जाते है (=गच्छन्ति)।

४ नीचे काले अक्षरो में छपे पदो की विभक्ति बताइए—

ब्राह्मणान **गामा**। भिक्खु **गामा** आगच्छति (=आता है)। देवो **देवेहि** आगच्छति (=आता है)। भिक्खू **देवे** पससन्ति (=प्रशसा करते है)। भिक्खू **विहारे** वसन्ति (=वास करते है)। मनुस्सा **विहारे** पस्सन्ति (=देखते है)। देवा **सग्गा** आगच्छन्ति (=आते है)। **भिक्खू भिक्खू** नमस्सन्ति (=प्रणाम करते है)। **मुनी मुनी** पससन्ति (=प्रशसा करते है)। **झान झान** वड्ढेति (=बढाता है)। **भिक्खून** दान देति (=देता है)। **भिक्खून** झान।

५ ऊपर काले अक्षरो में छपे पदो के पठमा तथा दुतिया विभक्ति में रूप लिखिए, और उनका वाक्यो में प्रयोग कीजिए।

६ निम्नलिखित शब्दो से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—बुद्धो, धम्म, भिक्खून सङ्घे, देवा, देवान लोकेसु, सावका, मनुस्सान लोके, सरण, निब्बाणाय झान, सग्गाय दान।

क्रिया-पदानि—देसेति (=उपदेश करता है), पकासेति (=प्रकाशित करता है), गच्छन्ति (=जाते ह), करोन्ति (=करते ह), देन्ति (=देते ह), भावेति-न्ति (=भावना करना)।

पहला काण्ड

दूसरा पाठ

नाम-प्रकरण

(दूसरा भाग—साधारण शब्द)

§ ६. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लता

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	लता[1]	लता,[2] लतायो
दुतिया	लत	लता,[2] लतायो
ततिया	लताय[3]	लताहि, लताभि
चतुत्थी	लताय[3]	लतान
पञ्चमी	लताय[3]	लताहि, लताभि
छट्ठी	लताय[3]	लतान

---

१ गसीन २ ११६—यदि कोई दूसरी विधि न हो, तो 'ग' तथा 'सि' का लोप हो जाता है। जैसे —लता+सि=लता। मुनि। दण्डी। भिक्खु। बधू। गो।

२ जन्तुहेत्वीघपेहि वा २ ११७—'जन्तु', 'हेतु', ईकारान्त शब्द, तथा 'घ' (='आ') और 'प' (='इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से लोप होता है। जैसे—जन्तू, जन्तुयो। हेतू, हेतुयो। दण्डी, दण्डियो। लता, लतायो। रत्ती, रत्तियो। इत्थी, इत्थियो। धेनू, धेनुयो। वधू, वधुयो।

३ घपतेकस्मि नादीन यया २ ४७—'घ' (='आ') तथा 'प' (='इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'ना' आदि एकवचन की विभक्तियो का क्रमश 'य' तथा 'या' आदेश हो जाता है। जैसे —लताय। रत्तिया। इत्थिया। धेनुया। वधुया।

सत्तमी	लताय[4], लताय[3]	लतासु
आलपन	लते[5]	लता, लतायो

शब्दावली—**अग्गता** (= अग्रता), **अच्छरा** (=अप्सरा), **अञ्ञा** (=परमज्ञान), **अनुद्दया** (= अनुकम्पा), **अभिज्झा** (=लोभ), **अम्मा** (=माता), **अविज्जा** (=अविद्या), **आणा** (=फरमान), **आसा** (= इच्छा), **ईहा** (=चेष्टा), **उक्का** (=उल्का), **उपदा** (=बैना), **उम्मा** (=अतसी), **एजा** (=कपन), **कच्छा** (=काख), **कन्धरा** (=कधा), **करका** (=ओला), **करुणा** (=करुणा), **कुच्छा** (=घृणा), **कुहणा** (=ढोंग), **गाथा** (=श्लोक), **चन्दिमा** (=चन्द्रमा), **छाया जटा**, **जिगुच्छा** (=घृणा), **तण्हा** (=तृष्णा), **दयिता** (=प्यारी), **नावा** (=नौका), **पटिपदा** (=मार्ग), **पिच्छिला** (=पछला), **पुच्छा** (=हालचाल पूछना), **बाहा** (=बाहु), **ब्रहा** (=वृद्धि), **मेत्ता** (=मित्रता), **सुणिसा** (=पतोहू), **सभा**, आदि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप 'लता' के समान होते है।

§ १०. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रत्ति (=*रात्रि*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो[6]
दुतिया	रत्तिं	रत्ती, रत्तियो, रत्यो[6]

---

४ **य २१०५**—'घ' (='आ') तथा 'प' ('इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'य' आदेश हो जाता है। जैसे —**लताय, लताय। रत्तिय, रत्तिया। वधुय, वधुया। सब्बाय, सब्बाय। अमुय, अमुया।**

५ **घब्रह्मादितो ए २६२**—'घ' (='आ') तथा 'ब्रह्म' आदि शब्दो से परे, 'ग' विभक्ति का विकल्प से 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—**हे लते, लता! भो ब्रह्मे, ब्रह्म! भो कत्ते, कत्त! भो इसे, इसि! भो सखे, सख!** [देखिए—तीसरा परिशिष्ट]

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	रत्तिया, रत्या[६]	रत्तीहि, रत्तीभि
चतुत्थी	रत्तिया, रत्या	रत्तीन
पञ्चमी	रत्तिया, रत्या	रत्तीहि, रत्तीभि
छट्ठी	रत्तिया, रत्या	रत्तीन
सत्तमी	रत्तिय, रत्य,[६] रत्या, रत्तिं, रत्तो,[७] रत्तिया	रत्तीसु, रत्तिसु
आलपन	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो

शब्दावली—युत्ति (=युक्ति), वुत्ति (=खबर), कित्ति (=कीति), मुत्ति (=मुक्ति), तित्ति (=तृप्ति), खन्ति (=सहनशीलता), सन्ति (=शान्ति), सिद्धि, सुद्धि, इद्धि (=ऋद्धि), वुद्धि (=वृद्धि), बुद्धि, बोधि (=ज्ञान), भूमि, जाति, पीति (=प्रीति), नन्दि (=तृष्णा), सन्धि, कोटि (=करोड), दिट्ठि (=मत), वुट्ठि (=वृष्टि), तुट्ठि (=सतोष), यट्ठि (=लाठी), पालि (=पंक्ति), सति (=स्मृति), धूलि, आदि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'रत्ति' शब्द के समान होते है।

§ ११. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इत्थी (=स्त्री)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	इत्थी	इत्थी, इत्थियो
दुतिया	इत्थियं, इत्थिं[८]	इत्थी, इत्थियो

---

६ **ये पस्सिवण्णस्स २११८**—यकार परे हो, तो स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ' तथा 'ई' का विकल्प से लोप होता है। जैसे—

रत्ति+यो=रत्यो। रत्ति+ना (**घपतेकस्मिं नादीनं यया २४७**)= रत्ति+या=रत्या। रत्ति+स्मिं=(**य २१०५**)=रत्ति+य=रत्य।

७ **रत्यादीहि टो स्मिनो २५७**—'रत्ति' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'ओ' आदेश होता है। जैसे—

रत्ति+स्मिं=रत्तो, रत्तिय। आदो, आदिस्मिं।

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
चतुत्थी	इत्थिया	इत्थीन
पञ्चमी	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
छट्ठी	इत्थिया	इत्थीन
सत्तमी	इत्थिय, इत्थिया	इत्थीसु
आलपन	इत्थि	इत्थी, इत्थियो

शब्दावली—नदी, मही (=पृथ्वी), वेतरणी, वापी (=कूआ), पाटली, कदली, नारी, कुमारी, तरुणी, वारुणी, ब्राह्मणी, सखी, गन्धब्बी (=गन्धव स्त्री), किन्नरी, नागी, देवी, यक्खी (=यक्ष स्त्री), अजी (=बकरी), मिगी (=मृगी), वानरी, सूकरी, सीही (=सिही), हसी, कुक्कुटी (=मुर्गी) इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'इत्थी' शब्दके समान होते है ।

§ १२. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (=*गाय*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	धेनु	धेनू, धेनुयो
दुतिया	धेनु	धेनू, धेनुयो
ततिया	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
चतुत्थी	धेनुया	धेनून
पञ्चमी	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि

---

८ य पीतो २७५—स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, 'अ' विभक्ति का विकल्प से 'य' आदेश हो जाता है । जैसे —इत्थी+अ=इत्थिय, इत्थि ।

एकवचनयोसु अघोन २६६—तीनो लिङ्गो के एक वचन मे, तथा 'यो' विभक्ति आने से, 'घ' और ओकारान्त शब्दो को छोड, दूसरे शब्दो के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे —दण्डिन, दण्डि, दण्डिनो, दण्डिना, दण्डिस्मा। इत्थि, इत्थिया, इत्थियो । वधु, वधुया, वधुयो। सयम्भु, सयम्भुना, सयम्भुवो ।

	एकवचन	अनेकवचन
छट्ठी	धेनुया	धेनून
सत्तमी	धेनुय, धेनुया	धेनूसु
आलपन	धेनु	धेनू, धेनुयो

शब्दावली—धातु, यागु (=यवागु), कासु (=गड्ढा), दद्दु (=दाद), कच्छु (=खाज), रज्जु (=रस्सी), आदि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'धेनु' शब्द के समान होते हैं।

§ १३. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वधू (=बहू)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	वधू	वधू, वधुयो
दुतिया	वधु	वधू, वधुयो
ततिया	वधुया	वधूहि, वधूभि
चतुत्थी	वधुया	वधून
पञ्चमी	वधुया	वधूहि, वधूभि
छट्ठी	वधुया	वधून
सत्तमी	वधुय, वधुया	वधूसु
आलपन	वधु	वध, वधुयो

शब्दावली—जम्बू (=जामुन), सरभू (=नदीका नाम, छिपकिली), सुतनू (=सुन्दरी), चमू (=सेना), वामोरू (=स्त्री) इत्यादि ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'वधू' शब्द के समान होते हैं।

२. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धान **गाथा**। भिक्खून **सद्धा**। मेत्ताय **झान**। वाचाय **सवरो**। छायाय **इच्छा**। बुद्धस्स **पूजा**। मनुस्सान **देवता**। देवान **परिसा**। मनुस्सान **सभा**।

बुद्धान कथाय विज्जा उप्पज्जति (=उत्पन्न होती है)। **बुद्धान** गाथाय सद्धा उप्पज्जति (=उत्पन्न होती है)। गङ्गाय देवता नहायति (=नहाता है)। कञ्ञायो बुद्ध नमस्सन्ति (=प्रणाम करते है)। **इत्थियो** देवताय मन्दिर गच्छन्ति (=जाते है)। भिक्खुनी सद्धाय सङ्घ नमस्सन्ति (=प्रणाम करती हैं)। गाथासु देवतान परिसाय कथा विज्जति (=है)। भिक्खवो परिसाय निसीदन्ति (=बैठते है)। कञ्ञायो भिक्खुनीसु सद्ध सठपेन्ति (=स्थापित करते हैं)। सद्धाय च **पञ्ञाय** च बुद्धस्स पूजा होति। मेत्ताय **भावनाय** देवान वुड्ढि होति। पञ्ञाय भावनाय विमुत्ति होती। **नदिया** दिसाय धेनू चरन्ति।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे पदो के दुतिया तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

देवता की विद्या। प्रज्ञा की इच्छा। मैत्री की भावना। कन्या की श्रद्धा। देवता के लिए माला। भूमि मे वास। लडकियो की श्रद्धा बुद्ध की पूजा में है। पृथ्वी पर छाया है। देवता की पूजा से लोगो (पजा) की श्रद्धा बढती है।

४ काले अक्षरो में छपे पदो में लिङ्ग, वचन और विभक्तियाँ बताइए—

विज्जाय पञ्ञा वड्ढति (=बढती हैं)। **विज्जाय** इच्छा **पञ्ञ** वड्ढति (=बढाती है)। **भिक्खुनियो कञ्ञायो** वाचेन्ति (=पढाती हैं)। **कञ्ञायो मालायो** इच्छन्ति (=चाहती हैं)। इत्थियो **भिक्खुनिया** सह गच्छन्ति (=जाती हैं)। **भिक्खुनिया** दान देन्ति (=देते हैं)। **भिक्खुनिया** धम्मदेसना होति। **भिक्खुनिया** (भिक्खुनिय) इत्थियो पसन्नायो होन्ति।

५ निम्नलिखित शब्दो से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—कञ्ञायो, भिक्खुनिया गाथ, पीतिया, पालिय, देवता, मेत्ताय, पञ्ञाय भावना, विमुत्तिया, पठविय।

क्रिया-पदानि—गायन्ति (=गाते हैं)। नच्चन्ति (=नाचते हैं), भासन्ति (=कहते हैं)। भावेति (=भावना करती है)। होति (=होता है)। कीळति-न्ति (=खेलना)। लभति-न्ति। पठति-न्ति। निपज्जन्ति (=लेटती है।)

६ (क) **अकारान्त पुल्लिङ्ग तथा नपुसक लिङ्ग शब्दो के रूप में क्या क्या अन्तर है ?**

(ख) **इकारान्त पुल्लिङ्ग, नपुसक लिङ्ग, तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप में क्या क्या अन्तर है ?**

(ग) **उकारान्त पुल्लिङ्ग, नपुसक लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप में क्या क्या अन्तर है ?**

पहला काण्ड

तीसरा पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण सर्वनाम)

§ १ सब्ब[1] (=सभी)

पुल्लिङ्ग

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	सब्बो	सब्बे[2]
दुतिया	सब्बं	सब्बे
ततिया	सब्बेन	सब्बेहि, सब्बेभि

अपवाद

१ **न अञ्ञञ्च नामप्पधाना** २ १४१—'सब्ब' आदि कोई शब्द यदि नाम के ऐसा प्रयुक्त हो, या अप्रधान हो, तो उसके रूप सर्वनाम शब्द के समान नही होगे। जैसे—ते **सब्बा**=वे 'सब्ब' लोग। ते **पियसब्बा**=वे सभी के प्रिय (यहाँ 'सब्ब' अप्रधान है) । ते **अतिसब्बा**।

ततियत्थयोगे २ १४२—तृतीयार्थ के योग मे, 'सब्ब' आदि शब्दो के रूप सर्वनाम शब्द के समान नही होते है। जैसे—मासेन पुब्बान—**मासपुब्बान** (यहाँ सवनाम शब्द के समान 'पुब्बेस या पुब्बेसान' नही हुआ) ।

चत्थसमासे २ १४३—द्वन्द समास (=चत्थ) होने पर भी, 'सब्ब' आदि शब्दो के रूप सवनाम शब्द के समान नही होते है। जैसे—**दक्खिणुत्तरपुब्बान** (यहाँ भी, सवनाम शब्द के समान 'पुब्बेस' नही हुआ) ।

२ **योनमेट्** २ १४०—अकारान्त 'सब्ब' आदि शब्दो से परे, 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश होता है । जैसे—**सब्बे तिट्ठन्ति । सब्बे पस्स ।**

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	सब्बस्स	सब्बेस, सब्बेसान[3]
पञ्चमी	सब्बम्हा, सब्बस्मा	सब्बेहि, सब्बेभि[3]
छट्ठी	सब्बस्स	सब्बेस, सब्बेसान
सत्तमी	सब्बम्हि, सब्बस्मि	सब्बेसु[3]
आलपन	सब्ब, सब्बा	सब्बे

नपुसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सब्ब	सब्बानि[4]
दुतिया	सब्ब	सब्बे, सब्बानि
आलपन	सब्ब, सब्बा	सब्बानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सब्बा	सब्बा, सब्बायो
दुतिया	सब्ब	सब्बा, सब्बायो
ततिया	सब्बाय	सब्बाहि, सब्बाभि

वेट् २ १४४—जो 'सब्ब' आदि शब्दो से परे 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश किया गया है, वह द्वन्द समास होने पर विकल्प से होता है। जैसे—पुब्बुत्तरे, पुब्बुत्तरा।

३ सब्बादीन नम्हि च २ १०१—'न', 'सु', तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, अकारान्त 'सब्ब' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'ए' हो जाता है। जैसे—सब्बेस। सब्बेसु। सब्बेहि।

ससान २ १०२—'सब्ब' आदि शब्दो से परे, 'न' विभक्ति का 'स' तथा 'सान' आदेश हो जाता है। जैसे—सब्बेस, सब्बेसान।

४ सब्बादीहि २ १३९—'सब्ब' आदि शब्दो से परे, 'नि' का 'आ' आदेश नही होता है। जैसे—सब्ब+नि=सब्बानि। पुब्बानि। ['सब्बा' नही होगा]

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	सब्बस्सा,[5] सब्बाय	सब्बास, सब्बासान
पञ्चमी	सब्बाय	सब्बाहि, सब्बाभि
छट्ठी	सब्बस्सा, सब्बाय	सब्बास, सब्बासान
सत्तमी	सब्बस्स,[6] सब्बाय	सब्बासु
आलपन	सब्बे	सब्बा, सब्बायो

कतर, कतम, उभय, इतर, अञ्ञ, अञ्ञतर, तथा अञ्ञतम शब्दो के रूप 'सब्ब' शब्द के समान होगे।

§ २ पुब्बादीहि छहि २ १४५—पुब्ब (=पहला), पर, अपर, दक्खिण (=दक्षिण), उत्तर, तथा अधर (=नीचा), इन छ शब्दो के रूप 'सब्ब' शब्द के समान ही होगे, किंतु, पठमा अनेक वचन मे इनके दो दो रूप होगे। जैसे—

पुब्बे, पुब्बा। परे, परा। अपरे, अपरा। दक्खिणे, दक्खिणा। उत्तरे, उत्तरा। अधरे, अधरा।

§ ३. किं[7] (=कौन)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	को	के
दुतिया	कं	के
ततिया	केन	केहि, केभि

---

५ घपा सस्स स्सा वा २ १०३—स्त्रीलिङ्ग 'सब्ब' आदि शब्दो से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'स्सा' आदेश होता है। जैसे—सब्बा+स=सब्बस्सा। सब्बाय।

६ स्मिनो स्स २ १०४—स्त्रीलिङ्ग 'सब्ब' आदि शब्दो से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'स्स' आदेश होता है। जैसे—सब्बस्स, सब्बाय। अमुस्स, अमुया।

७ किंस्स को सब्बासु २ २००—सभी विभक्तियो मे, 'किं' शब्द का 'क' आदेश हो जाता है। जैसे—को, के। का, कायो। कं, कानि।

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	कस्स, किस्स[8]	केस, केसान
पञ्चमी	कम्हा, कस्मा, किस्मा	केहि, केभि
छट्ठी	कस्स, किस्स	केस, केसान
सत्तमी	कम्हि, किम्हि, कस्मि, किस्मि	केसु

नपुसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	किं,[9] क	के, कानि
दुतिया	किं, क	के, कानि

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	का	का, कायो
दुतिया	क	का, कायो
ततिया	काय	काहि, काभि
चतुत्थी	कस्सा, काय	कास, कासान
पञ्चमी	काय	काहि, काभि
छट्ठी	कस्सा, काय	कास, कासान
सत्तमी	कस्स, काय	कासु

§ ४ 'य' (=जो) शब्द के रूप, तीनो लिङ्गो मे, 'क' शब्द के समान ही होते है। जैसे —

पुल्लिङ्ग—**यो, ये, य, ये, येन, येहि येभि, यस्स, येस येसान, यम्हा यस्मा, येहि येभि, यस्स, येस येसान, यम्हि यस्मि, येसु।**

---

८ **किसस्मिसु वानित्थिय २२०१**—पुल्लिग और नपुसक लिङ्ग में, 'स' तथा 'स्मि' विभक्तियो के आने से, 'किं' शब्द का विकल्प से 'कि' आदेश होता है। जैसे—**कस्स, किस्स। कस्मि, किस्मि।**

९ **किमसिसु सह नपुंसके २२०२**—नपुसक लिङ्ग में, 'अ' तथा 'सि' विभक्तियो के साथ, 'किं' शब्द का रूप '**किं**' होता है।

नपुसक—य, ये यानि, य, ये यानि—शेष पुल्लिङ्ग के समान।

स्त्रीलिङ्ग—या, या यायो, य, या यायो, याय, याहि याभि, यस्सा याय, यास यासान, याय, याहि याभि, यस्सा याय, यास यासान, यस्स याय, यासु।

§ ५. त, त्य (=वह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सो, स्यो[10]	ते, ने[11]
दुतिया	त, न	ते, ने
ततिया	तेन, नेन	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
चतुत्थी	तस्स, नस्स, अस्स[12]	तेस, नेस, तेसान, नेसान
पञ्चमी	तम्हा, अम्हा, नम्हा, तस्मा, नस्मा, अस्मा	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
छट्ठी	तस्स, नस्स, अस्स[12]	तेस, नेस, तेसान, नेसान
सत्तमी	तम्हि, अम्हि, नम्हि, तस्मि, नस्मि, अस्मि	तेसु, नेसु

---

१० त्य ते तान तस्स सो २ १३०—'सि' विभक्ति आने से, पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में, 'त्य', 'त' तथा 'एत' शब्दो के तकार का सकार हो जाता है। जैसे—**स्यो पुरिसो। स्या इत्थी। सो पुरिसो। सा इत्थी। एसो। एसा।**

११ ततस्स नो सब्बासु २ १३३—सभी विभक्तियो मे, 'त' शब्द के तकार का विकल्प से नकार हो जाता है। जैसे—**ते ने। तेन नेन। तेहि नेहि।**

१२ ट सस्मास्मिंस्साय स्स स्सा स्स म्हा म्हि स्विमस्स च २ १३४—'स', 'स्मा', 'स्मिं', 'स्साय', 'स्स', 'स्सा', 'स', 'म्हा', तथा 'म्हि' परे हो, तो 'त' तथा 'इम' शब्दो का विकल्प से 'अ' आदेश होता है। जैसे—**तस्स, अस्स। तस्मा, अस्मा। तस्मिं, अस्मिं। तस्साय, अस्साय। तस्स, अस्स। तस्सा अस्सा। तास, आस। तम्हा, अम्हा। तम्हि, अम्हि।**

इम—**इमस्स, अस्स। इमस्मा, अस्मा। इमस्मिं, अस्मिं। इमिस्साय, अस्साय** इत्यादि।

नपुसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	त, न	ते, ने, तानि, नानि
दुतिया	त, न	ते, ने, तानि, नानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सा, स्या	ता, ना, तायो, नायो
दुतिया	त, न	ता, ना, तायो, नायो
ततिया	ताय, नाय, तस्सा,[13] तिस्सा[14]	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
चतुत्थी	तिस्साय,तस्साय[15] अस्साय तिस्सा, तस्सा,[13] ताय	तास, आस, तासान

---

१३ स्सा वा तेतिमामूहि २४८—स्त्रीलिङ्ग 'ता', 'एता', 'इमा', तथा 'अमू' शब्दो से परे, 'ना' आदि एकवचन की विभक्तियो का विकल्प से 'स्सा' आदेश हो जाता है। जैसे—तस्सा कत। तस्सा दीयते। तस्सा निस्सरण। तस्सा परिग्गहो। तस्सा पतिट्ठित। विकल्प से 'ताय' भी होता ह।

एतिस्सा। एताय।

इमिस्सा। इमाय।

अमुस्सा। अमुया।

१४ ताय वा २५५—'स्स', 'स्सा, तथा 'स्साय' से पूव, 'ता' शब्द का विकल्प से 'ति' आदेश हो जाता है। जैसे—तस्स, तिस्स। तस्सा, तिस्सा। तिस्साय, तस्साय।

१५ तेतिमातो सस्स स्साय २५६—'ता', 'एता', तथा 'इमा' शब्दो से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'स्साय' आदेश होता है। जैसे—तस्साय, ताय। एतिस्साय, एताय। इमिस्साय, इमाय।

घो स्सस्सास्सायंतिसु २६५—'स्स' आदि आने से, 'घ' (='आ') ह्रस्व हो जाता है। जैसे—तस्स, तस्सा, तस्साय, त, सभंति, परिसंति।

	एकवचन	अनेकवचन
पञ्चमी	ताय, नाय, तस्सा	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
छट्ठी	तिस्साय, तस्साय, अस्साय तिस्सा, तस्सा, अस्सा, ताय	तास, आस, तासान
सत्तमी	तिस्स, तस्स, अस्स, ताय, तस्सा, तिस्सा	तासु

§ ६ सर्वनाम २७ है—सब्ब (=सर्व), कतर (=कौन), कतम (=कोन), उभय (=दोनो), इतर (=दूसरा), अञ्ञ (=अन्य), अञ्ञतर (=कोई), अञ्ञतम (=अन्यतम), पुब्ब (=पूव), पर, अपर, दक्खिण (=दक्षिण), उत्तर, अधर (=अध), य (=जो), त—त्य (=वह), एत (=यह), इम (=यह), किं (=कौन), एक, उभ, द्वि, ति (=तीन), चतु (=चार), तुम्ह (=तू), अम्ह (मैं)।

सख्या, अतुल्य, असहाय तथा अन्य (=कोई कोई)—इतने अर्थों मे 'एक' शब्द प्रयुक्त होता है। जैसे—एको बालको=एक लडका। बुद्धो एको' व लोके=लोक मे बुद्ध अतुल्य है। अह एको' व अरञ्ञे विहरामि=मैं जगल मे अकेला विहार करता हूँ। एके एव वदन्ति=कोई कोई लोग ऐसा कहते है।

सख्या के अर्थ मे, 'एक' शब्द एकवचन मे ही होता है। तीनो लिङ्गो में इसके रूप 'सब्ब' शब्द के समान होते है।

[सख्या वाचक शब्दो के लिए देखिए—पृ० १६४]

३. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

सब्बे सङ्खारा दुक्खा। सब्बे धम्मा अत्ता सन्ति (=है)। सब्बे पाणा दण्डस्स तसन्ति (=डरते है)। बुद्धो सब्बानि झानानि जानाति (=जानता है)। सब्बे देवा सग्गे विचरन्ति (=विचरण करते है)। **सब्बायो** भिक्खुनियो बुद्ध वन्दन्ति (=प्रणाम करते है)। सब्बासु दिसासु भिक्खु मेत्त भावेति (=भावना करता है)।

केन ञाणेन, कस्स भिक्खुस्स, **कस्मि** ठाने, कि झान होति? का भिक्खुनी, काय भावनाय, काय पत्तिया, काय कुटिकाय विहरति (=विहार करती है)? कानि झानानि भिक्खु लभति (=प्राप्त करता है)? कानि झानानि भिक्खुस्स होन्ति? यो सील रक्खति सो झान लभति (=लाभ करता है)। **येहि** धम्मेहि सम्बोधिया पत्ति होति, ते धम्मा अनुत्तरा होन्ति।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे पदो के ततिया छट्ठी तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए, और उनका वाक्यो में प्रयोग कीजिए।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

सब मनुष्य मरण-धर्म्मा है (=सन्ति)। सब देवता स्वर्ग मे विचरण करते है (=विचरन्ति)। सभी भिक्षुओ का शरण बुद्ध है (=अत्थि)। जो दान देता है (=देति), वह स्वग को जाता है (=गच्छति)। जिसकी प्रज्ञा नही है (=नत्थि), उसकी विद्या अल्प होती है (=होति)। कौन देवता, किस मनुस्स को, किस फल के लिए, किस धर्म्म का उपदेश करता है (=देसति)?

३ काले अक्षरो में छपे पदो में लिङ्ग, वचन तथा विभक्तियाँ बताइए—

सब्बाय विज्जाय वायामो। **सब्बाय** देवताय विचारो। सब्बाय **दिसाय** भिक्खु मेत्त भावेति (=भावना करता है)। **सब्बे** देवा **सब्बे** बुद्धे नमस्सन्ति (=प्रणाम करते है)। **काय** विज्जाय **काय** पञ्ञाय पत्ति होति?

४ निम्नलिखित शब्दो से वाक्य बनाइए—

सर्वनाम-पदानि—सब्बे देवा, सब्बे मनुस्से, सब्बानि फलानि, सब्बे दारका, सब्बानि पोत्थकानि, सब्बेसु धम्मेसु।

क्रिया-पदानि—नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं), वदन्ति (=बोलते हैं), खादन्ति (=खाते है), पठन्ति (=पढते है), विहरति (=विहार करता है)।

५ निम्नलिखित शब्दो का वाक्य में प्रयोग कीजए—

सब्बेन सब्ब, सब्बथा सब्ब (=सब प्रकार से)। अञ्ञमञ्ञ (=एक दूसरे को)। येन भगवा तेन (=जहाँ भगवान थे वहाँ)। तेन, तस्मा (=तिस कारण से)। येन, यस्मा (=जिस कारण से)।

६ (क) अकारान्त नाम तथा सर्वनाम शब्दो के रूप मे क्या २ अन्तर है ?

(ख) आकारान्त नाम तथा सर्वनाम शब्दो के रूप में क्या २ अन्तर है ?

पहला काण्ड

चौथा पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण नियम)

१. पठमा विभत्ति

§ १ **पठमात्थमत्ते २३९**—कतृवाच्य के कर्ता में, या केवल अर्थ प्रगट करने मे, 'पठमा विभत्ति' होती है। जैसे—**समणो झायति**=श्रमण ध्यान लगाता है। **अग्गि। कञ्ञायो। फलानि।**

§ २ **आमन्तणे २४०**—आमन्त्रण करने के अर्थ मे, 'आलपन विभत्ति' होती है। 'आलपन' मे भी, 'पठमा' ही की विभक्तियाँ लगती है। जैसे—**आवुसो सुमन सामणेर! रे धुत्ता! हे कञ्ञे! जे अय्ये!**

२. दुतिया विभत्ति

§ ३ **कम्मे दुतिया २२**—कर्तृवाच्य के कर्म मे 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—**सूदो ओदन पचति। सप्पो जने दसति।**

§ ४ **कालद्धानमच्चन्तसयोगे २३**—क्रिया, गुण, तथा द्रव्य के लगातार होने से, समय तथा दूरी वाचक शब्द में 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—*समय मे*—**सामणेरो मास विनय पठति**=श्रामणेर महीना भर (लगातार) विनय पढता है। **दिवस गेहो सुञ्ञो तिट्ठति**=दिन भर घर सूना रहता है। **मास गुळधाना**=महीने भर गुड-धान की मिठाई चलती रही।

दूरी मे—**भच्चो कोस गच्छति**=भृत्य कोस भर जाता है। **कोस कुटिला नदी**=कोस भर नदी टेढी-मेढी है। **कोस पब्बतो**=कोस भर पहाड ही पहाड है।

§ ५ 'धि' (=धिक्कार), 'अन्तरा' (=बीच), 'पति' (=प्रति), तथा 'बिना' शब्दो के योग में 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—

धि अलस सिस्स=आलसी शिष्य को धिक्कार है। **अन्तरा च राजगह अन्तरा च नाळन्द**=राजगृह और नालन्दा के बीच। **लोका पसन्ना बुद्ध पति**= लोग बुद्ध के प्रति बडी श्रद्धा रखते है। **न सिज्झति धम्मो विरिय विना**= बिना वीय के धम सफल नही होता है।

३. ततिया विभत्ति

§ ६ **कत्तुकरणेसु ततिया** २१८—भाववाच्य तथा कर्म-वाच्य के कर्त्ता मे, करण कारक मे, तथा क्रियाविशेषण मे, 'ततिया विभत्ति' होती है।

जैसे—**पुरिसेन गम्मति**=पुरुष के द्वारा चला जाता है। **बालकेन चन्दो दिस्सति**=बालक के द्वारा चाँद देखा जाता है (देखिए—पृ० १७८)।

करण कारक मे—**दण्डेन सप्प पहरति**=लाठी से साँप मारता है।

क्रियाविशेषण मे—**गोत्तेन गोतमो**=गोत्र से गौतम है। **सुमेधो नाम नामेन**=नाम से सुमेध। इसी तरह—**विसमेन धावति, समेन धावति, द्विदोणेन धञ्ञ किणाति, पञ्चकेन पसवो किणाति**। इत्यादि

§ ७ **सहत्थेन** २१९—साथ होने के अर्थ मे 'ततिया विभत्ति' होती है।

जैसे—**सिस्सेहि सह=सद्धि=सम आगच्छति आचरियो**=शिष्यो के साथ आचाय आता है।

§ ८ **तुल्यत्थेन वा ततिया** २४२—तुल्य के अर्थ मे 'ततिया विभत्ति' होती है, और छट्ठी भी।

जैसे—**आचरियेन सदिसो सिस्सो**=आचाय के सदृश ही शिष्य है। **जनकेन तुल्यो पुत्तो**=पिता के तुल्य ही पुत्र है। **आचरियस्स सदिसो सिस्सो। जनकस्स तुल्यो पुत्तो**।

४. चतुत्थी विभत्ति

§ ९ **चतुत्थी सम्पदाने** २२६—सम्प्रदान मे 'चतुत्थी विभत्ति' होती है।

जैसे—**याचकस्स भिक्ख ददाति**=भिखमगे को भीख देता है। **ब्राह्मणान भोजन ददाति**=ब्राह्मणो को भोजन देता है।

§ १० **तादत्थ्ये** २२७—'उसके लिए', इस अर्थ मे 'चतुत्थी विभत्ति' होती है।

जैसे—**लोकहिताय बुद्धो धम्मं देसेति**=लोक के हित के लिए, बुद्ध धर्म का उपदेश करते हैं। **न समत्थो दारभरणाय**=स्त्री के पालन करने में समर्थ नहीं है। **सूदो पाकाय भोजनघरं गच्छति**=रसोइया पकाने के लिए भोजन-गृह जा रहा है। **माणवकानं अनज्झायो रुच्चति**=विद्यार्थियों को अनध्याय अच्छा लगता है। **भच्चो अमच्चस्स सतं धारेति**=भृत्य अमात्य को सौ रुपए धारता है। **पापिट्ठस्स (पापिट्ठाय) धम्मेन किं**=पापी को धर्म से क्या दरकार? **जीवितं तिणाय अपि न मञ्ञति**=जीवन को तृण भर भी नहीं समझता है।

५. पञ्चमी विभत्ति

§ ११ **पञ्चम्यवधिस्मा** २२८—अवधि-वाचक शब्द में 'पञ्चमी विभत्ति' होती है।

जैसे—**गामस्मा गच्छति**=गाँव से जाता है। **चोरस्मा भायति**=चोर से डरता है। **चोरस्मा रक्खति**=चोर से बचाता है।

६. छट्ठी विभत्ति

§ १२ **छट्ठी सम्बन्धे** २४१—सम्बन्ध में 'छट्ठी विभत्ति' होती है।

जैसे—**आचरियस्स पुत्तो**=आचार्य का पुत्र। **गामस्स मनुस्सा**=गाँव के मनुष्य। **पहरतो पिट्ठिं ददाति**=मारने वाले की ओर पीठ फेर देता है। **दिवसस्स तिक्खत्तुं**=दिन में तीन बार।

कृदन्त शब्दों के साथ भी बहुधा छट्ठी विभक्ति होती है। जैसे—**साधु सम्मतो बहुजनस्स**=बहुत लोगों का मान्य। **तिट्ठन्ति धम्मस्स ञातारो**=धर्म के जानने वाले मौजूद हैं।

§ १३ **यतो निद्धारणं** २३८—जाति, गुण, तथा क्रिया से, जहाँ बहुतों में से एक का निर्धारण किया जाय, वहाँ 'छट्ठी विभत्ति' होती है, और 'सत्तमी' भी।

जैसे—**मनुस्सानं, मनुस्सेसु वा खत्तियो सेट्ठो**=मनुष्यों में, क्षत्रिय (जाति) श्रेष्ठ है। **कण्हा गावीनं, गावीसु वा सम्पन्नखीरतमा**=काली गौवों में अधिक दूध देने वाली होती है। **दानानं, दानेसु वा धम्मदानं सेट्ठं**=दानों में, धर्मदान श्रेष्ठ है।

§ ७. सत्तमी विभत्ति

§ १४ **सत्तम्याधारे २ ३४**—क्रिया के आधार मे 'सत्तमी विभत्ति' होती है। जैसे—**पब्बते तिट्ठति**=पवत पर रहता है । **कुम्भे ओदन पचति**=हाडी मे भात पकाता है । **आकासे सकुणा विचरन्ति**=आकाश मे पक्षी विचरण करते है । **तिलेसु तेल वत्तति**=तिल मे तेल है ।

§ १५ **निमित्ते २ ३५**—निमित्त के अथ मे 'सत्तमी विभत्ति' होती है । जैसे—**अजिनम्हि मिग हञ्ञति**=चर्म के निमित्त से मृग को मारता है । **मुसावादे पाचित्तिय**=मषा-वाद से 'पाचित्तिय' अपराध होता है ।

§ १६ **यब्भावो भावलक्खण २ ३६**—जहाँ, एक काम के होने पर दूसरे काम का होना जाना जाता है, वहाँ 'सत्तमी विभत्ति' होती है। जैसे—**आचरिये आगते सिस्सा उट्ठहन्ति**=आचाय के आने पर शिष्य खडे हो जाते है ।

§ १७ **छट्ठी चानादरे २ ३७**—ऊपर के ही अर्थ मे, यदि अनादर का भाव मालूम हो, तो 'छट्ठी विभत्ति' भी होती है।

जैसे—"**आकोटयन्तो सो नेति सिविराजस्स पेक्खतो**"=शिविराज के देखते ही देखते, वह उसे पीटते हुए ले जाता है। "**मच्चु गच्छति आदाय पेक्खमाने महाजने**"=इतने लोगो के देखते ही देखते, मृत्यु ले कर चली जाती है।

[ऊपर के उदाहरणो मे, शिविराज तथा महाजन के प्रति अनादर का भाव प्रगट होता है ।]

"नमो **तस्स** भगवतो (=भगवन्तस्स) अरहतो (=अरहन्तस्स) **सम्मा-सम्बुद्धस्सा**"ति। इमस्मि च पन वेय्याकरणस्मि भञ्ञमाने (=कहे जाने पर) सक्कस्स देवान इन्दस्स **धम्म-चक्खु** उदपादि (=उत्पन्न हुआ)—'य कि चि समुदय-धम्म सब्ब त निरोध-धम्म'ति।

२ निम्नलिखित वाक्यो का हिन्दी में अनुवाद कीजिए, तथा, काले अक्षरो में छपे पदो के कारक बताइए—

कायस्स भेदा, पर मरणा, सुगति **सग्ग लोक** उपपज्जति (=उत्पन्न होता है)। भिक्खु रत्तिया **पच्छिम याम** पच्चुट्ठाय (=उठ कर) चङ्कमेन **आवरणेहि धम्मेहि** चित्त परिसोधेति (=शुद्ध करता है)। **सिक्खापदेसु** सिक्खति। सुजाता तस्सा दासिया वचन सुत्वा (=सुनकर), पुण्ण **दासि** सब्ब **अलङ्कार** अदासि (=दे दिया)। तस्मि समये मारो देव-पुत्तो मार-घोसन घोसापेत्वा (=घोषित करा के) मारबल आदाय (=लेकर) निक्खमि (=निकल गया)। मारबले पन बोधिमण्ड उपसङ्कमन्ते उपसङ्कमन्ते, (=पास जाते हुए), तेस एको पि ठातु नासक्खि (=ठहर नही सका)। सुद्धोदन-पुत्तेन **सिद्धत्थेन** सदिसो (=सदश) अञ्ञो पुरिसो नाम नत्थि। **जातिया** खो सति (=होने पर) जरा-मरण होति। विञ्ञाणे खो सति (=होने पर), नाम-रूप होति। **आसवेहि** चित्त विमुच्चि (=मुक्त हो गया)।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु लोग एक वन-खण्ड (=वन-सण्ड) मे विहार करते थे (=विहरिसु)। वे भगवान के दर्शन के लिए श्रावस्ती (सावत्थी) गये (=अगमिसु)। उन के साथ एक परिव्राजक सन्यासी भी गया (=अगमि)।

जो मनुष्य शील की रक्षा करता है (=रक्खति), वह मर जाने के बाद देह छूट जाने पर स्वर्ग लोक मे उत्पन्न होता है (=उप्पज्जति)। उस भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है। चित्त के आस्रव (मल) क्षय होने पर चित्त विमुक्त हो जाता है (=विमुच्चति)। सङ्घ को दान देने से, बहुत पुण्य होता है (=बहु पुञ्ञ पसवति)। शील से ध्यान उत्पन्न होता है। (=उप्पज्जति)। ध्यान से प्रज्ञा उत्पन्न होती है (=उप्पज्जति)। प्रज्ञा से विमुक्ति होती है (=होति)।

४ निम्नलिखित पालि-मुहावरो को याद कर लीजिए, तथा उनसे वाक्य बनाइये--

पच्छा-भत्त=भोजन करने के बाद। पिण्डपातो=भिक्षा। पटिसल्लान=ध्यान। सम्मोदनीय कथ माराणीय वीतिसारेत्वा=कुशल-क्षेम की बातचीत समाप्त करके। पुब्बण्ह-समय निवासेत्वा=पूर्वाह्ण समय पहन कर। पत्त-चीवर आदाय=पात्र तथा चीवर (कन्था) को लेकर। पिण्डाय पाविसि=भिक्षा के लिए प्रवेश किया। अत्त-मना अभिनन्दि=प्रसन्न होकर अभिनन्दन किया।

पहला काण्ड

पाँचवाँ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण प्रयोग)

§ १ अव्यय शब्द सदा 'एक-रूप' रहते है। लिङ्ग, वचन, तथा विभक्ति के कारण, उनमे कोई अन्तर नही होता है। मोग्गल्लानाचाय ने 'अव्यय' का नाम **'असख्य'**[1] रक्खा है, क्योकि, उसमे सख्या नही होती है। **"न विज्जते सख्या यस्स त असख्य"** मोग्गलान पञ्जिका ३ २ ।

साधारणत अव्यय पाँच प्रकार के होते है—(१) **उपसग**, (२) **निमित्ताथक**, (३) **पूवकालिक**, (४) **तद्धितान्त**, और (५) **रूढि**।

१ उपसर्ग

§ २ उपसग बीस है—प, परा, नि, नी, उ, दु, स, वि, अव, अनु, परि, अभि, अधि, पति, सु, आ, अति, अपि, अप, उप। उपसग के लगने पर, क्रिया के अथ मे कभी तो कुछ विशेषता हो जाती है, कभी भिन्न, और कभी बिल्कुल उल्टा ही अथ हो जाता है। [देखिए—दूसरा काण्ड, सातवाँ पाठ] जैसे—

जहति=छोडता है	**पजहति**=एकदम छोड देता है
किरति=बिखेरता है	**विप्पकिरति**=चारो ओर बिखेर डालता है
हरति=हरण करता है	**पहरति**=मारता है
गच्छति=जाता है	**आगच्छति**=आता है

---

१ **असख्येहि सब्बास २ १२०**—'असख्य' शब्दो से परे, सभी विभक्तियो का लोप होता है। जैसे—**च, वा, एव, एव**।

२ निमित्तार्थक

§ ३ 'यह करने के लिए', इस अर्थ मे निमित्तार्थक अव्यय होता है। जैसे—
भोत्तु गच्छति=भोजन करने के लिए जाता है। **कातु**=करने के लिए। **सोतु**=सुनने के लिए। **दट्ठु**=देखने के लिये। **युज्झितु**=युद्ध करने के लिए। **वत्तु**=बोलने के लिए। **रुज्झितु**=रोकने के लिए [देखिए—पृ० १५२]।

३ पूर्वकालिक

§ ४ 'इस काम को करके', इस अर्थ मे पूर्वकालिक अव्यय होता है। जैसे—
विहार गन्त्वा बुद्ध वन्दति=विहार जा कर बुद्ध को प्रणाम करता है। **कत्वा**=करके। **सुत्वा**=सुन कर। **पस्सित्वा**=देख कर [देखिए—पृ० १५४]।

४ तद्धितान्त

§ ५ नाम तथा सर्वनाम से परे, तद्धित के कुछ प्रत्यय लगने से, अव्यय बन जाता है। जैसे—**सब्ब—सब्बत्थ**=सभी जगह। **य—यहि**=जहाँ। **कि—कदा**=कब। **सत—सततो**=शतस [देखिए पृ० २१५-२२०]।

५ रूढि

§ ६ रूढि अव्यय प्रधानत तीन प्रकार के हैं—(क) क्रियाविशेषण, (ख) संयोजकादि, (ग) विस्मयादिबोधक।

(क) *क्रियाविशेषण*—कभी कभी क्रियाविशेषण द्वितीया या तृतीया विभक्ति के एकवचन मे रहता है। जैसे—

वेग गच्छति, वेगेन गच्छति=तेज जा रहा है।

निम्न लिखित अव्यय क्रियाविशेषण की भाँति व्यवहृत होते हैं—

अग्गतो=सामने	**अत्थ**=यहाँ
अज्ज=आज	**अत्थ**=विनाश, अदर्शन
अञ्जदत्थु=निश्चय से	**अत्र**=यहाँ
अतीव=अत्यधिक	**अद्धा**=निश्चय से

अधुना=इस समय
अधो=नीचे
अन्तरा=मध्य मे
अन्तरेन=मध्य मे, बिना
अन्तो=मध्य मे
अप्पेव=शायद
अप्पेव नाम=शायद
अभिक्खण=बार बार
अभिण्ह=बार बार
अमा=साथ
अमुत्र=परलोक मे
अल=बस
अवस्स=जरूर
आम=हाँ
आरका=दूर
आरा=दूर
आवि=प्रकट
इध=यहा
इघ=प्रेरणा करना
इति=ऐसा
इत्थ=ऐसा
इदानि=इस समय
इह=यहाँ
ईस=थोडा
उच्च=ऊँचा
उद्ध=ऊपर
उपरि=ऊपर
एतरहि=अब
एत्तावता=अब तक
एत्थ=यहाँ
एव=निश्चय से
एव=ऐसे
एवम्पि=ऐसे भी
कच्चि=क्या
कत्थ=कहाँ
कथ=कैसे
कथञ्चि=किसी प्रकार
कदा=कब
कदाचि=शायद
कह=कहाँ
काम=निश्चय से
किं=क्यो
किञ्चि=कुछ कुछ
किसु=कैसे
कित्तावता=कब तक
कीव=कब तक, कितना
कुत्थ=कहाँ
कुदाचन= कभी
कुहि=कहाँ
कुहिञ्चन=कही
कुत्र=कहाँ
क्व=कहाँ
चन=कुछ } अनिश्चय वाचक
चि=कुछ }
चिर=दीर्घकाल
चिरेण=विलम्ब से
चिररत्ताय=दीघ काल तक
चिरस्स=चिरकाल

जातु = कभी, निश्चय से
त = उस हेतु से
तग्घ = निश्चित रूप से
तत्तो = उस हेतु से
तत्थ = वहाँ
तत्र = वहाँ
तथरिव = तथैव, वैसे ही
तथा = वैसे
तथेव = वैसे ही
तदा = तब
तदानि = तब
तहिं = वहाँ
तह = वहाँ
ताव = तब तक
तावता = तब तक
तिरिय = तिरछा
तिरो = छिपा हुआ, उस पार
तुण्ही = चुप
तेन = उस हेतु से
दिट्ठा = प्रसन्नता से, भाग्य से
दिवा = दिन मे
दुट्ठु = बुरा, बुरी तरह
दूरा = दूर
दोसो = रात मे
धुव = स्थिर, निश्चय
न = नही
ननु = विरोध सूचक अव्यय, क्यो
नमो = नमस्कार
नहि = नही

नाना = भिन्न
नीच = थोडा, नीचा
नु = शायद, क्यो
नून = निश्चय से
नो = नही
पगे = प्रात काल
पतिरूप = ठीक
परम्मुखा = पीछे की ओर
परसुवे = परसो
परितो = चारो ओर
पसय्ह = बलात्कार से
पातु = प्रकट, सामने
पातो = प्रात काल
पायो = प्राय
पुथु = बिना
पुनप्पुन = बार बार
पुरतो = सामने
पुरे = सामने
पेच्च = परलोक मे
बलव = प्रबल रूप से
बहिद्धा = बाहर
बही = बाहर
बाहिरा = बाहर
बाहिर = बाहर
मन = थोडा
मा = नही
मिच्छा = झूठ
मुधा = बेकार
मुसा = झूठ

मुहु=बार बार
य=जिस कारण से
यतो=जिस हेतु से
यत्थ=जिस स्थान पर
यत्र=जहाँ
यथत्त=ऐसा ही
यथरिव=जैसे, यथैव
यथा=जैसे
यथाच=जैसे
यथातथ=ऐसा ही
यथापि=जैसे
यथाहि=जैसे
यथेव=जैसे
यहिं=जहाँ
याव=जब तक, जितना
यावता=जब तक, जितना
येन=जिस हेतु से
रत्त=रात्रि मे
रहो=गुप्त
रिते=बिना
लहु=जल्द
विना=बिना
विय=सदृश
वे=निश्चय से
सकिं=एक वार
सच्छि=प्रत्यक्ष
सज्जु=शीघ्र, तत्काल
सदा=सवदा
सद्ध=अनुकूल
सद्धिं=साथ
सन=सवदा
सनिक=शीघ्र
सपदि=शीघ्र, तत्काल
सब्बतो=चारो ओर
समन्ततो=चारो ओर
समन्ता=चारो ओर
सम्म=साथ
सम्पति=इस समय
सम्मा=अच्छी तरह
सय=स्वय
स=प्रसन्नतापूवक
सह=साथ
सहसा=अकस्मात्
स्वे=आगामी कल
साधु=ठीक
साम=स्वय
साहु=साधु
साय=सायकाल
सु=अथवा
सुट्ठु=अच्छी तरह
सुवत्थि=कल्याण
सुवे=कल (आगामी)
सेय्यथापि=जैसे
सेय्यथापि नाम=जैसे
हिय्यो=कल (बीता हुआ)
हेट्ठा=नीचे

(ख) संयोजकादि

'उद'=**किन्नु बुद्ध सरण गच्छसि, उद अञ्ञ सरण ?**

'उदाहु'=**किन्नु बुद्ध सरण गच्छसि, उदाहु अञ्ञ सरण ?**

'किमु'=**जीवितक्खये पत्ते किमु खीरभोजन ?**

'किमुत'=**जीवितक्खये पत्ते किमुत खीरभोजन ?**

च=**समणो बुद्ध वन्दति च सील रक्खति च ।**

चे=**बुद्धो भवेय्य चे, मार जेस्सति ।**

यदि=**यदि बुद्धो भवेय्य, मार जेस्सति ।**

सचे=**सचे बुद्धो भवेय्य, मार जेस्सति ।**

(ग) विस्मयादिबोधक

निम्नलिखित विस्मयादि-बोधक अव्यय है—**अङ्ग**=हे। **अत्थु**=ऐसा हो, ईर्ष्या का निर्देशक । **एव**=हाँ । **अद्धा**=निश्चय से। **अम्भो**=हे । **अरे** । **अहो**=आश्चय है। **जे**=स्त्रियो को सम्बोधन करने मे (आजकल गया-पटना जिले मे इसका रूप 'गे' हो गया है । जैसे **गे मैय्या** ! **गे अय्या** ! **गे दीदी** ! **गे दाई** !) । **धि**=धिक्कार। **भो**=हे। **रे**। **वे**=निश्चय से। **साधु**=स्वीकार करने के अथ मे । **हहो**=हे । **हन्द**=प्रेरणा द्योतक । **हा**=शोक द्योतक । **हि**=आ । **हे**=हे।

द्रष्टव्य—निम्नलिखित अव्ययो का अपना कोई अथ नही है, किंतु वे वाक्यालकार या पादपूर्ति मे आते है । जैसे—

अस्सु । खो । चे । पन । यग्घे । सुद । ह

तयो अस्सु धम्मा जहिता भवन्ति ! तेन खो पन समयेन ?

५ अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

दीपङ्करो नाम जिनो **पुरा** अहोसि (=थे)। तस्स अपर-भागे कोण्डञ्ञो नाम बुद्धो उदपादि (=उत्पन्न हुए)। को नु हासो कि आनन्दो, **निच्च** पज्जलिते सति (=होने पर)। यो च पुब्बे पमज्जित्वा (=प्रमाद करके), **पच्छा** सो न पमज्जति (=प्रमाद करता है), सो इम लोक अब्भा मुत्तो चन्दिमा **विय** पभासेति (=प्रकाशित होता है)। पाप चे पुरिसो कयिरा (=करे), न त कयिरा (=करे) **पुनप्पुन**। पापो पि पस्सति (=देखता है) भद्र, **याव** पाप न पच्चति (=फलता है)। **यदा** च पच्चति (=फलता है) पाप, अथ पापो पापानि पस्सति (=देखता है)। **कच्चि** ते आवुसो! खमनीय? **कच्चि** यापनीय? **कच्चि** न किञ्चि दुक्ख ति? खमनीय मे आवुसो! यापनीय मे आवुसो! अपि **च** मे सीसे थोक दुक्ख ति। लाभा **वत** मे! सुलद्ध वत मे! सत्था च मे भगवा अरह सम्मा-सम्बुद्धो ति।

"एव देवा" ति **खो**, भिक्खवे! सारथि विपस्सिस्स कुमारस्स **पटिस्सुत्वा** (=उत्तर दे कर) भद्दानि यानानि **योजापेत्वा** (=जुतवा कर) पटिवेदेसि (=सूचित किया)—"युत्तानि (=जोत लिए गए है) **खो** ते देव! यानानि, यस्स **दानि** काल मञ्ञसी" ति (=समझते है)। **अथ खो** विपस्सी कुमारो भद्द यान अभिरुहित्वा (=चढ कर) भद्देहि यानेहि उय्यान-भूमिं निय्यासि (=गये)।

"अय **पन**, सम्म सारथि! पुरिसो किं कतो, केसा **पि'** स्स न यथा अञ्ञेस, कायो पि' स्स न यथा अञ्ञेस" ति? 'एसो खो, देव! जिण्णो **नाम**', न दानि तेन **चिर** जीवितब्ब भविस्सती ति (=जीना होगा)।'

"**तेन हि** सम्म सारथि! **अल** दानि अज्ज उय्यान-भूमिया, इतो, व अन्तेपुर पच्चनियाहीति (=लौटा ले चलो)। **धिरत्थु किर भो** जाति नाम, यत्र हि नाम जातस्स जरा पञ्ञायिस्सतीति (=अनुभव करना पडता है)।

"किन्नु **खो** सो सम्म सारथि! महाजन-कायो ति?" 'एसो खो, देव! काल-कतो **नामा ति**। त्वञ्च देवो मय **च'**म्हा सब्बे मरण-धम्मा मरण अनतीता ति।

"नहि **नून** सो ओरको धम्म-विनयो, यत्थ विपस्सी कुमारो पब्बजितो (= प्रव्रजित हुए हैं)। विपस्सी कुमारो पि नाम पब्बजिस्सति, **किं अङ्ग पन** मय ति?" महाजन-कायो विपस्सि बोधिसत्त अनुपब्बजिसु (=उनके साथ प्रव्रजित हो गए)। ताय **सुद** परिसाय परिवुतो (=घिरा रह) बोधिसत्तो चारिक चरति (=रमत लगाते थे)।

"न खो मे'त पतिरूप, यो'ह आकिण्णो (=भीड-भडक्के में) विहरामि। **यन्नूनाह** एको गणस्मा वूपकट्ठो (=अलग) विहरेय्य ति (=विहार करूँ)" —चिन्तेत्वा (=विचार कर), बोधिसत्तो अपरेन समयेन तथरिव विहासि (= विहार करने लगे)। "किच्छ वत अय लोको आपन्नो जिय्यति च मिय्यति च (=जन्म लेता है और मरता है)। **अथ च** पन इमस्स दुक्खस्स निस्सरण नप्प जानाति (=नही जानता है)। **कुदा स्सु** नाम त पञ्आयिस्सती ति (=जाना जायगा)?"

अथ खो भगवा कारुञ्अत पटिच्च बुद्ध-चक्खुना लोक विलोकेसि (=देखा)। अद्दसा खो भगवा सत्ते **सेय्यथापि नाम** उप्पलिनिय वा पदुमिनिय वा पुण्डरीकिनिय वा अप्पेकच्चानि उप्पलानि उदके जातानि अन्तोनिमुग्गपोसीनि, अप्पेकच्चानि समोदक ठितानि, अप्पेकच्चानि उदका अच्चुग्गम्म ठन्ति अनुपलित्तानि उदकेन। **एवमेव** खो भगवा अद्दस (=देखे) सत्ते अप्परजक्खे महारजक्खे ति।

२ निम्नलिखित अव्ययो के अर्थ लिखिए, और उनको वाक्य में प्रयोग करके दिखाइए—

(क) चिरस्स, चिर, चिरेन, चिररत्ताय
(ख) कदाचि, ईस, मन, चन, चि
(ग) सह, सद्धि, सम, अमा
(घ) बिना, नाना, अन्तरेन, रिते, पुथु
(ङ) सुद, खो, अस्सु, यग्घ, वे, ह
(च) यथा, तथा, यथानाम, तथाहि, सेय्यथापि नाम, सेय्यथीद, एवमेव, यथरिव, तथरिव, विय
(छ) आम, साहु, लहु
(ज) न, नो, अल, मा

(झ) अधुना, इदानि, दानि, सम्पति
(ञ) तदानि, तदा, चरहि
(ट) साय, अज्ज, सुवे, स्वे, हिय्यो, पातो, पगे
(ठ) उद्ध, उपरि, हेट्ठा, अधो
(ड) सन्तिके, सच्छि, आरा, दूरा, आरका
(ढ) सम्मुखा, परम्मुखा, स, साम, सय, पुरे, अग्गतो, पुरतो
(ण) सदा, पुनप्पुन, अभिण्ह, मुहु, अभिक्खण

दूसरा काण्ड

पहला पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पहला भाग—वर्तमान काल)

§ १ क्रिया के अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द को धातु (=क्रियत्थ) कहते ह। जैसे—**भू, पठ्, गम्, चज्** इत्यादि।

रूप बनाने की सुविधा के लिए, सभी धातु ९ श्रेणियो मे विभक्त किए गए है। प्रत्येक श्रेणी को 'गण' कहते है। जैसे—(१) **भ्वादि गण**, (२) **रुधादि गण**, (३) **दिवादि गण**, (४) **तुदादि गण**, (५) **ज्यादि गण**, (६) **क्यादि गण**, (७) **स्वादि गण**, (८) **तनादि गण**, और (९) **चुरादि गण**। [कौन धातु किस गण मे है, इसके लिए देखिए—२ परिशिष्ट]

'ति' आदि प्रत्ययो के लगने पर, धातु के रूप मे, अपने अपने गण के अनुसार प्राय कुछ न कुछ परिवतन हो जाता है। जैसे—

भ्वादि—**पठ—पठति**=पढता है। **पच—पचति**=पकाता है।
रुधादि—**रुध—रुन्धति**=रोकता है। **मुच—मुञ्चति**=छोडता है।
दिवादि—**दिव—दिब्बति**=खेलता है। **भिद—भिज्जति**=टूटता है।
झा—झायति=ध्यान करता है।
तुदादि—**तुद—तुदति**=दु खता है। **लिख—लिखति**।
ज्यादि—**जि—जिनाति**=जीतता है। **ञा—जानाति**=जानता है।
क्यादि—**की—किणाति**=खरीदता है। **सु—सुणाति**=सुनता है।
स्वादि—**सु—सुणोति**=सुनता है। **वु—वुणोति**= ढक लेता है।
तनादि—**तन—तनोति**=फैलाता है। **कर—करोति**।

चुरादि—**चुर—चोरेति**=चोरी करता है। **अच्च—अच्चयति**=पूजा करता है। [देखिए—तीसरा काण्ड पहला पाठ]

सभी काल मे, धातु के रूप—'परस्स पद' और 'अत्तनो पद'—दो तरह के होते है। साधारणत, किसी भी जगह, विकल्प से परस्स पद या अत्तनो पद के रूप प्रयुक्त हो सकते ह, **किंतु, व्यवहार में अत्तनो पद के रूप बहुत कम देखे जाते हैं।**

वर्तमान काल[1]

पच (=*पकाना*)

परस्स पद

		एकवचन		अनेकवचन
पठम पुरिस	(वह)	पचति	(वे)	पचन्ति
मज्झिम पुरिस	(तू)	पचसि	(तुम)	पचथ
उत्तम पुरिस	(मैं)	पचामि[2]	(हम)	पचाम[2]

---

१ **वत्तमाने ति अन्ति, सि थ, मि म, ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे** ६ १—वर्तमान काल मे, (सभी गण के) धातु से परे ये प्रत्यय आते है—

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	ति	अन्ति
मज्झिम पुरिस	सि	थ
उत्तम पुरिस	मि	म

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	ते	अन्ते
मज्झिम पुरिस	से	व्हे
उत्तम पुरिस	ए	म्हे

अत्तनो पद

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठम पुरिस	**पचते**	**पचन्ते**
मज्झिम पुरिस	**पचसे**	**पचव्हे**
उत्तम पुरिस	**पचे**	**पचाम्हे**

भ्वादि गण के कुछ धातु—**अच्च** (**अच्चति**) =पूजना। **अज्ज** (**अज्जति**) =कमाना। **अट** (**अटति**)=घूमना। **अद** (**अदति**) =खाना। **अव** (**अवति**) =बचाना। **अस** (**अत्थि**)[3] =होना। **इक्ख** (**इक्खति**)=देखना। **एस** (**एसति**)

---

२ **हि मि मेस्व स्स** ६ ५७—'हि', 'मि' तथा 'म' विभक्तियो के परे होने से, पूर्वस्थित अकार का आकार हो जाता है। जैसे—पच+हि=**पचाहि**। पच+मि=**पचामि**। पच+म=**पचाम**।

३ 'अस' धातु के रूप निम्न प्रकार होंगे—

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठम	***अत्थि**	**सन्ति†**
मज्झिम	**‡असि**	**अत्थ**
उत्तम	**¶अस्मि, अम्हि**	**अम्ह, अस्म**

***त स्स थो** ६ ५२—'अस' धातु से परे, 'त' का 'थ' होता है। जैसे—अस+ति=अस+थि=(**पररूपमयकारे ब्यञ्जने** ५ ९५—'य' को छोड़, कोई दूसरा व्यञ्जन परे हो, तो धातु का अन्त्य व्यञ्जन भी वही हो जाता है) **अथ्थि**=(**चतुत्थ दुतियेस्वेस ततियपठमा** १ ३५—देखिए) **अत्थि**।

† **न्त मा ना न्ति यि यु स्वा दि लो पो** ५ १३०—'न्त', 'मान', 'अन्ति', 'अन्तु', 'ईय', तथा 'इयु' प्रत्ययो के आने से, 'अस' धातु का केवल 'स' रह जाता है। जैसे—**सन्तो**। **समानो**। **अस+अन्ति=सन्ति**। **सन्तु**। **सिया**। **सियु**।

‡ **सि हि स्व ट्** ६ ५३—'सि' तथा 'हि' प्रत्ययो के आने से, 'अस' धातु का 'अ' आदेश हो जाता है। जैसे—

अस+सि=अ+सि=**असि**। **अहि**।

=खोजना । **कख** (**कखति**)=चाहना । **कड्ढ** (**कड्ढति**)=काढना । **कन्द** (**कन्दति**)=रोना । **कम्प** (**कम्पति**)=कापना । **कीळ** (**कीळति**)=खेलना । **गम** (**गच्छति, घम्मति**)=जाना । **चज** (**चजति**)=छोडना । **जर** (**जीरति, जीयति**)=पुराना होना । **जल** (**जलति**)=जलना । **जि** (**जयति**)=जीतना । **जीव** (**जीवति**)=जीना । **ठा** (**तिट्ठति**)=ठहरना । **तर** (**तरति**)=पार करना । **दह** (**दहति, डहति**)=जलाना । **दस** (**दसति**) =डसना । **दा**[4] (**दाति**)=देना । **दिस्स** (**पस्सति**)=देखना । **पा** (**पिवति**)=पीना । **ब्रू**[5] (**ब्रवीति, ब्रूति,** [6]**आह**)=बोलना । **भू** (**भवति**)=होना ।

---

४ **दास्स द वा मिमेस्वद्वित्ते** ६ २२—द्वित्व न होने पर, 'दा' धातु का—उससे परे 'मि' तथा 'म' विभक्तियो के आने से—विकल्प से 'द' आदेश हो जाता है । जैसे—दा+मि=द+मि=**दम्मि** । **दम्म** ।

५ **ब्रूतो तिस्सीञ्** ६ ३६—'ति' प्रत्यय आने से, 'ब्रू' धातु से परे, विकल्प से 'ई' का आगम होता है । जैसे—ब्रू+ति=ब्रू+ई+ति=**ब्रवीति** । **ब्रूति** ।

युवण्णानमेओ प्पच्चये ५ ८२—प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' का 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है । जैसे—

ब्रू+ति=ब्रो+ई+ति=**ब्रवीति** ।

एओनमयवा सरे ५ ८९—स्वर परे हो, तो पूर्वस्थित 'ए' का 'अय', तथा 'ओ' का 'अव' हो जाता है । जैसे—

ब्रू+ति=ब्रो+ई+ति=ब्रव+ई+ति=**ब्रवीति**

६ **त्यन्तीन टटु** ६ २०—'ब्रू' धातु का 'आह' आदेश हो जाता है, और उससे परे, 'ति' तथा 'अन्ति' का क्रमश 'अ' तथा 'उ' आदेश होता है । जैसे—

---

* **मिमानं वा म्हिम्हा च** ६ ५४—'अस' धातु से परे, 'मि' तथा 'म' विभक्तियो का विकल्प से क्रमश 'म्हि' तथा 'म्ह' आदेश हो जाता है , और, 'अस' धातु का 'अ' रह जाता है । जैसे— अस+मि=अ+मि=अ+म्हि=**अम्हि, अस्मि** । अस+म=अ+म्ह=**अम्ह, अस्म** ।

ब्रू+ति=आह+ति=आह+अ=**आह**। ब्रू+अन्ति=आह+अन्ति=आह+उ=**आहु**।

युवण्णानमियुवङ् सरे ५ १३६—स्वर परे होने से, धातु के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' का कही कही क्रमश 'इय' तथा 'उव' हो जाता है।

जैसे—वेदि+अ+ति=**वेदियति**। ब्रू+अन्ति=**ब्रुवन्ति**।

वतमान काल मे नवो गणो के धातु के रूप

धातु	गण	पठम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन
१ भू (=होना)	भ्वादि	भवति	भवन्ति
हू (=होना)	,,	होति	होन्ति
नी (=ले जाना)	,,	नेति, नयति	नेन्ति, नयन्ति
या (=जाना)	,,	याति	यन्ति
पच (=पकाना)	,,	पचति	पचन्ति
२ रुध (=रोकना)	रुधादि	रुन्धति	रुन्धन्ति
३ दिव (=खेलना)	दिवादि	दिब्बति	दिब्बन्ति
झा (=ध्यान करना)	,,	झायति	झायन्ति
४ तुद (=पीडा देना)	तुदादि	तुदति	तुदन्ति
५ जि (=जीतना)	ज्यादि	जिनाति	जिनन्ति
६ की (=खरीदना)	क्यादि	किणाति	किणन्ति
७ सु (=सुनना)	स्वादि	सुणोति	सुणोन्ति
८ तन (=फैलाना)	तनादि	तनोति	तनोन्ति
९ चुर (=चोरी करना)	चुरादि	चोरेति, चोरयति	चोरेन्ति, चोरयन्ति
कथ (=कहना)	,,	कथेति, कथयति	कथेन्ति, कथयन्ति
झप (=जलाना)	,,	झापेति, झापयति	झापेन्ति, झापयन्ति

नोट—बहुत से ऐसे धातु हैं, जिनके रूप 'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि जाते हैं। जैसे—**गम—घम्मन्तो, घम्मानो, घम्मति। कर—करोति, कयिरति,**

कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा—

मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
			*
भवसि	भवथ	भवामि	भवाम
होसि	होथ	होमि	होम
नेसि, नयसि	नेथ, नयथ	नेमि, नयामि	नेम, नयाम
यासि	याथ	यामि	याम
पचसि	पचथ	पचामि	पचाम
रुन्धसि	रुन्धथ	रुन्धामि	रुन्धाम
दिब्बसि	दिब्बथ	दिब्बामि	दिब्बाम
झायसि	झायथ	झायामि	झायाम
तुदसि	तुदथ	तुदामि	तुदाम
जिनासि	जिनाथ	जिनामि	जिनाम
किणासि	किणाथ	किणामि	किणाम
सुणोसि	सुणोथ	सुणोमि	सुणोम
तनोसि	तनोथ	तनोमि	तनोम
चोरेसि, चोरयसि	चोरेथ, चोरयथ	चोरेमि, चोरयामि	चोरेम, चोरयाम
कथेसि, कथयसि	कथेथ, कथयथ	कथेमि, कथयामि	कथेम, कथयाम
झापेसि, झापयसि	झापेथ, झापयथ,	झापेमि, झापयामि	झापेम, झापयाम

प्रत्ययो के आने से कुछ बदल जाते हैं। कभी कभी उनके बिल्कुल नए रूप भी हो
कुब्बति, करुते इत्यादि। [देखिए—तीसरा काण्ड पहला पाठ]

६. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

वेरेन वेरानि न **सम्मन्ति**। वातो दुब्बल रुक्ख **पसहति**। पापकारी **सोचति**। पुञ्ञकारी **मोदति**। पापकारी **तप्पति**। पुञ्ञकारी **नन्दति**। धीरा निब्बाण **फुसन्ति**। झायी विपुल सुख **पप्पोति**। पण्डिता पमाद **नुदन्ति**। देवा अप्पमाद **पससन्ति**। झानेन पञ्ञा **परिपूरति**। मारो मग्ग न **विन्दति**। भिक्खु धम्म **विजानाति**। बालो मिच्छा **मञ्ञति**। बालस्स इच्छा **वड्ढति**। बुद्धस्स सावको सक्कार न अभिनन्दति। सप्पुरिसा सब्बत्थ **वजन्ति**। पण्डिता कल्याणे मित्ते **भजन्ति**। विसोकस्स परिळाहो न **विज्जति**। तापसो अग्गि वने **परिचरति**। भिक्खु धम्म-पद **भासति**। मनो पापस्मि न **रमते**। सब्बे दण्डस्स **तसन्ति**। सब्बे मच्चुनो **भायन्ति**। यो भूतानि **विहिंसति** सो सुख न लभते। यो अञ्ञ दुस्सति, सो दुक्ख **निगच्छति**। इद रूप **भिज्जति**। सरीर जर **उपेति**। राजरथा **जीरन्ति**।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु निर्वाण चाहता है। लडके लोग धम्म सुनते हैं। ध्यानी लोग ध्यान करते है। हम लोग धम्म जानते हैं। भगवान विहरते हैं। तुम लोग हँस रहे हो। सूर्य्य चमक रहा है। लडके किताब पढ रहे हैं। अवैर से वैरी को जीतता है। अक्रोध से क्रोध को जीतता है। धम्म से अधम्म को जीतता है। धम्म से पाप को छोडता है। ध्यान मे प्रयत्न करता है। दुःख छोडता है। बुद्ध मे श्रद्धा करता है। मै धम्म को सुनता हू। सङ्घ के शरण जाता हू। चैतन्य (= सति) को बढाता है। प्रमाद को छोडता हू। प्रश्न पूछता हू। ब्रह्मा आते है। तू भगवान को नमस्कार करता है। भगवान धम्म-चक्र घमाते हैं (पवत्तेति।) बुद्ध देवताओ को धम्म उपदेश करते हैं। ब्राह्मण लोग पाप नही करते है। सज्जन कुशल धर्म्मों का सग्रह करते हैं (उपसम्पादेन्ति)। स्वर्ग को चले जाते हैं। बुद्ध निर्व्वाण प्राप्त करते है (निब्बायति)। श्रावक लोग रोते हैं, चिल्लाते हैं, कलपते हैं। बुद्ध की पूजा करते हैं। मरते हैं। स्वर्ग को चले जाते है।

३ निम्नलिखित शब्दो से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—गहपति, वन-सण्डो, रुक्खो, फल, गामो, दारको, तापसो, तप।

क्रिया-पदानि—पटिवसति-न्ति, चरति-न्ति, पतति-पतन्ति, आरोहति-न्ति, खादति-न्ति। [जैसे, रुक्खा फलानि पतन्ति। दारका रुक्ख आरोहन्ति। गहपतयो गामे पटिवसन्ति।]

४ निम्नलिखित क्रिया-पदो से वाक्य बनाइए—

विहरति=प्रज्ञा तथा चैतन्य की भावना मे रहता है, विचरता है।
उपसङ्कमति=पास जाता है।
अभिवादेति=प्रणाम करता है।
निसीदति=बैठता है।
सम्मोदति=कुशल क्षेम पूछता है।
वीतिसारेति=व्यतीत करता है।
अधिवासेति=स्वीकार करता है।
समादियति=ग्रहण करता है।
वट्टति=(उचित) होता है।
सवत्तति=(समथ) होता है।
पटिपज्जति=लग जाता है।
पच्चस्सुणाति=जवाब देता है।
पटिभाति (म)=मुझे भान होता है।

दूसरा काण्ड

दूसरा पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(दूसरा भाग)

'अम्ह' (=मैं) और 'तुम्ह' (=तू) शब्दो के रूप, तीनो लिङ्गो मे, एक ही समान होते है। जैसे—अहं बुद्धप्पियो नाम माणवको। अहं धम्मदिन्ना नाम माणविका। त्वं मम पियो भाता। त्वं मम पिया नारी इत्यादि।

§ ७ अम्ह (=मैं)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अहं[1]	मयं, अस्मा, अम्हे[2], नो[3]
दुतिया	मं, ममं[4]	अम्हं, अम्हाकं, अम्हे,[5] नो
ततिया	मया,[6] मे[3]	अम्हेहि, अम्हेभि, नो
चतुत्थी	मम,[7] मय्हं, अम्हं, ममं,[8] मे	अस्माकं अम्हाकं,[8] अम्हं,[9] अम्हे, नो
पञ्चमी	मया[5]	अम्हेहि, अम्हेभि
छट्ठी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अम्हाकं, अम्हं,[9] अम्हे, नो
सत्तमी	मयि[1]	अस्मासु[11] अम्हेसु

---

१ सिम्हह २ २१३—'सि' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द का रूप 'अहं' होता है।

२ मयमस्माम्हस्स २ २११—'यो' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'मयं, अस्मा, अम्हे' होते हैं।

३ योनं हिस्वपञ्चम्या वोनो २ २३५—पठमा, दुतिया, ततिया, चतुत्थी तथा छट्ठी के बहुवचन मे, 'अम्ह' शब्द का लघुरूप 'नो', तथा 'तुम्ह' शब्द का 'वो' होता है।

अपादादो पदतेकवाक्ये २ २३४—किसी गाथा के पाद के आदि मे लघुरूप का प्रयोग नही होता है। वाक्य मे, किसी पद के बाद ही, (अर्थात, वाक्य के आदि मे नही) ये रूप प्रयुक्त हो सकते है। जैसे—

तिट्ठथ वो। तिट्ठाम नो। पस्सति वो=वह तुमको देखता है। **पस्सति नो**=वह हम लोगो को देखता है। **दीयते वो**=तुम लोगो को दिया जाता है। **दीयते नो। धन वो**=तुम लोगो का धन है। **धन नो। कत वो**=तुम लोगो के द्वारा किया गया है। **कत नो।**

ते मे नासे २ २३६—'ना' तथा 'स' विभक्तियो के साथ, 'अम्ह' शब्द का लघुरूप 'मे', तथा 'तुम्ह' शब्द का 'ते' होता है। जैसे—

कत ते=तेरे द्वारा किया गया है। **कत मे। दीयते ते**=तुझे दिया जा रहा है। **दीयते मे। धन ते**=धन तेरा है। **धन मे।**

अन्वादेसे २ २३७—एक बार 'अम्ह' या 'तुम्ह' शब्द का प्रयोग कर, उसे उसी सिलसिले मे (=अन्वादेश मे) फिर भी कहना हो, तो लघु-रूप का ही प्रयोग होता है। जैसे—**गामो तुम्ह परिग्गहो, अथ जनपदो वो परिग्गहो**=गाँव तुम्हारी मिलकियत है, और जनपद भी तुम्हारी मिलकियत है।

सपुब्बा पठमन्ता वा २ २३८—यदि पूव मे कोई प्रथमान्त शब्द विद्यमान हो, तो अन्वादेश मे प्रयुक्त 'अम्ह' या 'तुम्ह' शब्दो का लघुरूप विकल्प से होता है। जैसे—**गामे पटो अम्हाक, अथो नगरे कम्बलो नो—अथो नगरे कम्बलो अम्हाक**= गाँव मे हम लोगो के लिए कपडा है, और नगर मे कम्बल।

नचवाहाहेवयोगे २ २३९—'न', 'च', 'वा', 'हा', 'हि', तथा 'एव' शब्दो के योग मे, ये लघुरूप नही होते है। जैसे—**गामो तव च परिग्गहो।**

दस्सनत्थे नालोचने २ २४०—'आलोचन' शब्द को छोड, दूसरे दशनार्थं शब्दो के योग मे लघुरूप नही होते है। जैसे—**गामो तुम्हे—अम्हे उद्दिस्सागतो**=गाँव तुम्हे—हमे देखने आया है।

आलोचन शब्द के साथ लघुरूप होता है—**गामो वो—नो आलोचेति।**

आमन्तण पुब्बमसन्त व २ २४१—सम्बोधन के बाद, 'तुम्ह' या 'अम्ह' शब्दो का प्रयोग, 'अन्वादेश' नही समझा जाता है। अत, वहाँ लघुरूप नही होता है। जैसे—**देवदत्त! तव परिग्गहो।**

§ ८. तुम्ह (=तू)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	त्व, तुव[१२]	तुम्हे, वो
दुतिया	त, तव, तुव, त्व	तुम्ह तुम्हाक, तुम्हे, वो

बहुसु वा २ २४३—बहुत जगह, विकल्प से लघुरूप होता भी है। जैसे—ब्राह्मणा गुणवन्तो ! तुम्हाक परिग्गहो—वो परिग्गहो।

४ अम्हि त म तव मम २ २२६—'अ' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'म, मम', तथा 'तुम्ह' शब्द के रूप 'त, तव' होते हैं।

५ दुतिये योम्हि च २ २३३—'दुतिया' मे, 'यो' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'अम्ह, अम्हाक, अम्हे', तथा 'तुम्ह' शब्द के रूप 'तुम्ह, तुम्हाक, तुम्हे' होते हैं।

६ नास्मासु तया मया २ २३०—'ना' तथा 'स्मा' विभक्तियो के साथ, 'अम्ह' शब्द का रूप 'मया', तथा 'तुम्ह' शब्द का रूप 'तया' हो जाता है।

७ तव मम तुय्ह मय्ह से २ २३१—'स' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'मम, मय्ह', तथा 'तुम्ह' शब्द के रूप 'तव, तुय्ह' होते हैं।

८ न से स्व स्माक मम २ २१२—'न' तथा 'स' विभक्तियो के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप क्रमश 'अस्माक, अम्हाक, तथा मम, मम' होगे।

९ डडाक नम्हि २ २३२—'न' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'अम्ह, अम्हाक', तथा 'तुम्ह' शब्द के रूप 'तुम्ह, तुम्हाक' होते हैं।

१० स्मिम्हि तुम्हाम्हान तयि मयि २ २२८—'स्मि' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द का रूप 'मयि', तथा 'तुम्ह' शब्द का रूप 'तयि' होता है।

११ सुम्हाम्हस्सास्मा २ २०५—'सु' विभक्ति आने से, 'अम्ह' शब्द का विकल्प से 'अस्मा' आदेश होता है। जैसे—अस्मासु। अम्हेसु। 'भत्तिरस्मासु सा तव'।

१२ तुम्हस्स तुव त्वमम्हि च २ २१४—'सि' तथा 'अ' विभक्तियो के साथ, 'तुम्ह' शब्द के रूप 'त्व, तुव' होते हैं।

ततिया	त्वया,[13] तया, ते	तुम्हेहि, तुम्हेभि, वो
चतुत्थी	तव, तुय्ह, तुम्ह, ते	तुम्हाक, तुम्हे, वो
पञ्चमी	त्वया, तया, त्वम्हा[14]	तुम्हेहि, तुम्हेभि
छट्ठी	तव, तुय्ह, तुम्ह, ते	तुम्हाक, तुम्हे, वो
सत्तमी	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

§ ९. एत (=*यह*)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एसो	एते
दुतिया	एत, एन[15]	एते, एने
ततिया	एतेन	एतेहि, एतेभि
चतुत्थी	एतस्स	एतेस, एतेसान
पञ्चमी	एतम्हा, एतस्मा	एतेहि, एतेभि
छट्ठी	एतस्स	एतेस, एतेसान
सत्तमी	एतम्हि, एतस्मि	एतेसु

---

१३ तयातयीन त्व वा तस्स २२१५—'तुम्ह' शब्द के रूप 'तया' तथा 'तयि' के तकार का विकल्प से 'त्व' हो जाता है। जैसे—त्वया, तया। त्वयि, तयि।

१४ स्माम्हि त्वम्हा २२१६—'स्मा' विभक्ति के साथ, 'तुम्ह' शब्द का रूप विकल्प से 'त्वम्हा' होता है।

१५ इमेतानमेनान्वादेसे दुतियाय २१९९—'दुतिया' विभक्ति मे, 'इम' तथा 'एत' शब्दो का, कथितानुकथित होने से, 'एन' आदेश हो जाता है। जैसे—इम भिक्खु विनयमज्झापय, अथो एन धम्ममज्झापय। इमे भिक्खू विनय-मज्झापय, अथो एने धम्ममज्झापय। एत भिक्खु विनयमज्झापय, अथो एन धम्ममज्झापय। एते भिक्खू विनयमज्झापय अथो एने धम्ममज्झापय।

नपुसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एत	एते, एतानि
दुतिया	एत	एते, एतानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एसा	एता, एतायो
दुतिया	एत	एता, एतायो
ततिया	एताय	एताहि, एताभि
चतुत्थी	एतिस्साय,[१६] एतिस्सा,[१६] एताय	एतास, एतासान
पञ्चमी	एताय	एताहि, एताभि
छट्ठी	एतिस्साय, एतिस्सा, एताय	एतास, एतासान
सत्तमी	एतिस्स,[१६] एतस्स, एतास	एतासु

§ १० इम (=यह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अय[१७]	इमे
दुतिया	इम	इमे

---

१६ स्स स्सा स्साये स्वितरेकञ्ञेतिमानमि २ ५४—'स्स', 'स्सा' तथा 'स्साय' से पूर्व, 'इतर', 'एक', 'अञ्ञ', 'एत' तथा 'इम' शब्दो के अन्त्य स्वर का 'इ' होता है । जैसे—

इतरिस्स, इतरिस्सा । एकिस्स, एकिस्सा । अञ्ञिस्स, अञ्ञिस्सा । एतिस्स, एतिस्सा, एतिस्साय । इमिस्स, इमिस्सा, इमिस्साय ।

१७ सिम्हनपुसकस्साय २ १२९—पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग मे 'सि'

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	अनेन,[18] इमिना	एहि,[19] एभि, इमेहि, इमेभि
चतुत्थी	अस्स, इमस्स	एस,[19] एसान, इमेस, इमेसान
पञ्चमी	अस्मा, इमस्मा, इमम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
छट्ठी	अस्स, इमस्स	एस, एसान, इमेस, इमेसान
सत्तमी	अस्मि, इमम्हि, इमस्मि	एसु, इमेसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	इद,[20] इम	इमे, इमानि
दुतिया	इद, इम	इमे, इमानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अय[17]	इमा, इमायो
दुतिया	इम	इमा, इमायो

विभक्ति के साथ, 'इम' शब्द का रूप 'अय' होता है। जैसे—**अय पुरिसो। अय इत्थी।**

१८ नाम्हनिमि २ १२८—पुल्लिङ्ग तथा नपुसकलिङ्ग मे, 'ना' विभक्ति आने से, 'इम' शब्द का 'अन' तथा 'इमि' आदेश हो जाता है। जैसे—**अनेन। इमिना।**

१९ इमस्सानित्थियंटे २ १२७—'सु', 'न' तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, पुल्लिङ्ग तथा नपुसकलिङ्ग मे, 'इम' शब्द का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—**एसु, इमेसु। एस, इमेस। एहि, इमेहि।**

२० इमस्सिदं वा २ २०३—'अ' तथा 'सि' विभक्तियो के साथ, 'इम' शब्द का रूप विकल्प से **'इद'** होता है।

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	इमाय	इमाहि, इमाभि
चतुत्थी	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमास, इमासान
पञ्चमी	इमाय	इमाहि, इमाभि
छट्ठी	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमास, इमासान
सत्तमी	अस्स, इमिस्स, इमाय	इमासु

§ ११. अमु (=वह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	असु,[21] अमुको	अमू,[22] अमुयो
दुतिया	अमु	अमू, अमुयो
ततिया	अमुना	अमूहि, अमूभि
चतुत्थी	अमुस्स[23]	अमूस, अमूसान
पञ्चमी	अमुना, अमुम्हा, अमुस्मा	अमूहि, अमूभि
छट्ठी	अमुस्स	अमूस, अमूसान
सत्तमी	अमुम्हि, अमुस्मि	अमूसु

---

२१ मस्सामुस्स २ १३१—पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में, 'सि' विभक्ति आने से, 'अमु' शब्द के 'म' का 'स' हो जाता है। जैसे—असु पुरिसो। असु इत्थी।

केवा २ १३२—'क' का आगम होने से भी, 'अमु' शब्द के 'म' का विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे—असुको, अमुको। असुका, अमुका। असुक, अमुक। असुकानि, अमुकानि।

२२ लोपो मुस्मा २ ८८—पुल्लिङ्ग मे, 'अमु' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का लोप हो जाता है। जैसे—अमू पुरिसा आगच्छन्ति। अमू पुरिसे पस्स।

२३ न नो सस्स २ ८९—'अमु' शब्द से परे, 'स' विभक्ति का 'नो' आदेश नही होता है। जैसे—अमुस्स ['अमुनो' नही होगा]।

नपुसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अदु[२४], अमु	अमू, अमूनि
दुतिया	अदु[२४], अमु	अमू, अमूनि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	असु, अमु	अमू, अमुयो
दुतिया	अमु	अमू, अमुयो
ततिया	अमुया	अमूहि, अमूभि
चतुत्थी	अमुस्सा, अमुया	अमूस, अमूसान
पञ्चमी	अमुया	अमूहि, अमूभि
छट्ठी	अमुस्सा, अमुया	अमूस, अमूसान
सत्तमी	अमुस्स, अमुय	अमूसु

---

२४ अमुस्सादु २ २०४—नपुसक लिङ्ग मे, 'अ' तथा 'सि' विभक्तियो के साथ, 'अमु' शब्द का रूप विकल्प से 'अदु' हो जाता है ।

७. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अम्हे बुद्ध सरण गच्छाम। अम्हाक बुद्धो, अम्हाक धम्मो, अम्हाक सङ्घो। तुम्हे कल्याणे मित्ते भजथ। इमे धम्मा होन्ति। इमस्स भिक्खुनो इम अप्पमाद-फल होति। तुम्हे एव आजानाथ। तुम्हेहि कुलेसु चारित्त न आपज्जितब्ब। इमेहि अङ्गेहि समन्नागतो भद्रो होति। एत अत्थ विजानाति। एतदवोच (एत+अवोच)। अय भिक्खु अमुस्मि अरञ्ञे विहरति। इमिस्सा भिक्खुनिया अमूहि भिक्खुनीहि सद्धि सयनासनो अत्थि। अदु कम्म, अमूनि कम्मानि च, सब्बानि तानि पहातब्बानि। अमुया पञ्ञाय एसो विपाको होति। असु भिक्खु, असु सामणेरो च, अदु अरञ्ञ गच्छन्ति। असु गहपतानी अदु कम्म करोति। इमेसान धम्मान अय विपाको होति। अम्हे च तुम्हे च, अदु अरञ्ञ गन्त्वा, एताय भावनाय, विहरथ। अम्हाक च तुम्हाक च चित्त, इमस्मि अमुस्मि वा झाने पतिट्ठापेतु वट्टति।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

हम लोग प्राण नही मारते है। तुम लोगो के आचरण को हमारे आचाय (आचरियो) पसन्द करते ह। हमारी किताब तुम्हारे घर मे है। इन भिक्षुओ का विहार उन मनुष्यो के ग्राम मे है। बुद्ध इन भिक्षुओ से पूजित है। हमारा बुद्ध, हमारा धम्म, हमारा सघ है। उन ब्राह्मणो के द्वारा बुद्ध के वे सब धम्म-उपदेश (धम्मदेसनायो) सुने गए है (सुतायो)। उनका धम्म तथा हमारा धम्म एक ही है। किसका धर्म अच्छा है? बुद्धो का शासन ही हमारा धम्म है। सब बुद्धो का एक ही धम्म होता है। इन धम्मों का एक ही निदान होता है।

३ निम्नलिखित शब्दो से वाक्य बनाइए—

सब्बनाम-पदानि—अम्हाक, तुम्हाक, अम्हेहि, तुम्हेहि, एसो, इमानि, असु, अदु, इमिस्सा, इमासु, अमूसान, एतानि।

नाम-पदानि—पोत्थक, गामो, पुत्तो, रुक्खो, दारको, दारिका, धम्मो।

धातु—पठ=पढना, गम=जाना, आ+रुह=चढना, ओ+रुह=उतरना।

४ निम्नलिखित उदाहरणो में, 'ते', 'वो', 'नो' का प्रयोग क्यो नही होता?

अम्हाक भगवा अम्हे च तुम्हे च धम्म देसेति अम्हाक मेव हिताय सुखाय। अम्हाक हि भगवा सत्था धम्म-राजा।

दूसरा काण्ड

तीसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(दूसरा भाग—भविष्यत्काल[1])

परस्सपद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	पचिस्सति[2]	पचिस्सन्ति
मज्झिम पुरिस	पचिस्ससि	पचिस्सथ
उत्तम पुरिस	पचिस्सामि	पचिस्साम

---

१ भविस्सति स्सति स्सन्ति, स्ससि स्सथ, स्सामि स्साम, स्सते स्सन्ते, स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हे ६ २—भविष्यत्काल मे, धातु से परे ये प्रत्यय होते है। जैसे—**पचिस्सति, पचिस्सन्ति** इत्यादि।

नामे गरहाविम्हयेसु ६ ३—यदि निन्दा या विस्मय के अर्थ मे 'नाम' शब्द प्रयुक्त हो, तो भी धातु से परे ये प्रत्यय होते है। जैसे—*निन्दा मे*—"**इमे हि नाम कल्याणधम्मा पटिजानिस्सन्ति**"—ये अपने को बडा कल्याण-कर धम वाले बताते है। "**न हि नाम भिक्खवे! तस्स मोघपुरिसस्स पाणेसु अनुद्दया भविस्सति**" भिक्षुओ! उस निकम्मे आदमी को जीवो के प्रति तनिक भी दया नही है। "**कथ हि नाम सो भिक्खवे! मोघपुरिसो सब्बमत्तिकामय कुटिक करिस्सति**" —भिक्षुओ! वह निकम्मा आदमी, बिलकुल मिट्टी की कुटिया क्यो बनाता है। "**तत्थ नाम त्व मोघपुरिस! मया विरागाय धम्मे देसिते सरागाय चेतेस्ससि**"—अरे निकम्मा आदमी! जो मै विराग के लिए धर्म का उपदेश करता हूँ, उसे तू राग वाला समझता है!

अत्तनोपद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	**पचिस्सते**	**पचिस्सन्ते**
मज्झिम पुरिस	**पचिस्ससे**	**पचिस्सव्हे**
उत्तम पुरिस	**पचिस्स**	**पचिस्साम्हे**

§ २ भविष्यत्काल मे कुछ विशेष धातुओ के रूप—**कर—करिस्सति, काहति**[३]। **हा—हायिस्सति, हाहति**[४]। **लभ—लभिस्सति, लच्छति**[४]। **भुज—भुञ्जिस्सति,**

विस्मय मे—**अच्छरिय! अन्धो नाम पब्बत आरोहिस्सति**=आश्चय है, अन्धा भी पवत पर चढ आया!

२ **अ ई स्स आ दीन ब्य ञ्ज न स्सिञ्** ६ ३५—धातु से परे, परोक्ष भूत, परिसमाप्त्यथक भूत, हेतुहेतुमद्भूत, तथा भविष्यत्काल मे, व्यञ्जन-विभक्ति से पूव, विकल्प से 'इ' का आगम होता है। जैसे—**पपचित्थ, पपचिरे। अपचित्थ, अपचिम्हा। अपचिस्सा, अपचिस्ससु। पचिस्सति, पचिस्सन्ति।**

३ **हा स्स चा ह ङ् स्से न** ६ २५—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल मे, अपने विकरण 'ओ' के साथ 'कर' धातु, तथा 'हा' धातु के अन्त्य वण का, 'स्स' के साथ, विकल्प से 'आह' आदेश हो जाता है। जैसे—**अकाहा, अकरिस्सा। काहति, करिस्सति। अहाहा, अहायिस्सा। हाहति, हायिस्सति।**

४ **ल भ व स च्छि द भि द रु दा न च्छ ङ्** ६ २६—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल मे, 'लभ' आदि धातुओ के अन्त्य वर्ण का, 'स्स' के साथ, विकल्प से 'च्छङ्' आदेश हो जाता है। जैसे—**लभ—अलच्छा, अलभिस्सा, लच्छति, लभिस्सति। वस—अवच्छा, अवसिस्सा, वच्छति, वसिस्सति। छिद—अच्छेच्छा, अच्छिन्दिस्सा, छेच्छति, छिन्दिस्सति। भिद—अभेच्छा, अभिन्दिस्सा, भेच्छति, भिन्दिस्सति। रुद—अरुच्छा, अरोदिस्सा, रुच्छति, रोदिस्सति।**

दूसरी जगहो पर भी, 'छिद' धातु के अन्त्य वर्ण का विकल्प से 'छ' आदेश होता है—**अच्छेच्छु** (साधारण भूत, पठम पुरिस, अनेक वचन), **अच्छिन्दिसु।**

दूसरे धातु के साथ भी कभी कभी—गच्छ, **गच्छिस्स।**

भोक्खति[5] । **हु—हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति**[6] । **सक—सक्खिस्सति, सक्कुणिस्सति**[7] । **सु—सोस्सति, सुणिस्सति**[8] । **आ—आस्सति, जानिस्सति**[9] । **इ—एस्सति, एहिति**[10] । **हन—हञ्छेति, हनिस्सति । पटिहखति, पटिहनिस्सति**[11] ।

---

५ **भुजमुचवचविसान क्खइ्** ६ २७—'स्स' के साथ, 'भुज' आदि धातुओ के अन्त्य वण का, विकल्प से 'क्ख' आदेश होता है । जेसे—

भुज—अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा भोक्खति, भुञ्जिस्सति । मुच—अमोक्खा, अमुञ्चिस्सा मोक्खति, मुञ्चिस्सति । वच—अवक्खा, अवचिस्सा वक्खति, वचिस्सति । पा+विस—पावेक्खा, पाविसिस्सा पवेक्खति, पविसिस्सति ।

'विस' धातु के अन्त्य वण का, अन्यत्र भी विकल्प से 'क्ख' होता है जैसे—**पावेक्खि, पाविसि** [परिसमाप्त्यथक भूत—पठम पुरिस, एकवचन] ।

६ **हुस्स हेहेहिहोही स्सच्चादो** ६ ३१—भविष्यत्काल मे, 'हू' धातु का 'हे', 'हेहि', तथा 'होहि' आदेश हो जाता है। जैसे—**हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति** ।

७ **स्से वा** ६ ५६—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल मे, 'सक' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णा' का विकल्प से 'ख' आदेश हो जाता है । जैसे—

सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा सक्खिस्सति, सक्कुणिस्सति ।

८ **तेसु सुतो क्णोक्णान रोट्** ६ ६०—परिसमाप्त्यर्थक भूत, हेतुहेतुमद्भूत, तथा भविष्यत्काल मे, 'सु' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णो' तथा 'क्णा' का विकल्प से 'रोट्' आदेश हो जाता है। जैसे—**अस्सोसि, असुणि । अस्सोस्सा, असुणिस्सा । सोस्सति, सुणिस्सति** ।

९ **ईस्सच्चादिसु क्ना लोपो** ६ ६४—परिसमाप्त्यथक भूत तथा भविष्यत्काल मे, 'आ' धातु से परे, उसके विकरण 'क्ना' का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे—**अञ्ञासि, अजानि । अस्सति, जानिस्सति** ।

१० **एतिस्मा** ६ ६६—'ई' धातु से परे, 'स्स' का विकल्प से 'हि' आदेश हो जाता है । जैसे—**एहिति, एस्सति** ।

११ **हना छेखा** ६ ६७—'हन' धातु से परे, 'स्स' का विकल्प से 'छे' तथा 'ख' आदेश हो जाता है । जैसे—**हञ्छेम, हनिस्साम । पटिहखामि, पटिहनिस्सामि ।**

हा—**हाहति, जहिस्सति**[१२] । **दक्ख—दक्खति, दक्खिस्सति**[१३] । **गम—गमिस्सन्ति, गमिस्सन्ते, गमिस्सरे**[१४] । **अस—भविस्सति**[१५] ।

---

१२ **हा तो ह ६६८**—'हा' धातु से परे, 'स्स' का विकल्प से 'ह' आदेश हो जाता है। जैसे—**हाहति, जहिस्सति** ।

१३ **दक्ख ख हेहि होही हि लोपो ६६९**—'दक्ख', 'ख', 'हेहि', तथा 'होहि' आदेश होने पर, उससे परे, 'स्स' का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे—**दक्खति, दक्खिस्सति । सक्खति, सक्खिस्सति । हेहिति, हेहिस्सति । होहिति, होहिस्सति ।**

१४ **गुरुपुब्बा रस्सा रे न्ते न्तीन ६७४**—गुरु-पूव ह्रस्व स्वर से परे, 'न्ते' तथा 'न्ति' प्रत्ययो का विकल्प से 'रे' आदेश हो जाता है। जैसे—**गम + अन्ति = गच्छन्ति, गच्छरे । गम + अन्ते = गच्छन्ते, गच्छरे । गमिस्सरे ।**

१५ **अ आ स्स आदिसु ५१२९**—परोक्ष-भूत, अनद्यतन-भूत, हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल मे, 'अस' धातु का 'भू' आदेश हो जाता है। जैसे—

अस—बभूव (परोक्ष) । **अभवा** (अनद्यतन) । **अभविस्सा** (हेतुहेतुमद्भूत) । **भविस्सति** (भविष्यत्काल) ।

भविष्यत्काल मे, नवो गणो के धातु के रूप कैसे होगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा —

धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१ भू	भ्वादि	भविस्सति	भविस्सन्ति	भविस्ससि	भविस्सथ	भविस्सामि	भविस्साम
हू	,,	हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति	हेस्सन्ति, हेहिस्सन्ति होहिस्सन्ति	हेस्ससि०	हेस्सथ०	हेस्सामि०	हेस्साम०
नी	,,	नेस्सति	नेस्सन्ति	नेस्ससि	नेस्सथ	नेस्सामि	नेस्साम
या	,,	यास्सति	यास्सन्ति	यास्ससि	यास्सथ	यास्सामि	यास्साम
पच	,,	पचिस्सति	पचिस्सन्ति	पचिस्ससि	पचिस्सथ	पचिस्सामि	पचिस्साम
२ रुध	रुधादि	रुन्धिस्सति	रुन्धिस्सन्ति	रुन्धिस्ससि	रुन्धिस्सथ	रुन्धिस्सामि	रुन्धिस्साम
३ दिव	दिवादि	दिब्बिस्सति	दिब्बिस्सन्ति	दिब्बिस्ससि	दिब्बिस्सथ	दिब्बिस्सामि	दिब्बिसाम
झा	,,	झायिस्सति	झायिस्सन्ति	झायिस्ससि	झायिस्सथ	झायिस्सामि	झायिस्साम
४ तुद	तुदादि	तुदिस्सति	तुदिस्सन्ति	तुदिस्ससि	तुदिस्सथ	तुदिस्सामि	तुदिस्साम
५ जि	ज्यादि	जिनिस्सति	जिनिस्सन्ति	जिनिस्ससि	जिनिस्सथ	जिनिस्मामि	जिनिस्साम
६ की	क्यादि	किणिस्सति	किणिस्सन्ति	किणिस्ससि	किणिस्सथ	किणिस्सामि	किणिस्साम
७ सु	स्वादि	सुणिस्सति	सुणिस्सन्ति	सुणिस्ससि	सुणिस्सथ	सुणिस्सामि	सुणिस्साम
८ तन	तनादि	तनिस्सति	तनिस्सन्ति	तनिस्ससि	तनिस्सथ	तनिस्मामि	तनिस्साम
९ चुर	चुरादि	चोरेस्सति, चोरयिस्सति	चोरेस्सन्ति०	चोरेस्ससि०	चोरेस्सथ०	चोरेस्सामि०	चोरेस्साम०
कथ	,,	कथयिस्सति	कथयिस्सर्ा त	कथयिस्ससि	कथयिस्सथ	कथयिस्सामि	कथयिस्साम
झप	,,	झापेस्सति	झापेस्सन्ति	झापेस्ससि	झापेस्सथ	झापेस्सामि	झापेस्साम

८. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्ध सरण गमिस्सामि। धम्म सरण गच्छिस्सति। सङ्घ सरण गमिस्सथ। झान भावेस्सामि। पञ्ञ भावेस्सति। काये उदय च वय च पस्सिस्सामि। निब्बाण सच्छिकरिस्सामि। अनागते (=भविष्यत्काल मे) बुद्धो भविस्सामि। अञ्ञे' पि बुद्ध-धम्मा भविस्सरे (भविस्सन्ति)। सबोधि पापुणिस्सति। भिक्खु सुख विहरिस्सति। तथागतो न चिर परिनिब्बायिस्सति। पानीय पिविस्सामि। गत्तानि सीत करिस्सति। निब्बाणस्स मग्गो हेहिति। सम्मुखा हेस्साम। गहकारक ! त्व पुन गेह न काहसि। सब्बे सत्ता मरिस्सन्ति। सब्बे पाणा मरिस्सन्ति। अय कायो अचिर पठवि अधिसेस्सति। सच्च भणिस्सामि। न कुज्झिस्सामि। अक्कोधेन कोध जिनिस्सामि। असाधु साधुना जेस्सामि। सुचरित वग्ग चरिस्सामि, दुच्चरित न चरिस्सामि। यो धम्म चरिस्सति सो सुख सेस्सति, अस्मि लोके च परम्हि च। मुनी मारस्स बन्धना मोक्खन्ति। सद्ध लभिस्सथ। अविज्जाय बन्धन छिन्दिस्सामि।

२ पालि मे अनुवाद कीजिए—

बुद्ध की शरण जाता हूँ। बालक लोग सङ्घ की शरण जाते हैं। स्वग लोक मे (सग्ग लोक) उत्पन्न हूँगा। धम्म-चक्क को घुमाऊँगा (पवत्तिस्सामि)। सङ्घ को दान देगे (दस्साम=दज्जिस्साम)। भिक्खु वन मे ध्यान करेगा। वन मे जाऊँगा। बुद्ध को नमस्कार करूँगा। पाप को छोड़ूँगा। त्रिपिटक (तिपिटक) पढ़ूँगा। बुद्धो के धम्म को जानूँगा। बुद्ध मे चित्त प्रसन्न रखूगा (पसादेस्सामि)। तथागत की पूजा करूँगा। भिक्खु लोग एकान्तवास (पन्त-सयनासन) करेगे (कप्पेस्सन्ति)। ग्राम को जाएगा। धर्मोपदेश (धम्म-देसना) सुनेगा। धम्म-ग्रन्थ पढ़ँगा। बालक लोग सूय्य को देखेगे। पण्डित लोग धम्म को जानेगे। मूर्ख (बाला) लोग न देखेगे, न जानेगे। ब्राह्मण लोग धम्म-दान देगे। ब्राह्मण लोग तपस्या करेगे। ब्राह्मण लोग क्रोध नही करेगे, चोरी नही करेगे, तपस्या करेगे, ध्यान करेगे।

३ निम्नलिखित शब्दो से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—धन, दान, कपणो, माता, भाता, माणवको।

धातु—लभ, पच, हस, भास, चल, कस (=खेती करना), दा।

४ निम्नलिखित धातुओ के भविष्यत्काल, प्रथम पुरुष, दोनो वचन में रूप लिखिए—

गम, हर, कर, भू, हु, दिस्स, भुज, वद, सर, मर, सु (सुनना), झा (झायति), मन।

दूसरा काण्ड

चौथा पाठ

नाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—विशेष शब्द)

§ १४. ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

दण्डी (=*सन्यासी*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	दण्डी[१]	दण्डी, दण्डिनो[२]
दुतिया	दण्डिन,[३] दण्डि	दण्डी, दण्डिनो*, दण्डिने[२]
ततिया	दण्डिना	दण्डीहि, दण्डीभि

१ सिस्मि नानपुसकस्स २६८—'सि' विभक्ति आने से, नपुसक लिंग को छोड, दूसरे शब्दो के अन्त्य स्वर का ह्रस्व नही होता है। जैसे—**दण्डी, इत्थी, सयम्भू, वधू।**

[नपुसक लिङ्ग शब्दो के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—**सुखकारि, सयम्भु**]

२ योन नोने पुमे २७७—पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, विकल्प से 'पठमा' के 'यो' का 'नो', तथा 'दुतिया' के 'यो' का 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—**दण्डिनो, दण्डिने, दण्डी।**

३ न म्हीतो २७६—पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, 'अ' विभक्ति का विकल्प से 'न' आदेश हो जाता है। जैसे—**दण्डिन, दण्डि।**

*नो २७८—विकल्प से, 'दुतिया' मे भी, 'यो' का 'नो' होता है। जैसे—**दण्डिनो पस्स।**

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीन
पञ्चमी	दण्डिना, दण्डिस्मा, दण्डिम्हा	दण्डीहि, दण्डीभि
छट्ठी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीन
सत्तमी	दण्डिनि,[4] दण्डिम्हि, दण्डिस्मि	दण्डिसु, दण्डीसु
आलपन	दण्डि[5], दण्डी	दण्डी, दण्डिनो

'दण्डी' शब्द का अर्थ है 'दण्ड वाला'। इसी तरह, दूसरे शब्दो के साथ भी 'ई' प्रत्यय लगा देने से, 'उसका वाला' अर्थ हो जाता है। इस तरह बने, तथा दूसरे भी सभी ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दो के रूप 'दण्डी' के समान होते है। जैसे—

करी (=हाथी), **कामी**, **कुट्ठी** (=कुष्ट रोग वाला), **कुसली**, **गणी** (=गण वाला), **चक्की** (=चक्र वाला), **चागी** (=त्याग करने वाला), **जटी** (=जटा वाला), **ञाणी** (=ज्ञानी), **दन्ती** (=हाथी), **दाठी** (=बाघ), **दीघजीवी** (=दीघ जीवी), **धम्मवादी** (=धमवादी), **धम्मी** (=धर्मी), **पक्खी** (=पाख वाला=पक्षी), **पापकारी**, **बली** (=बल वाला), **भागी** (=भाग वाला), **भोगी** (=भोग करने वाला), **माली** (=माला बनाने वाला), **मूसली** (=बलराम= मूसल धारण करने वाला), **योगी**, **वम्मी** (=बख्तर वाला=सिपाही), **सघी** (=सघ वाला), **सामी** (=स्वामी), **सिखी** (=शिखा वाला=मोर), **सीघयायी** (=शीघ्र जाने वाला), **सुखी** (=सुख से रहने वाला) इत्यादि।

§ १५. ईकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

सुखकारी (=सुख देने वाला)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

---

४ **स्मिनो नि २ ७९**—ईकारान्त शब्द से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश होता है। जैसे—**दण्डिनि**, **दण्डिस्मि**।

५ **गे वा २ ६७**—तीनो लिङ्गो मे, 'ग' विभक्ति आने से, 'घ' तथा ओकारान्त

	एकवचन	अनेकवचन
दुतिया	सुखकारिं	सुखकारीनि, सुखकारी
आलपन	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

शेष 'दण्डी' शब्द के समान

§ १६. ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

सब्बञ्ञू (=सर्वज्ञ)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सब्बञ्ञू	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो[१]
दुतिया	सब्बञ्ञुं	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो
ततिया	सब्बञ्ञुना	सब्बञ्ञूहि, सब्बञ्ञूभि
चतुत्थी	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञुस्स	सब्बञ्ञून
पञ्चमी	सब्बञ्ञुना, सब्बञ्ञुस्मा, सब्बञ्ञुम्हा	सब्बञ्ञूहि, सब्बञ्ञूभि
छट्ठी	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञुस्स	सब्बञ्ञून
सत्तमी	सब्बञ्ञुम्हि, सब्बञ्ञुस्मि	सब्बञ्ञुसु
आलपन	सब्बञ्ञु	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो

शब्दावली—**मग्गञ्ञू** (=मार्गज्ञ), **धम्मञ्ञू** (=धर्मज्ञ), **अत्थञ्ञू** (=अर्थज्ञ), **कालञ्ञू** (=कालज्ञ), **रत्तञ्ञू** (=पुराना परिचित), **मत्तञ्ञू** (=मात्रा को जानने वाला), **कतञ्ञू** (=कृतज्ञ), **तत्तञ्ञू** (=तत्वज्ञ), **विदू** (=जानने वाला), **वेदगू** (=वेदनाओ के पार जाने वाला, अर्हत्), **पारगू** (=पार जाने वाला), इत्यादि ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दो के रूप 'सब्बञ्ञू' शब्द के समान होगे।

शब्दो को छोड, दूसरे शब्दो के अन्त्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व होता है। जैसे—**दण्डि, दण्डी। इत्थि, इत्थी। वधु, वधू। सयम्भु, सयम्भू।**

६ **कूतो** २८७—'कू' प्रत्ययान्त शब्दो [देखिए—पृ० १९२] से परे, पुल्लिङ्ग मे—'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नो' आदेश—होता है। जैसे—

सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञू। विदुनो, विदू।

§ १७. ऊकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

सयम्भू (= स्वयम्भू)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि
दुतिया	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि
आलपन	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि

शेष 'सब्बञ्ञू' शब्द के समान

§ १८. ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

गो (=बैल)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	गो	गावो, गवो[7]
दुतिया	गावु,[8] गाव, गव	गावो,[9] गवो
ततिया	गावेन, गवेन,[7] गावा, गवा[10]	गोहि, गोभि

---

७ गोस्सागसिहिनसु गावगवा २६९—'ग', 'सि', 'हि' तथा 'न' विभक्तियो को छोड, दूसरी विभक्तियो के आने से, 'गो' शब्द का 'गाव' तथा 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे—**गो+यो=गावो, गवो। गो+ना=गावेन, गवेन। गो+स=गावस्स, गवस्स। गो+स्मा=गावस्मा, गवस्मा। गो+स्मिं=गावे, गवे।**

८ गावुम्हि २७४—'अ' विभक्ति आने से, 'गो' शब्द का विकल्प से 'गावु' आदेश होता है। जैसे—**गो+अ=गवु। गाव, गव।**

९ उभगोहि टो २१७२—'उभ' तथा 'गो' शब्दो से परे, 'यो' विभक्ति का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—**उभ+यो=उभो। गो+यो=गावो।**

१० नास्सा २७३—'गो' शब्द से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'आ' आदेश होता है। जैसे—**गो+ना=गावा, गवा। गावेन, गवेन।**

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	गावस्स, गवस्स, गव[11]	गव, गुन्न,[12] गोन
पञ्चमी	गवा, गावा,[1] गावस्मा, गावम्हा[7], गवस्मा, गवम्हा	गोहि, गोभि
छट्ठी	गावस्स, गवस्स,[7] गव[11]	गव, गुन्न,[12] गोन
सत्तमी	गावे, गवे,[7] गावम्हि, गवम्हि, गावस्मि, गवस्मि	गावेसु, गवेसु,[13] गोसु
आलपन	गो	गावो, गवो

पालि भाषा मे, एकारान्त शब्द नही मिलते है। ओकारान्त शब्द भी, 'गो' को छोड कर और नही मिलते है।

स्त्रीलिङ्ग मे भी, 'गो' शब्द के रूप पुल्लिङ्ग के ही समान होते है।

§ १९. ओकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

चित्तगो (=विचित्र गौओ वाला)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि
दुतिया	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि
आलपन	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि

शेष 'आयु' शब्द के समान

---

११ गवसेन २७१—'स' विभक्ति के साथ, 'गो' शब्द का रूप विकल्प से 'गव' होता है। जैसे—गो+स=गव।

१२ गुन्न च नना २७२—'न' विभक्ति के साथ, 'गो' शब्द के रूप विकल्प से 'गुन्न' तथा 'गव' होते है। जैसे—गो+न=गुन्न, गव। गोन।

१३ सुम्हि वा २७०—'सु' विभक्ति आने से, 'गो' शब्द का विकल्प से 'गाव' तथा 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे—गो+सु=गावेसु, गवेसु, गोसु।

'गो' शब्द के स्थान मे, सभी विभक्तियो मे, विकल्प से 'गोण' आदेश हो जाता है, और उसके रूप पुल्लिङ्ग अकारान्त 'बुद्ध' शब्द के समान होते है।

शेष अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द

§ २० अत्त (=आत्मा)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अत्ता	अत्ता, अत्तानो
दुतिया	अत्तान, अत्त	अत्तानो, अत्ते
ततिया	अत्तेन, अत्तना	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि[14]
चतुत्थी	अत्तनो,[15] अत्तस्स	अत्तान
पञ्चमी	अत्तना,[17] अत्तस्मा, अत्तम्हा	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि[14]
छट्ठी	अत्तनो,[15] अत्तस्स	अत्तान
सत्तमी	अत्तनि, अत्तस्मि, अत्तम्हि, अत्ते	अत्तनेसु,[14] अत्तेसु
आलपन	अत्त, अत्ता	अत्ता, अत्तानो

§ २१ ब्रह्म (=ब्रह्मा)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	ब्रह्मा	ब्रह्मा, ब्रह्मानो
दुतिया	ब्रह्माण, ब्रह्म	ब्रह्मानो

---

१४ सुहिसु नक् २ १६७—'सु' तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, 'अत्त' तथा 'आतुम' शब्दो का विकल्प से क्रमश 'अत्तन' तथा 'आतुमन' आदेश हो जाता है। जैसे—अत्त+सु=अत्तनेसु, अत्तेसु। आतुमनेसु, आतुमेसु। अत्तनेहि, अत्तेहि। आतुमनेहि, आतुमेहि।

कभी कभी, दूसरी जगह भी, 'न' का आगम होता है। जैसे—वेरिनेसु= वैरी लोगो मे।

१५ नोत्तातुमा २ १६६—'अत्त' तथा 'आतुम' शब्दो से परे, 'स' विभक्ति

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	ब्रह्मना, ब्रह्मुना[16]	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्मूहि, ब्रह्मूभि
चतुत्थी	ब्रह्मुनो,[16] ब्रह्मस्स	ब्रह्मान, ब्रह्मून[16]
पञ्चमी	ब्रह्मना, ब्रह्मुना[17]	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्मूहि, ब्रह्मूभि
छट्ठी	ब्रह्मनो,[16] ब्रह्मस्स	ब्रह्मान, ब्रह्मून[16]
सत्तमी	ब्रह्मे, ब्रह्मनि, ब्रह्मस्मि, ब्रम्हम्हि	ब्रह्मेसु
आलपन	ब्रह्मे	ब्रह्मा, ब्रह्मानो

§ २२ राज (=*राजा*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	राजा[18]	राजा, राजानो[19]
दुतिया	राजानं,[20] राजं	राजानो [19]

का विकल्प से 'नो' होता है। जैसे—**अत्तनो, अत्तस्स । आतुमनो, आतुमस्स ।**

१६ **ब्रह्मस्सु वा** २ १९२—**नाम्हि** २ १९३—'स', 'नं', तथा 'ना' विभक्तियो के आने से, 'ब्रह्म' शब्द का विकल्प से 'ब्रह्मु' आदेश हो जाता है। जैसे—

ब्रह्मुनो । ब्रह्मून । ब्रह्मुना ।

१७ **स्मास्स ना ब्रह्मा च** २ १९८—'ब्रह्म', 'अत्त', तथा 'आतुम' शब्दो से परे, 'स्मा' विभक्ति का 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे—ब्रह्म+स्मा= **ब्रह्मुना । अत्तना । आतुमना ।**

१८ **राजादियुवादित्वा** २ १५६—'राज' आदि, तथा 'युव' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, 'सि' विभक्ति का 'आ' आदेश होता है। जैसे—

राज+सि=**राजा । युवा ।**

१९ **योनमानो** २ १५८—'राज' आदि, तथा 'युव' आदि शब्दो से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'आन' आदेश हो जाता है। जैसे—

राज+यो=**राजानो । युवानो ।**

२० **वाम्हानङ्** २ १५७—'अं' विभक्ति आने पर, 'राज' आदि, तथा 'युव'

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	रञ्ञा,[21] राजेन, राजिना[22]	राजेहि, राजूहि, राजेभि, राजूभि[23]
चतुत्थी	रञ्ञो, रञ्ञस्स, राजिनो, राजस्स[24]	रञ्ञ,[25] राजून, राजान
पञ्चमी	रञ्ञा,[21] राजम्हा, राजस्मा	राजेहि, राजेभि, राजूहि, राजूभि
छट्ठी	रञ्ञो, रञ्ञस्स, राजिनो, राजस्स[24]	रञ्ञ,[25] राजून,[23] राजान
सत्तमी	रञ्ञे, राजिनि,[26] राजस्मि, राजम्हि	राजूसु,[23] राजेसु
आलपन	राज, राजा	राजानो, राजा

आदि शब्दो का विकल्प से क्रमश 'राजान' तथा 'युवान' आदेश हो जाता है। जैसे—

राज+अ=राजान। युवान।

२१ **नास्मासु रञ्ञा २ २२४**—'ना' तथा 'स्मा' विभक्तियो के साथ, 'राज' शब्द का रूप **'रञ्ञा'** होता है।

२२ **राजस्सि नाम्हि २ १२५**—'ना' विभक्ति आने से, 'राज' शब्द का विकल्प से 'राजि' आदेश हो जाता है। जैसे—**राजिना**।

२३ **सुनहिसु २ १२६**—'सु', 'न', तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, 'राज' शब्द का विकल्प से 'राजू' आदेश हो जाता है। जैसे—

राजूसु। राजून। राजूहि।

२४ **रञ्ञो रञ्ञस्स राजिनो से २ २२५**—'स' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द के रूप **'रञ्ञो, रञ्ञस्स, रजिनो'** होते है।

२५ **राजस्स रञ्ञ २ २२३**—'न' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द का रूप **'रञ्ञ'** होता है।

२६ **स्मिम्हि रञ्ञे राजिनि २ २२६**—'स्मि' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द के रूप **'रञ्ञे, रजिनि'** होते है।

द्रष्टव्य—**समासे वा २ २२७**—'राज' शब्द के साथ समास होने पर, ऊपर कहे गए आदेश विकल्प से होते है। जैसे—

कासिरञ्ञा, कासिराजेन। कासिरञ्ञा, कासिराजस्मा। कासिरञ्ञो, कासिराजस्स। कासिरञ्ञे, कासिराजे।

§ २३ पुम (=*मनुष्य*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	पुमा, पुमो	पुमो, पुमानो
दुतिया	पुमान, पुम	पुमानो, पुमाने, पुमे
ततिया	पुमाना, पुमुना[२७], पुमेन[२८]	पुमानेहि, पुमानेभि, पुमेहि, पुमेभि
चतुत्थी	पुमुनो,[२७] पुमस्स	पुमान
पञ्चमी	पुमाना, पुमुना,[२७] पुमा, पुमस्मा, पुमम्हा	पुमानेहि, पुमेहि, पुमानेभि, पुमेभि
छट्ठी	पुमुनो,[२७] पुमस्स	पुमान
सत्तमी	पुमाने,[२९] पुमे, पुमस्मि, पुमम्हि	पुमासु, पुमानेसु, पुमेसु[३०]
आलपन	पुम,[३१] पुम	पुमानो, पुमा

§ २४ सा (=*कुत्ता*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सा	सा, सानो
दुतिया	स, सान[३२]	से, साने

---

२७ **पुमकम्मथामद्धान वा सस्मासु च २।१९४**—'स', 'स्मा' तथा 'ना' विभक्तियो के आने से, 'पुम', 'कम्म' (=कम), 'थाम' (=धैर्य), तथा 'अद्ध' (=भाग) शब्दो के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'उ' हो जाता है। जैसे—**पुमुनो, पुमुना। कम्मुनो, कम्मुना। थामुनो, थामुना। अद्धुनो, अद्धुना।**

२८ **नाम्हि २।१८७**—'पुम' शब्द से परे, 'ना' विभक्ति आने से ये रूप बनते हैं—**पुमाना। पुमेन।**

२९ **पुमा २।१८६**—'पुम' शब्द से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ने' आदेश होता है। जैसे—**पुमाने, पुमे।**

३० **सुम्हा च २।१८८**—'पुम' शब्द से परे 'सु' विभक्ति आने से, ये रूप बनते हैं—**पुमानेसु, पुमेसु, पुमासु।**

३१ **गस्स २।१८९**—'पुम' शब्द से परे, 'ग' विभक्ति का विकल्प से 'अ' आदेश हो जाता है। जैसे—**पुम। पुम।**

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	सेन, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
चतुत्थी	सस्स, साय, सानस्स[32]	सान
पञ्चमी	सा, सस्मा, सम्हा, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
छट्ठी	सस्स, सानस्स[32]	सान
सत्तमी	से, सस्मि, सम्हि, साने	सासु
आलपन	स, सान	सा, सानो

§ २५ युव (=युवक)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	युवा	युवा, युवानो,[33] युवाना
दुतिया	युवान, युव	युवाने,[33] युवे
ततिया	युवाना, युवानेन, युवेन	युवानेहि, युवानेभि, युवेहि, युवेभि
चतुत्थी	युवानस्स, युवस्स, युविनो[34]	युवानान, युवान
पञ्चमी	युवाना,[35] युवानस्मा, युवानम्हा	युवानेहि,[36] युवानेभि, युवेहि, युवेभि
छट्ठी	युवानस्स, युवस्स, युविनो[34]	युवानान, युवान
सत्तमी	युवाने,[35] युवानस्मि, युवस्मि युवानम्हि, युवम्हि, युवे	युवानेसु,[36] युवासु, युवेसु
आलपन	युव, युवा, युवाना, युवान	युवानो, युवाना

'मघव' (=इन्द्र) शब्द के रूप भी 'युव' के समान होगे।

---

३२ सास्ससे चानङ् २ १९०—'अ', 'स' तथा 'ग' विभक्तियो के आने से, 'सा' शब्द का 'सान' आदेश हो जाता है। जैसे—सान। सानस्स। भो सान !

३३ योन नोने वा २ १८३—'युव' आदि शब्दो से परे, 'यो' विभक्तियो का विकल्प से क्रमश 'नो' तथा 'ने' आदेश होता है। जैसे—युवानो। युवाने।

३४ युवा सस्सिनो २ १९५—'युव' शब्द से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'इनो' आदेश होता है। जैसे—युविनो, युवस्स।

३५ स्मास्मिन्न नाने २ १८२—'युव' आदि शब्दो से परे, 'स्मा' तथा 'स्मि'

§ २६. 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द

'वाला' के अर्थ मे, नाम के आगे 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्यय लगते है। अकारान्त या आकारान्त शब्दो के आगे 'वन्तु', तथा भिन्न स्वरान्त शब्दो के आगे 'मन्तु' प्रत्यय लगते है। जैसे—**गुणवन्तु**=गुण वाला। **गतिमन्तु**=गतिवाला

पुल्लिङ्ग

गुणवन्तु (=*गुणवाला*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	गुणवा[37]	गुणवन्तो,[38] गुणवन्ता[39]
दुतिया	गुणवन्त[39]	गुणवन्ते[39]
ततिया	गुणवता, गुणवन्तेन[39]	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि[39]

विभक्तियो का क्रमश 'ना' तथा 'ने' आदेश होता है। युव+स्मा=**युवाना**। युव+स्मि=**युवाने**।

३६ **युवादीनं सुहिस्वानङ् २ १८०**—'सु' तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, 'युव' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'आन' आदेश होता है। जैसे—युव+सु=**युवानेसु**। युव+हि=**युवानेहि**।

नोनानेस्वा २ १८१—'नो', 'ना' तथा 'ने' से पूव, 'युव' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—**युवानो, युवाना, युवाने**।

३७ **न्तुस्स २ १५३**—'सि' विभक्ति आने से, 'न्तु' का 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—**गुणवा**।

३८ **न्तन्तूनं न्तो योम्हि पठमे २ २१७**—'पठमा' के अनेक वचन मे, 'न्त' तथा 'न्तु' का विकल्प से—विभक्ति के साथ—'न्तो' हो जाता है। जैसे—**गुणवन्तो, गुणवन्ता। गच्छन्तो, गच्छन्ता**।

३९ **य्वादो न्तुस्स २ ६३**—'यो' आदि विभक्तियाँ आने से, 'न्तु' का 'न्त' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु+यो=गुणवन्त+यो=(अतो योनं टाटे २ ८३) **गुणवन्ता, गुणवन्ते। गुणवन्त। गुणवन्तेन** इत्यादि।

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	गुणवतो,[४] गुणवन्तस्स[३८]	गुणवत,[४१] गुणवन्तान[३९]
पञ्चमी	गुणवता, गुणवन्तस्मा, गुणवन्तम्हा[३९]	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
छट्ठी	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवत, गुणवन्तान
सत्तमी	गुणवति, गुणवन्ते, गुणवन्तस्मि[३९] गुणवन्तम्हि	गुणवन्तेसु[३९]
आलपन	गुणव, गुणव, गुणवा[४२]	गुणवन्तो, गुणवन्ता[३९]

शब्दावली—**कुलवन्तु** (=अच्छा कुल वाला), **धनवन्तु** (=धन वाला), **पञ्ञवन्तु** (=प्रज्ञा वाला), **फलवन्तु** (=फल वाला), **बलवन्तु** (=बल वाला), **भगवन्तु** (=तेज वाला), **मघवन्तु** (=इन्द्र), **यसवन्तु** (=यश वाला), **सीलवन्तु** (=शीलवान्), **सुतवन्तु** (=श्रुतवान्), **हिमवन्तु** (=हिमालय)—**कलिमन्तु** (=कालिमा-युक्त), **कसिमन्तु** (कृषि वाला=कृषक), **केतुमन्तु** (=केतुवाला), **गतिमन्तु** (=गति वाला), **चक्खुमन्तु** (=आँख वाला), **जुतिमन्तु** (=चमक वाला), **धीतिमन्तु** (=धृतिमान्), **बुद्धिमन्तु** (=बुद्धिमान्), **बन्धुमन्तु** (=बन्धुओ वाला), **भानुमन्तु** (=प्रकाश वाला), **मतिमन्तु** (=मतिमान्), **सतिमन्तु** (=स्मृतियुक्त), **सिरीमन्तु** (=श्री सम्पन्न), **सुचिमन्तु**

---

४० **तो ता ति ता सस्मास्मिनासु २ २१९**—'न्त' तथा 'न्तु' का—'स', 'स्मा', 'स्मि' तथा 'ना' विभक्तियो के साथ, विकल्प से क्रमश 'तो', 'ता', 'ति' तथा 'ता' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु+स=**गुणवतो**। **गच्छतो**। गुणवन्तु+ना=**गुणवता**। **गच्छता**। गुणवन्तु+स्मा=**गुणवता**। **गच्छता**। गुणवन्तु+स्मि=**गुणवति**। **गच्छति**।

४१ **त नम्हि २ २१८**—'न्त' तथा 'न्तु' का, 'न' विभक्ति से साथ, विकल्प से 'त' आदेश हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु+न=**गुणवत**। **गच्छत**।

४२ **टटा अगे २ २२०**—आलपन एक वचन मे, विभक्ति के साथ, 'न्त' तथा 'न्तु' का 'अ', 'आ' तथा 'अ' आदेश हो जाता है। जैसे—**भो गुणव, गुणवा, गुणव**। भो **गच्छ, गच्छा, गच्छ**।

(=पवित्रता वाला), **हिमवन्तु**[43] (=हिमालय), **हेतुमन्तु** (=हेतु वाला) इत्यादि 'वन्तु', 'क्तवन्तु' तथा 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्तु' के समान होंगे।

§२७ 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, नपुसक लिङ्ग मे भी, वैसे ही होंगे जैसे पुल्लिङ्ग मे। केवल, पठमा एकवचन मे, **'गुणव'** तथा **'गुणवन्त'** ऐसे दो रूप होंगे, तथा पठमा और दुतिया के अनेक वचन मे **'गुणवन्तानि'** ऐसा भी एक रूप होगा।[44]

स्त्रीलिङ्ग मे, 'वन्तु' का 'वती' तथा 'वन्ती', और 'मन्तु' का 'मती' तथा 'मन्ती' हो जाता है। जैसे—**गुणवती—गुणवन्ती, सिरीमती, सिरीमन्ती।** इनके रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'इत्थी' शब्द के समान होंगे (देखिए—पृ० २४०)।

§२८ **न्तस्स च ट व से** २६४—'अ' तथा 'स' विभक्तियो के आने से, 'न्त' तथा 'न्तु' का बहुधा 'अ' हो जाता है। जैसे—

"य य हि राज भजति, सत वा यदि वा अस"—यहाँ, असन्त+अ='अस' हुआ है।

"किच्चानि कुब्बस्स करेय्य किच्च"—यहाँ, कुब्बन्त+स='कुब्बस्स' हुआ है।

"हिमव व पब्बत"—यहाँ, हिमवन्तु+अ='हिमव' हुआ है।

"सुजातिमन्तो पि अजातिमस्स"—यहाँ, अजातिमन्तु+स='अजातिमस्स' हुआ है।

कही कही, दूसरी विभक्तियो के आने से भी—

"चक्खुमा अन्धिता होन्ति"—यहाँ, चक्खुमन्तु+यो=चक्खुमा। **"वग्गुमुदातीरिया पन भिक्खू वण्णवा होन्ति"**—यहाँ, वण्णवन्तु+यो=वण्णवा।

---

४३ **हिमवतो वा ओ** २१५५—'सि' विभक्ति आने से, 'हिमवन्तु' शब्द के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'ओ' आदेश होता है। जैसे—**हिमवन्तो। हिमवा।**

४४ **अ ड नपुसके** २१५४—'सि' विभक्ति आने से, नपुसक लिङ्ग मे, 'न्तु' का 'अ' तथा 'न्त' हो जाता है। जैसे—**गुणव कुल, गुणवन्त कुल।**

६. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) निच्च **झायिनो** धीरा निब्बाण फुसन्ति। उट्ठानवतो सतिमतो **धम्म-जीविनो** अप्पमत्तस्स यसो अभिवड्ढति। यो भिक्खु **मेत्ता-विहारी** बुद्ध-सासने पसन्नो, सो सन्त सुख पद अधिगच्छति। यो भिक्खु अत्तना अत्तान चोदयति, **अत्तना** अत्त पटिवासेति, सो **सतिमा** भिक्खु सुख विहाहिसि (विहरिस्सति)।

(ख) अत्ता हि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति।
तस्मा सञ्ञमयेत्तान, अस्स भद्र व वाणिजो॥१॥

भगवतो धम्मो विञ्ञूहि वेदितब्बो। सब्बञ्ञुनो भगवतो सम्मा-सम्बुद्धस्स सावका **अरहन्तो** होन्ति। ब्रम्हुना याचितो सन्तो भगवा धम्म-चक्क पवत्तेसि। यो को चि झायी काये कायानुपस्सी विहरित, सो **आतापी** सम्पजानो सतिमा होति।

(ग) **राजानो** राजूहि सद्धि सन्थव कारिनो होन्ति। गुणवन्तो सब्बञ्ञुनो सत्थुनो सासन-करा ति। गुणवन्ते **साने**' पि पुमानो ममायन्ति। सानो सेहि सद्धि सन्थव न करोन्ति। एस सभावो सान सासु। पुमानो **पुमेहि** (पुमा-नेहि) सद्धि मेत्तायन्ति। एस धम्मता पुमान पुमानेसु। **युवानानमेव** युवानो युवा-नेहि सद्धि कीळन्ति, युवानेस्वे व (युवानेसु एव) पसीदन्ति। लाभात्थाय कम्म करोन्तो अभिपस्सन्ना होन्ति।

२ ऊपर के काले अक्षरो में छपे शब्दो के रूप द्वितिया तथा सप्तमी विभक्ति में लिखिए, और उनका वाक्यो में प्रयोग कीजिए।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

सवज्ञ बुद्धो को ब्रह्मा भी नमस्कार करता है, राजा लोग भी वन्दना करते है। गुणवान पुरुष से कौन मेल (सन्थव) करना नही चाहेगा? आप ही अपना मालिक है, अपने को (अत्तान) छोडकर दूसरा कौन मालिक होगा?

दूसरा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(तीसरा भाग—परिसमाप्त्यर्थक भूत[1])

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	अपची,[2] पची, अपचि,[3] पचि	अपचु, पचु, अपचिंसु,[4] अपचसु, पचसु[5] पचिसु[5]
मज्झिमपुरिस	अपचो, पचो, अपचि, पचि[6]	अपचित्थ, अपचुत्थ[3], पचित्थ, पचुत्थ[3]
उत्तमपुरिस	अपचिं, पचिं[4]	अपचिम्ह[3], पचिम्ह[3] अपचिम्हा, पचिम्हा, अपचुम्हा,[4] पचुम्हा[4]

---

१ भूते इउ, ओत्थ, इम्हा, आऊ, सेव्ह, अम्हे ६ ४—परिसमाप्त हो जाने के अर्थ मे, धातु से परे ये प्रत्यय होते है। जैसे—**पची पचु, पचो पचित्थ, पचिं पचिम्हा** इत्यादि।

मा योगे ईआआदि ६ १३—'मा' (=नही) शब्द के योग मे, विकल्प से परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन-भूत होते है। जैसे—**मास्सु पुनपि एवरूपमकासि**—वह फिर भी ऐसा न करे। **मा भव अगमा वन**=आप वन मत जायँ।

२ **आईस्सादिस्वञ् वा ६ १५**—अनद्यत-भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, तथा हेतुहेतुमद्भूत मे, धातु से पूव विक प से 'अ' का आगम होता है। जैसे—**अपचा, पचा** (अनद्यत)। **अपची, पची** (परि० भूत)। **अपचिस्सा, पचिस्सा** (हेतु०)।

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	अपचा, पचा, अपचित्थ[७]	अपचू, पचू
मज्झिमपुरिस	अपचसे, पचसे	अपचव्ह, पचव्ह
उत्तमपुरिस	अपच,[६] अपच, पच, पच	अपचम्हे, पचम्हे

---

३ **आईऊम्हास्सास्सम्हान वा** ६ ३३—'आ, ई, ऊ, म्हा, स्सा, स्सम्हा'—इनका विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे—**अपचा, अपच। अपची, अपचि। अपचू, अपचु। अपचिम्हा, अपचिम्ह। अपचिस्सा, अपचिस्स। अपचिस्सम्हा, अपचिस्सम्ह।**

म्हात्थानमुञ् ६ ४५—'म्हा' तथा 'त्थ' प्रत्ययो से पूर्व, विकल्प से 'उ' का आगम होता है। जसे—**अपचिम्हा, अपचुम्हा। अपचित्थ, अपचुत्थ।**

४ **इस्स च सिञ्** ६ ४६—'इ' 'म्हा', तथा 'त्थ' प्रत्ययो के आने से, धातु से परे कही कही, विकल्प से 'सि' का आगम होता है। जैसे—

कर+इ=कर+सि+इ=**अकासि अकरि। अकासिम्हा, अकरिम्हा। अकासित्थ, अकरित्थ।**

५ **उंसिस्स्वसु** ६ ३९—'उ' प्रत्यय का, विकल्प से 'इसु' तथा 'असु' आदेश होता है। जैसे—**अपचिसु, अपचसु।**

६ **ओस्स अइत्थत्थो** ६ ४२—'ओ' प्रत्यय का, विकल्प से 'अ', 'इ', 'त्थ' तथा 'त्थो' आदेश होता है। जैसे—त्व **अपच, अपचि, अपचित्थ, अपचित्थो, अपचो।**

सि ६ ४३—'ओ' प्रत्यय का कही कही विकल्प से 'सि' आदेश हो जाता है। जैसे—भू+ओ=**अहोसि अभुवो।**

७ **एय्याथस्सेअआईथानओअअत्थत्थोव्होक्** ६ ३८—'एय्याथ' आदि प्रत्ययो के बाद, क्रमश 'ओ' आदि होता है। जैसे—**तुम्हे पचेय्याथो, पचेय्याथ। त्व अपचिस्स, अपचिस्से। अह अपच, अपच। सो अपचित्थ, अपचा। सो अपचित्थो, अपची। तुम्हे पचथव्हो, पचथ।**

§ ३ **परिसमाप्त्यर्थक** भूतकाल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—

वच—अवोच[८] । **कर—अकासि**[९] । **हर—अहासि**[१०] । **गम—अगा**[११] । **डस—अडच्छि**[१२] । **कुस—अक्कोच्छि**[१३] । **नि—नेसु**[१४] । **सु—अस्सोसु**[१४] । **हु—अहेसु**[१५] । **दा—अदासि, अदा**[९] । **अस—आसि**[१६] । **सक—असक्खि**[१७] । **लभ—अलभत्थ**[१८] ।

---

८ **ई आदो वचस्सोम्** ६ २१—'ई' आदि प्रत्ययों के आने से, 'वच' धातु का 'वोच' आदेश हो जाता है। जैसे—वच+ई=वोच+इ=**अवोच**।

९ **का ई आदिसु** ६ २४—'ई' आदि प्रत्ययों के आने से, विकल्प से 'कर' धातु का 'का' आदेश हो जाता है। जैसे—**अकासि, अका । अकरि** ।

दीघा ईस्स ६ ४४—दीर्घ स्वर से परे, 'ई' प्रत्यय का विकल्प से 'सि' आदेश हो जाता है। जैसे—**अकासि, अका । अदासि, अदा** ।

१० **आ ई आदिसु हरस्सा** ६ २८—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'हर' धातु का विकल्प से 'हा' आदेश हो जाता है। जैसे—हर+ई=**अहासि, अहरि । अहा, अहरा** ।

११ **गमिस्स** ६ २९—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'गम' धातु का विकल्प से 'गा' आदेश हो जाता है। जैसे—गम+ई=**अगा, अगमि । अगा अगमा** ।

१२ **डसस्स च च्छङ्** ६ ३०—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'गम' तथा 'डस' धातुओं का विकल्प से क्रमश 'गञ्छ' तथा 'डञ्छ' आदेश हो जाता है। जैसे—**अगञ्छि, अगच्छि । अडञ्छि, अडसि** ।

१३ **कुसरुहेहिस्स छि** ६ ३४—'कुस' तथा 'रुह' धातु से परे, 'ई' का विकल्प से 'छि' आदेश हो जाता है। जैसे—कुस+ई=**अक्कोच्छि, अक्कोसि । अभिरुच्छि, अभिरुहि** ।

१४ **एओत्तासु** ६ ४०—आदिष्ट 'ए' तथा 'ओ' से परे, 'उ' विभक्ति का विकल्प से 'सु' आदेश होता है। जैसे—नि+उ=ने+उ=**नेसु, नयिंसु । अस्सोसु, अस्सु** ।

१५ हुतो रेसु ६४१—'हु' धातु से परे, 'उ' प्रत्यय का विकल्प से 'रेसु' आदेश होता है। जैसे—हु+उ=**अहेसु, अहुउ।**

१६ ईआदो दीघो ६५६—परिसमाप्त्यथक भूत मे, 'अस' धातु का 'आस' आदेश हो जाता है। जैसे—

आसि,	**आसु**
आसि,	**आसित्थ**
आसिं,	**आसिम्हा**

१७ सका णास्स ख इआदो ६५८—परिसमाप्त्यथक भूत मे, 'सक' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णा' का 'ख' आदेश होता है। जैसे—**असक्खि, असक्खिसु।**

तेसु सुतो क्णोक्णान रोट् ६६०—'ई' आदि विभक्तियो के, तथा 'स्स' के आने से, 'सु' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णो' तथा 'क्णा' का 'रोट्' आदेश हो जाता है। जैसे—**अस्सोसि, असुणि। अस्सोस्सा, असुणिस्सा। सोस्सति, सुणिस्सति।**

१८ लभा ईईन त्था वा ६७३—'लभ' धातु से परे, 'इ' तथा 'ई' का विकल्प से क्रमश 'थ' तथा 'थ' हो जाता है। जैसे—**अह अलत्थ, अलभि। सो अलत्थ, अलभि।**

परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल में नवों गणों के धातु के

धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन
१ भू	भ्वादि	अभवि, भवि, अभवी, भवी	अभवु, भवु, अभविसु, भविसु, अभवसु, भवसु	अभवो, भवो, अभवि, भवि
हू	,,	अहोसि, अहु	अहेसु	अहोसि
नी	,,	नयि	नयिसु	नयि
या	,,	यायि	यायिसु	यायि
पच	,,	अपचि	अपचु	अपचो
२ रुध	रुधादि	अरुन्धि, रुन्धि	अरुन्धिसु, रुन्धिसु	अरुन्धि, रुन्धि,
३ दिव	दिवादि	अदिब्बि, दिब्बि	अदिब्बिसु, दिब्बिसु	अदिब्बि, दिब्बि
झा	,,	अझायि, झायि	अझायिसु, झायिसु	अझायो
४ तुद	तुदादि	अतुदि, तुदि	अतुदु, तुदु, अतुदिसु, तुदिसु, अतुदसु, तुदसु	अतुदो, तुदो, अतुदि, तुदि
५ जि	ज्यादि	अजिनि, जिनि	जिनिसु, अजनिसु	अजिनि, जिनि
६ की	क्यादि	अकिणि, किणि	अकिणिसु, किणिसु	अकिणि, किणि
७ सु	स्वादि	सुणि, अस्सोसि	सुणिसु	सुणि
८ तन	तनादि	तनि	तनिसु	तनि
९. चुर	चुरादि	अचोरयि,चोरयि	चोरयिसु	चोरयि
कथ	,,	कथयि	कथयिसु	कथयि
झप	,,	झापयि	झापयिसु	झापयि

रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा —

पुरिस	उत्तम पुरिस	
अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
अभवित्थ, भवित्थ, अभवुत्थ, भवुत्थ	अभविं, भविं	अभविम्ह, भविम्ह, अभविम्हा, भविम्हा, अभवुम्हा, भवुम्हा
अहोसित्थ	अहोसिं	अहोसिम्हा
नयित्थ	नयिं	नयिम्हा
यायित्थ	यायिं	यायिम्हा
अपचित्थ	अपचिं	अपचिम्ह
अरुन्धित्थ, रुन्धित्थ	अरुन्धिं, रुन्धिं	अरुन्धिम्हा, रुन्धिम्हा
अदिब्बित्थ, दिब्बित्थ	अदिब्बिं, दिब्बिं	अदिब्बिम्हा, दिब्बिम्हा
अझायित्थ, झायित्थ	अझायिं, झायिं	अझायिम्हा, झायिम्हा
अतुदित्थ, तुदित्थ	अतुदिं, तुदिं	अतुदिम्हा
अजिनित्थ, जिनित्थ	अजिनिं, जिनिं	अजिनिम्हा
अकिणित्थ, किणित्थ	अकिणिं, किणिं	अकिणिम्ह, किणिम्ह
सुणित्थ	सुणिं	सुणिम्हा
तनित्थ	तनिं	तनिम्हा
चोरयित्थ	चोरयिं	चोरयिम्हा
कथयित्थ	कथयिं	कथयिम्हा
झापयित्थ	झापयिं	झापयिम्हा

१०. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

महामाया'पि देवी दस मासे कुच्छिना बोधि-सत्त **परिहरि** । ञाति-घर गन्तु-कामा महाराजस्स **आरोचेसि** । राजा 'साधू' ति सम्पटिच्छि । कपिलवत्थुतो याव देवदह-नगरा मग्ग सम **कारेसि**। उभय-नगर-वासीन' पि लुम्बिनी-वन नाम मङ्गल-साल-वन **अहोसि**। देवी साल-वन **पाविसि**। सा साल-साख **गण्हि**। तावदेव च'स्सा कम्मज-वाता **चलिसु**। अथ'स्सा साणि परिक्खिपिसु। महाजनो पटिक्कमि। महाब्राह्माणो सुवण्ण-जालेन बोधि-सत्त सम्पटिच्छिसु। देविया पुरतो ठपेत्वा, 'अत्तमना, देवि ! होहि। महेसक्खो ते पुत्तो उप्पन्नो' ति आहसु। बोधि-सत्तो धम्मागसनतो धम्म-कथिको विय **निक्खमि**। दस पि दिसा अनुदिसा विलोकेसि। उत्तराय दिसाय सत्तपद-वीतिहारेन अगमासि। ततो सत्तम-पदे **अट्ठासि**। 'अग्गो' हमस्मि लोकस्सा'ति आदिक आसभि वाच **निच्छारेसि**। सीहनाद **नदि**।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे क्रियापदो के रूप 'मज्झिम पुरिस' तथा 'उत्तम पुरिस' में लिखिए ।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

बोधिसत्व प्रकट हुए। सात पग चले। ब्रह्मा लोग आए। देवता लोग आए। सब लोगो ने नमस्कार किया। सब प्रसन्न हुए। विपुल आलोक हुआ। बोधि-सत्व ने सिह-नाद किया। देवो ने कहा। देवताओ ने उसको देखा।

कुमार अपने उद्यान-भूमि मे गए। दु खित मनुष्य को देखा। सारथि को बुलाया। सारथि रथ को उधर ही ले गया। बोधि-सत्व घर से निकला। काषाय वस्त्र पहन लिया। घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ। बहुत लोगो ने सुना।

बोधि-सत्व ने तपस्या की। अकेला होकर (ऊपकट्ठो) विहार किया, ध्यान किया। उसके चित्त मे वितर्क उत्पन्न हुआ। धम्म-चक्षु उत्पन्न हुआ। बुद्ध ने धम्म-चक्र चलाया।

४ निम्नलिखित धातुओ के रूप भूतकाल में लिखिए—

खाद् (=खाना)। घट् (=प्रयत्न करना)। आ चिक्ख् (=कहना)।

जल् (=जलना)। दा (=देना)। पा (=पीना)। सु (=सुनना)। हा (=त्याग करना)। कर् (=करना)। सक् (=सकना)। ञा (=जानना)। युज् (=मिलना=लग जाना), हु (=होना)। गम् (=जाना)। झा (=ध्यान करना)।

५ निम्नलिखित नामपद तथा धातुओं से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—दारका, फलानि, अग्गि, पापानि, भिक्खू, मुनयो, पठन, गमन, भावना, झानानि।

धातु-सद्दा—खाद्। डह। वि+नुद् (=हटाना)। झा (=ध्यान करना)। कर्। हू।

दूसरा काण्ड

छठा पाठ

नाम-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष शब्द)

§ २९. 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययान्त शब्द

न्तो कत्तरि वत्तमाने ५ ६४—वतमान काल मे, 'करता हुआ' इस अर्थ मे, धातु से परे 'न्त' प्रत्यय लगता है। जैसे—**तिट्ठन्तो, गच्छन्तो**= खडा होता हुआ, जाता हुआ। 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द कर्त्ता का विशेषण होता है।

मानो ५ ६५—वर्तमान काल मे, 'न्त' के स्थान मे 'मान' प्रत्यय भी आता है। जैसे—**तिट्ठमानो, गच्छमानो**=खडा होता हुआ, जाता हुआ। 'मान' प्रत्ययान्त शब्द भी कर्त्ता का विशेपण होता है।

तेस्सपुब्बानागते ५ ६७—भविष्यत्काल मे, 'न्त' और 'मान' प्रत्ययो से पूर्व, 'स्स' का आगम होता है। जैसे—**हसिस्सन्तो, हसिस्समानो वा सो इध आगमिस्सति**=हँसते हुए वह यहाँ आवेगा।

मानस्स मस्स ५ १६२—कही कही, धातु से परे, 'मान' प्रत्यय के 'म' का लोप होता है। जैसे—**कराणो**=करते हुए।

'मान' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग मे 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुसक लिग में 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग मे 'लता' शब्द के समान होते हैं।

पुल्लिङ्ग में, 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द के रूप निम्न प्रकार होते है—

गच्छन्त (=*जाता हुआ*)

पुंलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	गच्छं[1], गच्छन्तो	गच्छन्तो, गच्छन्ता
दुतिया	गच्छन्तं	गच्छन्ते
ततिया	गच्छता, गच्छन्तेन	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
चतुत्थी	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
पञ्चमी	गच्छता, गच्छन्तम्हा, गच्छन्तस्मा	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
छट्ठी	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
सत्तमी	गच्छति, गच्छन्तस्मिं, गच्छन्तम्हि, गच्छन्ते	गच्छन्तेसु
आलपन	गच्छं, गच्छ, गच्छा	गच्छन्तो, गच्छन्ता

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	गच्छं, गच्छन्तं	गच्छन्ता, गच्छन्तानि, गच्छन्ति
दुतिया	गच्छन्तं	गच्छन्ते, गच्छन्तानि, गच्छन्ति
आलपन	गच्छं, गच्छन्त	गच्छन्ता, गच्छन्तानि, गच्छन्ति

शेष पुल्लिङ्ग के समान

§ ३० 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययो के लगने से, धातु के साथ अपने गण का विकरण भी युक्त होता है। जैसे—

भ्वादि गण—**अच्चन्त** (=पूजा करता हुआ), **अज्जन्त** (=कमाता हुआ), **अटन्त** (=घमता हुआ), **अदन्त** (=खाता हुआ), **कम्पन्त** (=काँपता हुआ),

---

१ न्तस्स २ १५०—'सि' विभक्ति आने से, 'न्त' का विकल्प से 'अं' आदेश होता है। जैसे—गच्छन्त+सि=गच्छं। गच्छन्तो।

कीलन्त (=खेलता हुआ), **गज्जन्त** (=गरजता हुआ), **चजन्त** (=छोडता हुआ), **चरन्त** (=चलता हुआ), **जीवन्त** (=जीता हुआ), **तिट्ठन्त** (=खडा होता हुआ), **भव**[2] (=आप), **सन्त**[3]।

रुधादि गण—**रुन्धन्त** (=रोकता हुआ), **गण्हन्त** (=पकडता हुआ), **भुञ्जन्त** (=खाता हुआ), **सिञ्चन्त** (=सीचता हुआ)।

दिवादि गण—**कुज्झन्त** (=क्रोध करता हुआ), **युज्झन्त** (=युद्ध करता हुआ), **सुस्सन्त** (=सूखता हुआ) इत्यादि।

§ ३१ **महन्तारहन्तान टा वा** २ १५२—'सि' विभक्ति आने से, 'महन्त' तथा 'अरहन्त' शब्दो के 'न्त' का विकल्प से 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—महन्त+सि=**महा, मह**। **अरहा** (=अर्हत्), **अरह**।

§ ३२. 'तु' प्रत्ययान्त शब्द

कत्तरि ल्तुणका ५ ३३—'करने वाला' इस अर्थ मे, धातु से परे 'तु' तथा 'णक' प्रत्यय होते हैं। जैसे—**दातु**=देने वाला। **दायक**=देने वाला। 'तु' तथा 'णक' प्रत्ययान्त शब्द कर्ता का विशेषण होता है। [देखिए—पृ० १९१]

'णक' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग मे 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुसकलिग मे 'फल' शब्द के समान, और स्त्रीलिङ्ग मे 'लता' शब्द के समान होगे।

'तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप निम्न प्रकार होगे—

---

२ **भूतो** २ १५१—'सि' विभक्ति आने से, 'भू' धातु से परे 'न्त' प्रत्यय का नित्य 'अ' आदेश होता है।

जैसे—**भव**। ['**भवन्त**' नही होगा]

भवतो वा भोन्तो गयोनासे २ १४८—'ग', 'यो', 'ना' तथा 'स' विभक्तियो के आने से, 'भवन्त' शब्द का विकल्प से 'भोन्त' आदेश हो जाता है। जैसे—

भोन्त, भव। भोन्तो, भवन्तो। भोता, भवता। भोतो, भवतो।

३ **सतो सब्भे** २ १४७—भकार से पूर्व, 'सन्त' शब्द का 'सब्भ' आदेश हो जाता है। जैसे—

सन्त+भि=**सब्भि**।

दातु (=दाता)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	दाता[4]	दातारो[5]
दुतिया	दातार	दातारे, दातारो
ततिया	दातारा	दातारेहि, दातारेभि, दातूहि, दातूभि
चतुत्थी	दातु,[6] दातुनो, दातुस्स	दातारान, दातान[7]

---

४ ल्तुपितादीनमा सिम्हि २ ५९—'सि' विभक्ति आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'आ' हो जाता है। जैसे—दातु+सि=**दाता । कत्ता । पिता ।**

'पिता' आदि शब्द ये है—**पितु, मातु, भातु, धीतु, दुहितु, जामातु, नत्तु, होतु, पोतु ।**

५ ल्तुपितादीनमसे २ १६४—'स' को छोड, दूसरी विभक्तियो के आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'आर' आदेश होता है। जैसे—दातु+यो=**दातारो । पितरो । दातार, पितर । दातारा, पितरा । दातरि, पितरि ।**

आरङस्मा २ १७३—'आर' आदेश होने के बाद, 'यो' विभक्ति का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—दातु+यो=**दातारो । सखारो । पितरो ।**

टोटे वा २ १७४—'आर' आदेश होने के बाद, 'दुतिया' के 'यो' का 'ओ' तथा 'ए' आदेश होता है। जैसे—**दातारो, दातारे । सखारो, सखारे ।**

टा नास्मानं २ १७५—'आर' आदेश होने के बाद, 'ना' तथा 'स्मा' का कही कही 'आ' आदेश होता है। जैसे—दातु+ना, स्मा=**दातारा ।**

टि स्मिनो २ १७६—'आर' आदेश होने के बाद, 'स्मि' विभक्ति का 'इ' आदेश होता है। जैसे—**दातरि, पितरि ।**

रस्सारङ् २ १७८—'स्मि' विभक्ति आने से, 'आर' का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—**दातरि, नत्तरि ।**

६ **सलोपो** २ १६७—'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दो से परे, विकल्प से 'स' विभक्ति का लोप होता है। जैसे—दातु+स=**दातु । पितु ।**

	एकवचन	अनेकवचन
पञ्चमी	दातारा	दातारेहि, दातारेभि, दातूहि, दातूभि[८]
छट्ठी	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारान, दातान
सत्तमी	दातरि	दातारेसु, दातुसु[८]
आलपन	दात, दाता[९]	दातारो

इसी तरह, वत्तु (=वक्ता), भत्तु (=भर्ता), नेत्तु (=नेता), सोतु (=श्रोता), ञातु (=ज्ञाता), जेतु (=जेता), छेत्तु (=छेदने वाला), कत्तु (=कर्त्ता), बोद्धु (=जानने वाला) इत्यादि शब्दो के रूप भी होगे।

§ ३३ पितु (=पिता)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	पिता	पितरो[१]
दुतिया	पितर	पितरे, पितरो

---

७ **नम्हि वा २ १६५**—'न' विभक्ति आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आर' होना है। जैसे—**दातारान, दातान। पितरान, पितुन्न।**

आ २ १६६—'न' विभक्ति आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आ' होता है। जैसे—**दातान, दातून। पितान, पितुन्न।**

८ **सुहिस्वारङ् २ १६८**—'सु' तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा "पिता' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आर' आदेश होता है। जैसे—**दातारेसु, दातुसु। पितरेसु, पितुसु। दातारेहि, दातूहि। पितरेहि, पितूहि।**

९ **गे अ च २ ६०**—आलपन एक वचन (=ग) मे, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'अ' तथा 'आ' आदेश होता है। जैसे—**भो दात, दाता। भो पित, पिता।**

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
चतुत्थी	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरान, पितान, पितून
पञ्चमी	पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
छट्ठी	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरान, पितान, पितून
सत्तमी	पितरि	पितरेसु, पितूसु
आलपन	पित, पिता	पितरो

'भातु' (=भाई), जामातु (=दामाद) शब्द के रूप भी 'पितु' शब्द के समान होते है।

§ ३४. मातु *(=माता)*

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	माता	मातरो
दुतिया	मातर	मातरे, मातरो
ततिया	मातुया	मातरेहि, मातरेभि
चतुत्थी	मातुया	मातरान, मातान, मातून
पञ्चमी	मातुया	मातरेहि, मातरेभि
छट्ठी	मातुया	मातरान, मातान, मातून
सत्तमी	मातरि	मातरेसु, मातुसु
आलपन	मात, माता	मातरो

धीतु (=बेटी), दुहितु (=पतोहू) आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'मातु' शब्द के समान होते है।

---

१० पितादीनमनत्वादीन २ १७६—'नत्तु' आदि शब्दो को छोड, 'पिता' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो के अन्त्य स्वर का, सभी विभक्तियो मे, 'अर' आदेश होता है। जैसे—पितरो, पितर।

§ ३५ सत्थु (=*शास्ता, बुद्ध*)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सत्था	सत्था, सत्थारो
दुतिया	सत्थार, सत्थर	सत्थारो, सत्थारे
ततिया	सत्थरा, सत्थारा, सत्थुना	सत्थारेहि, सत्थारेभि
चतुत्थी	सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारान, सत्थान, सत्थून
पञ्चमी	सत्थरा, सत्थारा, सत्थुना	सत्थारेहि, सत्थारेभि
छट्ठी	सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारान, सत्थान, सत्थून
सत्तमी	सत्थरि	सत्थारेसु, सत्थूसु
आलपन	सत्थ, सत्था	सत्था, सत्थारो

§ ३६ सख (=*मित्र*)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सखा	सखायो, सखानो, सखिनो, सखा[११]
दुतिया	सखान, सख, सखार, सखाय	,,
ततिया	सखिना[१२]	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
चतुत्थी	सखिनो, सखिस्स	सखीन,[१३] सखारान, सखान

---

११ **आयो नो च सखा २ १५९**—'सख' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'आयो', 'नो' तथा 'आनो' आदेश होता है। जैसे—सख+यो= **सखायो। सखिनो। सखानो। सखा।**

१२ **नो ना सेस्वि २ १६१**—'नो', 'ना', तथा 'स' विभक्तियों के आने से, 'सख' शब्द का 'सखि' आदेश होता है। जैसे—**सखिनो। सखिना। सखिस्स।**

१३ **स्मा न सु वा २ १६२**—'स्मा' तथा 'न' विभक्तियों के आने से, 'सख' शब्द का विकल्प से 'सखि' आदेश होता है। जैसे—**सखिस्मा, सखस्मा। सखीन, सखान।**

	एक वचन	अनेक वचन
पञ्चमी	सखिना, सखारा, सखारस्मा, सखिस्मा, सखस्मा	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
छट्ठी	सखिनो, सखिस्स	सखीन, सखारान, सखान
सत्तमी	सखे[14]	सखारेसु,[15] सखेसु
आलपन	सख, सखा, सखि, सखे	सखानो, सखिनो, सखा

§ ३७ **वत्तहा सनंस नो नान** २ १९१—'वत्तह' (=वतघ्न) शब्द के रूप, छट्ठी एक वचन मे '**वत्तहानो**', तथा अनेक वचन मे '**वत्तहानान**' होते हैं ।

§ ३८ मन

(नपुंसक लिङ्ग)

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	मनो	मना, मनानि
दुतिया	मन, मनो	मने, मनानि
ततिया	मनसा, मनेन	मनेहि, मनेभि
चतुत्थी	मनसो, मनस्स	मनान
पञ्चमी	मनसा, मनस्मा, मनम्हा	मनेहि, मनेभि
छट्ठी	मनसो, मनस्स	मनान
सत्तमी	मनसि, मने, मनम्हि, मनस्मि	मनेसु
आलपन	मन, मना	मनानि

---

१४ **टे स्मिनो** २ १९०—'सख' शब्द से परे, 'स्मि' विभक्ति का 'ए' आदेश होता है। जैसे—सख+स्मि=सखे।

१५ **यो स्व हि सु चारङ्** २ १९३—'यो', 'सु', 'अ', 'हि', 'सु', 'स्मा' तथा 'न' विभक्तियो के आने से, 'सख' शब्द का विकल्प से 'सखार' आदेश हो जाता है। जैसे—

सखारो, सखायो । सखारेसु, सखेसु । सखार, सख । सखारेहि, सखेहि । सखारा, सखारस्मा । सखारान, सखान ।

मन, तम, तप, तेज, सिर, उर, वच्च, ओज, रज, यस, पय—इन शब्दो के रूप 'मन' शब्द के समान होगे।

मनादीहि स्मिं स ना स्मा न सि सो ओ सा सा २ १४६—'मन' आदि शब्दो से परे, 'स्मि, स, अ, ना, तथा स्मा' विभक्तियो का, विकल्प से क्रमश 'सि, सो, ओ, सा, सा' आदेश हो जाता है। जैसे—**मनसि, मनस्मि। मनसो, मनस्स। मनो, मन। मनसा, मनेन। मनसा, मनस्मा।**

§ ३९ कम्म (=*कर्म*)

कम्मादितो २ ८१—'कम्म' आदि शब्दो से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे—**कम्मनि, कम्मे। चम्मनि, चम्मे।**

नास्सेनो २ ८२—'कम्म' आदि शब्दो से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'एन' आदेश हो जाता है। जैसे—**कम्मेन, कम्मना। चम्मेन, चम्मना।**

§ ४० पद (=*पैर*)

पदादीहि सि २ १०७—'पद' आदि शब्दो से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'सि' आदेश होता है। जैसे—पद+स्मि=**पदसि, पदस्मि।**

नास्स सा २ १०८—'पद' आदि शब्दो से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'सा' आदेश होता है। जैसे—पद+ना=**पदसा, पदेन।**

§ ४१ कोध (=*क्रोध*)

कोधादीहि २ १०९—'कोध' आदि शब्दो से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'सा' आदेश होता है। जैसे—कोध+ना=**कोधसा, कोधेन।**

§ ४२. दिव (=*स्वर्ग*)

दिवादितो २ १७७—'दिव' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, 'स्मि' विभक्ति का 'इ' आदेश होता है। जैसे—

दिव+स्मि=**दिवि। भुवि।**

§ ४३ एकच्च (=कोई)

एकच्चादीहतो २ १३७—अकारान्त 'एकच्च' आदि शब्दो से परे, 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—एकच्च+यो=**एकच्चे**=कोई कोई।

न निस्स टा २ १३८—'एकच्च' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, 'नि' विभक्ति का 'आ' नही होता है। जैसे—**एकच्चानि**।

§ ४४ अम्मा (=माँ)

नाम्मादीहि २ ६३—'अम्मा' आदि शब्दो से परे, 'ग' का 'ए' आदेश नही होता है। जैसे—**भोति अम्मा। भोति अन्ना। भोति अम्बा।**

रस्सो वा २ ६४—'ग' विभक्ति आने से, 'अम्मा' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे—**भोति अम्म, अम्मा।**

§ ४५ सभा

तिं सभापरिसाय २ १०६—'सभा' तथा 'परिसा' शब्दो से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'तिं' आदेश हो जाता है। जैसे—**सभतिं, सभाय। परिसतिं, परिसाय।**

§ ४६ अग्गि (=आग)

सिस्साग्गितो नि २ १४९—'अग्गि' शब्द से परे, 'सि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे—अग्गि+सि=**अग्गिनि। अग्गि।**

§ ४७ इसि (=ऋषि)

ए सिस्सिसिस्मा २ १३५—'इसि' शब्द से परे, 'सि' विभक्ति का विकल्प से 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—**इसे, इसि।**

दुतियस्स योस्स २ १३६—'इसि' शब्द से परे, 'दुतिया' के 'यो' का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—'**समणे ब्राह्मणे वन्दे सम्पन्नचरणे इसे।**

§ ४८ दण्डपाणि (अन्यार्थ समास)

इतो अञ्ञत्थे पुमे २ १८४—अन्यार्थ समास (=बहुब्रीहि) हो, तो

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द से परे, 'पठमा' के 'यो' का नो, तथा 'दुतिया' के 'यो' का 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—**दण्डपाणिनो** (पठमा), **दण्डपाणिने** (दुतिया)। विकल्प से—**दण्डपाणयो**।

§ ४९ अरियवुत्ति (*अन्यार्थ समास*)

ने स्मि नो क्व चि २ १८५—अन्याथ समास हो, तो इकारान्त नाम से परे, कही कही 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—**अरियवुत्ति**+**स्मि**=**अरियवुत्तिने**=आर्य वृत्ति वाले मे। विकल्प से—**अरियवुत्तिम्हि**।

"कतञ्ञुम्हि च पोसम्हि सीलवन्ते अरियवुत्तिने"

§ ५०. नदी

नज्जा योस्वाम् २ १६९—'यो' विभक्तियो के आने से, 'नदी' शब्द से परे 'आ' का आगम होता ह। जैसे—नदी+यो=नदी+आ+यो=(यवा सरे १ ३०) **नद्या**+यो=(तवग्गवरणान ये चवग्गबयञा १ ४८) **नज्या**+यो=(वग्गलसेहि ते १ ४९) नज्जा+यो=**नज्जायो**। **नदियो**।

§ ५१ हेतु

यो म्हि वा क्व चि २ ९७—'यो' विभक्ति आने से, कही कही विकल्प से पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द के 'उ' का 'अ' हो जाता है। जैसे—हेतु+यो=**हेतयो**। **कुरयो**।

§ ५२ अम्बु (=*पानी*)

अम्ब्वादी हि २ ८०—'अम्बु' आदि शब्दो से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश होता है। जैसे—**फल पतति अम्बुनि**=फल पानी मे गिरता है। **पदुम यथा पसुनि आतपे कत**=मानो कमल का फूल धूप मे धूल पर फेक दिया गया हो।

§ ५३ जन्तु

५ जन्त्वादितो नो च २ ८६—पुल्लिङ्ग 'जन्तु' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नो' तथा 'वो' आदेश होता है। जैसे—**जन्तुनो, जन्तवो, जन्तुयो**।

११. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा एतदवोच —**जानतो** अह, भिक्खवे ! पस्सतो आसवान खय **वदामि**, नो अजानतो नो अपस्सतो। अयोनिसो मनसि-**करोतो** आसवा **उप्पज्जन्ति**। योनिसो मनसि-करोतो आसवा **पहीयन्ति**। भगवा हि जान जानाति, पस्स पस्सति। सत्था देव-मनुस्सान बुद्धो भगवा ति। मातु पितु च उपट्ठान करोन्तो दारका मङ्गल **लभन्ति**। भिक्खु नज्जा तीरे **विहरति**।

*** काले अक्षरो में छपे क्रिया-पदो से 'न्तु' तथा 'मान' प्रत्ययान्त पद बनाइए, और उनका वाक्य में प्रयोग करके दिखाइए।**

(ख) **पितरान** होतु वा मातरान होतु वा भातरान होतु वा, मातुन्न धीतरेहि पितुन्न पुत्तेहि मातरो पि पितरो पि **भातरो** पि पटिजग्गितब्बा। मातरान धीतून भत्तारो। पितरान **आतून** भातरो। धम्मस्स **दातारो**, पदातारो, तण्हाय छेत्तारो, मार-स्स **जेतारो** भगवन्तो अरहन्ता नमस्सितब्बा (प्रणाम करने के योग्य है)।

*** ऊपर काले अक्षरो में छपे पदो के तुतिया तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए।**

३ निम्न लिखित वाक्यो को याद कर लीजिए—

करोन्तो पि कुरुमानो पि करानो पि कुब्बन्तो पि कुशल कम्म एव कातब्ब। चरन्तेन वा चरता वा चरमानेन वा चरानेन वा भिक्खुना धम्म एव चरितब्ब। पितरा वा, मातरा वा, भातरेहि वा, भगिनीहि वा सद्धि विहार (बौद्ध-मन्दिर) गच्छमानो अह झायमाने च भावेन्ते च भिक्खू पस्सामि।

४ नीचे काले अक्षरो में छपे पदो के सरल रूप लिखिए—

(जैसे—नज्जा=नदिया। सखारेहि=सखेहि)

न **जच्चा** होति ब्राह्मणो। **सखारान नज्ज** ओकास ददन्तो पक्कामि। **मातरा** च **पितरा** च सद्धि विहार गच्छति। **रञ्ञे** रज्ज कारेन्ते मागधे अजात-सत्तुस्मि, भगवा परिनिब्बायि।

५ पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान के धम्म का सुनते हुए भिक्षु लोग चुपचाप (तुण्ही) बैठे रहे। नदी में स्नान करने वाले मनुष्यो को भय होता ह। भगवान देखते हुए देखते ह, जानते हुए जानते है। भगवान श्रावको के चित्त को जानते हुए धम्म-देसना करते है। फल खाने वाले लडको मे यही मेरे साथ आने वाला लडका पढने वाला है। सूय्य को नमस्कार करते हुए मनुष्यो की आँखे ब द है। भात (भोजन) पकाते हुए मेरा हाथ जल गया। लिखते हुए उसका चित्त विरक्त हो गया।

दूसरा काण्ड

सातवाँ पाठ

√अव्यय-प्रकरण

(दूसरा भाग—उपसर्ग)

§ ७ उपसग बीस है। यथा—(१) प, (२) परा, (३) नि, (४) नी, (५) उ, (६) दु, (७) स, (८) वि, (९) अव, (१०) अनु, (११) परि, (१२) अभि, (१३) अधि, (१४) पति, (१५) सु, (१६) आ, (१७) अति, (१८) अपि, (१९) अप, (२०) उप। धातु के पूव उपसग आने से, उसका अर्थ प्राय बदल जाता है। जैसे--

हरति=हरण करता है
विहरति=विहार करता है
पहरति=प्रहार करता है
सहरति=सहार करता है
आहरति=लाता है। इत्यादि

१ "प" उपसग निम्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—

पत = गिरना	**पपतति**=सामने गिरता है
नी=लाना	**पनेति**=सामने लाता है
गह=पकडना	**पगण्हाति**=सामने पकडता है
थर=पसारना	**पत्थरति**=सामने पसारता है
धाव=दौडना	**पधावति**=दौड कर आगे निकल जाता है
वज=जाना	**पब्बजति**=घर से निकल जाता है
सर=गत्यर्थ	**पसारेति**=फैलाता है
कुप=कुपित होना	**पकोपेति**=अत्यन्त कुपित होता है

छिन्द = काटना	**पच्छिन्दति** = काट डालता है
भञ्ज = तोडना	**पभञ्जति** = तोड-फोड देता है
चि = चुनना	**पचिनति** = ढेर करता है
कीर = बिखेरना	**पकिण्णति** = बिखेर देता है
नद = नाद करना	**पनदति** = शोर करता है
भा = चमकना	**पभाति** = खूब चमकता है
हा = छोडना	**पजहति** = बिलकुल छोड देता है
जल = जलना	**पज्जलति** = प्रज्वलित होता है
ञा = जानना	**पजानाति** = अच्छी तरह जानता है
ठा = खडा होना	**पट्ठाय** = उसके आगे
वत्त = होना	**पवत्तति** = आगे चलना
	पपुत्त = पुत्र का पुत्र इत्यादि

२ 'परा' उपसर्ग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

जि = जीतना	**पराजयति** = हरा देता है
भू = होना	**पराभवति** = हानि को प्राप्त होता है
इ = जाना	**पलेति** = भागता है
कम = चलना	**परक्कमति** = पराक्रम करता है
मस = छूना	**परामसति** = परामश करता है ।
	इत्यादि

३ ४ **'नि'—'नी'** उपसग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होते हैं—

कम = जाना	**निक्खमति** = निकलता है
कर = करना	**निक्करोति** = नीचा दिखाता है
गम = जाना	**निग्गच्छति** ⎫
पत = गिरना	**निप्पतति** ⎬ = बाहर निकलता है
सर = निकलना	**निस्सरति** ⎭
वत्त = होना	**निब्बत्तति** = सिद्ध होता है
विस = प्रवेश करना	**निविसति** = बिलकुल पैठता है

चि =चुनना	निच्छिनोति =निश्चय करता है
सम =शान्त होना	निसामेति =गौर से सुनना
ठापि =रखना	निट्ठापेति =समाप्त करता है
पद =होना	निपज्जति =सोता है
वा =बहना	निब्बाति =बुझ जाता है
खिप =फेकना	निक्खिपति =धरोहर रखता है

५ 'उ' उपसग निम्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—

गम =जाना	उग्गच्छति =ऊपर उठता है
भू =होना	उब्भवति =पैदा होता है।
सद =जाना, नष्ट करना	उस्सादेति =दूर करता है, उठाता है उस्सापेति =ऊपर उठाता है
सर =खिसकना	उस्सारेति =दूर करता है
लुप =विनाश करना	उल्लुम्पति =बचा लेता है
युज =जोडना	उय्युञ्जति =छोड कर निकल जाता है
मूल =प्रतिष्ठित होना	उम्मूलेति =जड से उखाड देता है
भुज =खाना	उब्भुजति =झुकता है, बल पूवक उठाता है,
ठा =खडा होना	उट्ठहति =उठता है
	इत्यादि

६ 'दु' उपसग निम्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—

कर =करना	दुक्कर =दुष्कर
गम =जाना	दुग्गत =दुगत
	दुग्गन्ध =दुर्गन्ध
	दुच्चरित्त =दुश्चरित्र इत्यादि

७ 'स' उपसग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

युज =जोडना	सयुञ्जति =आपस मे मिला देता है
वद =बोलना	सवदति =एक राय होता है

वर=स्वीकार करना	**सवरति**=ढकता ह
वस=रहना	**सवसति**=साथ रहता है
सद=नष्ट होना, जाना	**ससीदति**=डूब जाता है
ञा=जानना	**सजानाति**=पहचानता है
पत=गिरना	**सन्निपतति**=जमा होता ह
इ=जाना	**समेति**=मिलना, आपस मे मेल खाना, सहमत होना
दा=देना	**समादियति**=ग्रहण करता है
कर=करना	**सङ्खरियति**=तैयार करवाता है

८ 'वि' उपसग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

कम्प=काँपना	**विकम्पति**=अत्यन्त काँपता है
दल=तोडना	**विदालेति**=नष्ट भ्रष्ट कर देता है
चर=चलना	**विचरति**=इधर उधर घूमता है
किर=बिखेरना	**विप्पकिरति**=चारो ओर बिखेर डालता है
भज=भाग करना	**विभजति**=अच्छी तरह व्याख्या करता है
सु=सुनना	**विस्सुत**=विख्यात
की=खरीदना	**विक्किणाति**=बेचता है
जट=उलझाना	**विजटेति**=सुलझाता है
कर=करना	**विकरोति**=विकृत करता है
सर=स्मरण करना	**विसरति**=भूल जाता है
पच=पकाना	**विपच्चति**=फल देता है
रज्ज=राग करना	**विरज्जति**=विरक्त होता है
रम=क्रीडा करना	**विरमति**=रुकता है
तर=तैरना	**वितरति**=बाँटता है
नी=ले जाना	**विनेति**=शिक्षा देता है
लिख=लिखना	**विलिखति**=जोतता है
वत्त=होना	**विवट्टति**=पीछे घुमाता है
वण्ण=प्रशसा करना	**विवण्णति**=निन्दा करता है

वर = ढकना	विवरति = उघारता है
वद = बोलना	विवदति = झगडा करता है
सस = साँस लेना	विसस्सति = विश्वास करता है
हर = हरण करना	विहरति = निवास करता है, ध्यानस्थ रहता है

९ 'अव' उपसर्ग निम्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—

कम = जाना	अवक्कमति = निकट आता है
खिप = फेकना	अवक्खिपति = नीचे फेकता है
ञा = जानना	अवजानाति = निन्दा करता है, अस्वीकार करता है
मन = जानना	अवमञ्ञति = तिरस्कार करता है
सर = चलना	अवसरति = हट जाता है
सज्ज = लगना	अवसज्जति = छोडता है

१० 'अनु' उपसर्ग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

कम्प = काँपना	अनुकम्पति = अनुकम्पा करता है
कर = करना	अनुकरोति = नकल करता है
कम = चलना	अनुक्कमति = पीछा करता है
गम = जाना	अनुगच्छति = पीछे जाता है
गा = गाना	अनुगायति = साथ साथ गाता है
गण्ह = ग्रहण करना	अनुगण्हाति = दया करता है
चर = चलना	अनुचरति = पीछे पीछे चलता है
ञा = जानना	अनुजानाति = स्वीकृति देता है
ठा = खडा होना	अनुट्ठहति = सेवा-टहल करता है, अनुष्ठान करता है
तप = ताप देना	अनुतप्पति = दुखित होता है
दा = देना	अनुददाति = स्वीकार करता है
नी = ले जाना	अनुनेति = खुसामद करता है
बन्ध = बाँधना	अनुबन्धति = पीछा करता है
भू = होना	अनुभवति = अनुभव करता है

मुद=प्रसन्न होना	**अनुमोदति**=अनुमोदन करता है
वद=बोलना	**अनुवदति**=निन्दा करता है

११ 'परि' उपसग निम्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—

कत=काटना	**परिकन्तति**=चारो ओर से काट देता ह
कर=करना	**परिकरोति**=चारो ओर से घेर लेता है, सेवा-टहल करता है
इक्ख=देखना	**परिक्खति**=परीक्षा लेता है
चर=चलना	**परिचरति**=देख-भाल करता ह, पूजा करता है, सेवा करता है
नम=झुकना	**परिनमति**=परिणाम को प्राप्त होता ह
पत=गिरना	**परिपतति**=विनष्ट होता है
भू=होना	**परिभवति**=अनादर करता है
भास=कहना	**परिभासति**=नि दा करता है
सह=सहना	**परिसहति**=हरा देता है, दे मारता ह
हर=हरण करना	**परिहरति**=बचाता है, खबरगीरी करता ह

१२ 'अभि' उपसग निम्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—

ञा=जानना	**अभिजानाति**=पहचानता है
धाव=दौडना	**अभिधावति**=किसी ओर दौडता है
नन्द=प्रसन्न होना	**अभिनन्दति**=किसी बात पर प्रसन्न होता है
भू=होना	**अभिभवति**=हरा कर मालिक वन बैठता है
वद=बोलना	**अभिवदति**=अभिवादन करता है
सज्ज=लगना	**अभिसज्जति**=क्रुद्ध होता है
सन्द=बहना	**अभिसन्दति**=बिलकुल भर देता है
हर=लाना	**अभिहरति**=लाता है, या समर्पण करता ह

१३ 'अधि' उपसग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

गम=जाना	**अधिगच्छति**=अधिकार कर लेता है, समझता है

ठा = खडा होना	**अधिट्ठहति** = अधिष्ठान करता है
पत = गिरना	**अधिपतति** = गायब हो जाता है
भू = होना	**अधिभवति** = हरा देता है
वस = रहना	**अधिवासेति** = प्रतीक्षा करता है, स्वीकार करता है
कर = करना	**अधिकरोति** = अधिकार करता है ।

१४ 'पति' उपसग निम्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—

कर = करना	**पटिकरोति** = प्रतिकार करता है
कुध = गुस्सा होना	**पटिकुज्झति** = बदले मे गुस्सा करता है
कम = जाना	**पटिक्कमति** = लौटता है
इक्ख = देखना	**पटिक्खति** = प्रतीक्षा करता है
खिप = फेकना	**पटिक्खिपति** = अस्वीकार करता है
गम = जाना	**पटिगच्छति** = पीछे छोड कर निकल जाता है
ञा = जानना	**पटिजानाति** = स्वीकार करता है, प्रतिज्ञा करता है
धाव = दौडना	**पटिधावति** = भागता है
प + हर = मारना	**पटिपहरति** = बदले मे मारता है
पुच्छ = पूछना	**पटिपुच्छति** = बदले मे पूछता है
बह = ढोना	**पटिबाहति** = रोक रखता है
बुध = जानना	**पटिबुज्झति** = जागता है
मुच = छोडना	**पटिमुञ्चति** = बाँधता है
वद = बोलना	**पटिवदति** = प्रतिवाद करता है
वि + नी = शिक्षा देना	**पटिविनेति** = दूर कर देता है, दबा देता है
थर = पसारना	**पटिसथरति** = सादर स्वागत करता है
सर = चलना	**पटिसरति** = पीछे भागता है
सिध = सिद्ध होना	**पटिसेधति** = रोकता है, मना कर देता है
सु = सुनना	**पटिस्सुणाति** = स्वीकार करता है

१५ 'सु' उपसर्ग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

सुगन्ध	सुकत=सुकृत
सुघर	सुकर
सुचरित	सुकुमार इत्यादि

१६ 'आ' उपसर्ग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

कस=जोतना	आकस्सति=आकषण करता है
गम=जाना	आगच्छति=आता है
चि=चुनना	आचिनाति=ढेर लगाता है
दा=देना	आदाति (आददाति)=लेता है
दिस=बताना	आदिसति=आज्ञा देता है
नी=ले जाना	आनेति=ले आता है
पुच्छ=पूछना	आपुच्छति=जाचता है
वत=होना	आवत्तति=घूम आता है।

१७ 'अति' उपसर्ग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

कम=जाना	अतिक्कमति=पार कर जाता है
धाव=दौडना	अतिधावति=आगे दौड जाता है
पात=गिराना	अतिपातेति=नष्ट करता है
भुज=खाना	अतिभुञ्जति=खूब खा लेता है

१८ 'अपि' उपसर्ग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

धा=धारण करना	अपिधान=ढकना
लप=बात करना	अपिलपेति=डीग हाकता है

१९ 'अप' उपसग निम्न अर्थों मे प्रयुक्त होता है—

इ=जाना।	अपेति=हट जाता है
कम=जाना	अपक्कमति=निकल जाता है
गम=जाना	अपगच्छति=चला जाता है

धा=धारण करना	**अपनिधाति**=उतार कर रख देता है
नी=ले जाना	**अपनेति**=बाहर कर देता है
हर=हरण करना	**अपहरति**=चोरी करता है
कर=करना	**अपकरोति**=अपकार करता है
चि=चुनना	**अपचायति**=सत्कार करता है
ठापि=रखना	**अपट्ठपेति**=अलग रख देता है
नम=झुकना	**अपनमति**=निकल जाता है
राध=सिद्ध होना	**अपरज्झति**=अपराध करता है
वद=बोलना	**अपवदति**=निन्दा करता है
वह=वहन करना	**अपवहति**=भगा देता है

२० 'उप' उपसर्ग निम्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—

कर=करना	**उपकरोति**=उपकार करता है
कम=जाना	**उपक्कमति**=चढाई करता है, शुरू करता है
गम=जाना	**उपगच्छति**=पास मे जाता है
चर=चलना	**उपचरति**=सेवा करता है, व्यवहार मे लाता है
ठा=ठहरना	**उपट्ठहति**=सेवा-टहल करता है
धा=दौडना	**उपधावति**=पास मे दौड जाता है
निसीद=बैठना	**उपनिसीदति**=पास मे बैठता है
सेव=सेवा करना	**उपनिसेवति**=पीछा करता है
नी=ले जाना	**उपनेति**=समीप ले जाता है
रम=क्रीडा करना	**उपरमति**=हटता है
वस=रहना	**उपवसति**=पास मे रहता है, उपवास करता है
विस=घुसना	**उपविसति**=पास आता है
इक्ख=देखना	**उपेक्खति**=उपेक्षा करता है
पद=जाना	**उपज्जति**=उत्पन्न होता है
पत=गिरना	**उप्पतति**=उडता है, ऊपर उठता है

१२ अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

(क) घरम्हा निक्खमित्वा पब्बजि। कथ साराणीय वीतिसारेत्वा एकमन्त निसीदि। पठवि परामसित्वा उदान उदानेसि। विहारे सन्निसिन्नान सन्निपतितान भिक्खून पुब्बे-निवास-पटिसयुत्ता कथा उदपादि। उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। यथा च मे भगवा व्याकरोति, त साधुक उग्ग-हेत्वा तुव आरोचेय्यामि। अट्ठ-विमोक्खे अनुलोम पि पटिलोम पि समापज्जति, आसवान च खया चेतोविमुत्ति सय अभिञ्ञा(-य) सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरतीति। अभिजानामि इतो पुब्बे एव नामधेय्य (नाम) सुत्वा ति।

(ख) पापानि कम्मानि विवज्जयाथ, धम्मानुयोगञ्च अधिट्ठहाथा ति। अच्छरान गणेन परिवारितो अनेकचित्त विमान आरुय्ह देवता मोदति। अभिक्कन्तेन वण्णेन ओसधी तारका विय दिसा सब्बा ओभासेन्तो तिट्ठसि। पादे पक्खालयित्वान (=धोकर)एकमन्ते उपाविसि, (उत्तरा थेरी) पुब्बजाति अनुस्सरि, दिब्बचक्खु विसोधयि। रत्तिया पच्छिमे यामे तमोक्खन्ध पदालयि। तेविज्जा (हुत्वा) अथ उट्ठासि कता ते (तथागतस्स) अनुसासनी ति।

(ग) जय वेर पसवति, दुक्ख सेति पराजितो।
उपसन्तो सुख सेति, हित्वा जय-पराजय ॥ ॥
तुम्हेहि किच्च आतप्प, अक्खातारो तथागता।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति, झायिनो मारबन्धना ॥ ॥

२ पालि में अनुवाद कीजिए —

प्रात काल निद्रा से जागता हूँ। उठकर बैठता हूँ। हाथ मुँह धोता हूँ। पैर धो कर बैठ जाता है। तब याद करते हुए, श्वास लेता है (=अस्ससति)। स्मरण रखते (सतो'व) श्वास फेकता है (पस्ससति)। लोक मे लोभ को छोड कर ध्यान करता है।

श्रावस्ती मे कुछ लडके डण्डे से साँप मार रहे थे (प+हर)। भगवान् ने उनको उपदेश दिया। शील पालन करने वाला भिक्षु मृत्यु को हरा देता है (परा+जि)। हम लोग कल वहाँ गए थे, आज आ रहे है। आनन्द ने भगवान् की टहल की (उप+ठा)। कुमार सिद्धार्थ राज-महल से निकल गए (=नि+कम)।

तीसरा काण्ड

पहला पाठ

क्रिया-प्रकरण

(चौथा भाग—गण विचार)

१—भ्वादि गण

§ ४ नवो गणो मे भ्वादि-गण सबसे बडा है। मोग्गल्लान धातु-पाठ के अनुसार, इस गण मे ३०४ धातु है। इन धातुओ की सूची मे, सव प्रथम 'भू' धातु है, अत इस गण का नाम 'भ्वादि-गण' रक्खा गया है।

मोग्गल्लान धातु-पाठ के अन्त मे आता है **"अअन्तो उच्चारणत्थो सेसा धात्वत्था"**, अर्थात्, जो अकारान्त धातु है, उनका अन्त्य 'अ' केवल उच्चारण-सौकर्य के लिए है, धातु को 'अ' से रहित समझना चाहिए। जैसे—**पच**=पच्।

§ ५ भ्वादि-गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

भवति

क त्त रि लो ५ १८—कतवाच्य मे, 'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, धातु से परे 'ल' का आगम होता है। 'ल' का 'अ' रह जाता है। जैसे—

पच+ति=पच+अ+ति=**पचति**। जि+ति=जे+ति=जे+अ+ति=**जयति**। भू+ति=भो+ति=भो+अ+ति=**भवति**।

यु व ण्णा न मे ओ प्प च्च ये ५ ८२—प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' का 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—नि+तब्ब=**नेतब्ब**। **सोतब्ब** जि+ति=जे+ति। भू+ति=भो+ति।

एओनमयवा सरे ५८६—स्वर परे हो, तो पूर्वस्थित 'ए' का 'अय', तथा 'ओ' का 'अव' हो जाता है। जैसे—जि+ति=जे+ति=जे+अ+ति=**जयति**। भू+ति=भो+ति=भो+अ+ति=**भवति**।

द्रष्टव्य—लहुस्सुपन्तस्स ५८३—प्रत्यय आने से, प्राय धातु के उपान्त 'इ' तथा 'उ' का यथाक्रम 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—

सुच+ति=**सोचति**। जुत—**जोतति**। रुद—**रोदति**। मुद—**मोदति**। सुभ—**सोभति**। रुच—**रोचति**। तिज—**तेजति**=तेज करना। कित—**केतति**।

घम्मति । वज्जति । दज्जति

गम वद दान घम्म वज्ज दज्जा ५१७६—'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि (परोक्ष भूत को छोड) प्रत्ययो के आने से, विकल्प से 'गम' का 'घम्म', 'वद' का 'वज्ज', तथा 'दा' का 'दज्ज' आदेश होता है। जैसे—**घम्मति, घम्मन्तो, गच्छन्तो। वज्जति, वज्जन्तो, वदन्तो। दज्जति, दज्जन्तो, ददन्तो**।

गच्छति । यच्छति । इच्छति । अच्छति । दिच्छति

गमयमिसासदिसान वा च्छङ् ५१७३—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'गम', 'यम', 'इस', 'अस', तथा 'दिस' धातुओ का क्रमश 'गच्छ', 'यच्छ', 'इच्छ', 'अच्छ', तथा 'दिच्छ' आदेश हो जाता है। जैसे—**गच्छन्तो, गच्छमानो, गच्छति** इत्यादि।

गच्छरे । गमिस्सरे

गुरुपुब्बा रस्सा रे न्तेन्तीन ६७४—गुरुपूर्व ह्रस्व धातु से परे, 'न्ते' तथा 'न्ति' विभक्तियो का विकल्प से 'रे' आदेश हो जाता है। जैसे—**गच्छरे, गच्छन्ति। गच्छरे, गच्छन्ते। गमिस्सरे**।

सन्ति, सन्तु, सिया, सन्तो, समानो

न्तमानान्तियियुस्वादिलोपो ५१३०—'न्त', 'मान', 'अन्ति', 'अन्तु', 'इय', तथा 'इयु' प्रत्ययो के आने से, 'अस' धातु का केवल 'स' रह जाता है। जैसे—अस+न्त=स+न्त=**सन्तो। समानो। सन्ति। सन्तु। सिया। सियु**।

तिट्ठति । पिवति

ठा पा न तिट्ठ पि वा ५ १७५—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'ठा' धातु का 'तिट्ठ', और 'पा' धातु का 'पिव' आदेश हो जाता है। जैसे—**तिट्ठन्तो, तिट्ठमानो, तिट्ठति। पिवन्तो, पिवमानो, पिवति।**

डहति

दहस्स दस्स डो ५ १२६—'दह' धातु के 'द' का विकल्प से 'ड' आदेश हो जाता है। जैसे—

दहति, डहति। दाहो, डाहो।

अदेन्ति

ञि लस्से ५ १६३—'ञि' तथा 'ल' का, कही कही 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—अद+ल+अन्ति=**अदेन्ति** । गह+ञि+त्वा=**गहेत्वा** (**ञि ब्यञ्जनस्स ५ ७०**)

जीयति । मीयति

जरमराणमीयङ् ५ १७४—'न्त', 'मान' तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'जर' तथा 'मर' धातुओ का विकल्प से क्रमश 'जीय' तथा 'मीय' आदेश होता है। जैसे—

जीयन्तो, जीरन्तो। जीयमानो, जीरमानो। जीयति, जीरति। मीयन्तो, मरन्तो। मीयमानो, मरमानो। मीयति, मरति।

जीरति । निसीदति

जरसदानमीम् वा ५ १२३—'जर' तथा 'सद' धातुओ के अन्त्य स्वर से परे, कही कही 'ई' का आगम होता है। जैसे—

जीरण, जीरति, जीरापेति। निसीदितब्ब, निसीदन, निसीदितु, निसीदति।

कही कही 'ई' का आगम नही भी होता है। जैसे—**जरा, निसज्ज।**

उट्ठहति

पादितो ठास्स वा ठहो क्वचि ५ १३१—उपसर्ग-पूवक 'ठा' धातु का,

कही-कही विकल्प से 'ठहो' आदेश हो जाता है। जैसे—**उट्ठहति, सण्ठहति। उत्तिट्ठति, सन्तिट्ठति।**

समादियति

दा स्सि य ङ् ५ १३२—उपसग-पूवक 'दा' धातु का 'दिय' आदेश हो जाता है। जैसे—स+आ+दा+ति=**समादियति। अनादियित्वा।**

निक्खमति

नि तो क म स्स ५ १३५—'नि' उपसग-पूवक 'कम' धातु का, कही कही 'क्खम' आदेश हो जाता है। जैसे—**निक्खमति।**

पस्सति

दि स स्स प स्स, द स्स, द स, द, द क्खा ५ १२४—'दिस' धातु के 'पस्स', 'दस्स', 'दस्', 'द', तथा 'दक्ख' आदेश होते है। जैसे—

पस्सति। (कम) दस्सेति। (भूत) अद्दस, अद्द, अद्दा। दक्खिस्सति (भविष्यत्काल)।

२–रुधादि गण

§ ६ **म च रु धा दी न ५ १६**—'न्त', 'मान', तथा 'ति' आदि (परोक्ष भूत को छोड) प्रत्ययो के आने से, रुधादि धातु के अन्तिम स्वर से परे 'अ' का आगम होता है। जैसे—

कत् (**कन्तति**)=काटना
गह् (**गण्हति**) *=पकडना
छिद् (**छिन्दति**)=छेदना
बध् (**बन्धति**)=बाँधना
भिद् (**भिन्दति**)=भेदन करना
भुज् (**भुञ्जति**)=खाना
मुच् (**मुञ्चति**)=छोडना
युज् (**युञ्जति**)=जोडना

रुध् (**रुन्धति**) =रोकना
लिप् (**लिम्पति**) =लेपना
सिच् (**सिञ्चति**) =सीचना
हिस् (**हिंसति**) =हिंसा करना

§ ७ रुधादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

घेप्पति

गहस्स घेप्पो ५ १७८—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'गह' धातु का 'घेप्प' आदेश हो जाता है। जैसे—**घेप्पन्तो। घेप्पमानो। घेप्पति।**

*गण्हाति

णो निग्गहीतस्स ५ १७९—'गह' धातु के अंतिम स्वर से परे, जो 'अ' का आगम होता है, उसका 'ण' आदेश हो जाता है।

जैसे—**गह+ति=गण्हाति। गण्हितब्ब। गण्हितु। गण्हन्तो।**

३—दिवादि गण

§ ८ **दिवादीहि यक् ५ २१**—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'दिव' आदि धातु से परे, 'य' का आगम होता है। जैसे—

कुध (**कुज्झति***) =गुस्सा होना
कुप (**कुप्पति**) =कोप करना
गा (**गायति**) =गाना
घा (**घायति**) =सूँघना
छिद (**छिज्जति***) =टूटना
झा (**झायति**) =ध्यान करना
दिव (**दिब्बति**) =खेलना
नहा (**नहायति**) =नहाना
बुध (**बुज्झति***)=समझना
युध (**युज्झति***) =लडाई करना

रुच (रुच्चति) =अच्छा लगना
लुभ (लुब्भति*) =लोभ करना
सम (सम्मति) =शान्त होना
सिव (सिब्बति) =सीना
सुध (सुज्झति*) =शुद्ध होना
सुस (सुस्सति) =सूखना
हन (हञ्ञति)* =मारना

§ ९ **क्वचि विकरणान ५ १६१**—कही कही विकरण का लोप होता है। जैसे—

हन+ति=हन्ति। विकरण का लोप नही होने से—हन+य+ति= **हञ्ञति।**

उदपद+ई=उदपादि। विकरण का लोप नही होने से—उदपद+य+ई=**उप्पज्जि।**

४–तुदादि गण

§ १० **तुदादीहि को ५ २२**—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'तुद' आदि धातु से परे 'अ' का आगम होता है। प्रत्यय आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नही होता है। जैसे—

वि+किर (विकिरति) =छीटना
खिप (खिपति) =फेकना
नि+गिर (निगिरति) =निगलना
गिल (गिलति) =निगलना
तुद (तुदति) =पीडा करना

---

* कुध्+ति=कुध्+य+ति=कुध्यति=कुझ्यति (**तवग्गवरणान ये चवग्गबयञा** १४८—देखिए पृ० २२३) =कुझ्झति (**वग्ग लसेहि ते** १४९—देखिए पृ० २२४)=कुज्झति (**चतुत्थ दुतियेस्वेस ततियपठमा** १ ३६—देखिए पृ० २२४)। इसी तरह—युज्झति। लुब्भति। दिज्जति। सुज्झति। हञ्ञति। इत्यादि।

नुद (नुदति) =प्रेरित करना
फुर (फुरति) =फडकना
फुस (फुसति) =छूना
मुस (मुसति) =चुराना
लिख (लिखति) =लिखना
विद (विदति) =जानना
विस (विसति) =घुसना
सुप (सुपति) =सोना

५—ज्यादि गण

§ ११ **ज्यादीहि क्ना ५ २३**—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'ज्यादि गण' के धातु से परे 'ना' का आगम होता है। प्रत्ययो के आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नही होता है। जैसे—

अस (अस्नाति) =खाना
चि (चिनाति) =चुनना
ञा (जानाति) =जानना
थु (थुनाति) =प्रशसा करना
धू (धुनाति) =धुनना
पू (पुनाति) =पवित्र करना
लू (लुनाति) =खोटना
सि (सिनाति) =सीना

§ १२ ज्यादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

जानाति, नायति

ञा स्स ने जा ५ १२०—'न' परे हो, तो 'ञा' धातु का 'जा' आदेश हो जाता है। जैसे—

जानाति। जानितु। जानन्तो।

यदि 'न' परे नही हो, तो 'ञा' का 'जा' नही होता है। जैसे—ञा + क्त=**ञातो।**

आ स्स स ना स्स नायो ति म्हि ६ ६१—'ति' प्रत्यय आने से, 'ञा' धातु का विकल्प से अपने विकरण 'ना' के साथ 'नाय' आदेश होता है। जैसे—**नायति, जानाति**।

धुनाति, किणाति

णा ना सु रस्सो ६ ३२—'णा' तथा 'ना' विकरण के आने से, धातु के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—धू+ना+ति=**धुनाति**। की+णा+ति=**किणाति**।

६–क्यादि गण

§ १३ **क्या दी हि क्णा ५ २४**—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'क्यादि गण' के धातु से परे, 'णा' का आगम होता है। प्रत्यय आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नही होता है। जैसे—

की (**किणाति**) =खरीदना
वि+की (**विक्किणाति**) =बेचना
गि (**गिणाति**) =शब्द करना
वु (**वुणाति**) =ढकना
सक (**सक्णाति**) =सकना
सू (**सुणाति**) =सुनना

७–स्वादि गण

§ १४ **स्वा दी हि क्णो ५ २५**—'न्त', 'मान' तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'स्वादि गण' के धातु से परे, 'णो' का आगम होता है। प्रत्यय आने से ०। जैसे—

सु (**सुणोति**) =सुनना
खी (**खिणोति**) =क्षय होना
वु (**वुणोति**)=ढकना

गि (**गिणोति**)=शब्द करना

सक (**सक्णोति**)*=सकना

प+आप (**पापुणोति**)*=प्राप्त करना

*सक्कुणोति

सकापान कुक्कु णे ५ १२१—'ण' परे हो, तो 'सक' तथा 'आप' धातुओ के उत्तर, क्रमश 'कु' तथा 'उ' का आगम होता है। जैसे—सक+णो+ति=**सक्कुणोति**। पाप+णो+ति=**पापुणोति**।

८–तनादि गण

§ १५ **तनादित्वो ५ २६**—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'तनादि गण' के धातु से परे, 'ओ' का आगम होता है। जैसे—

तन (**तनोति**)=फैलाना

सक (**सक्कोति**)=सकना

वन (**वनोति**)=माँगना

मन (**मनोति**)=जानना

आप (**अप्पोति**)=पाना

कर (**करोति**)=करना

§ १६ तनादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

तनुति, तनुते

ओ विकरणस्सु परच्छक्के ६ ७६—'अत्तनो पद' मे, 'ओ' विकरण का 'उ' आदेश होता है। जैसे—

तन+ते=तन+ओ+ते=तन+उ+ते=**तनुते**।

पुब्बच्छक्के वा क्वचि ६ ७७—'परस्सपद' मे भी, 'ओ' विकरण का कही कही विकल्प से 'उ' आदेश होता है। जैसे—

तनुति, तनोति।

कुब्बति, कयिरति, करोति

करस्स सोस्स कुब्बकुरुकयिरा ५ १७७—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष

भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, अपने विकरण 'ओ' के साथ, 'कर' धातु के 'कुब्ब', 'कुरु' तथा 'कयिर' आदेश हो जाते है। जैसे—

कुब्बन्तो, कयिरन्तो, करोन्तो। कुब्बमानो, कुरुमानो, कयिरमानो, कराणो। कुब्बति, कयिरति करोति। कुब्बते, कुरुते, कयिरते।

कुम्मि, कुम्म

करस्स सोस्स कु ६ २३—'मि' तथा 'म' प्रत्ययो के आने से, 'कर' धातु का, अपने विकरण 'ओ' के साथ, विकल्प से 'कु' आदेश होता है। जैसे—

कर+मि=**कुम्मि**। कर+म=**कुम्म**।

सङ्खरियति

करोतिस्स खो ५ १३३—उपसग-पवक 'कर' धातु का, कही कही 'खर' आदेश हो जाता है। जैसे—**सङ्खारो। सङ्खरियति।**

पुरेक्खति

पुरस्मा ५ १३४—'पुर' शब्द पूवक 'कर' धातु का, 'क्खर' आदेश हो जाता है। जैसे—**पुरक्खत्वा। पुरेक्खारो। पुरेक्खति।**

६—चुरादि गण

§ १७ **चुरादितो णि ५ १५**—'त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने से, 'चुर' आदि धातु से परे, 'णि' का आगम होता है। 'णि' का केवल 'इ' रह जाता है, तथा, धातु के उपान्त लघु स्वर की प्राय वृद्धि होती है। जैसे—

अज्ज (अज्जेति, अज्जयति) = कमाना
ईर (ईरेति, ईरयति) =हिलना
कण्ण (कण्णेति, कण्णयति) =सुनना
कथ (कथेति, कथयति) =कहना
कित्त (कित्तेति, कित्तयति) =कीर्तन करना
गण (गणेति, गणयति) =गिनना

गन्थ (गन्थेति, गन्थयति) =गूथना
चिन्त (चिन्तेति, चिन्तयति) =विचारना
चुण्ण (चुण्णेति, चुण्णयति) =चूर चूर करना
*चुर (चोरेति, चोरयति) =चुराना
छड्ड (छड्डेति, छड्डयति) =फेकना
झप (झापेति, झापयति) =जलाना
पाल (पालेति, पालयति) =भागना
पिण्ड (पिण्डेति, पिण्डयति) =पिण्ड बनाना
पुस (पोसेति, पोसयति) =पोसना
पूज (पूजेति, पूजयति) =पूजा करना
मन्त (मन्तेति, मन्तयति) =सलाह करना
तक्क (तक्केति, तक्कयति) =तर्क करना
तीर (तीरेति, तीरयति) =पूरा करना
दिस (देसेति, देसयति) =उपदेश करना
वन्द (वन्देति, वन्दयति) =वन्दना करना
वण्ण (वण्णेति वण्णयति) =तारीफ करना

---

*कत्तरि लो ५ १८—इस सूत्र से, 'अ' का आगम हुआ। जैसे—चोरि+अ+ति।

युवण्णानमेओ प्पच्चये ५ ८२—इस सूत्र से, चोरे+अ+ति।

एओनमयवा सरे ५ ८६—इस सूत्रसे—चोरयति।

परो क्वचि १ २७—इस सूत्र से—चोरेति। इसी तरह, दूसरे धातुओ का भी।

१३. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

भगवन्त ब्रह्मा **याचि**। भगवा धम्मचक्क **पवत्तयि**। बहून देव-मनुस्सान अभिसमयो **अहु**। भगवा हि सब्ब ददाति। चतु-सच्च **पकासेति**। पाणिन अनुकम्पति। भिक्खू भगवन्त **परिवारेन्ति**। पापकारी **सोचति**। पुञ्ञकारी **मोदति**। भिक्ख **गण्हाति**।

दारका भगवन्त **अद्दसासु**। भिक्खू नगरा **निक्खमिसु**। दारका उय्याने **कीळिसु**। सब्बे धम्मा अनत्ताति **जानिंसु**। बाळ्हगिलानो अहोसि। सिक्खा-पद **समादियिंसु**। अक्कोधेन कोध **अजिनि**, असाधु साधुना अजेसि। कोधनो मनुस्सो दुब्बलो अहोसि। सब्बे पाणा **जीरिस्सन्ति, मरिस्सन्ति**, पुन पि **जायिस्सन्ति**। अह मार-बन्धना **मोक्खामि**। बुद्ध सरण **गमिस्सामि**। धम्म **सुणिस्सामि**। पधान **पदहिस्सामि**। कम्मट्ठान **गण्हिस्सामि**। भव-सोत **छिन्दिस्सामि**।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे क्रियापदो को वर्त्तमान काल प्रथम पुरुष एक वचन में लिखिए।

३ निम्न-लिखित क्रियापदो के रूप परिसमाप्त्यर्थक भूत काल में लिखिए—

भवामि। लिखिस्सामि। गमिस्सामि। तिट्ठामि। ददासि। हेस्सति। सन्ति। रुन्धन्ति। छिन्दथ। दिब्बाम। सुणाथ। जिनिस्ससि। जानाम। काहसि। पोसेथ।

४ पालि में अनुवाद कीजिए —

भगवान् एक सप्ताह **बैठे**। सारिपुत्त ने भगवान् से **पूछा**। राजा ने भगवान् को अभिवादन **किया**, नमस्कार **किया** दान **दिया**। लडकियाँ गा रही थी। भगवान् को ब्रह्मा ने याचना की। भगवान् ने स्वीकार **किया**।

५ निम्न-लिखित क्रिया-पदो का अध्ययन कीजिए—

बुद्ध सरण गमिस्सन्ति वा गच्छिस्सन्ति वा। धम्म जानिस्ससि, वा अस्ससि वा। वेद (हृष) सोमनस्स च लभिस्साम वा लच्छाम वा। निब्बाणस्स पत्तिया मग्गो हेहिति वा हेस्सति वा होहिस्सति वा। दारका भिक्खु दक्खिन्ति वा दक्खन्ति

वा पस्सिसन्ति वा। अह सुणोमि वा सुणामि वा। धम्म-चारी सुख पापुणाति वा पापुणोति वा पप्पोति वा। भिक्खू समण-किच्च करोन्ति वा कुब्बन्ति वा कयीरन्ति वा करिस्सन्ति वा, काहन्ति वा काहिन्ति वा। य धम्म सुणोमि त धारयामि। यो झान भावेति सो सुख पप्पोति।

६ पालि में अनुवाद कीजिए—

होता है। खाता है। कहता है। हवा बहती है। भूमि पर बैठा। धम्म **सुनता हू**। ध्यान करता हूँ। वितक को **रोकता हू**। भावना कर सकता हूँ। पुस्तक **खरीदता हू**। मनुष्य **बुड्ढा होता है**। मै काम **करता हू**।



तीसरा काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पाँचवाँ भाग—विधिलिङ्ग अनुज्ञा)

विधि (हेतुफल[1])

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	पचे,[2] पचेय्य	पचेय्यु, पचु[3]
मज्झिम पुरिस	पचे,[2] पचेय्यासि	पचेय्याथ
उत्तम पुरिस	पचे,[2] पचेय्यामि	पचेमु,[4] पचेय्याम, पचेय्यामु[4]

---

१ हेतुफलेस्वेय्य, एय्यु, एय्यासि एय्याथ, एय्यामि, एय्याम, एथ एर, एथो एय्यव्हो, एय्य एय्याम्हे ६८—हेतु तथा फल के अर्थ मे, धातु से परे, ये प्रत्यय होते है। जैसे—

स चे सखारा निच्चा भवेय्यु, न निरुज्झेय्यु—यदि सस्कार नित्य हो, तो निरुद्ध न हो। (यहाँ नित्य होना हेतु है, और न निरुद्ध होना फल।)

पञ्हपत्थनाविधिसु ६९—प्रश्न, प्रार्थना, तथा विधि के अर्थ म, ये प्रत्यय होते है। जैसे—

प्रश्न—किमायस्मा विनयम्परियापुणेय्य, उदाहु धम्म=आयुष्मान् विनय का अध्ययन करेंगे, या धम का ? गच्छेय्य वाह उपोसथ, न वा गच्छेय्य=मै उपोसथ को जाऊँ या न जाऊँ ?

प्रार्थना—लभेय्याहम्भन्ते! भगवतो सन्तिके पब्बज्ज, लभेय्य उपसम्पद=

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पचेथ	पचेर
मज्झिमपुरिस	पचेथो	पचेय्यव्हो
उत्तमपुरिस	पचेय्य	पचेय्याम्हे

§ १८ 'विधि' मे कुछ विशेष धातु के रूप—

अस—अस्स, सिया[4]। ञा—**जानिया, जानेय्य, जञ्ञा**[5]। कर—**कयिरा**[6]।

भन्ते ! मैं भगवान के पास प्रव्रज्या तथा उपसम्पदा ग्रहण करूँ। **पस्सेय्य त वस्ससत अरोग**=उसे मै सौ वष तक नीरोग देखूँ।

विधि—**भव पुञ्ञ करेय्य**=आप पुण्य करें। **इह भव भुञ्जेय्य**—आप यहाँ खायँ। **माणवक भव अज्झापेय्य**—लडके को आप पढावे।

अनुज्ञा—**एव करेय्यासि**=ऐसा करो। **गाम त्व भणे गच्छेय्यासि**=हे, तुम गाँव जाओ।

सत्यरहेस्वेय्यादि ६ ११—समर्थ होने के अथ मे भी, धातु से परे ये प्रत्यय होते है। जैसे—**भव खलु रज्ज करेय्य**=आप राज्य भी कर सकते है।

२ **एय्येय्यासेय्यन्न टे ६ ७५**—'एय्य', 'एय्यासि', तथा 'एय्य' का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—**पचे, पचेय्य। पचे, पचेय्यासि। पचे, पचेय्य।**

३ **एय्युस्सु ६ ४७**—'एय्यु' प्रत्यय का विकल्प से 'उ' आदेश होता है। जैसे—पच+एय्यु=पच+उ=**पचु, पचेय्यु।**

४ **एय्यामस्सेमु च ६ ७८**—'एय्याम' का विकल्प से 'एमु' आदेश हो जाता है। जैसे—**पचेमु, पचेय्याम, पचेय्यामु।**

५ **अत्थितेय्यादिच्छन्नसमुससथससाम ६ ५०—आदिद्विन्नमियाइयुं ६ ५१**—'अस' धातु से परे, इन प्रत्ययो के आने से, उसके रूप निम्न प्रकार होते हैं—

अनुञ्ञा[८]

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पचतु	पचन्तु
मज्झिमपुरिस	पच, पचाहि[१]	पचथ
उत्तमपुरिस	पचामि	पचाम

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	अस्स, सिया	अस्सु, सियु
मज्झिमपुरिस	अस्स	अस्सथ
उत्तमपुरिस	अस्स	अस्साम

६ **एय्यास्सियाञा वा ६६३**—'ञा' धातु से परे, 'एय्य' का विकल्प से 'इया' तथा 'ञा' आदेश हो जाता है। जसे—ञा+एय्य=**जानिया, जञ्ञा**। विकल्प से—**जानेय्य**।

ञाम्हि ज ६६२—'एय्य' का 'ञा' आदेश होने पर, 'ञा' धातु का 'ज' आदेश हो जाता है। जैसे—ञा+एय्य=ञा+ञा=ज+ञा=**जञ्ञा**।

७ **कयिरेय्यस्सेय्युमादीन ६७०**—'कयिरा' से परे, 'एय्यु' आदि के 'एय्य' का लोप हो जाता है। जैसे—कयिरा+एय्यु—कयिरा+उ=**कयिरु**। कयिरा+एय्यासि=कयिरा+आसि=**कयिरासि**। **कयिराथ**। **कयिरामि**। **कयिराम**।

टा ६७१—'कयिरा' से परे, 'एय्य' का 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—**सो कयिरा**।

एथस्सा ६७२—'कयिरा' से परे, 'एथ' का 'आथ' हो जाता है। जैसे—**कयिराथ**।

८ **तु अन्तु, हि थ, मि म, त अन्त, स्सु व्हो, ए आमसे ६१०**—प्रश्न, प्राथना, तथा विधि में, धातु से परे 'तु' आदि प्रत्यय होते है। जैसे—**पचतु, पचन्तु** इत्यादि।

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पचत	पचन्त
मज्झिमपुरिस	पचस्सु	पचव्हो
उत्तमपुरिस	पचे	पचामसे

प्रश्न मे—**किन्नु खलु भो व्याकरण अधीयस्सु**—क्या तू व्याकरण पढ रहा है ?

प्रार्थना मे—**ददाहि मे**=मुझको दो। **जीवतु भव**=आप जीये।

विधि मे—**कट करोतु भव**=आप चटाई बनावे। **पुञ्ञ करोतु भव**=आप पुण्य करे।

९ **हि मि मे स्व स्स** ६ ५७—'हि', 'मि' तथा 'म' प्रत्ययो से पूव, अकार का आकार हो जाता है। जैसे—**पचाहि**।

हि स्स तो लोपो ६ ४८—अकार से परे, 'हि' का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे—**गच्छ, गच्छाहि**।

द्रष्टव्य—अनुज्ञा मे—'अस' धातु के रूप इस प्रकार होगे—

अत्थु	सन्तु
अहि	अत्थ
अस्मि	अस्म

सि हि स्व ट् ६ ५३—'सि' तथा 'हि' प्रत्ययो के आने से, 'अस' धातु का 'अ' आदेश हो जाता है। जैसे—

अस्+हि=अ+हि=**अहि**। **असि**।

विधिलिङ्ग मे नवो गणो के धातु के रूप कैसे होगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा —

	धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
			एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१	भू	भ्वादि	भवेय्य, भवे	भवेय्यु	भवेय्यासि	भवेय्याथ	भवेय्यामि	भवेय्याम
	हु	,,	हेय्य	हेय्यु	हेय्यासि	हेय्याथ	हेय्यामि	हेय्याम
	नी	,,	नेय्य	नेय्यु	नेय्यासि	नेय्याथ	नेय्यामि	नेय्याम
	या	,,	यायेय्य	यायेय्यु	यायेय्यासि	यायेय्याथ	यायेय्यामि	यायेय्याम
	पच	,,	पचेय्य, पचे	पचेय्यु	पचेय्यासि	पचेय्याथ	पचेय्यामि	पचेय्याम
२	रुध	रुधादि	रुन्धेय्य, रुन्धे	रुन्धेय्यु	रुन्धेय्यासि	रुन्धेय्याथ	रुन्धेय्यामि	रुन्धेय्याम
३	दिव	दिवादि	दिब्बेय्य, दिब्बे	दिब्बेय्यु	दिब्बेय्यासि	दिब्बेय्याथ	दिब्बेय्यामि	दिब्बेय्याम
	झा	,,	झायेय्य	झायेय्यु	झायेय्यासि	झायेय्याथ	झायेय्यामि	झायेय्याम
४	तुद	तुदादि	तुदेय्य	तुदेय्यु	तुदेय्यासि	तुदेय्याथ	तुदेय्यामि	तुदेय्याम
५	जि	ज्यादि	जिनेय्य, जेय्य	जिनेय्यु	जिनेय्यासि	जिनेय्याथ	जिनेय्यामि	जिनेय्याम
६	की	क्यादि	किणेय्य, किणे	किणेय्यु	किणेय्यासि	किणेय्याथ	किणेय्यामि	किणेय्याम
७	सु	स्वादि	सुणेय्य, सुणे	सुणेय्यु	सुणेय्यासि	सुणेय्याथ	सुणेय्यामि	सुणेय्याम
८	तन	तनादि	तनेय्य, तने	तनेय्यु	तनेय्यासि	तनेय्याथ	तनेय्यामि	तनेय्याम
९	चुर	चुरादि	चोरेय्य,	चोरेय्यु	चोरेय्यासि	चोरेय्याथ	चोरेय्यामि	चोरेय्याम
	कथ	,,	कथेय्य	कथय्यु	कथेय्यासि	कथेय्याथ	कथेय्यामि	कथेय्याम
	झप	,,	झापेय्य	झापेय्यु	झापेय्यासि	झापेय्याथ	झापेय्यामि	झापेय्याम

अनुज्ञा मे नवो गणो के धातु के रूप कैसे होगें, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा —

	धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
			एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१	भू	भ्वादि	भवतु	भवन्तु	भव, भवाहि	भवथ	भवामि	भवाम
	हु	,,	होतु	होन्तु	होहि	होथ	होमि	होम
	नी	,,	नयतु	नयन्तु	नय, नयाहि	नयथ	नयामि	नयाम
	या	,,	यातु	यन्तु	याहि	याथ	यामि	याम
	पच	,,	पचतु	पचन्तु	पच, पचाहि	पचथ	पचामि	पचाम
२	रुध	रुधादि	रुन्धतु	रुन्धन्तु	रुन्ध, रुन्धाहि	रुन्धथ	रुन्धामि	रुन्धाम
३	दिव	दिवादि	दिब्बतु	दिब्बन्तु	दिब्ब, दिब्बाहि	दिब्बथ	दिब्बामि	दिब्बाम
	झा	,,	झायतु	झायन्तु	झाय, झायाहि	झायथ	झायामि	झायाम
४	तुद	,,	तुदतु	तुदन्तु	तुद, तुदाहि	तुदथ	तुदामि	तुदाम
५	जि	ज्यादि	जिनातु	जिनन्तु	जिन, जिनाहि	जिनाथ	जिनामि	जिनाम
६	की	क्यादि	किणातु	किणन्तु	किण, किणाहि	किणाथ	किणामि	किणाम
७	सु	स्वादि	सुणोतु	सुणन्तु	सुण, सुणाहि	सुणोथ	सुणोमि	सुणोम
८	तन	तनादि	तनोतु	तनोन्तु	तनोहि	तनोथ	तनोमि	तनोम
९	चुर	चुरादि	चोरेतु, चोरयतु	चोरेन्तु	चोरेहि	चोरेथ	चोरेमि	चोरेम
	कथ	,,	कथेतु, कथयतु	कथेन्तु	कथेहि	कथेथ	कथेमि	कथेम
	झप	,,	झापेतु, झापयतु	झापेन्तु	झापेहि	झापेथ	झापेमि	झापेम

१४. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) अत्तान चे पिय **जञ्जा** (जानेय्य, जानिया), त सुरक्खित **रक्खेय्य**। अत्तान एव पठम पटिरूपे **निवेसये**। ततो पर अञ्ञ अनुसासेय्य। एव सति, पण्डितो न किलिस्सेय्य। अत्ता हि अत्तनो नाथो, कोहि नाथो परो सिया। हीन धम्म न सेवेय्य, पमादेन न **सवसे** (सवसेय्य), कल्याणे मित्ते **भजेय्य**, मिच्छा-दिट्ठि **जहेय्य**, लोक-वड्ढनो न सिया। उत्तिट्ठेय्य न **पमज्जेय्य**, सुचरित धम्म चरे (चरेय्य)। न भजे पापके मित्ते, कल्याणे मित्ते भजे। दान चे **ददेय्य**, (दज्जेय्य, दज्जा वा) सीलसम्पन्नान पञ्ञावन्तान देय्य। सब्भिरेव **समासेथ**, वालान (बालेहि वा) सन्थव न **करेय्य** (करे, कुब्बेय्य, कुब्बेथ वा)। सरण चे **गच्छेय्य**, बुद्धान सरण गच्छेय्य। धम्म चे जानेय्य, खिप्प पधान पदहेय्य।

*** ऊपर काले छपे क्रियापदो के रूप 'अनुज्ञा' में लिखिए।**

(ख) चारिक **चरथ**, धम्म **देसेथ**, धम्म **पकासेथ**। एव **करोहि**, एव ब्रूहि, एव **निसीदाहि**। धम्म **सुणाथ**, साधुक मनसि-करोथ। तिट्ठ, तिट्ठ। एव **होहि**। धि रत्थु! भगवा धम्म देसेतु। पटिभातु आयुस्मन्त एतस्स भासितस्स अत्थो ति। भव-सोत **छिन्दथ**। धम्म **धारेतु**। **कथेतु** भव गोतमो धम्म।

*** ऊपर काले छपे क्रियापदो के रूप 'विधि लिङ्ग' में लिखिए।**

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्ध की शरण जाओ। धर्म्म का आचारण करो। पाप मत करो। सच बोलो। धम्म-ग्रन्थो को पढो। भगवान् ही इस बात को कहे, सुगत ही इस कथन का अर्थ समझावे।

(ख) हम लोग पुस्तक पढे, अथवा उद्यान मे जावे? तुम लोग त्रिपिटक पढो। वे लोग जातक पढे, अथवा अट्ठकथा। जातक ही पढे। नही तो अट्ठकथा ही पढे।

तीसरा काण्ड

तीसरा पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(दूसरा भाग—शेष नियम)

१ पठमा विभत्ति

§ १८ **पठमात्थमत्ते २ ३६**—अर्थ-मात्र को प्रकट करने मे, किसी नाम से परे, 'पठमा' विभक्ति होती है। जैसे—**रुक्खो**।

पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुसकलिङ्ग भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—**दोणो**। **खारी**। **अल्हक**।

परिमाण (=वचन) भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—**मनुस्सो**। **मनुस्सा**।

सख्या भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—**एको**। **द्वे**। **बहवो**।

२ दुतिया विभत्ति

§ १९ **ध्यादीहि युत्ता २ ९**—**धि** (=धिक्कार), **हा** (शोक प्रगट करने के अर्थ मे), **अन्तरा** (=बीच में), **अन्तरेन** (=बिना, बीच मे), **अभितो** (=दोनो ओर), **परितो** (=चारो ओर), **सब्बतो** (=सभी ओर) तथा, **उभयतो** (=दोनो ओर) शब्दो के योग मे 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—**धि अलस सिस्स**=आलसी शिष्य को धिक्कार है। **हा पुत्त!**=हाय बेटा! **अन्तरा च राजगह, अन्तरा च नाळन्द**=राजगृह और नालन्दा के बीच। **भूप अन्तरेन पासादो न सोभति**=राजा के बिना प्रासाद शोभा नही देता है। **तळाक अभितो—उभयतो दीघा रुक्खा तिट्ठन्ति**=तालाब के दोनो ओर, लम्बे लम्बे पेड है। **गाम परितो—सब्बतो पब्बतो**=ग्राम के चारो ओर पवत है।

§२० **लक्खणित्थम्भूतवीच्छास्वभिना** २१०—सकेत करने, इस तरह का बताने, तथा व्याप्त करने के अथ मे, 'अभि' शब्द के योग मे 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—**पब्बत अभि जलति अनलो**=पव्वत की ओर आग जलती है। **यञ्ञदत्तो पसन्नो बुद्ध अभि**=यज्ञदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धा-युक्त है। **रुक्ख रुक्ख अभि तिट्ठति**=हर एक वृक्ष के पास ठहरता है।

§२१ **पतिपरीहि भागे च** २११—ऊपर के ही अर्थों मे, तथा हिस्सा होने के अथ मे, 'पति' और 'परि' शब्दो के योग मे 'दुतिया' विभक्ति होती है।

जैसे—**पब्बत पति (=परि) जलति अनलो**=पर्वत की ओर आग जलती है। **देवदत्तो पसन्नो बुद्ध पति—परि**=देवदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धा-युक्त है। **रुक्ख रुक्ख पति (परि) तिट्ठति**=हर एक वृक्ष के पास ठहरता है। **सो भागो म पति (=परि) भवति**=वह भाग मेरे हिस्से मे आता है।

§२२ **अनुना** २१२—ऊपर के ही अर्थों मे, 'अनु' शब्द के योग मे, 'दुतिया विभक्ति' होती है।

जैसे—**पब्बत अनु जलति अनलो**=पवत की ओर आग जलती है। **देवदत्तो पसन्नो बुद्ध अनु**=देवदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धायुक्त है। **रुक्ख रुक्ख अनु तिट्ठति**= हर एक वृक्ष के पास ठहरता है। **सो भागो म अनु भवति**=वह भाग मेरे हिस्से में आता है।

§२३ **सहत्थे** २१३—साथ होने के अर्थ मे, 'अनु' शब्द के योग मे 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—**आचरिय अनु गच्छति सिस्सो**=शिष्य आचाय के साथ साथ जा रहा है।

§२४ **हीने उपेन** २१४१५—उससे कम होने के अथ मे, 'अनु' तथा 'उप' शब्दो के योग मे 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—**अनु उपालित्थेर विनयधरा**=उपालि स्थविर से दूसरे भिक्षु विनय जानने में कम थे। **उप उपालित्थेर विनयधरा**।

§२५ **रिते दुतिया च विनाञ्ञत्र ततिया च** २३१३२—'रिते' (=बिना), 'विना', तथा 'अञ्ञत्र' (=अन्यत्र) शब्दो के योग मे 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—**सद्धम्म रिते अञ्ञो को जने रक्खति ?** =सद्धर्म के सिवा, अन्य कौन मनुष्यो की रक्षा कर सकता है ? **जल बिना रुक्खो सुक्खति** =जल के बिना, पेड सूख रहा है । **तथागत अञ्ञत्र को अञ्ञो लोकनायको ?**=तथागत (बुद्ध) को छोड, दूसरा कौन लोक-गुरु है ?

३ ततिया विभत्ति

§२६ **लक्खणे २ २०**—लक्षण के अर्थ मे, 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—**तिदण्डकेन परिब्बाजको बुज्झति** =त्रिदण्ड से परिव्राजक बूझा जाता है । **नयनेन काणो** =आँख से काना । **पादेन खञ्जो** =पैर से लगडा ।

§२७ **हेतुम्हि २ २१**—हेतु के अर्थ मे 'ततिया विभत्ति' होती ह ।

जैसे—**सो इध अन्नेन वसति** =वह यहाँ खाने के उद्देश्य से वास करता है । **धम्मेन यसो वड्ढति** =धम से यश बढता है ।

§२८ **विनाञ्ञत्र ततिया च २ ३२**—'बिना' तथा 'अञ्ञत्र' शब्दो के योग मे 'ततिया विभत्ति' होती है ।

जैसे—**जलेन बिना रुक्खो सुक्खति** =जल के बिना पेड सूख रहा है । **तथागतेन अञ्ञत्र को अञ्ञो लोकनायको ?**=तथागत (=बुद्ध) को छोड, दूसरा कौन लोकगुरु है ?

§२९ **पुथनानाहि २ ३३**—पुथ (=पृथक्), और नाना (=भिन्न) शब्दो के योग मे 'ततिया विभत्ति' होती है ।

जैसे—**पुथगेव गामेन सो अरञ्ञ अधिवसति** =गाँव से पृथक् ही, वह जगल मे रहता है । **सोगतधम्मेन नाना तित्थियधम्मो** =सुगत (=बुद्ध) के धर्म से भिन्न ही तैर्थिको का धर्म है ।

५. पञ्चमी विभत्ति

§३० **पञ्चमीणे वा २ २२**—ऋण के हतु मे 'पञ्चमी विभत्ति' होती है, और 'ततीया' भी ।

जैसे—**सतस्मा बद्धो, सतेन बद्धो** =सौ रुपए के ऋण से बँधा है ।

§३१ **गुणे २ २३**—पराङ्गभूत हेतु मे 'पञ्चमी विभत्ति' होती है । जैसे—

सङ्खारनिरोधा विञ्ञाणनिरोधो=सस्कार के निरोध होने से, विज्ञान का निरोध होता है।

§ ३२ **अपपरीहि वज्जने** २ २९—वर्जन करने के अथ मे, 'अप' और 'परि' शब्दो के योग मे 'पञ्चमी विभत्ति' होती है। जैसे—**अप पाटलिपुत्तस्मा वुट्ठो देवो—परि पाटलिपुत्तस्मा वुट्ठो देवो**=पाटलिपुत्र को छोड, दूसरे स्थानो मे वृष्टि हूई।

§ ३३ **पटिनिधिपटिदानेसु पतिना** २ ३०—प्रतिनिधि और प्रतिदान के अथ मे, 'पति' शब्द के योग मे 'पञ्चमी विभत्ति' होती है।

जैसे—**बुद्धस्मा पति सारिपुत्तो**=सारिपुत्र बुद्ध के प्रतिनिधि है। **घत तेलस्मा पति ददाति**=तेल ले कर घी देता है।

§ ३४ **रिते दुतिया च** २ ३१ **विनाञ्ञत्र ततिया च** २ ३२ **पुथनाना हि** २ ३३—'रिते', 'विना', 'अञ्ञत्र', 'पुथ', तथा 'नाना' शब्दो के योग मे 'पञ्चमी विभत्ति' होती है।

जैसे—**सद्धम्मस्मा रिते अञ्ञो को जने रक्खति** ? =सद्धर्म के सिवा, अन्य कौन मनुष्यो की रक्षा कर सकता है ? **जलस्मा बिना रुक्खो सुक्खति**=जल के बिना पेड सूख रहा है। **तथागतस्मा अञ्ञत्र को अञ्ञो लोकनायको**=तथागत को छोड, दूसरा कौन लोग-गुरु है ? **पुथगेव गामस्मा सो अरञ्ञ अधिवसति**=ग्राम से पृथक्, वह जगल मे वास करता है। **सोगतधम्मस्मा नाना तित्थियधम्मो**=सुगत (बुद्ध) के धर्म से भिन्न ही तैर्थिको का धम है।

६. छट्ठी

§ ३५ **छट्ठी हेत्वत्थेहि** २ २४—हेत्वर्थक शब्दो के योग मे 'छट्ठी विभत्ति' होती है। जैसे—**उदरस्स हेतु, उदरस्स कारणा**=पेट के हेतु।

७. सत्तमी

§ ३६ **सत्तम्याधिक्ये** २ १६—अधिक होने के अर्थ मे, 'उप' शब्द के योग मे 'सत्तमी विभत्ति' होती है। जैसे—**उप खारिय दोणो**=खारि (एक पुराना तौल का माप) से अधिक दोण है।

§ ३७ **सामित्तेधिना २ १७**—स्वामी होने के अर्थ मे, 'अधि' शब्द के योग मे, सत्तमी विभत्ति होती है। जैसे—**अधि पञ्चालेसु ब्रह्मदतो**=पाञ्चाल देश पर ब्रह्मदत्त का आधिपत्य है।

§ ३८ आधार की विवक्षा मे, सम्प्रदान के स्थान में सप्तमी भी होती है। जैसे—**सघे देति**=सघ को देता है।

§ ३९ **सब्बादितो सब्बा २ २५**—हेत्वथक शब्दो के योग मे, 'सब्ब' आदि शब्दो के साथ सभी विभक्तियाँ होती है।

जैसे—**को हेतु, क हेतु, केन हेतुना, कस्स हेतुस्स, कस्मा हेतुस्मा, कस्स हेतुस्स, कस्मि हेतुस्मि।**

किं कारण, केन कारणेन इत्यादि।

किं निमित्त, केन निमित्तेन इत्यादि।

कि पयोजन, केन पयोजनेन इत्यादि।

१५. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धा । बुद्धे । पञ्ञा । कञ्ञाय । रत्तिया । सब्बस्स । **ब्रह्मदत्तो** नाम राजा अहोसि । **बुद्धघोसो** नाम आचरियो अहोसि । 'बुद्धो बुद्धो' ति सुत्वा सुमेधो तुट्ठहट्ठो जातो । **निब्बाण** नाम सब्बेस सखारान उपसमो । एव बुद्धा बदन्ति । **पुञ्ञानि** वड्ढन्ति, पापानि परिहायन्ति ।

बुद्धो धम्म देसेति । माणवको **मास** सज्झायति । भगवा **सत्ताह** निसीदि । माणवो **कोस** सज्झायति । **रुक्ख** अनुविज्जोतते चन्दो । गाम **गाम** अनु वस्सति देवो । अन्तरा च **नाळन्द** अन्तरा च राजगह । अभितो **गाम** । उपमा म पटिभाति । एकमन्त निसीदि । **सीघ सीघ** गच्छति । फले खादि ।

रुक्ख **खग्गेन** छिन्दति । **बुद्धेन** देसितो धम्मो । **तिलेहि** खेत्ते वपति । कञ्ञाय पच्छा माता गच्छति । केन हेतुना वसति ? **अन्नेन** वसति । **कम्मुना** (कम्मना) ब्राह्मणो होति । **येन** भगवा **तेन** उपसङ्कमिसु । **अक्खिना** काणो । वण्णेन अभिरूपो । जातिया सत्त-वस्सिको ।

भिक्खुस्स दान देति । नमो **बुद्धस्स** । देसेतु, भन्ते ! भगवा धम्म भिक्खून । **सग्गाय** सवत्तति । अल **मे** तेन धनेन । **सग्गाय** गच्छति । तथा तस्स फासु होति । भोगाय वजति ।

पापा चित्त निवारेति । यस्मा खेम, ततो भय । **पेमतो** जायति सोको । **पञ्ञाय** सुगतिं यन्ति । **इतो** बहिद्धा । **अञ्ञत्र** दुक्खा । उद्ध पाद-तला अधो केसमत्थका ।

भिक्खुस्स चीवर **किस्स** हेतु अल्ल ति ? बुद्धो भगवा पूजितो **राजान** (रञ्ञ) सुमानितो च । **पापस्स** अकरण सुख । **सप्पिस्स** पत्त पूरेत्वा गतो । सब्बेस भिक्खून आनन्दो दस्सनीयतमो । सब्बे भायन्ति **मच्चुनो** (मच्चुना) । **पुत्तस्स** (पुत्त) इच्छमानो देव अच्चति ।

भगवा सावत्थिय विहरति जेतवने । पसन्नो बुद्धसासने । **कदलीसु** गजे रक्खन्ति । सम्पटिच्छामि मत्थके (=शिरोधार्य करता हूँ) । वज्जेसु भय-

दस्सावी। **जायमाने बोधिसत्ते** अय लोकधातु सकम्पि। **इमस्मि सति** इद होति। **दन्तेसु** हञ्ञते नागो।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे पदो में कैसी विभक्तिया है?

३ नीचे काले अक्षरो में छपे पदो के कारक बताइए--

(अनियमित विभक्तियो के कुछ उदाहरण)

बुद्ध सरण गच्छामि। **एक समय** भगवा सावस्थिय विहरति। सो भिक्खु इतो चुतो **सग्ग लोक** उप्पज्जि। **भिक्खुसघ** पिट्ठितो पिट्ठितो अगमासि।

तेन खो पन **समयेन**। **येन** भगवा **तेन** उपसङ्कमि।

दुक्खस्स भीतो अह रुदन्तान मातापितुन्न बुद्धसासने पब्बजि। सब्बे तसन्ति **दण्डस्स**।

उपासका **भक्खूसु** अभिवादेन्ति। **सङ्घे** दिन्न महप्फल होति।

तीसरा काण्ड

चौथा पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(पहला भाग—निष्ठा)

§ १ **कत्तरि भूते क्तवन्तु, क्तावी ५५५**—भूतकाल के अर्थ मे, धातु से परे, 'क्तवन्तु' और 'क्तावी' प्रत्यय होते है। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता के विशेषण के समान व्यवहृत होता है, अत वह कर्ता के लिङ्ग, वचन, तथा विभक्ति को प्राप्त होता है।

जैसे—वि+जि+क्तवन्तु=**विजितवन्तु**। वि+जि+क्तावी=**विजितावी**। इनका अर्थ हुआ—"वह, जिसने विजय पा ली है"।

§ २ पुल्लिङ्ग, तथा नपुसकलिङ्ग मे 'विजितवन्तु' शब्द के रूप 'गुणवन्तु' के समान, और 'विजितावी' शब्द के रूप 'दण्डी' के समान होगे।

स्त्रीलिङ्ग मे, 'विजितवन्तु' का रूप 'विजितवती', या 'विजितवन्ती', तथा 'विजितावी' का रूप 'विजिताविनी' हो जायगा और, उनके रूप 'इत्थी' शब्द के समान होगे। जैसे—

पुलिङ्ग मे—**विजितवा, विजितावी वा खत्तियो**=विजय पा लिया क्षत्रिय। **विजितवन्तो, विजिताविनो वा खत्तिया**=विजय पा लिए क्षत्रिय लोग। **विजितवन्त, विजिताविन वा खत्तिय**=विजय पा लिए क्षत्रिय को इत्यादि।

स्त्रीलिङ्ग मे—**विजितवती, विजितवन्ती, विजिताविनी वा इत्थी**=विजय पाई हुई स्त्री इत्यादि।

§ ३ **क्तो भावकम्मेसु ५५६**—भूतकाल के अर्थ मे, कर्म और भाव वाच्य मे, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—कर+क्त=कत। वि+जि+क्त=विजित।

'क्त' प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कम का विशेषण होता है। जैसे—**रज्ज विजित रञ्ञा**=राजा के द्वारा राज जीता गया। **रज्जानि विजितानि रञ्ञा**=राजा के द्वारा राज्य जीते गए। **इत्थी विजिता रञ्ञा**=राजा के द्वारा स्त्री जीती गई। **रञ्ञा विजिते नगरे महाधन अत्थि**=राजा के द्वारा जीते गए नगर मे बहुत धन है।

भाववाच्य मे, वह सदा नपुसक लिग एक वचन रहता है। जैसे—**मया हसित**=मेरे द्वारा हँसा गया। **अम्हेहि हसित**=हम लोगो के द्वारा हँसा गया। **त्वया हसित। तुम्हेहि हसित। बालकेन हसित। कञ्ञाय हसित।**

§ ४ **क त्त रि चा र म्भे** ५ ५७—क्रिया-आरम्भ के अथ मे, कतृवाच्य मे भी, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है, और यथाप्राप्त कम तथा भाव वाच्य मे भी। जैसे—

(कतृ) **पकतो भव कट**=आप ने चटाई बनाना आरम्भ किया है। (कर्म) **पकतो भोता कटो**=आप से चटाई बनाना आरम्भ किया गया है।

(कतृ) **पसुत्तो भव**=आप सोए हैं। (भाव) **पसुत्त भवता**=आप के द्वारा सोया गया।

§ ५ **ठास वस सिलिस सी रु ह ज र ज नी हि** ५ ५८—कर्तृ, कर्म, और भाव-तीनो वाच्य मे, 'ठा' (=ठहरना) इत्यादि धातुओ से परे, 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—(कर्तृ) **उपट्ठितो गुर भव**=आप ने गुरु का उपस्थान (=सेवा-टहल) किया। (कम) **उपट्ठितो गुरु भोता**=आप के द्वारा गुरु उपस्थान किए गए।

§ ६ **ग म न त्था क म्म का धा रे च** ५ ५९—गमनार्थ और अकमक धातु से परे, आधार के अथ मे भी, कर्ता कम और भाव मे 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

(भाव) **इद तेस यात।** (कर्तृ) **इह ते याता।** (कर्म) **इह तेहि यात**=यही वह स्थान है, जहाँ वे लोग गए थे इत्यादि।

§ ७ **आ हा र त्था** ५ ६०—भोजनाथक और पानाथक धातुओ से परे, आधार के अथ मे, 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

इद तेस भुत्त, इह तेहि भुत्त=यही वह स्थान है, जहाँ उन लोगो ने भोजन किया था।

§ ८ **न ते का नु ब न्ध ना ग मे सु** ५ ८५—**वा क्व चि** ५ ८६—क्त, तथा क्तवतु प्रत्ययो के आने से, (प्रत्यय मे यदि 'क' अनुबन्ध हो) धातु के उपान्त 'अ', 'इ'

तथा 'उ' की वृद्धि साधारणत तो नही होती है, किंतु, कही कही विकल्प से हो भी जाती है। जैसे—

वृद्धि नहीं हुई—चि+क्त=**चितो। सुतो। दिट्ठो। पुट्ठो। विजित।**
वृद्धि विकल्प से हुई—**मुदितो, मोदितो। रुदित, रोदित।**

§ ६ 'क्तवन्तु', तथा 'क्त' प्रत्ययो के लगने से, कुछ विशेष धातु के रूप—
[1]गम—**गतवा, गत।** हन—**हतवा, हत।** मन—**मतवा, मत।** तन—**ततवा, तत।** रम—**रतवा, रत।** कर—**कतवा, कत।** वच[2]—**उत्तवा, उत्त।** वस[3]—**उत्थवा उत्थ।** वड्ढ[4]—**वड्ढवा, वड्ढ।** यज[5]—**इट्ठवा यिट्ठवा, इट्ठ यिट्ठ।**

---

१ **गमादिरान लोपो'न्तस्स** ५ १०९—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' को छोड, 'क' अनुबन्ध वाले दूसरे प्रत्ययो के आने से, 'गम' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट], तथा रकारान्त धातुओ के अन्त्य वण का लोप होता है। जैसे—

गम+क्त=**गत।** खन+क्त=**खत।** हन—**हत। मत। तत। सञ्जत। रत।** कर+क्त=**कत।**

[किंतु—गम+क्य+ते=**गम्यते।** यहाँ 'गम' के मकार का लोप नही हुआ, क्योकि, 'क्य' प्रत्यय मे 'क' अनुबन्ध होने पर भी उसके साथ 'तकार' नही है।]

२ **वचादीन वस्सुट् वा** ५ ११०—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' को छोड०, 'वच' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओ के 'व' का विकल्प से 'उ' हो जाता है। जैसे—वच+क्त=**वुत्त, उत्त।** वस+क्त=**वुत्थ, उत्थ।**

३ **अस्सु** ५ १११—'क्त्वा' तथा ०, 'वस' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओ के अकार का उकार हो जाता है। जैसे—वस+क्त=**वुत्थ।**

सासवससससससा थो ५ १४४—'सास', 'वस', 'सस', तथा 'सस' धातुओ से परे, 'त' का 'थ' हो जाता है। जैसे—सास+क्त=**सत्थ।** वस+क्त=**वुत्थ।** प+सस+क्त=**पसत्थ।** सस+क्त=**सत्थ।**

४ **वड्ढस्स वा** ५ ११२—'क्त्वा' तथा०, 'वड्ढ' धातु के अकार का विकल्प से उकार होता है। जैसे—वड्ढ+क्त=**वड्ढ, वुड्ढ।**

५ **यजस्स यस्स टियी** ५ ११३—'क्त्वा' तथा०, 'यज' धातु के 'य' का 'इ' तथा 'यि' आदेश होता है। जैसे—यज+क्त=**इट्ठ, यिट्ठ।**

—**आरूल्हवा, आरूल्ह।** मुह[18]—**मूल्हवा, मूल्ह।** भिद[19]—**भिन्नवा, भिन्न।** दा[20]—**दिन्नवा, दिन्न।** किर[21]—**किण्णवा, किण्ण।** तर[22]—**तिण्णवा, तिण्ण।**

---

१७ **रुहादीहि हो ळ च ५ १४८**—'रुह' आदि धातुओ से परे, 'त' का 'ह' हो जाता है, धातु के अन्त्य वर्ण का 'ळ' हो जाता है। जैसे—आरूह+क्त=**आरूळ्हो।** गुह+क्त=**गुळ्हो।** वह—**वूळ्हो।** वह—**बाळ्हो।**

वहस्सुस्स ५ १०७—'क्त्वा' और 'नक्त्वा' को छोड, तकारादि 'क' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'वह' धातु का 'वूह' आदेश हो जाता है। जैसे—

वह+क्त=**वूळ्हो।**

मुह वहान च ते कानुबन्धे त्वे ५ १०६—'क्त्वा' और 'नक्त्वा' को छोड, तकारादि 'क' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'मुह', 'बह' तथा 'गुह' धातुओ के स्वर का दीर्घ होता है। जैसे—गुह+क्त=**गूळ्हो।** मुह+क्त=**मूळ्हो।** बह+क्त=**बाळ्हो।**

१८ **मुहा वा ५ १४९**—'मुह' धातु के साथ विकल्प से होता है। जैसे—**मूळ्हो, मुद्धो।**

१९ **भिदादितो नो क्तक्तवन्तून ५ १५०**—'भिद' आदि धातुओ से परे 'क्त' या 'क्तवन्तु' प्रत्यय हो, तो उसके 'त' का 'न' हो जाता है। जसे—भिद+क्त=भिद+त=भिद+न=**भिन्नो। भिन्नवा। छिन्नो, छिन्नवा। छन्नो, छन्नवा। खिन्नो, खिन्नवा। उप्पन्नो, उप्पन्नवा। सिन्नो, सिन्नवा। सन्तो, सन्तवा। पीनो, पीनवा। सूनो, सूनवा। दीनो, दीनवा। डीनो, डीनवा। लीनो, लीनवा। लूनो लूनवा।**

२० **दात्विन्नो ५ १५१**—'दा' धातु से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'इन्न' हो जाता है। जैसे—दा+क्त=**दिन्नो। दिन्नवा।**

२१ **किरादीहि णो ५ १५२**—'किर' आदि धातुओ से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'ण' हो जाता है। जैसे—किर+क्त=**किण्णो, किण्णवा।** पूर+क्त=**पुण्णो, पुण्णवा। खीणो, खीणवा।**

२२ **तरादीहि रिण्णो ५ १५३**—'तर' आदि धातुओ से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'रिण्ण' हो जाता है। जैसे—तर+क्त=तर+

भञ्ज[२३]—**भग्गवा, भग्ग**। सुस[२४]—**सुक्खवा, सुक्ख**। पच[२५]—**पक्कवा, पक्क**। मुच[२६]—**मुक्कवा, मुत्तवा, मुक्त, मुत्त**। धस[२७]—**धस्तो**। तस—**त्रस्तो**।

इण्ण=**तिण्णो**। **तिण्णवा**। **जिण्णो, जिण्णवा**। **छिण्णो, छिण्णवा**।

२३ **गो भञ्जादीहि ५ १५४**—'भञ्ज' आदि धातुओं से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'ग' हो जाता है। जैसे—भञ्ज+क्त=**भग्गो**। **भग्गवा**। **लग्गो, लग्गवा**। **निमुग्गो, निमुग्गवा**। **सविग्गो, सविग्गवा**।

२४ **सुसा खो ५ १५५**—'सुस' धातु से परे ० 'त' का 'ख' होता है। जैसे—सुस+क्त=**सुक्खो, सुक्खवा**।

२५ **पचा को ५ १५६**—'पच' धातु से परे ० 'त' का 'क' होता है। जैसे—पच+क्त=**पक्को, पक्कवा**।

२६ **मुचा वा ५ १५७**—'मुच' धातु से परे ० 'त' का विकल्प से 'क' होता है। जैसे—**मुक्को, मुक्कवा**। **मुत्तो, मुत्तवा**।

२७ **धस्तो त्रस्ता ५ १४२**—निपात।

१६. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) अस्सुतवा पुथुज्जनो सप्पुरिस-धम्मे अविनीतो सब्ब अभिनन्दति । त किस्स हेतु ? "अपरिञ्ञात तस्सा"ति वदामि । अरहन्तान (ब्रह्मचरिय) वुसितवन्तान आसवा खीणा, करणीया कता, भारो ओहितो, सदत्थो अनुप्पत्तो, भवसयोजना परिक्खीणा, होन्ति । तस्मा ते किञ्चि पि नाभि-नन्दन्ति । परिञ्ञात तेस ति वदामि ।

(ख) दिट्ठ, सुत, मुत, विञ्ञात—सब्ब अनिच्चतो पच्चवेक्खितब्ब । कत करणीय । एव मे सुत । बालकेन हसित । पकतो भव कट । उपट्ठितो गुरु भोता । इद तेस यात । इह तेहि भुत्त । फलानि पक्कानि । मार-सेना न विजितवती झायिसु मुनिसु । भगवा सावकेहि पुट्ठे पञ्हे व्याकरोति ।

(ग) यथागार दुच्छन्न वुट्ठी समतिविज्झति ।
एव अभावित चित्त रागो समतिविज्झति ।।
(धम्मपद १ १३)

गतद्धिनो विसोकस्स विप्पमुत्तस्स सब्बधि ।
सब्बगन्थप्पहीणस्स परिलाहो न विज्जति ।।
(धम्म० ७ १)

सन्त अस्स मन होति, सन्ता वाचा च कम्म च ।
सम्मदञ्ञविमुत्तस्स उपसन्तस्स तादिनो ।।
(धम्म० ७ ७)

२ निम्नलिखित पर्य्यायो को याद कीजिए, तथा उनसे वाक्य बनाइए—

'कथित' के अर्थ मे—भासित, लपित, वुत्त, अभिहित, अक्खात, उदीरित, गदित, भणित, उदित, कथित ।

'ज्ञात' के अर्थ मे—बुद्ध, पटिपन्न, विदित, अवगत, मत, ञात।
'पूजित' के अर्थ मे—अपचायित, अच्चित, अपचित, पूजित।
'अन्वेषण' के अर्थ मे—मग्गित, परियेसित, गवेसित, अन्वेसित।
'रक्षित' के अर्थ मे—गोपित, गुत्त, तात, गोपायित, अवित, रक्खित।
'भक्षित' के अर्थ मे—गिलित, खादित, भुत्त, अज्झोहट, असित, भक्खित।
'क्षुधित' के अर्थ मे—जिघच्छित, छात, बुभुक्खित, खुदित।
'आनीत' के अर्थ मे—आहट, आभत, आनीत।
'नष्ठ' होने के अर्थ मे—गलित, पन्न, चुत, धसित, भट्ठ।
'छिन्न' होने के अर्थ मे—कन्तित, सछिन्न, लूण, दात, छिन्न।
'कपित' होने के अर्थ मे—धूत, आधूत, चलित, कम्पित।
'आवृत' होने के अर्थ मे—वेठित, वलयित, रुद्ध, सवुत, आवुत।
'प्रमुदित' के अर्थ मे—पीत, हट्ठ, मत्त, तुट्ठ, पमुदित।

३ निम्नलिखित शब्दो से वाक्य बनाइए—

कतानि। किट्ठेसु खेत्तेसु। भिन्नेन रथेन। दिन्नवन्तिया कञ्ञाय। आसवेहि मुत्तवन्तो। आसवेहि विमुत्त। सन्तानि इन्द्रियाणि। तस्मिं उत्ते। विजिताविनो। विजितवन्ती।

४ पालि में अनुवाद कीजिए—

राजा के द्वारा जीते गए नगर मे बहुत धन है। अर्हत् के द्वारा सभी इन्द्रियाँ जीत ली गई है। निर्वाण का मार्ग श्रावक के द्वारा देख लिया गया है, जान लिया गया है, साक्षात् कर लिया गया है। पहले के राजा धर्मानुकूल राज्य करते थे। उसे ज्ञान-चक्षु उत्पन्न हुआ। पके हुए फलो को देखो।

तीसरा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(दूसरा भाग—तब्ब, तु, त्वा)

तब्ब, अनीय, घ्यण्

§ १० **भावकम्मेसु तब्बानीया ५ २७**—भाव-वाच्य और कर्मवाच्य मे, धातु से परे, बहुधा 'तब्ब' और 'अनीय' प्रत्यय होते है। जैसे—

(भाव) **मया हसितब्ब, हसनीय वा**=मेरे द्वारा हँसा जाना चाहिए। **मया निसीदितब्ब निसीदनीय वा**=मेरे द्वारा बैठा जाना चाहिए।

(कर्म) **मया कत्तब्बो, करणीयो वा कटो**=मुझे चटाई बनानी चाहिए। **मया सोतब्बानि, सवनीयानि वा तानी वचनानि**=मुझे वे वचन सुनने चाहिए।

§ ११ **घ्यण् ५ २८**—ऊपर के हि स्थान मे, धातु से परे, बहुधा 'घ्यण्' प्रत्यय आता है। 'घ्यण्' का 'य' रह जाता है। जैसे—

मया इद न वाक्य[1]=मुझे यह नही कहना चाहिए। **सिस्सेन पुप्फानि चेय्यानि**=शिष्य को फूल चुनने चाहिए।

§ १२ **आस्से च ५ २९**—'घ्यण्' प्रत्यय आने से, धातु के आकार का एकार हो जाता है। जैसे—**धनिकेहि दलिद्दान दानं देय्य**=धनिको को दरिद्रो को दान

---

१ **कगा चजान घानुबन्धे ५ ९८**—'घ' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'च' का 'क', तथा 'ज' का 'ग' हो जाता है। जैसे—वच+घ्यण्=वाक्य। भज+ घ्यण्=भाग्य।

देना चाहिए। **अच्छानि जलानि पेय्यानि**=साफ जल पीने चाहिए।

§ १३ 'तब्ब', 'अनीय', तथा 'घ्यण्' प्रत्ययान्त शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

सिनानीय चुण्ण=वह चूण जिससे स्नान किया जाय। **दानीयो ब्राह्मणो**=वह ब्राह्मण जिसको दान दिया जाय। **उपट्ठानीयो सिस्सो**=वह शिष्य जिससे उपस्थान (=सेवा-टहल) कराया जाय इत्यादि।

§ १४ **युवण्णानमेओ प्पच्चये** ५ ८२—प्रत्यय आने से, इकारान्त और उकारान्त धातुओ के इकार का एकार, तथा उकार का ओकार हो जाता है। जैसे—

चि+तब्ब=**चेतब्ब**। चि+अनीय=**चयनीय**। चि+घ्यण=**चेय्य**। **सोतब्ब**। **सवनीय**।

[**न ब्रूस्सो** ५ ६७—'ब्रू' धातु से परे, व्यञ्जनादि प्रत्ययो के आने से, उसके 'ऊ' का 'ओ' नही होता है। जैसे—ब्रू+मि=**ब्रूमि**। स्वरादि प्रत्यय आने से 'ऊ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—ब्रू+इ=**अब्रवि**]

§ १५ **लहुस्सुपन्तस्स** ५ ८३—धातु के लघु उपान्त 'इ' तथा 'उ' का क्रमश 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—

इस+तब्ब=**एसितब्ब**। कुस+तब्ब=**कोसितब्ब**।

§ १६ **मनानं निग्गहीतं** ५ ९६—मकारान्त तथा नकारान्त धातुओ से उत्तर, यदि 'य' को छोड कोई दूसरा व्यञ्जन हो, तो 'म' या 'न' का 'निग्गहीत' (अनुस्वार) हो जाता है। जैसे—गम+तब्ब=गं+तब्ब=**गन्तब्ब**। हन+तब्ब=हं+तब्ब=**हन्तब्ब**।

§ १७ इन प्रत्ययो के लगने से कुछ विशेष धातु के रूप —वद+घ्यण=**वज्ज**[२]। कर+घ्यण=**किच्च**[३]। गुह+घ्यण=**गुय्ह**[४]। नि+पद+तब्ब=**निपज्जितब्ब**[५]। भिद—**भेत्तब्ब**[६]। कर—**कातब्ब**[७]। नि+सिद—**निसीदितब्ब**[८]। अस—**भवितब्ब**[९]।

---

२ **वदादीहि यो** ५ ३०—भाव तथा कर्म मे, 'वद' आदि धातुओ से परे, बहुधा 'य' का आगम होता है। जैसे—वद—**वज्ज**=निन्दनीय। मद—**मज्ज**। गम—**गम्म**।

तुं, ताये, तवे

(निमित्तार्थक अव्यय)

§ १८ **तुतायेतवे भावे भविस्सति क्रियाय तदत्थाय ५ ६१**—'इस काम के निमित्त'—इस अर्थ मे, धातु से परे 'तु', 'ताये', और 'तवे' प्रत्यय होते है। जैसे—

कातु गच्छति, कत्ताये गच्छति, कातवे[1] **गच्छति**=करने के लिए जाता है।

---

३ **किच्चघच्चभच्चभब्बलेय्या ५ ३१**—ये शब्द निपात है—कर—**किच्च**। हन—**घच्चो**। भर—**भच्चो**=भृत्य। भू—**भब्बो**=भव्य। लिह—**लेय्य**।

४ **गुहादीहि यक् ५ ३२**—भाव तथा कर्म मे, 'गुह' आदि धातुओ से परे, 'य' का आगम होता है। जैसे—गुह—**गुय्ह**। दुह—**दुय्ह**। सिस—**सिस्सो**।

५ **पदादीन क्वचि ५ ९२**—'पद' आदि धातुओं से परे, कही कही 'य' का आगम होता है। जैसे—नि+पद+तब्ब=**निपज्जितब्ब**। **निपज्जितु**। **निपज्जन**। प+मद+तब्ब=**पमज्जितब्ब**। **पमज्जितु**। **पमज्जन**।

६ **पररूपमयकारे ब्यञ्जने ५ ९५**—यदि 'य' को छोड, कोई दूसरा व्यञ्जन परे हो, तो धातु के अन्त्य व्यञ्जन का पर-रूप हो जाता है। जैसे—भिद+तब्ब=**भेत्तब्ब**।

७ **तु तून तब्बेसु वा ५ ११९**—'तु', 'तून', तथा 'तब्ब' प्रत्ययो के आने से, 'कर' धातु का विकल्प से 'कार' हो जाता है। जैसे—कर+तु=**कातु, कत्तु**। **कातून, कत्तून**। **कातब्ब, कत्तब्ब**।

८ **जरसदानमीम् वा ५ १२३**—'जर' तथा 'सद' धातुओ के अन्तिम स्वर से परे, विकल्प से 'ई' का आगम होता है। जर—**जीरण**। **जीरति**। **जीरापेति**। **जीरितब्ब**। निसद—**निसीदन**। **निसीदितु**। **निसीदति**। **निसीदितब्ब**।

९ **अत्यादिन्तेस्वत्थिस्स भू ५ १२८**—'ति' आदि को छोड, दूसरे प्रत्ययो के आने से, 'होने' के अर्थ मे 'अस' धातु का 'भ' आदेश होता है। जैसे—अस+तब्ब=**भवितब्ब**।

§ १६ निम्न स्थानो मे 'तु' प्रत्यय प्रयुक्त होता है—

इच्छति भोत्तु, कामेति भोत्तु=भोजन करने की इच्छा करता है
सक्कोति भोत्तु=भोजन कर सकता है
जानाति भोत्तु=भोजन करना जानता है
गिलायति भोत्तु=भोजन के लिए दु खित होता है
घटते भोत्तु=भोजन करने की कोशिश करता है
आरभते भोत्तु=भोजन करना आरम्भ करता है
लभते भोत्तु=उसे खाने को मिलता है
पक्कमति भोत्तु=भोजन करना आरम्भ करता है
उस्सहति भोत्तु=भोजन करने का उत्साह करता है
अरहति भोत्तु=भोजन करने के लिए योग्य है
अत्थि भोत्तु, विज्जति भोत्तु=भोजन का सामान है
कप्पति भोत्तु=यह चीज भोजन के लिए विहित है
पारयति भोत्तु=भोजन कर सकता है
पहु भोत्तु=भोजन करने मे समर्थ है
परियत्तो भोत्तु=भोजन करने मे समथ है
अल भोत्तु=भोजन करने मे समथ है
कालो भोत्तु=भोजन करने का समय है
भोत्तुमनो=भोजन करने के मन वाला
सोतु सोतो=सुनने के लिए कान
दट्ठु चक्खु=देखने के लिए आँख
युज्झितु धनु=युद्ध करने के लिए धनुष
वत्तु जळो=बोलने मे जड
कत्तु अलसो=करने मे आलसी

---

१० **क र स्सा त वे ५ ११८**—'तवे' प्रत्यय आने से, 'कर' धातु का 'कार' आदेश हो जाता है। जैसे—

कर+तवे=**कातवे**।

§ २० **म वा रुधादीन ५ ९३**—'रुध' आदि धातुओ में, अन्तिम स्वर से परे, कही कही विकल्प से 'अ' का आगम होता है। जैसे—

रुन्धितु, रुज्झितु।

तून, क्त्वान, क्त्वा

(पूवकालिक अव्यय)

§ २१ **पुब्बेककत्तुकान ५ ६३**—जिन दो क्रियाओ का एक ही कर्ता होता है, उनमे पहली क्रिया के धातु से परे, विकल्प से 'तून', 'क्त्वान' और 'क्त्वा' प्रत्यय होते है। जैसे—

सो सुणोति याति च—**सो सोतून याति, सो सुत्वान याति, सो सुत्वा याति**= वह सुन कर जा रहा है।

§ २२ **पटिसेधे'लखलून तुनक्त्वानक्त्वा वा ५ ६२**—निषेध करने के अथ मे यदि 'अल' तथा 'खलु' शब्द प्रयुक्त हो, तो उनके योग मे विकल्प से ये प्रत्यय आते है। जैसे—

अल सोतून, खलु सोतून, अल सुत्वान, खलु सुत्वान, अल सुत्वा, खलु सुत्वा, अल सुतेन, खलु सुतेन=सुनना बेकार है।

प्य

§ २३ **प्यो वा त्वास्स समासे ५ १६४**—धातु के साथ समास होने पर, उससे परे, 'त्वा' प्रत्यय का विकल्प से 'प्य' आदेश हो जाता है। 'प्य' का 'य' रह जाता है। जैसे—

प्य	त्वा
अभिभूय	**अभिभवित्वा**=तिरस्कार करके

§ २४ **तुयाना ५ १६५**—धातु के साथ समास होने पर, उससे परे, 'त्वा' प्रत्यय का विकल्प से 'तु' तथा 'यान' आदेश होता है। जैसे—

अभिहट्ठु, अभिहरित्वा=ला कर

अनुमोदियान, अनुमोदित्वा=अनुमोदन करके

§ २५ **हना रच्चो ५ १६६**—समास होने पर, 'हन' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से 'रच्च' आदेश होता है। 'रच्च' का 'अच्च' रह जाता है। जैसे—

हन=मारना—**आहच्च, आहनित्वा**=आघात करके

§ २६ **सासाधिकरा चचरिच्चा ५ १६७**—'स', 'अस', तथा 'अधि' पूवक 'कर' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से क्रमश 'च', 'च', तथा 'रिच्च' आदेश होता है। जैसे—

सक्कच्च, सक्करित्वा=सत्कार करके

असकच्च, असक्करित्वा=असत्कार करके

अधिकिच्च, अधिकरित्वा=अधिकार करके

§ २७ **इतो च्चो ५ १६८**—'इ' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से 'च्च' आदेश होता है। जैसे—

इ=जाना—**अधिच्च, अधियित्वा**=पढ कर

समेच्च, समेत्वा=मिल कर

§ २८ **दिसा वानवास् च ५ १६९**—'दिस' (=देखना) धातु से परे, 'त्वा' प्रत्यय आने से, उसका रूप विकल्प से 'दिस्वान' होता है। जैसे—

दिस्वान, दिस्वा, पस्सित्वा=देख कर

१७. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) कुसल कातब्ब, अकुसल जहितब्ब। रमणीयानि अरञ्ञानि, यत्थ वीतरागा रमिस्सन्ति। कल्याणमित्तो सेवितब्बो, पापका मित्ता न भजितब्बा। पुप्फानि विय धम्मपदानि चेय्यानि। न हि कदाचि फरुस वाक्य। अच्छानि जलानि पेय्यानि। सोतब्ब सवनीय, कातब्ब करणीय। वज्ज न कातब्ब। गुय्ह गोपनीय।

(ख) कातु वट्टति। खादितु कालो। पक्कमितु न देति। पठितु आरभि। सुमेध-पण्डितो इम अत्थ चिन्तेत्वा, भोग-क्खन्ध विस्सज्जेत्वा, महादान दत्वा, कामे पहाय, नगरतो निक्खमित्वा, हिमवन्त अगमासि। तत्थ धम्मिक नाम पब्बत निस्साय अस्सम कत्वा, पण्ण-साल च चङ्कम च मापेत्वा (बनाकर) अभिञ्ञाबल आहरितु साटक पजहित्वा, वाकचीर (वल्कल-चीवर) निवासेत्वा इसि-पब्बज्ज पब्बजि।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

पण्डितो के द्वारा धर्म का आचरण करना चाहिए। अच्छे अच्छे ग्रन्थ सुनने चाहिए। गाने के योग्य गाथाओ को याद कर लो। सूरज को देखने के लिए, पहाड पर चढ कर पूरब की ओर देखो। खा कर, पी कर, हाथ धोवो। हाथ धोने के लिए कुएँ से पानी लाता है। विहार जाने के लिए, घर जा कर उदान ग्रन्थ ले आवो। स्वग मे उत्पन्न होने के लिए, पाप-कम करना छोड कर पुण्य कम करता है।

तीसरा काण्ड

छठा पाठ

विशेषण-प्रकरण

§ १ विशेषण चार प्रकार के होते है—(१) गुण-वाचक, (२) सख्या वाचक, (३) कृदन्त, (४) तद्धितान्त। जैसे—

सुन्दरो बालको। एको बालको, पठमो बालको। पठमानो बालको, दिट्ठो बालको, दस्सनीयो बालको। अन्तिमो बालको, कतमो बालको, सेट्ठो बालको।

§ २ विशेषण मे, वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते है, जो लिङ्ग, विभक्ति और वचन इसके विशेष्य मे है। जैसे—

सुन्दरो बालको। सुन्दरी बालिका। सुन्दर फल। सुन्दरा बालका, सुन्दरियो बालिकायो, सुन्दरानि फलानि। सुन्दरेन बालकेन, सुन्दरिया बालिकाय, सुन्दरेन फलेन। इत्यादि।

१ गुण-वाचक

गुण-वाचक विशेषण शब्दो के कुछ उदाहरण ऊपर (पृ० ६) दे दिए गए है। 'अभिधानप्पदीपिका' से कुछ और उदाहरण नीचे दिए जाते है—

सौंदर्य=सोभन, रुचिर, साधु, मनुञ्ज, चारु, सुन्दर, वग्गु, मनोरम, कन्त, हारि, मञ्जु, पेसल, भद्द, वाम, कल्याण, मनाप, सुभ। **उत्तम**=उत्तम, पवर, जेट्ठ, पमुख, अनुत्तर, वर, मुख्य, पधान, पामोक्ख, वर, पणीत, सेय्य, विसिट्ठ, अरिय, नाग, पुगव। **प्रिय**=इट्ठ, सुभग, हज्ज, दयित, वल्लभ, पिय। **शून्य**=तुच्छ, रित्तक, सुञ्ञ, असार, फेग्गु। **पवित्र**=पूत, पवित्त। **निकृष्ट**=निहीन, हीन, लामक, निकिट्ठ, इत्तर, कुच्छित, अधम, गारय्ह। **बृहत्**=विपुल, विसाल, पुथुल,

पुथु, गरू। **मोटा**=पीन, थूल, थुल्ल, वठर। **सारा**=सब्ब, समत्त, अखिल, निखिल, सकल, कसिण, समग्ग। **प्रचुर**=भूरी, पहूत, पचुर, भीय्य, सबहुल, बहु, येभुय्य, बहुल। **अल्प**=परित्त, खुद्द, थोक, अप्प। **सरल**=उजु। **तीक्ष्ण**= तिण्ह, तिखिण, तिब्ब। **उग्र**=चण्ड, उग्ग, खर। **गतिशील**=चर, जगम, तस। **कर्कश**=कुरूर, कठिन, दळ्ह, कक्खल। **उपयुक्त**=पतिरूप। **निष्फल**= मोघ, निरत्थक। **व्यक्त**=फुट। **असहाय**=एकाकी, एकच्च, एक, एकक। **सुदक्ष**=कतहत्थ, कुसल, पवीण, सिक्खिव, पटु, दक्ख, पेसल। **विख्यात**=ख्यात, पतीत, पञ्जात, अभिञ्ञात, पथित, सुत, विस्सुत, पसिद्ध, पाकट। **धनाढ्य**= इब्भ, अड्ढ। **लोभी**=गिद्ध, लुद्ध। **क्रोधी**=कोधन, रोसन। **चमकदार**= भस्सर, भास्सर। **कृपण**=थद्ध, मच्छरी, कपण। **दरिद्र**=अकिचन, दळिद्द, दुग्गत। **तीखा**=निसित। **विस्तृत**=विसट, वित्थत। **पूजित**=अपचायित, महित, पूजित, मानित, अपचित।

§ ३ **पुल्लिङ्ग में**, अकारान्त विशेषण के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान, इकारात के 'मुनि' शब्द के समान, तथा उकारात के 'भिक्खु' शब्द के समान होगे।

नपुसक लिङ्ग में, अकारान्त विशेषण के रूप 'फल' शब्द के समान, इकारान्त के 'अट्ठि' शब्द के समान, तथा उकारात के 'आयु' शब्द के समान होगें। जसे—

पुल्लिङ्ग मे—**अतीतो भूपो, अतीता भूपा। सुचि कूपो, सुचयो कूपा। मुदु बालको, मुदवो बालका।**

नपुसक लिङ्ग मे—**अतीत नगर, अतीतानि नगरानि। सुचि जल, सुचीनि जलानि। मुदु फल, मुदूनि फलानि।**

स्त्रीलिङ्ग—विशेषण शब्दो को पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए उनसे परे 'आ', 'ई', आदि कुछ प्रत्यय लगाते है। [देखिए—पाँचवाँ काण्ड, चौथा पाठ] जैसे—

आ—**अखिला, अधमा, अलसा, कपणा, चञ्चला, चपला, दुब्बला, पिया, बिचित्ता, सफला।**

ई—**कुमारी, तरुणी, पञ्चमी, छट्ठी, सत्तमी, तापसी।**

§ ४ इकारान्त तथा उकारान्त विशेषण शब्द प्राय स्त्रीलिङ्ग मे भी ज्यो के त्यो रहते है, किंतु, उनके रूप क्रमश 'रत्ति' तथा 'धेनु' शब्द के समान होते है। आकारान्त, तथा ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग विशेषण शब्दो के रूप क्रमश 'लता' तथा 'इत्थी' शब्द के समान होगें। जैसे—

दुब्बला इत्थी, दुब्बलायो इत्थियो। कुमारी बालिका, कुमारियो बालिकायो। सुचि वापी, सुचियो वापी। मुदु बालिका, मुदुयो बालिकायो।

२ संख्या-वाचक

§ ५ सरयावाचक शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त होते है, अत, उनमें प्राय वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते है जो उनके विशेष्य मे है। जैसे—

एको बालको। एका बालिका। एक फल। तयो बालका। तिस्सो बालिकायो। तीणि फलानि। चतुरो बालका। चतस्सो बालिकायो। चत्तारि फलानि।

§ ६ 'द्वि' शब्द के रूप तीनो लिङ्गो म एक जैसे होते है। 'पञ्च' शब्द से लेकर 'अट्ठारस' तक सभी शब्द के रूप भी तीनो लिङ्गो मे एक जैसे होते है। जैसे—**द्वि पञ्च बालका। द्वि, पञ्च बालिका।**

§ ७ 'एकूनवीसति' (=उन्नीस) से लेकर 'अट्ठनवुति' (=अट्ठानवे) तक सभी शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग एकवचन रहते है। 'अट्ठनवुत्ति' (अट्ठानवे) तक जितने इकारान्त शब्द है, उनके रूप 'रत्ति' शब्द के समान, तथा जितने आकारान्त शब्द है, उनके रूप 'कञ्ञा' शब्द के समान होगे। जैसे—

विंसति मनुस्सा, विंसति फलानि, विसति इत्थी। विंसतिं मनुस्से, विंसतिं फलानि। विंसतिं इत्थी। पञ्ञासा (=पचास) मनुस्सा, पञ्ञासा फलानि, पञ्ञासा इत्थी।

§ ८ 'सत' से लेकर 'सतसहस्स' तक, सभी शब्द सदा नपुसक लिङ्ग एक वचन रहते है। जैसे—**सत मनुस्सा, सतेन मनुस्सेहि, सत इत्थी, सत फलानि।**

[विशेष देखिए—तीसरा काण्ड सातवाँ पाठ]

§ ९ पूरणवाची शब्द भी विशेषण है। जैसे—**पठमो बालको, पठमा बालिका, पठम फल।** [देखिए—पृ० १७५]

३ कृदन्त

§ १० कुछ कृदन्त शब्द विशेषण के समान व्यवहृत होते है। जैसे—

न्त, मान

'न्त' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग तथा नपुसक लिङ्ग मे 'गच्छन्त' शब्द के समान होगे। स्त्रीलिङ्ग मे यह 'गच्छन्ती' या 'गच्छती' हो जायगा, और इसके रूप 'इत्थी' शब्द के समान होगे। जैसे—

पठन्तो बालको। पतन्त फल। पठन्ती—पठती बालिका।

'मान' प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुल्लिङ्ग मे 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुसक लिङ्ग मे 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग मे 'कञ्ञा' शब्द के समान होगे। जैसे—

पठमानो बालको, पतमान फल, पठमाना बालिका। [देखिये—पृ० ९२]

क्त, क्तवन्तु, तावी

'क्त' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग मे 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुसक लिङ्ग मे 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग मे 'लता' शब्द के समान होते है। जैसे—

गतो बालको, गता बालिका, दिट्ठ फल।

'क्तवन्तु' तथा 'तावी' प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के विशेषण होते है। पुल्लिङ्ग मे, 'क्तवन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्तु' शब्द के समान, तथा 'तावी' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'दण्डी' शब्द के समान होते है। जैसे—

राजा रञ्ञ विजितवा, राजानो रञ्ञ विजितवन्तो। राजा रञ्ञ विजितावी, राजानो रञ्ञ विजिताविनो।

नपुसक लिङ्ग मे, 'क्तवन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्तु' शब्द के समान, तथा 'तावी' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'सुखकारी' शब्द के समान होते है। जैसे—

पतितव फल; पतितवन्तानि फलानि। पतिताविफल, पतितावीनि फलानि।

स्त्रीलिङ्ग मे, 'क्तवन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्ती-गुणवती' शब्द के समान, तथा 'तावी' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'पतिताविनी'-इत्थी शब्द के समान होते है। जैसे—

पतितवन्ती—पतितवती धारा, पतितवन्तियो—पतितवतियो धारायो। पतिताविनी धारा, पतिताविनियो धारायो।

[देखिए—पृ० १४२]

तब्ब, अनीय, य

'तब्ब', 'अनीय', तथा 'य' प्रत्ययान्त शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

पस्सितब्बो रुक्खो, पस्सितब्बा नदी, पस्सितब्ब फल। दस्सनीयो रुक्खो। देय्यो ब्राह्मणो, देय्य दान। [देखिए—पृ० १५०]

४. तद्धितान्त

११ कुछ तद्धित-प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते है। जैसे—

रति, रीवतक, रित्तक

'किं' शब्द से परे ये प्रत्यय लगते है। जैसे—**कति, कीवतक, कित्तक।**

'कति' शब्द के रूप तीनो लिङ्गो मे एक जैसे होते है, तथा, वह नित्य अनेक वचनान्त रहता है। जैसे—**कति मनुस्सा**=कितने मनुष्य? **कति फलानि? कति इत्थी?** [देखिए—पृ० १७४,२४७]

'कीवतक' तथा 'कित्तक' शब्दो के रूप पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुसक लिङ्ग मे 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग मे 'लता' शब्द के समान होते है। जैसे—

कीवतका—कित्तका बालका? कीवतकानि—कित्तकानि फलानि? कीवतकायो—कित्तकायो इत्थी?

कतर—कतम

जैसे—**कतरो—कतमो देवदत्तो भवत?**

णेय्य

जैसे—**"दक्खिणेय्यो भगवतो सावकसघो"**=भगवान् का श्रावक-सघ दक्षिणा देने योग्य है।

णिक

जैसे—**मानसिको—सारीरिको रोगो**=मन-शरीर का रोग। **वातिको आबाधो**=वायु का रोग। **सोवग्गिको धम्मो**=जो धम्म स्वर्ग ले जाय। **पेत्तिक धन**=बपौती धन। **अरञ्ञिको भिक्खु**=जंगल में रहने वाला भिक्षु।

तन

जैसे—**अज्जतनी वुत्ति**=आज की खबर। **स्वातनी—हिय्यतनी वुत्ति**।

इम

जैसे—**मज्झिमो**। **अन्तिमो**।

१८. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अत्तना जाति-धम्मो समानो (सन्तो), मरण-धम्मो समानो तेसु धम्मेसु आदीनव (दोष) विदित्वा योग-क्खेम निब्बाण परियेसितब्ब। योगो करणीयो। पधान पदहितब्ब। आयस्मा खो राहुलो भगवन्त आगच्छन्त दिस्वान आसन पञ्ञापेसि। भगवा पञ्ञत्ते आसने निसज्ज, पादे पक्खालेसि। पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा कायेन कम्म कत्तब्ब वाचाय च मनसा च। मेत्त भावन भावयमानस्स (भावयतो) व्यापादो पहीयति। भगवा जान जानाति, पस्स पस्सति। दक्खिणेय्यो भगवतो सावकसघो। आरञ्ञिको भिक्खु मेत्त भावेति।

उदित सुरिय सपस्समानेन आलोक पि दट्ठब्ब होति। आलोकस्मि झायमानस्स थीन-मिद्ध (आलस्य) पहीन होति। कतमानि झानानि भावेतब्बानि ? कतरस्मि हत्थे पुप्फ गण्हितब्ब। भुत्ताविना भत्त-समोदन कत्तब्ब। अञ्ञाताविना धम्मो देसितब्बो।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

फल खानेवाले को आलस्य नही होता है। वन मे ध्यान करनेवालो का चित्त शान्त रहता है। किस आँख मे पीडा है ? किन किन धर्मों को जानना चाहिए ? भगवान् के कहे किन किन भावनाओ को कर सकते हो ? स्वर्ग चाहने वालो को भगवान् के उपदिष्ट धर्मों मे श्रद्धा उत्पन्न करना चाहिए। धर्म्म सुनकर प्रयत्न मे जुट जाना चाहिए। प्रयत्न करते हुए विरति को हटाना चाहिए। दु खितो को देखकर दया करनी चाहिए। प्राण को मारना नही चाहिए। सभी सत्वो मे मैत्रि-भावना करनी चाहिए।

तीसरा काण्ड

सातवाँ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—सख्या-वाचक)

सख्या-वाचक शब्द प्राय विशेषण की तरह प्रयुक्त होते है, अत, उनमें वही लिङ्ग, विभक्ति, और वचन होते है जो उनके विशेष्य मे है ।

'एक' शब्द की गिनती सवनाम शब्दो मे की गई है । 'सख्या', 'अतुल्य', 'असहाय', तथा 'अन्य'—इतने अर्थो मे 'एक' शब्द प्रयुक्त होता है । सख्या के अर्थ मे, 'एक' शब्द एक वचन ही मे होता है [देखिए—पृ० २६] ।

§ १२ एक

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एको	एके
दुतिया	एक	एके
ततिया	एकेन	एकेहि, एकेभि
चतुत्थी	एकस्स	एकेस, एकेसान
पञ्चमी	एकम्हा, एकस्मा	एकेहि, एकेभि
छट्ठी	एकस्स	एकेस, एकेसान
सत्तमी	एकम्हि, एकस्मि	एकेसु

नपुसक लिग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एक	एके, एकानि
दुतिया	एक	एके, एकानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एका	एका, एकायो
दुतिया	एक	एका, एकायो
ततिया	एकाय	एकाभि, एकाहि
चतुत्थी	एकस्सा, एकाय	एकास, एकासान
पञ्चमी	एकाय	एकाहि, एकाभि
छट्ठी	एकस्सा, एकाय	एकास, एकासान
सत्तमी	एकस्स, एकाय	एकासु

§ १३ 'द्वि' शब्द सदा अनेक-वचन रहता है, तथा, तीनो लिङ्गो मे इसके रूप समान ही होते है । जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	दुवे, द्वे[1]
दुतिया	दुवे, द्वे
ततिया	द्वीहि, द्वीभि
चतुत्थी	द्विन्न, दुविन्न[2]
पञ्चमी	द्वीहि, द्वीभि
छट्ठी	द्विन्न, दुविन्न[3]
सत्तमी	द्वीसु

§ १४ 'उभ' (=दोनो) शब्द भी, सदा अनेक-वचन रहता है, तथा तीनो लिङ्गो मे इसके रूप समान ही होते है। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	उभो
दुतिया	उभो
ततिया	उभोहि[३], उभोभि, उभेहि, उभेभि
चतुत्थी	उभिन्न[४]
पञ्चमी	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
छट्ठी	उभिन्न[४]
सत्तमी	उभोसु,[३] उभेसु

§ १५ 'ति' (=तीन) शब्द भी सदा अनेक-वचन रहता है। तीनो लिङ्गो में इसके रूप भिन्न भिन्न होते है। जैसे—

	पुल्लिङ्ग	स्त्री लिङ्ग	नपुसकलिङ्ग
पठमा	तयो[५]	तिस्सो[७]	तीणि[९]
दुतिया	तयो[५]	तिस्सो	तीणि
ततिया	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	शेष पुल्लिङ्ग के
चतुत्थी	तिण्ण, तिण्णन्न[६]	तिस्सन्न[८]	समान
पञ्चमी	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	
छट्ठी	तिण्ण, तिण्णन्न	तिस्सन्न	
सत्तमी	तीसु	तीसु	

---

१ **योम्हि द्विन्न दुवे द्वे** २ २२१—'यो' विभक्ति के साथ, 'द्वि' शब्द के रूप 'दुवे', तथा 'द्वे' होते है।

२ **नम्हि नुक् द्वादीन सत्तरसन्न** २ ४९—'द्वि' से लेकर 'अट्ठारस' तक, शब्द से परे, 'न' विभक्ति का 'न्न' आदेश हो जाता है। जैसे—द्वि+न=द्विन्न। तिन्न। चतुरन्न। पञ्चन्न। छन्न। सत्तन्न। अट्ठन्न। नवन्न। दसन्न। एकादसन्न। बारसन्न। तेरसन्न। चतुद्दसन्न। पञ्चदसन्न। सोळसन्न। सत्तदसन्न। अट्ठादसन्न।

§१६ 'चतु' (=चार) शब्द भी सदा अनेकवचन रहता है। तीनो लिङ्गो मे इसके रूप भिन्न भिन्न होते है। जैसे—

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुसकलिङ्ग
पठमा	चत्तारो, चतुरो[1]	चतस्सो	चत्तारि
दुतिया	चत्तारो, चतुरो	चतस्सो	चत्तारि
ततिया	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	शेष पुल्लिङ्ग
चतुत्थी	चतुन्न	चतस्सन्न	के समान
पञ्चमी	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	
छट्ठी	चतुन्न	चतस्सन्न	
सत्तमी	चतुसु	चतुसु	

दुविन्न नम्हि वा २ २२२—'न' विभक्ति के साथ, 'द्वि' शब्द का रूप विकल्प से '**दुविन्न**' होता है।

३ **सुहिसु भस्सो** २ ५८—'सु' तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, 'उभ' शब्द का 'उभो' हो जाता है। जैसे—**उभोहि। उभोसु।**

४ **उभिन्न** २ ५२—'उभ' शब्द से परे, 'न' विभक्ति का 'इन्न' आदेश होता है। जैसे—उभ+न=**उभिन्न।**

५ **पुमे तयोचत्तारो** २ २०९—पुल्लिङ्ग मे, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दो के रूप क्रमश '**तयो**' तथा '**चत्तारो**' होते है।

६ **ण्णण्णन्न तितो ज्झा** २ ५१—पुल्लिङ्ग तथा नपुसकलिङ्ग में, 'ति' शब्द से परे, 'न' विभक्ति का 'ण्ण' तथा 'ण्णन्न' आदेश हो जाता है। जैसे—ति+न=**तिण्ण, तिण्णन्न।**

७ **तिस्सो चतस्सो योम्हि सविभत्तीन** २ २०७—स्त्रीलिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दो के रूप क्रमश '**तिस्सो**' तथा '**चतस्सो**' होते है।

८ **नम्हि तिचतुन्नमित्थिय तिस्सचतस्सा** २ २०६—'न' विभक्ति आने से, 'ति' तथा 'चतु' शब्दो का क्रमश '**तिस्स**' तथा '**चतुस्स**' आदेश हो जाता है। जैसे—**तिस्सन्न। चतस्सन्न।**

§ १७ **पञ्च** (=पॉच), **छ, सत्त** (=सात), **अट्ठ** (=आठ), **नव, दस, एकादस**[11]—**एकारस** (=ग्यारह), **बारस***—**द्वादस**,[12] (=बारह), **तेरस**[13]—†**तेळस** (=तेरह), **चुद्दस**[14]—**चोद्दस**—**चतुद्दस** (=चौदह), **पञ्चदस**[15]—**पन्नरस** (=पन्दरह), **सोळस**[16]—**सोरस** (=सोलह), **अट्ठारस**—**अट्ठादस**[11]

---

९ **तीणि चत्तारि नपुसके** २ २०८—नपुसक मे, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दो के रूप क्रमश **'तीणि'** तथा **'चत्तारि'** होते है ।

१० **चतुरो वा चतुस्स** २ २१०—पुल्लिङ्ग मे, 'यो' विभक्ति के साथ, 'चतु' शब्द का रूप विकल्प से 'चतुरो' होता है ।

११ **एकट्ठानमा** ३ १०२—'दस' शब्द परे हो, तो 'एक' तथा 'अट्ठ' शब्दो के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है । जसे—**एकादस । अट्ठादस ।**

र सख्यातो वा ३ १०३—सरया से परे, 'दस' शब्द के 'द' का विकल्प से 'र' हो जाता है। जैसे—**एकारस, एकादस । बारस, द्वादस । पन्नरस, पञ्चदस । सत्तरस, सत्तदस ।**

* 'पञ्च' का 'पन्न', तथा 'द्वि' का 'बा' आदेश होने पर, उससे परे 'दस' के 'द' का 'र' नित्य होता है। 'चतुद्दस' मे 'द' का 'र' नही होता है।

१२ **आ सख्यायासतादो, नञ्ञत्थे** ३ ९४—अन्याय समास हो, तो 'सत' आदि को छोड, किसी सरया के उत्तर पद मे रहने से, 'द्वि' का 'द्वा' हो जाता है। जैसे—**द्वादस । द्वावीसति । द्वत्तिस ।**

१३ **तिस्से** ३ ९५—अन्याथ समास हो, तो 'सत' आदि को छोड, किसी सख्या के उत्तर पद मे रहने से, 'ति' का 'ते' हो जाता है । जैसे—ति+दस= **तेरस । तेवीस । तेत्तिस ।**

† **छतीहि ळो च** ३ १०४—'छ' तथा 'ति' शब्दो से परे, 'दस' शब्द के 'द' का विकल्प से 'ळ' हो जाता है । जैसे—**सोळस, सोरस । तेळस, तेरस ।**

१४ **चतुस्स चुचो दसे** ३ १००—'दस' शब्द परे हो, तो 'चतु' शब्द का 'चु' तथा 'चो' आदेश होता है । जैसे—**चतुद्दस, चुद्दस, चोद्दस ।**

१५ **वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णुपन्ना** ३ ९९—'वीसति' तथा 'दस' शब्द परे हो, तो 'पञ्च' शब्द का विकल्प से क्रमश 'पण्णु' तथा 'पन्न' आदेश हो

(=अट्ठारह)—इतने शब्द सदा अनेकवचन रहते है। इनके रूप तीनो लिङ्गो मे समान होते है। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	पञ्च[17]
दुतिया	पञ्च
ततिया	पञ्चहि,[18] पञ्चभि
चतुत्थी	पञ्चन्न[18]
पञ्चमी	पञ्चहि, पञ्चभि
छट्ठी	पञ्चन्न
सत्तमी	पञ्चसु[18]

इसी तरह, 'अट्ठारस-अट्ठादस' तक सभी शब्दो के रूप होगे।

§१८ एकूनवीसति (=उन्नीस) से लेकर 'नवुति' (=नब्बे) तक, सभी शब्द नित्य 'स्त्रीलिङ्ग—एक वचन' होते है। जैसे—

	एकवचन
पठमा	एकूनवीसति
दुतिया	एकूनवीसति
ततिया	एकूनवीसतिया

जाता है। जैसे—पण्णुवीसति, पञ्चवीसति। पन्नरस, पञ्चदस।

१६ छस्स सो ३ १०१—'दस' शब्द परे हो, तो उससे पूव 'छ' का 'स' हो जाता है। जैसे—सोळस।

१७ ट पञ्चादीहि चुद्दसहि २ १७१—'पञ्च' से लेकर 'अट्ठारस' तक, शब्द से परे 'यो' विभक्ति का 'अ' आदेश होता है। जैसे—पञ्च+यो=पञ्च। दस+यो=दस।

१८ पञ्चादीन चुद्दसन्नम २ ९२—'सु', 'न', तथा 'हि' विभक्तियो के आने से, 'पञ्च' से ले कर 'अट्ठारस' तक, शब्द का अन्त्य स्वर 'अ' होता है। जैसे—पञ्चसु। पञ्चन्न। पञ्चहि। छसु। छन्न। छहि।

	एकवचन
चतुत्थी	एकूनवीसतिया
पञ्चमी	एकूनवीसतिया
छट्ठी	एकूनवीसतिया
सत्तमी	एकूनवीसतिय

इसी तरह, निम्न शब्दों के भी रूप होंगे—

२० वीसति
२१ एकवीसति
२२ द्वेवीसति
द्वावीसति
बावीसति
२३ तेवीसति
२४ चतुवीसति
२५ पञ्चवीसति
पण्णुवीसति
पण्णवीसति
२६ छब्बीसति
२७ सत्तवीसति
२८ अट्ठवीसति
२९ एकूनतिंसति
३० तिंसति
३१ एकतिंसति
३२ द्वत्तिंसति
बत्तिंसति
३३ तेत्तिंसति
३४ चतुत्तिंसति
३५ पञ्चतिंसति
३६ छत्तिंसति
३७ सत्ततिंसति
३८ अट्ठतिंसति
३९ एकूनचत्ताळीसति
४० चत्ताळीसति
४१ एकचत्ताळीसति
४२ द्वाचत्ताळीसति[१]
द्विचत्ताळीसति
४३ तेचत्ताळीसति[२]
तिचत्ताळीसति
४४ चतुचत्ताळीसति
चोत्ताळीसति
चुत्ताळीसति
४५ पञ्चचत्ताळीसति
४६ छचत्ताळीसति
४७ सत्तचत्ताळीसति
४८ अट्ठचत्ताळीसति
अट्ठचत्तारीसति
४९ एकूनपञ्ञासा
५० पञ्ञासा
५१ एकपञ्ञासा
५२ द्वेपञ्ञासा
द्विपञ्ञासा

५३	तेपञ्ञासा	६८	अट्ठसट्ठि
	तिपञ्ञासा	६९	एकूनसत्तति
५४	चतुपञ्ञासा	७०	सत्तति
५५	पञ्चपञ्ञासा	७१	एकसत्तति
५६	छपञ्ञासा	७२	द्वासत्तति
५७	सत्तपञ्ञासा		द्विसत्तति
५८	अट्ठपञ्ञासा	७३	तेसत्तति
५९	एकूनसट्ठि		तिसत्तति
६०	सट्ठि	७४	चतुसत्तति
६१	एकसट्ठि	७५	पञ्चसत्तति
६२	द्वासट्ठि,	७६	छसत्तति
	द्वेसट्ठि	७७	सत्तसत्तति
	द्विसट्ठि	७८	अट्ठसत्तति
६३	तेसट्ठि	७९	एकूनासीति
	तिसट्ठि	८०	असीति
६४	चतुसट्ठि	८१	एकासीति
६५	पञ्चसट्ठि	८२	द्वेअसीति
६६	छसट्ठि		द्वासीति
६७	सत्तसट्ठि	८३	तेअसीति

---

१९ द्वि स्सा च ३ ९७—'चत्तालीस' आदि शब्द परपद मे हो, तो 'द्वि' का विकल्प से 'द्वे' तथा 'द्वा' हो जाता है। जैसे—द्वेचत्तालीस, द्वाचत्तालीस, द्विचत्तालीस। द्वेपञ्ञास, द्वापञ्ञास, द्विपञ्ञास। द्वेसट्ठि, द्वासट्ठि, द्विसट्ठि। द्वेसत्तति, द्वासत्तति, द्विसत्तति। द्वे असीति, द्वासीति, द्वि असीति। द्वेनवुत्ति, द्वानवुति, द्विनवुति।

२० चत्तालीसादो वा ३ ९६—'चत्तालीस' आदि शब्द परपद मे हो, तो 'ति' का विकल्प से 'ते' हो जाता है जैसे—तेचत्तालीस, तिचत्तालीस। तेपञ्ञास, तिपञ्ञास। तेसट्ठि, तिसट्ठि। तेसत्तति, तिसत्तति। तेअसीति, तियासीति, तिअसीति। तेनवुति, तिनवुति।

८४ चतुरासीति	द्वेनवुति
८५ पञ्चासीति	द्विनवुति
८६ छासीति	९३ तेनवुति
८७ सत्तासीति	तिनवुति
८८ अट्ठासीति	९४ चतुनवुति
८९ एकूननवुति	९५ पञ्चनवुति
९० नवुति	९६ छन्नवुति
९१ एकनवुति	९७ सत्तनवुति
९२ द्वानवुति	९८ अट्ठनवुति

§१९ 'अट्ठनवुति' तक, जितने इकारान्त शब्द है, सभी के रूप 'रत्ति' शब्द के समान, तथा जितने आकारान्त शब्द है, सभी के रूप 'कञ्जा' शब्द के समान होगे। *स्मरण रहे, कि ये सभी शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग एकवचन होते है।*

§२० 'सत' (=सौ) शब्द नपुसक लिङ्ग एकवचन होता है। जैसे—

९९ एकूनसत (=निन्नानबे)

	एकवचन
पठमा	एकूनसत
दुतिया	एकूनसत
ततिया	एकूनसतेन
चतुत्थी	एकूनसतस्स, एकूनसताय
पञ्चमी	एकूनसता, एकूनसतस्मा, एकूनसतम्हा
छट्ठी	एकूनसतस्स
सत्तमी	एकूनसते, एकूनसतम्हि, एकूनसतस्मि

§२१ 'सत' शब्द से ले कर 'सतसहस्स' (=शतसहस्र) शब्द तक, सभी शब्द नपुसक लिङ्ग एकवचन होते है। जैसे—**सत मनुस्सा। सहस्स कञ्ञायो। सतसहस्स फलानि।**

§२२ 'कोटि', 'पकोटि', 'कोटिप्पकोटि', 'अक्खोहिणी'—इतने शब्द स्त्रीलिङ्ग एकवचन होते हैं। जैसे—**कोटि मनुस्सा, कञ्ञायो, फलानि वा।**

§२३ उतने उतने का वर्ग जाना जाय, तो इन शब्दो मे अनेक वचन भी होता है। जैसे—**द्वे वीसतियो, तीणि सतानि, चत्तारि सहस्सानि, तिस्सो कोटियो।**

'सौ' से ऊपर की सख्याये—'ड' प्रत्यय

§२४ **स ख्या य स च्चु ती सा स द स न्ता धि क स्मि स त स ह स्से डो ४ ५०**—'इस सौ या हजार मे इतना अधिक है', इस अर्थ मे सत्यन्त, उत्यन्त, ईसान्त, आसान्त, तथा दसान्त सख्याओ से परे, 'ड' प्रत्यय होता है। जैसे—**वीसति अधिका अस्मि सते 'ति'—वीस सत,**[21] **सहस्स, सतसहस्स** वा। **तिस सत, एकतिंस सत।**

उत्यन्त—नवुति + ड + सत = **नवुत सत। नवुत सहस्स। नवुत सतसहस्स।**
ईसान्त—**चत्तारीस सत, सहस्स, सतसहस्स वा।**
आसान्त—**पञ्ञास सत, सहस्स, सतसहस्स वा।**
दसान्त—**एकादस सत, सहस्स, सतसहस्स वा।**

§२५ दूसरी सख्याओ के साथ, 'अधिक' शब्द का समास होता है। जैसे—**एकाधिक सत, सहस्स, सतसहस्स। द्वयाधिक सत। नवाधिक सत।**

§२६ पालि मे, सौ के ऊपर की सख्याये निम्न प्रकार है—

सत	एक पर २	शून्य
सहस्स	,, ३	,,
नहुत	,, ४	,,
सतसहस्स	,, ५	,,
कोटि	,, ७	,,
पकोटि	,, १४	,,
कोटिप्पकोटि	,, २१	,,
(पुन) नहुत	,, २८	,,

---

२१ **डे स ति स्स ति स्स ४ १३६**—'ड' प्रत्यय आने से, सत्यन्त सख्या-वाचक शब्दो के 'ति' का लोप हो जाता है। जैसे—वीसति + ड = **वीस सत। तिस सत।**

निन्नहुत	एक पर ३५	शून्य
अक्खोहिणी	,, ४२	,,
बिन्दु	,, ४६	,,
अब्बुद	,, ५६	,,
निरब्बुद	,, ६३	,,
अहह	,, ७०	,,
अबब	,, ७७	,,
अटट	,, ८४	,,
सोगन्धिक	,, ९१	,,
उप्पल	,, ९८	,,
कुमुद	,, १०५	,,
पुण्डरीक	,, ११२	,,
पदुम	,, ११९	,,
कथान	,, १२६	,,
महाकथान	,, १३३	,,
असखेय्य	,, १४०	,,

कति

§२७ टि क ति म्हा २ १७०—'कति' (=कितना) शब्द नित्य अनेक वचन होता है। तीनो लिङ्गो मे इसके रूप समान होते है। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	कति
दुतिया	कति
ततिया	कतीहि, कतीभि
चतुत्थी	कतीनं, कतिन्न[२२]
पञ्चमी	कतीहि, कतीभि
छट्ठी	कतीनं, कतिन्न
सत्तमी	कतीसु

§ २८ पूरण वाची शब्द

	पुल्लिङ्ग	स्त्री लिङ्ग	नपुसक लिङ्ग
१	पठमो=पहला	पठमा=पहली	पठम=पहला
२	दुतियो	दुतिया	दुतिय
३	ततियो	ततिया	ततिय
४	चतुत्थो	चतुत्थी, चतुत्था	चतुत्थ
	तुरीयो	तुरीया	तुरीय
५	पञ्चमो[२३]	पञ्चमी	पञ्चम
६	छट्ठो[२४]	छट्ठा, छट्ठी	छट्ठ
	छट्ठमो	छट्ठमी	छट्ठम
७	सत्तमो	सत्तमा, सत्तमी	सत्तम
८	अट्ठमो	अट्ठमा, अट्ठमी	अट्ठम
९	नवमो	नवमा, नवमी	नवम
१०	दसमो	दसमा, दसमी	दसम
११	एकादसो, एकादसमो[२५]	एकादसी	एकादसम
१२	बारसो, बारसमो, द्वादसमो	द्वादसी	बारसम, द्वादसम

---

२२ बहुकतिन्न २५०—'बहु' तथा 'कति' शब्दो से परे, 'न' विभत्ति का 'न्न' आदेश हो जाता है। जैसे—**बहुन्न। कतिन्न।**

२३ मपचादिकतीहि ४५२—'पच' आदि, तथा 'कति' शब्द से परे पूरण के अथ मे 'म' प्रत्यय होता है। जैसे—**पञ्चमो। सत्तमो। अट्ठमो। कतिमो।**

२४ छा ट्ठट्ठमा ४५४—पूरण के अर्थ मे, 'छ' शब्द से परे 'ट्ठ' तथा 'ट्ठम' प्रत्यय होते है। जैसे—**छट्ठो, छट्ठमो। दुतिय, ततिय, चतुत्थ** निपात है।

२५ तस्स पूरणेकादसादितो वा ४५१—पूरण के अथ मे, 'एकादस' आदि सख्या से परे, विकल्प से 'ड' प्रत्यय होता है। जैसे—**एकादसो, एकादसमो। द्वादसो, द्वादसमो। वीसो, वीसतिमो। तिंसो, तिंसतिमो। चत्तालीसो। पञ्ञासो।**

	पुल्लिङ्ग	स्त्री लिङ्ग	नपुसक लिङ्ग
१३	**तेरसो, तेरसमो**	**तेरसी**	**तेरसम**
१४	**चतुद्दसमो**	**चतुद्दसी, चातुद्दसी**	**चतुद्दसम**
१५	**पञ्चदसमो,**	**पञ्चदसी**	**पञ्चदसम**
	पण्णरसमो	**पण्णरसी**	**पण्णरसम**
१६	**सोळसमो**	**सोळसी**	**सोळसम**
१७	**सत्तरसमो**	**सत्तरसी**	**सत्तरसम**
	सत्तदसमो	**सत्तदसी**	**सत्तदसम**
१८	**अट्ठारसमो**	**अट्ठारसी**	**अट्ठारसम**
	अट्ठादसमो	**अट्ठादसी**	**अट्ठादसम**
१९	**एकूनवीसतिमो**	**एकूनवीसतिमा**	**एकूनवीसतिम**
		एकूनवीसतिमी	

इसके आगे[२६] के सख्यावाचक शब्दो के साथ 'म' लगा कर, उसका पूरण बना लेते है । जैसे—**एकवीसतिमो, तिसतिमो** इत्यादि ।

§ २९ **चतुत्थततियानमड्ढुड्ढतिया ३ १०५**—'अड्ढ' (=अध) शब्द से परे, 'चतुत्थ' तथा 'ततिय' का क्रमश 'उड्ढ' तथा 'तिय' आदेश हो जाता है । जैसे—

अड्ढेन चतुत्थो—**अड्ढुड्ढो** (=साढे तीन) ।

अड्ढेन ततियो—**अड्ढतियो** (=अढाई) ।

§ ३० **दुतियस्स सह दियड्ढ दिवड्ढा ४ १०६**—'अड्ढ' शब्द के साथ, 'दुतिय' का समास होने से, 'दियड्ढ' तथा 'दिवड्ढ' रूप होते है। जैसे—अड्ढेन दुतियो—**दियड्ढो, दिवड्ढो** (=डेढ) ।

---

२६ **सतादीनमि च ४ ५३**—पूरण के अर्थ मे, 'सत' आदि सख्यावाचक शब्दो से परे, 'म' प्रत्यय होता है, तथा, शब्द के अन्त्य स्वर का इकार हो जाता है। जैसे—**सतिमो । सहस्सिमो ।**

१६. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

एक समय, द्वे भिक्खू तिण्ण सञ्ञोजनान खय पापुणिसु। चत्तारि अरियसच्चानि पञ्ञातब्बानि। पञ्च पञ्चका वग्गा पञ्चवीसति (=पण्णवीसति) वण्णा होन्ति। चतूसु (चतुसु) दिसासु। अट्ठसु परिसासु। सत्तन्न सति-सम्बोज्झङ्गान भावन भावेतु सक्का। नव दारका। दस दारिकायो। एकादस फलानि। चतस्सो अनुपस्सनायो, चत्तारि सम्मप्पधानानि, चत्तारो इद्धिपादा, पञ्च इन्द्रियाणि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गा, अट्ठ मग्गोति—सत्ततिसति बोधि-पक्खिका धम्मा भावनीया, बहुली करणीया। पठमे कप्पे मनुस्सा दीघायुका भविसु। दुतियाय विभत्तिय 'अम्ह'-सद्दस्स 'मे' इति रूप होति। एको देवो, द्वीहि देवपुत्तेहि सद्धि, तीणि अहानि, चतस्सन्न दिसान रट्ठेसु विचरन्तो तत्थ पापुणि। वीसति च तिसति च सकलिता पञ्ञासति होति। तेपञ्ञासा च द्वत्तिसा च समग्गा पञ्चासीति होति।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

एक नगर मे एक राजा रहता था। उसकी तीन रानियाँ थी। पहली रानी को एक, दूसरी को दो, तथा तीसरी को तीन पुत्र थे। चारो दिशाओ मे उसकी कीर्ति फैल गई थी। सातो वृक्षो के फल पके है। दस लडके और ग्यारह लडकियाँ यहाँ रहती है। सौ लडके। हज़ार नदियाँ। करोड फल।

चौथा काण्ड

पहला पाठ

वाच्य-प्रकरण

§ १ पालि भाषा मे वाच्य तीन ह—

(१) कतृवाच्य, (२) भाववाच्य, (३) कमवाच्य।

१. कर्तृवाच्य

कतृवाच्य मे, कर्ता मे 'पठमा' विभक्ति, और कम मे (यदि कोई हो तो) 'दुतिया' विभक्ति होती है। और, क्रिया के पुरुष तथा वचन, कर्ता के पुरुष तथा वचन के समान होते हैं। (देखिए—पृ० २६, ३०) जैसे—

अकर्मक—**देवदत्तो हसति**=देवदत्त हँसता है। यहाँ 'देवदत्त' कर्ता है, इसलिए, उसमे पठमा विभक्ति ह। क्रिया, 'हसति' पठम पुरिस एक वचन है, क्योकि, कर्ता 'देवदतो' भी पठम पुरिस एक वचन है। इसी तरह—**बालका हसन्ति। अह हसामि। मय हसाम। त्व हससि। तुम्हे हसथ।**

सकर्मक—**बालको कुक्कुर पस्सति। बालको कुक्कुरे पस्सति।**

२. भाववाच्य

भाववाच्य मे, कर्त्ता मे 'ततिया' विभक्ति होती है। 'कम' होता ही नही है, क्योकि, **भाववाच्य केवल अकमक धातु से ही बनता है।** क्रिया, सदैव 'पठम पुरिस', 'एकवचन' रहती है। विभक्ति लगाने के पहले, धातु से परे, 'क्य' प्रत्यय आता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है। (देखिए—पृ० १८०) जैसे—

बालकेन अत्र भूयते=लडका यहाँ मौजूद है। **बालाकेहि अत्र भूयते**=लडके यहाँ मौजूद है। **मया अत्र भूयते**=मैं यहाँ मौजूद हूँ। **त्वया अत्र भूयते**=तुम

यहाँ मौजूद हो। **मया अत्र भूयिस्सते**=मै यहाँ मौजूद रहूँगा। **त्वया अत्र भूयि**=तुम यहाँ मौजूद थे। **सब्बेहि अत्र भूयेय्य**=सबो को यहाँ मौजूद रहना चाहिए। इत्यादि

३. कर्मवाच्य

कमवाच्य मे, कर्ता मे 'ततिया' विभक्ति, और कम मे 'पठमा' विभक्ति होती है। क्रिया के पुरुष और वचन, कम के पुरुष और वचन के समान होते है, तथा, विभक्ति लगाने के पहले, धातु से परे 'क्य' प्रत्यय आता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है (देखिए—पृ० १८०)। जैसे—

रञ्ञा धन दीयते=राजा के द्वारा धन दिया जाता है। **रञ्ञा धनानि दीयन्ति**=राजा के द्वारा धन दिए जाते है। **पितरा त्व (भत्तुनो) दीयसि**=पिता के द्वारा तुम (पति को) दी जा रही हो। **पितरा तुम्हे (भत्तुनो) दीयव्हे**=पिता के द्वारा तुम लोग (पति को) दी जा रही हो। **पितरा अह (भत्तुनो) दीयामि**=पिता के द्वारा मै (पति को) दी जा रही हूँ। **पितरा मय (पतिनो) दीयाम**=पिता के द्वारा हम लोग (पति को) दी जा रही है। इत्यादि।

द्रष्टव्य—जिस कमवाच्य मे कतपद उक्त न हो, तथा उसका वहा कोई प्राधान्य भी न हो, उसे **"कम-कतृ वाच्य"** कहते है। वहा, कम ही कर्ता के ऐसा जान पडता है। जैसे—**ओदन पच्चति** (=मनुस्सो ओदन पचति)।

सौकय तथा सक्षेप के लिए, अन्य कारक भी कर्ता के तौर पर प्रयुक्त होता है। जैसे—**असि छिन्दति** (=असिना छिन्दति)। **थालि पचति** (=थालिय पचति) **ओदन पचति**।

निष्ठा

क्तवन्तु, क्तावी

(कतृवाच्य)

§ २ कतृवाच्य मे, भूतकाल के अथ मे, धातु से परे 'क्तवन्तु' तथा 'तावी' प्रत्यय होते है। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता का विशेषण होता है। जैसे—

राजा रञ्ञ विजितवा—विजितावी। राजानो रञ्ञ विजितवन्तो—विजिताविनो।

(देखिए—पृ० १४२ १६०)

क्त

(कमवाच्य, भाववाच्य)

कर्म और भाववाच्य मे, भूतकाल के अथ मे, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कमवाच्य मे कम का विशेषण होता है, और भाववाच्य मे सदा नपुसकलिङ्ग एकवचन रहता है। जैसे

कर्म—**रञ्ञा रज्ज विजित, रञ्ञा रज्जानि विजितानि।**

भाव—**मया हसित, अम्हेहि हसित, त्वया हसित, तुम्हेहि हसित, तेन हसित, तेहि हसित।**

क्त

(कतृवाच्य)

कुछ अवस्थाओ मे, कतृवाच्य मे भी, भूतकाल के अथ मे धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता का विशेषण होता है। जैसे—

पसुत्तो बालको। पसुत्ता बालिका। गाम बालको गतो। गाम बालिका गता। रुक्खा फलानि पतितानि। (देखिए—पृ० १४२ १४३ १६०)

क्य

§ ३ **क्यो भा व क म्मे स्व प रो क्खे सु मा न न्त्या दि सु ५ १७**—भाव-वाच्य तथा कमवाच्य मे, 'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड) 'ति' आदि प्रत्ययो के आने पर, धातु से परे 'क्य' प्रत्यय होता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है। जैसे—

ठीयमान। ठीयते। सूयमान। सूयते, सूयन्ते, सूयिस्सति इत्यादि।

§ ४ **क्य स्स ६ ३७**—'क्य' प्रत्यय आने से, धातु से परे विकल्प से 'ई' का आगम होता है। जैसे—

पच+क्य+ति=पच+ई+क्य+ति=**ण्चीयति**।

§ ५ **क्य स्स स्से ६ ४९**—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल मे, विकल्प से 'क्य' का लोप होता है। जैसे—

अन्वभविस्सा, अन्वभूयिस्सा। अनुभविस्सति, अनुभूयिस्सति।

§ ६ **अञ्ञा दि स्सा स्सी क्ये ५ १३७**—'क्य' प्रत्यय आने से, 'ञा' आदि को छोड, दूसरे आकारान्त धातु के आकार का ईकार हो जाता है। जैसे—

ठा+क्य+ते=**ठीयते** । दा+क्य+ते=**दीयते** । पा+क्य+ते=**पीयते**। ['ञ' आदि—तीसरा परिशिष्ट]

§ ७ **त न स्सा वा ५ १३८**—'क्य' प्रत्यय आने से, 'तन' धातु का विकल्प से 'ता' आदेश होता है। जैसे—तन+क्य+ते=**तायते**, (या) **तञ्ञते**।

§ ८ **दी घो स र स्स ५ १३९**—'क्य' प्रत्यय आने से, स्वरान्त धातु दीघ हो जाता है। जैसे—चि+क्य+ते=**चीयते**। सु+क्य+ते=**सूयते**।

२०. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा विहरति। भगवा निसीदति। भगवा समाधिम्हा उट्ठाति। भगवा मनसि-करोति। भगवा उदान उदानेति। ब्राह्मणा झायन्ति। धम्मा पातु-भवन्ति। ब्राह्मणो सहेतु-धम्म पजानाति।

(ख) भगवता विहरीयति। भगवता **निसज्जते**। भगवता समाधिम्हा **उट्ठीयते**। भगवता मनसि-करीयति। भगवता उदान **उदानीयति**। ब्राह्मणेहि झायते। धम्मेहि **पातु-भूयते**। ब्राह्मणेहि सहेतु-धम्मो **पञ्ञायते**। देवेहि सक्को पुच्छीयते।

(ग) फस्स-पच्चया, वेदना सम्भवति। जाति-पच्चया, जरा-मरण सम्भवति। तण्हा वड्ढति। असि छिन्दति। थाली पचति। देवो वस्सति।

(घ) **दीयमान** दान भिक्खूहि **आदीयते**। अदिन्नादाना अम्हेहि विरमितब्ब। बुद्धस्स सरण सावकेहि गच्छीयते। हीयमानेहि अकुशलेहि धम्मेहि, न पुन पच्चा-गच्छीयति। तिट्ठमानेन वा, चरन्तेन वा, **निसिन्नेन** वा, **सायानेन** वा भिक्खुना सति **अधिट्ठातब्बा,** ब्रह्म-विहारेण विहरितब्ब। **भुत्ताविना** भिक्खुना न पुन भत्त भुञ्जितब्ब।

(ङ) ब्रह्मना याचितो **सन्तो,** भगवा धम्म-चक्क पवत्तयि। पञ्हे पुच्छीय-माने वा, धम्मे **देसीयमाने** वा, बुद्ध-धातुस्मि **दस्सीयमाने** वा, साधुक सनिक सनिक मनसि **करिय्यति** सति **उपट्ठपेन्तेन** भिक्खुना। सुरियो दिस्सति (पस्सीयति, दक्खीयति)। धम्मो पि तथागतेन देसितो दिस्सति चक्खु-मन्तेहि विञ्ञूहि।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे पदो के रूप प्रथम-पुरुष एकवचन में लिखिए, और वाक्यो में उनका प्रयोग करके दिखाइए।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) आकाश मे **सूय्य** दिखाई दे रहा है। सूय्य देखते हुए मुझसे प्रकाश भी

देखा गया। **धम्म** समझते हुए **भिक्खु** लोगो से लोक-हित काय भी हुआ करता है। **पालि-व्याकरण** पढा भी जाता है, पढाया भी जाता है। पालि-व्याकरण पढा जाना चाहिए, पढा जा कर अच्छी तरह समझ लिया जाना चाहिए।

(ख) धम्म-दायाद होना चाहिए। धम्म-दायक होना चाहिए। माता-पिता का आज्ञा-पालन करना चाहिए। **बुद्धो का शासन** मानना चाहिए। तीन वेदो का पारङ्गत (पारगू) होना चाहिए। **ब्राह्मण** होना चाहिए। ब्राह्मण होने की इच्छा करने वाले मनुष्यो को बुद्ध भगवान् के उपदिष्ट धर्म्मो को सुनना चाहिए। सुनते हुए अच्छी तरह समझना चाहिए। समझते हुए आचरण करना चाहिए। धम्म ही करना योग्य है। धम्म ही से लोक का कल्याण होता है। कल्याण धम्म सुनते, करते, देखते हुए **चित्त** आस्रवो से मुक्त करना चाहिए।

४ निम्नलिखित नाम-पद और धातुओ से कतृवाच्य तथा कमवाच्य में वाक्य बनाइए—

(१)—बुद्धो-धम्मो-देस। (२)—दारको-पोत्थक-पठ। (३)—कञ्जा-सुरियो-पस्स।

(४)—भिक्खु-बुद्धो-वन्द। (५)—मुनि-धम्मो-चर। (६)—मनुस्सो-फल-खाद।

५ निम्नलिखित कर्त्तृ-वाच्य वाक्यो का कम्म-वाच्य बनाइए—

ब्रह्मदत्तो रज्ज कारेसि। राम-पण्डितो अनिच्चत पकासेति। वासुदेवो कस हनति। सीता-देवी राम-पण्डित अनुगच्छति। लक्खण-कुमारो राम-पण्डित वन्दति। बुद्धो भगवा धम्म देसेति। भगवा उदान उदानेसि।

चौथा काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(छठा भाग—अनद्यतन, परोक्ष, हेतु० भूत)

अनद्यतन भूत[1]

जो काम आज से पहले हुआ हो, उसमे किसी धातु के रूप निम्न प्रकार होते है—

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	पचा, अपचा,[2] अपच[3]	अपचु,[3] अपचू
मज्झिम पुरिस	अपचो[4]	अपचित्थ, अपचुत्थ
उत्तम पुरिस	अपच	अपचुम्हा, अपचिम्हा, अपचिम्ह[3]

---

१ **अनज्जतने आऊ, ओ त्थ, अ म्हा त्थत्थु, से व्ह, इ म्ह से ६ ५**—अनद्यतन अर्थ मे, धातु से परे ये प्रत्यय होते है ।

मा योगे ई आ आदि ६ १३—'मा' शब्द के योग मे, विकल्प से परिसमाप्त्यथक-भूत, तथा अनद्यतन भूत होते है । जैसे—

मास्सु पुनपि एवरूपमकासि। मा भव अगमा वन=आप वन मत जायँ।

२ **आ ई स्सा दि स्व अ् वा ६ १५**—अनद्यतन भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, तथा हेतुहेतुमद्भूत में, धातु से पूर्व विकल्प से 'अ' का आगम होता है। जैसे—**अपचा, पचा ।**

३ **आ ई ऊ म्हा स्सा स्स म्हा न वा ६ ३३**—'आ', 'ई', ऊ, म्हा, स्सा, स्सम्हा—इनका विकल्प से ह्रस्व हो जाता है । जैसे—

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	अपचत्थ	अपचत्थु
मज्झिमपुरिस	अपचसे	अपचव्ह
उत्तमपुरिस	अपचिं	अपचाम्हसे

§ १९ अनद्यतन भूतकाल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—

वच—**अवोच, अवोचु**। कर—**अका**। गम—**अगा**। गम—**अगञ्छा**। डस—**अडञ्छा**। (देखिए—पृ० ८६)

दिस—**अद्दस, अद्दा**। (देखिए—पृ० ११८)

[1]परोक्ष भूत

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पपच[1]	पपचु
मज्झिमपुरिस	पपचे	पपचित्थ
उत्तमपुरिस	पपच	पपचिम्ह

अपचा, अपच। अपची, अपचि। अपचू, अपचु। अपचिम्हा, अपचिम्ह। अपचिस्सा, अपचिस्स। अपचिस्सम्हा, अपचिस्सम्ह।

४ **ओस्स अ इ त्थ त्थो** ६ ४२—'ओ' का विकल्प से 'अ', 'इ', 'त्थ' तथा 'त्थो' आदेश होता है। जैसे—

त्व अपच, अपचि, अपचित्थ, अपचित्थो, अपचो।

५ **परोक्खे अ उ, ए त्थ, अ म्ह, त्थ रे, त्थो व्हो, इ म्हे** ६ ६—जो काम आज से पहले हुआ हो, तथा प्रत्यक्ष न हो, उस अर्थ में धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—**पपच, पपचु** इत्यादि।

परोक्ष=जो अपनी इन्द्रियों से अनुभूत न हो। स्वप्न, उन्माद, तथा विष-

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पपचित्थ	पपचिरे
मज्झिमपुरिस	पपचित्थो	पपचिव्हो
उत्तमपुरिस	पपचि	पपचिम्हे

यान्तर मे लगे हुए होने की स्थिति मे, अपनी इन्द्रियो से अनुभूत क्रिया भी परोक्ष समझी जाती है। इस प्रकार के परोक्ष मे, उत्तम-पुरुष मे भी परोक्ष-भूत का प्रयोग होता है। जैसे—**सुत्तोऽवह विललाप। मत्तोऽवह विललाप। अचेतनो ह पठविय पपत।**

६ **परोक्खायञ्च** ५ ७०—परोक्ष भूत मे भी, प्रथम एक स्वर शब्द रूप का द्वित्व हो जाता है। जैसे—पच+अ=**पपच**। पच+उ=**पपचु**। इत्यादि

पाँचवाँ काण्ड-दूसरा पाठ में, द्वित्व होने के जो नियम आए है, सभी यहाँ लागू होगे।

द्वित्व होने वाले धातु

परोक्ष भूत को छोड, अन्य स्थानो मे भी धातु का द्वित्व होता है। जैसे—हा—**जहाति**=छोडता है। जल—**दद्दल्लति**=खूब प्रज्वलित होता है। कम—**चङ्कमति**=बार बार घूमता है। कित—**तिकिच्छति**=चिकित्सा करता है। धा—**ददति**। तिज—**तितिक्खति**=क्षमा करता है। मन—**वीमसति**=मीमासा करता है। गुप—**जिगुच्छति**। दा—**ददाति**=देता है।

तिजमानेहि खसा खमावीमसासु ५ १—यदि 'तिज' धातु क्षमा के अर्थ मे, और 'मान' धातु मीमासा करने के अथ मे हो, तो उनके साथ 'ख' तथा 'स' प्रत्यय होते है। जैसे—तिज—**तितिक्खति**। मान—**वीमसति**।

मानस्स वी परस्स च म ५ ८०—'मान' धातु के द्वित्व होने से, पहले भाग का 'वी', तथा दूसरे भाग का 'म' होता है। जैसे—**वीमसति**।

किता तिकिच्छासंसयेसु छो ५ २—चिकित्सा तथा शसय करने के अथ मे, 'कित' धातु से परे 'छ' प्रत्यय होता है। जैसे—**तिकिच्छति**=चिकित्सा करता है। **विचिकिच्छति**=सशय करता है।

§ २० परोक्षभूत मे कुछ विशेष धातु के रूप—"ब्रू—**आह** । भू—**बभूव**" ।

कितस्सा ससये ति वा ५ ८१—सशय से भिन्न, दूसरे अर्थ मे 'कित' धातु हो, तो उसके द्वित्व होने पर, पहले 'कि' का विकल्प से 'ति' होता है। जैसे—**तिकिच्छति, चिकिच्छति**=चिकित्सा करता है ।

निन्दाय गुपबधा बस्स भो च ५ ३—निन्दा करने के अर्थ मे, 'गुप' तथा 'बध' धातु से परे, 'छ' प्रत्यय होता है, और, 'ब' का 'भ' हो जाता है । जैसे—

गुप+छ+ति=**जिगुच्छति**
बध+छ+ति=**बीभच्छति** } निन्दा करता है ।

धास्स हो ५ १०३—'धा' धातु के द्वित्व होने पर, दूसरे भाग का 'ह' हो जाता है । जैसे—धा+ति=**दहति** ।

गुपिस्सुस्स ५ ७७—द्वित्व होने पर, 'गुप' धातु के प्रथम 'उ' का 'इ' हो जाता है । जैसे—गुप+छ+ति=**जिगुच्छति** ।

७ अआदिस्वाहो ब्रूस्स ६ १६—परोक्ष-भूत मे, 'ब्रू' धातु का 'आह' आदेश हो जाता है । जैसे—**आह, आहु** ।

उस्सस्वाहा वा ६ १९—'आह' आदेश हो जाने के बाद, 'उ' प्रत्यय का विकल्प से 'असु' आदेश हो जाता है । जैसे—**आहसु, आहु** ।

८ भुस्स वुक् ६ १७—परोक्षभूत मे, 'भू' धातु से परे, 'व' का आगम होता है । जैसे—

भू+अ=भू+व+अ=**बभूव** ।

पुब्बस्स अ ६ १८—'भू' धातु के द्वित्व होने से, पूव 'भू' का 'भ' हो जाता है । जैसे—भू+अ=भूभू+अ=भभू+अ=**बभूव** ।

चतुत्थदुतियान ततियपठमा ५ ७८—द्वित्व होने पर, वग के चतुर्थ, तथा द्वितीय वण का क्रमश उसी वग का तृतीय तथा प्रथम वण हो जाता है । जैसे—

भू+अ=भभू+अ=**बभूव** ।

कालातिपत्ति[1] (हेतुहेतुमद्भूत)

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	अपचिस्सा	अपचिस्ससु
मज्झिम पुरिस	अपचिस्से	अपचिस्सथ
उत्तम पुरिस	अपचिस्स	अपचिस्सम्हा

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	अपचिस्सथ	अपचिस्सिंसु
मज्झिम पुरिस	अपचिस्ससे	अपचिस्सव्हे
उत्तम पुरिस	अपचिस्स	अपचिस्साम्हसे

§ २१ हेतुहेतुमद्भूत मे कुछ विशेष धातु के रूप—

कर—अकाहा, अकरिस्सा। हा—अहाहा, अहायिस्सा। लभ—अलच्छा, अलभिस्सा। वस—अवच्छा, अवसिस्सा। छिद—अच्छेच्छा, अछिन्दिस्सा। भिद—अभेच्छा, अभिन्दिस्सा। रुद—अरुच्छा, अरोदिस्सा। भुज—अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा। मुच—अमोक्खा, अमुञ्चिस्सा। वच—अवक्खा, अवचिस्सा। प+विस—पावेक्खा, पाविसिस्सा। सक—सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा। सु—अस्सोस्सा, असुणिस्सा। अस—अभविस्सा। (देखिए—पृ० ६४-६६)

---

१ एय्यादो वातिपत्तिय स्सा स्ससु, स्से स्सथ, स्स स्सम्हा, स्सथ स्सिंसु, स्ससे स्सव्हे, स्स स्साम्हसे ६ ७—हेतुहेतुमद्भूत मे धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सचे पठमवये पब्बज्ज अलभिस्सा, अरहा अभविस्सा—यदि वह प्रथम आयु मे प्रव्रज्या पाए होता, तो अर्हंत् हो गया होता।

२१. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अहुवा मेव मय पुब्बे, न नाहुवम्हाति ? अकरा मेव मय पुब्बे, पाप कम्म न नाकरम्हा ति ? अलत्थ पब्बज, अलत्थ उपसपद च ।

ब्रह्मा भगवन्त अयाचय । भगवा तिपाटिहीरे (तीसु पाटिहारियेसु) वसी **अहु** । लोक-धातु पकम्पय । महा ओभासो **आसि** । सो **अगमा** । ते अगमु । भगवा एतदबोच । मय एव **अवचम्हा** । सो अका । मय न अकरम्हा । मय एव कातु न दम्हा (अददम्हा) ।

(ख) अतीते मन्धाता नाम चक्कवत्ती राजा बभूव । भूत-पुब्ब जनको नाम राजा **बभूव** । राम-पण्डितो वन **जगाम** ।

(ग) दुक्खस्स अन्त चे नाभविस्स, निब्बान नो पञ्ञायिस्स । कुशल कम्म चे नाकरिस्स सुख-विपाक नालभिस्स । बुद्धस्स सरण चे नागच्छिस्सम्हा, झानसुख नानुभविस्सम्हा । पालिया वियाकरण चे नापठिस्से, तेपिटक साधुक ना बुज्झिस्से । दानानि चे नादीयिस्ससु पुञ्ञ-विपाका नाभविस्ससु ।

अह चे पुञ्ञानि नाकरिस्स, सग्ग लोक नालभिस्स । अह चे तथरिव **अभिजानिस्स,** यथरिव भगवा "अनेक-जाति-ससार **सन्धाविस्स** ति" अब्भञ्ञासि । अह पि तिस्सो चेव विज्जायो सच्छिकत्वा अनेकजाति-ससार न **सन्धाविस्स** ।

(घ) चङ्कमे **चङ्कमि** जिनो । भगवा हि सुवण्ण-वण्णो सुरियो विय **दादल्लति** (दद्दल्लति) । **लोलुपा, मोमुहा** मनुस्सा सग्ग लोक नुप्पज्जन्ति । **सिरिंसपेहि** बिभेति ।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) (अनद्यतन भूत का प्रयोग कीजिए—)
भगवान ने भिक्खुओ को देखा । मैने बुद्ध-मन्दिर देखा । मै बुद्ध के शरण

गया। इसीलिए तुमको मद्यपान करने नही दिया। मैने बुरा (अकुशल) काम नही किया।

(ख) (परोक्ख भूत का प्रयोग कीजिए—)

पूव काल मे विदुर (विधुरो) नामक पण्डित था। युधिष्ठिर (युधिट्ठिलो) नामक राजा था। वासुदेव कृष्ण (वासुदेव-कण्हो) ने चक्र से कस को मारा। लक्ष्मण (लक्खण-कुमारो) अपने भाई के साथ वन को गये।

(ग) फल खाते, तो शरीर हल्का (लहुक) होता। पालि-व्याकरण अच्छी तरह पढते, तो त्रिपिटक को अच्छी प्रकार समझते। उपासक लोग सघ को दान देते, तो सघ की बढती होती। दायक लोग त्रिपिटक के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित कराते, तो बहुत पुण्य होता (प+सू)। त्रिपिटक की भाषा मधुर न होती, तो पढने वाले का चित्त प्रसन्न नही होता (प+सद्)। ब्रह्मलोक यदि न होता, तो प्रथम ध्यान का विपाक कैसे अनुभव किया जाता ? पूव जन्म (पुब्बे-निवासो) यदि न होता, तो ध्यानियो को कैसे उसका अनुस्मरण होता।

चौथा काण्ड

तीसरा पाठ

‘वाला’-वाचक प्रत्यय

(क.)

(कृदन्त प्रकरण—तीसरा भाग)

ल्तु, णक,

§ २६ **कत्तरि ल्तुणका ५ ३३**—‘इस काम को करने वाला,’ इस अर्थ मे, धातु से परे ‘ल्तु’ और ‘णक’ प्रत्यय होते हैं। ‘ल्तु’ का ‘तु’, और ‘णक’ का ‘अक’ रह जाता है। (देखिए—पृ० ६४-६६) जैसे—

	ल्तु	णक
दा=देना	**दातु** (दाता)	**दायको**[1]=देने वाला
वच=बोलना	**वत्तु** (वत्ता)	**वाचको**=बोलने वाला
नी=ले जाना	**नेतु** (नेता)	**नायको**=नायक
सु=सुनना	**सोतु** (सोता)	**सावको**=सुनने वाला
जि=जीतना	**जेतु** (जेता)	× =जीतने वाला
छिद=छेदना	**छेत्तु** (छेत्ता)	**छेदको**=छेदने वाला

---

१ **आस्सा णापिम्हि युक् ५ ६१**—‘णापि’ को छोड, अन्य ‘ण’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, आकारान्त धातु से परे ‘य’ का आगम होता है। जैसे—दा+णक=**दायको**।

आवी

§ ३० **आवी ५ ३४**—'इस स्वभाव वाला' इस अर्थ मे, धातु से परे, बहुधा 'आवी' प्रत्यय होता है। जैसे—**भयदस्सावी**=भय देखने वाला, भयशील।

अक

§ ३१ **आसिसायमको ५ ३५**—आशीर्वाद का भाव हो, तो धातु से परे 'अक' प्रत्यय होता है। जैसे—

जीवतु इति—जीवको=बहुत दिन जीने वाला

नन्दतु इति—नन्दको=आनन्द से रहने वाला

णन (का 'अन' रह जाता है)

§ ३२ **करा णनो ५ ३६**—'कर' धातु से परे, 'णन' प्रत्यय होता है। जैसे—

करोति इति—**कारण**=करने वाला

§ ३३ **हातो वीहिकालेसु ५ ३७**—'व्रीहि' और 'काल' का द्योतक हो, तो 'हा' (=छोडना) धातु से परे 'णन' प्रत्यय होता है। जैसे—

हायना=एक प्रकार की व्रीहि। **हायनो**=वर्ष।

कू (का 'ऊ' रह जाता है)

§ ३४ **विदा कू ५ ३८**—'विद' धातु से परे, 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—**विदू**=जानने वाला। **लोकविदू**=ससार को जानने वाला।

§ ३५ **वितो ञातो ५ ३९**—'वि' पूर्वक 'ञा' धातु से परे, 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—**विञ्ञू**=विशेष जानने वाला।

§ ३६ **कम्मा ५ ४०**—कर्म से परे 'ञा' धातु आवे, तो उक्त अर्थ मे उससे परे 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—**सब्ब जानाति इति—सब्बञ्ञू**=सब कुछ जानने वाला। **कालञ्ञू**=काल जानने वाला। **वेदञ्ञू**=वेद जानने वाला।

अण

§३७ **क्वचण् ५ ४१**—कम से परे, धातु के बाद कहीं कहीं 'अण' प्रत्यय होता है। 'अण्' का 'अ' रहता है, तथा, धातु के उपान्त स्वर की वृद्धि होती है। जैसे—

कुम्भकारो=कुम्भ को बनाने वाला। **सरलावो**=सर नामक तृण को काटने वाला। **मन्तज्झायो**=मन्त्र पढने वाला।

रू

§३८ **गमा रू ५ ४२**—कम से परे 'गम' धातु आवे, तो उक्त अर्थ मे, उससे परे 'रू' प्रत्यय होता है। 'रू' का 'ऊ' रहता है। जैसे—

वेदगू=वेद मे गति रखने वाला। **पारगू**=पार जाने वाला।

णी

§३९ **सीलाभिक्खञ्ञावस्सकेसु णी ५ ५३**—शील, आभिक्षण्य(=बार बार होना), और आवश्यक का अर्थ प्रतीत होता हो, तो धातु से परे 'णी' प्रत्यय होता है। 'णी' का 'ई' रहता है, तथा, धातुके उपान्त की वृद्धि होती है। जैसे—

उण्हभोजी=गरम खाने वाला
खीरपायी=बार बार दूध पीने वाला
अवस्सकारी=अवश्य करने वाला
सतन्दायी=सौ देने वाला

§४० **थावरित्तरभङ्गुरभिदुरभासुरभस्सरा ५ ५४**—ये शब्द निपात है। जैसे—

थावर=स्थावर=स्थित रहने वाला। **इत्तर**=जाने वाला। **भङ्गुर**=टूट जाने वाला। **भिदुर**=नष्ट हो जाने वाला। **भासुर**, **भस्सर**=चमकने वाला।

(ख)

(तद्धित प्रकरण—पहला भाग)

मन्तु

§ १ **त मे त्थ स्स त्थी ति म न्तु** ४ ७८—'वाला' के अर्थ मे, नाम से परे 'मन्तु' प्रत्यय होता है । जैसे—

गौवो वाला देश या पुरुष—**गोमा** (गोमन्तु)। वैसे ही, **गतिमा** (गतिमन्तु)=गतिवाला । **सतिमा** (सतिमन्तु)=स्मति वाला । **आयस्मा**[2] (आयस्मन्तु)=आयुष्मान् । [देखिए—पृ० ८०]

वन्तु

§ २ **व न्त्व व ण्णा** ४ ७९—अकार तथा आकार से परे, 'मन्तु' के स्थान में 'वन्तु' होता है । जैसे—

सीलवा (सीलवन्तु)=शील वाला। **पञ्ञवा** (पञ्ञवन्तु) =प्रज्ञा वाला। [देखिये—पृ० ८०]

इक, ई

§ ३ **द ण्डा दि त्वि क ई वा** ४ ८०—'वाला' के अथ मे, 'दण्ड' आदि शब्दो [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे, कही कही 'इक' तथा 'ई' प्रत्यय भी होते हैं । जैसे—

दण्ड—**दण्डिको, दण्डी, दण्डवा**=दण्ड वाला

गन्ध—**गन्धिको, गन्धी, गन्धवा**=गन्ध वाला

रूप—**रूपिको, रूपी, रूपवा**=रूप वाला

§ ४ **उ त्त मि णे व ध ना इ को**—'धन' शब्द से परे, केवल उत्तमण (=ऋण

---

२ **आ यु स्सा य स् म न्तु म्हि** ४.१३४—'मन्तु' प्रत्यय आने से, 'आयु' शब्द का 'आयस्' आदेश हो जाता है। जैसे—अयु+मन्तु=(आयस्मन्तु) **आयस्मा**।

देने वाला महाजन) के अर्थ मे, 'इक' प्रत्यय होता है। जैसे—

धनिको=ऋण देने वाला महाजन।

धनी, धनवा=धन वाला।

§ ५ **असन्निहिते अत्था**—'अत्थ' (=अर्थ) शब्द से परे, *'न रहने के अर्थ मे'* 'इक' तथा 'ई' प्रत्यय होते है। जैसे—

अत्थिको, अत्थी=जिसके पास अर्थ नही हो, जो उसकी चाह करता है।

अत्थवा=अर्थ वाला।

§ ६ **हत्थदन्तेहि जातिय**—'हत्थ' तथा 'दन्त' शब्दो से परे, जाति के अर्थ मे, 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—**हत्थी**=हाथी। **दन्ती**=हाथी। नही तो—**हत्थवा**=हाथ वाला। **दन्तवा**=दाँत वाला।

§ ७ **वण्णतो ब्रह्मचारिम्हि**—ब्रह्मचारी के अर्थ मे, 'वण्ण' शब्द से परे 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—**वण्णी**=वर्णी=ब्रह्मचारी। नही तो—**वण्णवा**=वणवान्=सुन्दर।

स्सी

§ ८ **तपादीहि स्सी ४८१**—'वाला' के अर्थ मे, 'तप' आदि शब्दो से परे, 'स्सी' प्रत्यय होता है। जैसे—**तपस्सी**=तप करने वाला। **यसस्सी**=यस वाला। **तेजस्सी**=तेज वाला। **मनस्सी**=मान वाला। **पयस्सी**=दूध वाला। [देखिए, तीसरा परिशिष्ट]

र

§ ९ **मुखादितो रो ४८२**—'मुख' आदि शब्दो से परे, 'रो' प्रत्यय होता है। [देखिए, तीसरा परिशिष्ट] जैसे—

मुखरो=बहुत बोलने वाला। **सुसिरो**=छिद्र वाला। **ऊसरो**=रेत वाला। **मधुरो**=मीठा। **दन्तुरो**=निकले दाँत वाला।

भ

§ १० **तुण्डयादीहि भो ४८३**—'तुण्डि' आदि [देखिए, तीसरा

परिशिष्ट] शब्दो से परे, 'भो' प्रत्यय होता है। जैसे—

तुण्डिभो=चोच वाला। **सालिभो**=सालि धान वाला। विकल्प से, 'तुण्डिमा' भी।

अ

§ ११ **सद्धादित्व** ४ ८४—'सद्धा' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, उक्त अर्थ मे, विकल्प से 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

सद्धो=श्रद्धा वाला। **पञ्ञो**=प्रज्ञा वाला। विकल्प से—'पञ्ञवा' भी।

ण

§ १२ **णो तपा** ४ ८५—'तप' शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। 'ण' का 'अ' रहता है, तथा, उपधा की वृद्धि होती है। जैसे—**तापसो**=तप करने वाला। स्त्रीलिङ्ग मे—**तापसी**।

आलु

§ १३ **आल्वभिज्झादीहि** ४ ८६—'अभिज्झा' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, 'आलु' प्रत्यय होता है। जैसे—

अभिज्झालु=बडा लोभ वाला। **सीतालु**=शीत न सह सकने वाला। **दयालु**=दया वाला। **कोधालु**=क्रोध वाला। **निद्दालु**=बहुत नीद लेने वाला।

विकल्प से—**दयावा, कोधवा** भी।

इल

§ १४ **पिच्छादित्विलो** ४ ८७—'पिच्छ' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, विकल्प से 'इल' प्रत्यय होता है। जैसे—

पिच्छिलो, पिच्छवा=पर वाला (=मोर)। **फेणिलो, फेणवा**=फेन वाला। **जटिलो, जटावा**=जटा वाला।

व

§१५ **सीलादितो वो** ४८८—'सील' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, विकल्प से 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—

सीलवो=शील वाला। **केसवो**=केश वाला।

अण्णा निच्च—'अण्ण' शब्द से परे, नित्य 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—**अण्णवो**=जल वाला (समुद्र)।

वी

§१६ **मायामेधाहि वी** ४८९—'माया' और 'मेधा' शब्दो से परे, 'वी' प्रत्यय होता है। जैसे—

मायावी=माया वाला। **मेधावी**=अक्ल वाला।

आमी, उवामी

§१७ **सिस्सरे आम्युवामी** ४९०—'स' (=स्व) शब्द से परे, 'अधिकार रखने वाले' के अर्थ मे, 'आमी' तथा 'उवामी' प्रत्यय होते है। जैसे—

सामी, सुवामी=अधिकार रखने वाला।

ण

§१८ **लक्ख्या णो अ च** ४९१—'लक्खी' (=लक्ष्मी) शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। प्रत्यय लगने से, 'लक्खी' शब्द के 'ई' का 'अ' हो जाता है। जैसे—

लक्खणो=लक्ष्मी वाला।

न

§१९ **अङ्गा नो कल्याणे** ४९२—कल्याण का द्योतक हो, तो 'अङ्ग' शब्द से परे, 'न' प्रत्यय आता है। जैसे—

अङ्गना=कल्याणकर अङ्गो वाली।

सो

§२० **सो लोमा** ४६३—'लोम' शब्द से परे, 'स' प्रत्यय होता है। जैसे—**लोमसो**=रोये वाला। स्त्रीलिङ्ग में—**लोमसा**।

इम, इय

§२१ **इमिया** ४६४—'वाला' के अर्थ मे, बहुधा 'इम' और 'इय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

पुत्तिमो=पुत्र वाला। **कित्तिमो**=कीर्ति वाला। **पुत्तियो**=पुत्र वाला। **जटियो**=जटा वाला। **सेनियो**=सेना वाला।

२२. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा हि लोक-**नायको** लोक-**विदू** सत्था देव-मनुस्सान। एकच्चो पाणाति**पाती** होति, एकच्चो अदिन्ना**दायी** होति, अदिन्न थेय्यसखात **आदाता** होति। एकच्चो कामेसु मिच्छा**चारी** होति चारित्त **आपज्जिता**। एकच्चो मुसा-**वादी** होति, सपजान-मुसा **भासिता**। भगवा हि एव-रूपान सत्तान अज्झासयवसेन पि धम्म **देसिता** होति लोकस्स **विनेता**। **ब्रह्मचारी**, अनुमत्तेसु बज्जेसु भय-**दस्सावी**, **अक्कोधनो** भिक्खु बुद्धस्स सासन-**करो** नाम होति, धम्मस्स अनुधम्म-**चारी**।

(ख) अरञ्ञ-विहारिना भिक्खुना **सतिमन्तेन** भवितब्ब, **कायिक** वाचिक मानसिक च कम्म पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा कातब्ब। **सतिमा**, **भय-दस्सावी**, **लज्जी**, **मेधावी**, **कतञ्ञू**, अकथकथी, **दयालु**, **अमुखरो** भिक्खु धम्मेसु परिपूर-कारी होति **सुविञ्ञाता**, बुद्ध-सासन-करो, **धम्मिको** ति।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे पदो का विश्लेषण कीजिए—

जैसे, सुविञ्ञाता = सु + वि + ञा + तु। सतिमा = सति + मन्तु। धम्मिको = धम्म + इक।

चौथा काण्ड

चौथा पाठ

भाव-वाचक प्रत्यय

भाव-वाचक प्रत्यय दो प्रकार के होते है—(१) धातु से परे लगने वाले, (=कृदन्त) और (२) नाम से परे लगने वाले (=तद्धित)। जैसे—गम—**गमन, गति**। मधुर—**मधुरत्त, मधुरता**।

(क)

(कृदन्त प्रकरण—चौथा भाग)

अ, घण

§४१ **भावकारकेसु अ-घण-घ-का ५ ४४**—भाव के अर्थ मे, धातु से परे, बहुधा 'अ' तथा 'घण' प्रत्यय होते है। जैसे—

अ—**पग्गहो**=पकडना। **निग्गहो**=निग्रह। **चयो**=चुनना। **जयो**=जीतना। **रवो**=आवाज। **वचो**=बोलना।

घण्—**पाको***=पकना। **चागो***=त्याग। **लाभो**। **भागो**। **भारो**। **हारो**। **आचारो**। **विचारो**। **निच्छयो**[1]।

---

*देखिए—पृ० १५० सूत्र ५ ९८

१ **नितो चिस्स छो ५ १२२**—'नि' उपसग पूवक, 'चि' धातु का 'छि' आदेश हो जाता है। जैसे—

नि+चि+अ=नि+छि+अ=

(सरम्हा द्वे १ ३४) निछ्छि+अ=(चतुत्थदुतियेस्वेस ततियपठमा १ ३५) निच्छि+अ=(युवण्णान ए ओ पच्चये ५ ८२) निच्छे+अ=(एओन यवा सरे ५ ८३) **निच्छयो**।

इ

§४२ **दा धा त्वि ५ ४५**—'दा' तथा 'धा' धातुओ से परे, 'इ' प्रत्यय होता है। जैसे—

आदि=आदान करना=लेना। **निधि**=निधान करना=जमा करना।

अथु

§४३ **व मा दी ह् थु ५ ४६**—'वम' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओ से परे, 'अथु' प्रत्यय होता है। जैसे—

वमथु=वमन करना। **वेपथु**=काँपना।

क्वि

§४४ **क्वि ५ ४७क्विस्स, ५ १५९, क्विम्हि लो पो 'न्त ब्य ञ्ज न स्स ५.६४**—भाव तथा कारक में, धातु से परे 'क्वि' प्रत्यय होता है। 'क्वि' प्रत्यय का लोप हो जाता है, उसके स्थान पर कुछ नही रहता है। 'क्वि' प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे—**अभिभवतीति—अभिभू। सयं भवतीति—सयम्भू। भत्त गसन्ति गण्हन्ति वा एत्थ—भत्तग्ग। सलाक गण्हन्ति एत्थाति—सलाकग्ग। सब्भि भाति—सभा। सगम्म भासन्ति एत्थाति—सभा।**

भत्त+गस+क्वि=('गस' धातु के अन्त्य व्यञ्जन 'स' का लोप) भत्त+ग=(सरम्हा द्वे १ ३४) **भत्तग्ग**। स+भास+क्वि+आ=**सभा**।

क्वि म्हि घो परि प च्च स मो हि ५ १००—'परि', 'पति', तथा 'स' पूवक, 'हन' धातु से परे 'क्वि' प्रत्यय आने से, 'हन' धातु का 'घ' आदेश हो जाता है। जैसे—

परिहञ्ञतीति—पलिघो। पतिहञ्ञतीति—पटिघो। आहञ्ञतीति—अघ=पाप। **सहतो इति—सङ्घो। ओहञ्ञति एतेनाति—ओघो**=बाढ।

अ, ण, क्ति, क, यक्, य

§४५ **इ त्थि य म ण क्ति क य क्या च ५ ४९**—स्त्रीलिङ्ग मे, धातु से परे, बहुधा 'अ', 'ण', 'क्ति', 'क', 'यक्', तथा 'य' प्रत्यय होते है। जैसे—

अ—**तितिक्खा, वीमसा, जिगुच्छा, बीभच्छा, तिकिच्छा, विचिकिच्छा, पिपासा, ईहा, भिक्खा, आपदा ।**

ण—**कारा**=करना । **हारा**=हरण करना । **तारा**=तरण करना । **धारा**=धारण करना ।

क्ति (का 'ति' रह जाता है)—**इद्धि, भित्ति, भत्ति** (=भक्ति), **भूति, सति** (=स्मृति), **वड्ढि**[2] (=वृद्धि) ।

क—(का 'अ' रह जाता है)—**रुजा**=पीडा देना । **मुदा**=मोद ।

यक्—(का 'य' रह जाता है)—**विज्जा**=विद्या । **इच्छा । क्रिया ।**

य—**पब्बज्जा**=प्रव्रज्या । **परिचरिया**=सेवा । **जागरिया**=जानना । **मिगया**=शिकार खेलना ।

अन—**वेदना, वन्दना, उपासना ।**

अन

§४६ **अ नो ५ ४८**—भाव के अर्थ मे, धातु से परे 'अन' प्रत्यय होता है। जैसे—**निगूहन**[3], **आळाहन,**[4] **गमन, दान, सम्पदान, पान, असन, वसन, अधिकरण, चलन, जलन, कोधनो, कोपनो, मण्डन, सरण, भरण, हरण ।**

§४७ **रा नस्स णो ५ १७१**—रकारान्त धातु से परे, प्रत्यय के 'न' का 'ण' हो जाता है । जैसे—**अरण, सरण, भरण ।**

[**न न्त मा न त्या दी न ५ १०२**—रकारान्त धातु से परे, 'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि प्रत्ययो के 'न' का 'ण' नही होता है । जैसे—**करोन्तो । कुरुमानो । करोन्ति**]

---

२ **लोपो वड्ढा क्तिस्स ५ १५८**—'वड्ढ' धातु से परे, 'क्ति' प्रत्यय के 'त' का लोप हो जाता है। जैसे—वड्ढ+क्ति=**वड्ढि ।**

३ **गु हिस्स स रे ५ १०५**—'गुह' धातु से परे स्वर हो, तो उसके 'उ' का दीर्घ हो जाता है । जैसे—नि+गुह+अन=**निगूहन ।**

४ **अ न घ ण स्वा प री हि ळो ५ १२७**—'अन' तथा 'घण' प्रत्ययो के आने से, 'आ' तथा 'परि' पूर्वक 'दह' धातु के 'द' का 'ळ' होता है। जैसे—**आळाहन । परिळाहो ।**

नि

§४८ **जा हा हि नि ५ ५०**—भाव के अर्थ मे, 'जा' तथा 'हा' धातुओ से परे, 'नि' प्रत्यय होता है। जैसे—**जानि**=खराब होना। **हानि**=नष्ट होना।

इ, कि, ति

§४९ **इ कि ती सरूपे ५ ५२**—धातु के अपने ही अर्थ मे, उससे परे 'इ', 'कि' तथा 'ति' प्रत्यय होते है। जैसे—

वच=**वचि**। युध=**युधि**। पच=**पचति**।

(ख)

(तद्धित प्रकरण—दूसरा भाग)

§२२ **तस्स भावकम्मेसु त्त, तात्तन, ण्य, णेय्य, ण, इय, णिय ४ ५९**—भाव के अर्थ मे, नाम शब्दो से परे, बहुधा ये प्रत्यय आते है—(१) त्त, (२) ता, (३) त्तन, (४) ण्य, (५) णेय्य, (६) ण, (७) इय, (८) णिय। जैसे—

१. त्त

नीलस्स भावो—**नीलत्त**=नीलत्व
चन्दस्स भावो—**चन्दत्त**=चन्द्रत्व
सुरियस्स भावो—**सुरियत्त**=सूयत्व
बुद्धस्स भावो—**बुद्धत्त**=बुद्धत्व
बहुनो भावो—**बहुत्त**=बहुत्व
अनेकस्स भावो—**अनेकत्त**=अनेकत्व

२. ता

नीलस्स भावो—**नीलता**
मनुस्सस्स भावो—**मनुस्सता**
बुद्धस्स भावो—**बुद्धता**
चपलस्स भावो—**चपलता**
सहायस्स भावो—**सहायता**

३. त्तन

पुथुज्जनस्स भावो—**पुथुज्जनत्तन** =पृथक् जनत्व
वेदनाय भावो—**वेदनत्तन** =वेदनात्व
जायाय भावो—**जायत्तन** =स्त्रीत्व
जारस्स भावो—**जारत्तन** =परस्त्री गमन करना

४ ण्य

अलसस्स भावो—**आलस्स**[५] =आलस्य
ब्रह्मनो भावो—**ब्रह्मञ्ञ** =ब्राह्मणत्व
चपलस्स भावो—**चापल्य**
निपुणस्स भावो—**नेपुञ्ञ** =नैपुण्य
पिसुनस्स भावो—**पेसुञ्ञ** =चुगलखोरी
राजस्स भावो—**रज्ज** =राज्य
अधिपतिनो भावो—**आधिपच्च**[५] =आधिपत्य
दायादस्स भावो—**दायज्ज** =दायाद्य
सखिनो भावो—**सख्य** =मित्रता
वणिजस्स भावो—**वाणिज्ज** =वाणिज्य

---

५ **लोपो वण्णिवण्णान** ४ १३१—'यकार' से आरम्भ होने वाला प्रत्यय परे हो, तो शब्द के अन्त्य 'अ' तथा 'इ' का लोप होता है। जैसे—अलस+ण्य =आलस्+य **आलस्य**। अधिपति+ण्य =आधिपत्+य =आधिपत्य = (तवग्गवरणान ये चवग्गबयञ्ञा १४८) **आधिपच्च**।

सरानमादिस्सायुवण्णस्सा ए ओ णानुबन्धे ४ १२४—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के आदि में स्थित 'अ', 'इ', तथा 'उ' का यथाक्रम 'आ', 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—अलस+ण्य =**आलस्स**। चपल+ण्य =**चापल्ल**। अधिपति+ण्य =आधिपत्य =**आधिपच्च**।

५ णेय्य

सुचिनो भावो—**सोचेय्य**=पवित्रता
अधिपतिनो भावो—**आधिपतेय्य**=आधिपत्य

६ ण

गुरुनो भावो—**गारव**=गौरव
पटुनो भावो—**पाटव**=पटुता
उजुनो भावो—**अज्जव**=ऋजुता
मुदुनो भावो—**मद्दव**=मृदुता

७ इय

अधिपतिनो भावो—**अधिपतिय**=आधिपत्य
पण्डितस्स भावो—**पण्डितिय**=पाण्डित्य
बहुस्सुतस्स भावो—**बहुस्सुतिय**=बहुश्रुतता
नग्गस्स भावो—**नग्गिय**=नग्नता
सूरस्स भावो—**सुरिय**=सूरता

८ णिय

अलसस्स भावो—**आलसिय**=आलस्य
कलुसस्स भावो—**कालुसिय**=कालुष्य
मन्दस्स भावो—**मन्दिय**=मन्दता
दक्खस्स भावो—**दक्खिय**=दक्षता
पुरोहितस्स भावो—**पोरोहितिय**=पौरोहित्य

§ २३ **लोपो** ४ १२३—कभी कभी, प्रत्ययो का लोप भी देखा जाता है। **जैसे—बुद्धे रतन पणीत**=बुद्धे रतनत्त पणीत। चक्खु सुञ्ञ **अत्तेन वा अत्तनियेन वा**=चक्खु अत्तत्तेन वा अत्तनियत्तेन वा सुञ्ञ।

ब्य

§ २४ **ब्य बद्धदासा वा** ४ ६०—भाव के अर्थ मे, 'बद्ध' और 'दास' शब्दो से परे, विकल्प से 'ब्य' प्रत्यय होता है। जैसे—**बद्धब्य**—बद्धत्ता =बँधा हुआ होना। **दासब्य**—दासता।

नण्

§ २५ **नण युवा बो च वस्स** ४ ६१—भाव के अर्थ मे, 'युव' शब्द से परे, विकल्प से 'नण्' प्रत्यय होता है। 'नण्' प्रत्यय लगने से, 'युव' शब्द के 'व' का 'ब' हो जाता है। जैसे—**योब्बनं**—युवत्त, युवता =जवानी।

इम

§ २६ **अण्वादित्विमो** ४ ६२—भाव के अर्थ मे, 'अणु' आदि शब्दो से परे, विकल्प से 'इम' प्रत्यय होता है। जैसे—**अणिमा** =अणुत्व। **लघिमा** = लघुत्व। **महिमा**[६] =महत्त्व। **कसिमा**[६] =कृशता। विकल्प से—**अणुत्त, अणुता, लघुत्त, लघुता** इत्यादि भी।

निपात—**कोसज्जाज्जवपारिसज्जसुहज्जमद्दवारिस्सासभाजञ्ञथेय्यबाहुसच्चा** ४ १२७—ये शब्द निपात हैं। जैसे—कुसीतस्स भावो **कोसज्ज**। उजुनो भावो—**अज्जव**। परिसासु साधु—**पारिसज्जो**। सुहदयो व—**सुहज्जो** सुहज्जस्स भावो—**सोहज्ज**। मुदुनो भावो—**मद्दव**। इसिनो इद, भावो वा—**आरिस्स**। उसभस्स इद, भावो वा—**आसभ**। आजानीयस्स भावो, सो एव वा—**आजञ्ञ**। थेनस्स भावो, कम्म वा—**थेय्य**। बहुस्सुतस्स भावो—**बाहुसच्च**।

---

६ **किसमहतमिमे कस्महा** ४ १३३—'इम' प्रत्यय आने से, 'किस' तथा 'महन्त' शब्दो का, यथाक्रम 'कस्' तथा 'मह' आदेश हो जाता है। जैसे—किस+इम =कसिमा। महन्त+इम =महिमा।

२३. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) पञ्ञाय **पटिलाभो** सुखो। पापान **अकरण** सुख। एकस्स **चरित** सेय्यो। अरियान **दस्सन** साधु होति। तेस **सन्निवासो** सदा सुखो होति। अञ्ञेस **वज्ज** सुदस्स होति, अत्तनो पन वज्ज दुद्दस होति। यो पापानि कम्मानि करोति, सो **वेदन, फरुस,** जानिं, सरीरस्स **भेदन,** गरुक **आबाध,** चित्त-**क्खेप** वा पापुणिस्सति। **राग** च **दोस** च **मोह** च पहाय, निब्बाण एहिसि (गमिस्ससि)। **इन्द्रिय-गुत्ति, सन्तुट्ठि, पातिमोक्खे** च **सवरो, पटिसन्थार वुत्ति,** भिक्खुना सम्पादेतब्बा। **समथो, दमथो, विपस्सना, सतिया** उपट्ठान, **पटिसम्भिदा,** वेदनान सञ्ञान च **निरोधो, विमुत्ति** चाति भावेतब्बा।

२ ऊपर काले अक्षरो में छपे शब्दो की व्युत्पत्ति बताइए।

३ निम्नलिखित शब्दो की व्युत्पत्ति बताइए—

(क) हासो, पीति, वित्ति, तुट्ठि, आनन्दो पमुदा, आमोदा, सन्तोसो, नन्दि पामोज्ज पमोदो ति (सन्तोस-परियाया)।

(ख) तण्हा, तसिना, एजा, जालिनी, विसत्तिका, छन्दो, जटा, निकन्त्या, सिब्बनी, भवनेत्ति, अभिज्झा, वनथो, वान, लोभो रागो, मनोरथो, इच्छा, अभिलासो, काम, आकखा, रुचि (इच्छा-परियाया)।

(ग) धी, पञ्ञा, बुद्धि, मेधा मति, मुति, पञ्ञाण, ञाण, विज्जा, योनि, पटिभान, अमोहो, विपस्सना, सम्मादिट्ठि (पञ्ञा-परियाया)। बाहुसच्च, गारवो, कतञ्ञुता, सोवचस्सता ति (मङ्गलानि)। पण्डिच्च, कोसल्ल, यथाभुच्च, अज्जव (भिक्खुना सम्पादेतब्बानि)। साठेय्य, थेय्य। पसुकुलिकत्त, अब्भोकासिकता। काय-मुदुता, काय-कम्म-ञ्ञता, काय-पागुञ्ञता।

४ पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्धो की पूजा। देवताओ की अनुस्मृति। पापो का न करना। कुशल

धर्म्मो का जमा करना । सज्जनो का दर्शन करना । गुरुजनो का सम्मान करना । दुर्जनो का त्याग करना । त्रिपिटक का स्वाध्याय करना । खाने की इच्छा । इन्द्रियो का दमन करना । चित्त का निरोध करना । लडको को जमा करना । लकडियो को एकत्रित करना । सेना सग्रह करना । भिक्षुओ को प्रणाम करना । भूखो को खिलाना । ब्राह्मणो का सत्कार करना । तृष्णा को छोडना । घर छोड कर बेघर हो जाना ।

(ख) पात काल जागना अच्छा है । हाथ मुह धोना अच्छा है । बुद्ध के अनुस्मरण से चित को शुद्ध करना कल्याणकर है। किसी कम्म-स्थान को लेकर ध्यान करना उचित है। मैत्री भावना से सब दिसाओ को व्याप्त करना ब्रह्मविहार है । कुशल धर्म्मों को बढाना, अकुशल धर्म्मों को घटाना जरूरी है ।

चौथा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(सातवाँ भाग—प्रेरणार्थक)

प्रेरणार्थक क्रिया

§ २२ **प यो ज क व्या पा रे णा पि च ५ १६**—प्रेरणा करने के अर्थ में, धातु से परे, (णि) 'इ', तथा (णापि) 'आपि' प्रत्यय आते हैं। प्रत्यय लगने से, धातु के अन्त्य तथा उपान्त ह्रस्व स्वर की प्राय वृद्धि हो जाती है। 'अ' की वृद्धि 'आ', 'इ' तथा 'ई' की वृद्धि 'ए', और 'उ' तथा 'ऊ' की वृद्धि 'ओ' है। प्रत्यय लगे हुए धातु के रूप 'चुरादि गण' के समान चलते हैं (देखिए—पृ० १२४-१२५)। जैसे—

धातु	प्रेरणार्थक धातु	रूप
भ्वादि गण—अच्च (=पूजा करना)	अच्चि, अच्चापि	अच्चेति, अच्चयति
	(=पूजा कराना)	अच्चापेति, अच्चापयति
अट (=घूमना)	आटि, आटापि	आटेति, आटयति
	(=घुमवाना)	आटापेति, आटापयति
अद (=खाना)	आदि, आदापि	आदेति, आदयति
	(=खिलाना)	आदापेति, आदापयति
इक्ख (=देखना)	इक्खि, इक्खापि	इक्खेति, इक्खयति
	(=दिखाना)	इक्खापेति इक्खापयति
कन्द (=रोना)	कन्दि, कन्दापि	कन्देति, कन्दयति
	(=रुलाना)	कन्दापेति, कन्दापयति

धातु	प्रेरणार्थक	धातु रूप
कम्प (=काँपना)	कम्पि, कम्पापि	**कम्पेति, कम्पयति**
	(=कँपाना)	**कम्पापेति, कम्पापयति**
चज (=छोडना)	चाजि, चाजापि	**चाजेति, चाजयति**
	(=छुडाना)	**चाजापेति, चाजापयति**
नी (=ले जाना)	नायि,	**नाययति**[1]
	(=लिवा जाना)	
पच (=पकाना)	पाचि, पाचापि	**पाचेति, पाचयति**[2]
	(=पकवाना)	**पाचापेति, पाचापयति**
भ (=होना)	भावि, भापि	**भावयति**[1] **भावेति,**
हन (मारना)	घाति	**घातेति, घातयति**[3]
	(=मरवा देना)	इत्यादि

---

१ **आयावा णानुबन्धे ५ ६०**—'ण' अनुबन्ध वाले स्वरादि प्रत्ययो के आने से, धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमश 'आय' तथा 'आव' हो जाता है। जैसे—

नि+णि+ति=(युवण्णानमे ओप्पच्चये ५ ८२) ने+इ+ति=(प्रस्तुत सूत्र से) नायि+ति=(कत्तरि लो ५ १८) =नायि+अ+ति=नाये+अ+ति=(एओनमयवा सरे ५ ८९) **नाययति**।

भ+णि+ति=(युवण्णानमे ओप्पच्चये ५ ८२) भो+इ+ति= **भावयति**

२ **अस्सा णानुबन्धे ५ ८४**—'ण' अनुबन्ध वाले किसी प्रत्यय के आने से, धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' हो जाता है। जैसे—पच+णि+ति=पाच+इ+ति=पाचि+ति=(युवण्णानमेओ प्पच्चये ५ ८२) **पाचेति**।

पाचे+ति=(कत्तरि लो ५ १८) पाचे+अ+ति=(एओनमयवा सरे ५ ८९) **पाचयति**।

पच+णापि+ति=**पाचापेति (पाचापयति)** पच+णक=**पाचको**।

णीणाप्यापीहि वा ५ २०—णि, णापि, तथा आपि प्रत्ययान्त धातु से

	धातु	प्रेरणार्थक धातु	रूप
२ रुधादि गण—	कत (=काटना)	काति, कातापि	कातेति, कातयति
		(=कटवाना)	कातापेति, कातापयति
	छिद (=छेदना)	छेदि, छेदापि	छेदेति, छेदयति
		(=छिदवाना)	छेदापेति, छेदापयति
	भुज (=खाना)	भोजि, भोजापि	भोजेति, भोजयति
		(=खिलाना)	भोजापेति, भोजापयति
३ दिवादि गण—	कुध (=क्रोध करना)	कोधि, कोधापि	कोधेति, कोधयति
		(=क्रोध करवाना)	कोधापेति, कोधापयति
	दिव (=चमकना)	देवि, देवापि	देवेति, देवयति
		(=चमकाना)	देवापेति, देवापयति
	दुस (=द्वेष करना)	दूसि, दूसापि	दूसेति, दूसयति[4]
४ तुदादि गण—	खिप (=फेकना)	खेपि, खेपापि	खेपेति, खेपयति
		(=फेकवाना)	खेपापेति, खेपापयति
	नुद (=प्रेरित करना)	नोदि, नोदापि	नोदेति, नोदयति
		(=प्रेरित कराना)	नोदापेति, नोदापयति
	लिख (=लिखना)	लेखि, लेखापि	लेखेति, लेखयति
		(=लिखाना)	लेखापेति, लेखापयति
५ ज्यादि गण—	अस (=खाना)	आसि, आसापि	आसेति, आसयति
		(=खिलाना)	आसापेति, आसापयति

परे, 'ल' प्रत्यय लगा सकते है, और नही भी। जैसे—पाचि+अ+ति=**पाचयति**। पाचि+ति=**पाचेति**। **पाचापयति**। **पाचापेति**।

३ **हनस्स घातो णानुबन्धे ५ ६६**—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'हन' धातु का 'घात' आदेश होता है। जैसे—हन+णि+ति=**घातेनि**, **घातयति**।

४ **णिम्हि दीघो दुसस्स ५ १०४**—'णि' प्रत्यय आने से, 'दुस' धातु के उकार का दीघ हो जाता है। जैसे—दुस+णि+ति=**दूसेति**।

इसी तरह, दूसरे गणो के धातु से भी प्रेरणाथ धातु बनाए जा सकते ह। प्रेरणाथक धातु के रूप, चुरादि गण के धातु के समान, सभी काल में होते है। प्रेरणाथक धातु के साथ 'अ', 'ना', 'णो' आदि *किसी गण का कोई विकरण नही लगता है।*

§ २३ **णिणापीन तेसु** ५ १६०—प्रेरणाथक धातु से परे, फिर भी प्रेरणा के अथ मे कोई प्रत्यय नही होते है। जैसे—**पाचेति**।

ख

(विभक्ति प्रकरण—तीसरा भाग)

§ ४० **गतिबोधाहारसद्दत्थाकम्मकभज्जादीन पयोज्जे** २ ४—यदि गमनाथ, बोधाथ, आहाराथ, शब्दाथ, अकमक, तथा भज्ज आदि धातु प्रेरणाथक हो, तो कर्ता मे 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—

गमनार्थ—**गमयति माणवक गाम**=विद्यार्थी को गाँव ले जाता है। यहाँ, जाने वाला 'माणवक' है, जिसमे 'दुतिया विभत्ति' लगी है।

बोधार्थ—**बोधयति माणवक धम्म**—विद्यार्थी को धम्म समझाता है। **वेदयति माणवक धम्म**।

आहारार्थ—**भोजयति माणवक ओदन, आसयति माणवक ओदन**=विद्यार्थी को भात खिलाता है।

शब्दार्थ—**अज्झापयति माणवक वेद**=विद्यार्थी को वेद पढाता है।

अकर्मक—**आसयति देवदत्त**=देवदत्त को बैठाता है। **साययति देवदत्त**=देवदत्त को सुलाता है।

भज्ज (=भूनना) आदि—**अञ्ञ भज्जापेति, अञ्ञ कोट्टापेति, अञ्ञ सन्थरापेति**=दूसरे से भुनवाता है, दूसरे से कुटवाता है, दूसरे से फैलवाता है।

इन स्थानो को छोड दूसरी जगह, कर्ता में 'दुतिया' न होकर 'ततिया विभत्ति' होती है। जैसे—**पाचयति ओदन देवदत्तेन यञ्ञदत्तो**=यज्ञदत्त देवदत्त से भात पकवाता है।

§ ४१ **हरादीन वा** २ ५—प्रेरणाथक 'हर' (=ले जाना) आदि धातुओ के साथ, कर्ता में 'दुतिया विभत्ति' होती है, और 'ततिया' भी। जैसे—**हारेति भार**

देवदत्त देवदत्तेन वा=देवदत्त से भार लिवा जाता है। **दस्सयते जन जनेन वा**=आदमी से दिखवाता है। **अभिवादयते गुरु देवदत्त देवदत्तेन वा**=देवदत्त से गुरु को प्रणाम करवाता है।

§ ४२ **न खादादीन** २६—प्रेरणार्थक खाद (=खाना) आदि धातुओ के साथ, कर्ता मे 'दुतिया विभत्ति' नही होती है, केवल 'ततिया विभत्ति' ही होती है। जैसे—

खादयति देवदत्तेन आदयति देवदत्तेन सद्दापयति देवदत्तेन इत्यादि।

§ ४३ **वहिस्सानियन्तुके** २७—नियन्ता (=हाँकने वाला) न हो, तो प्रेरणार्थक 'वह' धातु के साथ, कर्ता मे 'ततिया विभत्ति' होती है, 'दुतिया' नही। जैसे—**वाहयति भार देवदत्तेन**=देवदत्त से भार ढुलवाता है।

नियन्ता रहने से, 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—**वाहयति भार बलिवद्दे**=बैलो पर भार ढुलवाता ह।

§ ४४ **भक्खिस्साहिंसाय** २८—यदि हिंसा नही होती हो, तो प्रेरणार्थक 'भक्ख' धातु के साथ, कर्ता मे 'ततिया विभत्ति' होती है, दुतिया नही। जैसे—**भक्खयति मोदके देवदत्तेन**=देवदत्त को लड्डू खिलाता है।

हिसा का भाव आता हो, तो 'दुतिया विभत्ति' हो सकती है। जैसे—**भक्खयति बलिवद्दे सस्स**=बैलो को धान खिला देता है।

२४. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

भिक्खु पाण न हनति, न अञ्ञेहि घातापेति। अदिन्न न आदियति, न अञ्ञेहि आदापेति। न चोरेति, न अञ्ञेहि चोरापेति। पञ्हो सय पि पुच्छितब्बो, अञ्ञेहि पि पुच्छापेतब्बो। विहार सय पि गन्तब्ब, अञ्ञे पि गच्छापेतब्ब। गन्त्वा च, गच्छापेत्वा च, धम्मे सावीयमाने धम्मो सय पि सुणितब्बो अञ्ञे पि सावापेतब्बो। एव सय पि कयिरमाने, अञ्ञे च कारीयमाने (कारापेन्ते) कुशला धम्मा वड्ढन्ति। माता सुसु पायेति, पुप्फ गाहापेति, तिण जहापेति, मधुर वाच सावेति, अञ्ञेहि पि सावापेति। एवमेव भगवा पि वेनेय्ये सावके धम्मामत पायेति, सीलपुप्फ गण्हा-पेति, अकुसले धम्मे मुञ्चापेति, सब्बत्थ कल्याण धम्मे साम सावयति, पण्डितेहि पि थेरेहि सावापेति च।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान धम्म सुनाते है। भिक्षु लोग विहार बनवाते है, बुद्ध-वचन (पालि= धम्म-पलियायो, पेय्याल) सुनाते ह, लोक-हित काम करते भी है, दूसरो मे कराते भी है। भिक्षु लोग किसी की निन्दा न स्वय करते है, न दूसरो से कराते है। लडके लोग पढते भी है, दूसरो को पढाते भी है, अपने साथियो से दूसरो को पढवाते भी है। ब्राह्मण लोग धम्म को जानते भी है, दूसरो को सिखलाते भी है। वेदो को पढना भी चाहिए, दूसरो को पढाना भी चाहिए, तीनो वेदो के पारङ्गतो से पढवाना भी चाहिए। इसी तरह, बुद्धो के उपदिष्ट धम्म भी स्वय साक्षात्कार करना भी (सच्छि+कर) चाहिए, अपने साथियो को साक्षात्कार करवाना भी चाहिए, तीनो विद्या जानने वाले महात्माओ से धर्म्मोपदेश करवाना भी चाहिए।

३ निम्नलिखित वाक्यो को प्रेरणार्थक बनाइए—

बुद्धो धम्म देसेति। थेरा झान भावेन्ति। देवो वस्सति। राजा रज्ज कारेति। बुद्ध सरण गच्छति। बुद्ध नमस्सति। दारका विहार गच्छन्ति। धम्म सुणन्ति। थेरे नमस्सन्ति। भिक्खू वन गमिस्सन्ति, समण-धम्म कत्वा, पच्छा आगमिस्सन्ति। बुद्ध वन्दाहि, धम्म सरण गच्छाहि, सङ्घाय दानानि देहि। झानानि चे भावेय्य, पञ्ञा उप्पज्जेय्य। बुद्ध सरण चे अगमिस्सा, सील रक्खिस्सा। धम्म सोतु आग-च्छन्तु। धम्म सुत्वा, निय्याथ।

चौथा काण्ड

छठा पाठ

अव्यय-प्रकरण

✓ (तीसरा भाग—अव्यय)

तद्धित

(तीसरा भाग—तद्धित)

नाम तथा सवनाम शब्दो से परे, तद्धित के कुछ प्रत्यय आते है, जिनके लगने से वे शब्द अव्यय बन जाते है। वैसे प्रत्यय चौदह है—(१) तो, (२) त्र, (३) त्थ, (४) धि, (५) हि, (६) ह, (७) दा, (८) था, (९) धा, (१०) ज्झ, (११) एधा, (१२) क्खत्तु, (१३) सो, और (१४) ची।

१ तो

§ २७ **तो पञ्चम्या ४ ९५**—पञ्चमी विभक्ति के अर्थ मे, शब्द से परे बहुधा 'तो' प्रत्यय आता है। 'तो' प्रत्यय लगा हुआ शब्द अव्यय होता है। जैसे—गामस्मा गच्छति इति—**गामतो** गच्छति=गाँव से जाता है।

		चोरतो भायति=चोर से डरता है
इतोतेत्तोकुतो ४ ९६—	कि	**कुतो** आगच्छति=कहाँ से आता है ?
	त	**ततो** आगच्छति=वहाँ से आता है
	य	**यतो** आगच्छति=जहाँ से आता है
	इम	**इतो** आगच्छति=यहाँ से आता है
	एत	**अतो** आगच्छति=यहाँ से आता है

अ भ्या दी हि ४ ९७—

अभि	**अभितो**=दोनो ओर
परि	**परितो**=चारो ओर
पच्छा	**पच्छतो**=पीछे से
हेट्ठा	**हेट्ठतो**=नीचे से

आ द्या दी हि ४ ९८—'आदि' प्रभति शब्दो से परे 'तो' प्रत्यय होता है। जैसे—

आदि	**आदितो**=शुरू से
मज्झ	**मज्झतो**=बीच से
अन्त	**अन्ततो**=अन्त से
पिट्ठि	**पिट्ठितो**=पीछे से
पस्स	**पस्सतो**=बगल मे
मुख	**मुखतो**=सामने से

२ ३ त्र त्थ

§ २८ **स ब्बा दि तो स त्त म्या त्र त्था ४ ९९**—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान मे, 'सब्ब' आदि शब्दो से परे, 'त्र' तथा 'त्थ' प्रत्यय आते है। जैसे—

सब्बस्मि	**सब्बत्र, सब्बत्थ**=सभी मे, सभी जगह
यस्मि	**यत्र, यत्थ**=जिसमे, जहाँ
तस्मि	**तत्र, तत्थ**=उसमे, वहाँ
पर	**परत्र, परत्थ**=दूसरी जगह

क त्थे त्थ कु त्रा त्र क्वे हि ध ४ १००—ये शब्द निपात है। जैसे—

कस्मि	**कत्थ, कुत्र, क्व**=कहाँ
एतस्मि	**अत्र, एत्थ**=यहाँ
अस्मि	**इध, इह**=यहाँ

४ धि

§ २९ **धि स ब्बा वा ४ १०१**—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान में, 'सब्ब' शब्द

से परे, 'धि' प्रत्यय आता है, और 'त्र' तथा 'त्थ' भी। जैसे—

सब्बस्मि—सब्बधि, सब्बत्थ, सब्बत्र

५ हि

§ ३० या हिं ४ १०२—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान मे, 'य' शब्द से परे 'हिं' प्रत्यय आता है, और 'त्र' भी। जैसे—

यस्मि—यहिं, यत्र=जहा

६ हं

§ ३१ ता ह च ४ १०३—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान मे, 'त' शब्द से परे, 'ह' प्रत्यय आता है, और 'हिं' तथा 'त्र' भी। जैसे—

तस्मि —तह, तहिं, तत्र=तहा

§ ३२ कु हि कह ४ १०४—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान मे, 'किं' शब्द से ये अव्यय बनते है। जैसे—

कस्मि —कुहिं, कुह=कहाँ ?
कथ=कैसे ?
कुहिंचन, कुहिञ्चि=कही भी

७ दा

§ ३३ सब्बेकञ्ञयतेहि काले दा ४ १०५—'सब्ब', 'एक', 'अञ्ञ', 'य', 'त'—इन शब्दो से परे, 'काल' के अथ मे 'दा' प्रत्यय आता है। जैसे—

सब्बस्मि काले	सब्बदा=सभी समय
एकस्मि काले	एकदा=एक समय
अञ्ञस्मि काले	अञ्ञदा=दूसरे समय
यस्मि काले	यदा=जिस समय
तस्मि काले	तदा=उस समय

कदाकुदासदाधुनेदानि ४ १०६—ये शब्द निपात है। जैसे—

कस्मिं काले	**कदा, कुदा**=किस समय ?
सब्बस्मिं काले	**सदा**=सभी समय
इमस्मिं काले	**अधुना, इदानि**=इस समय

अज्जसज्जु-अपरज्जु-एतरहि-करहा ४ १०७—ये शब्द भी निपात है। जैसे—

अस्मिं अहनि	**अज्ज**=आज
समाने अहनि	**सज्जु**=उसी दिन
अपरस्मिं अहनि	**अपरज्जु**=दूसरे दिन
इमस्मिं काले	**एतरहि**=इस समय
कस्मिं काले	**करह**=किस समय ?

८ था

§ ३४ **सब्बादीहि पकारे था ४ १०८**—'इस प्रकार का' इस अर्थ में, 'सब्ब' आदि शब्दो से परे 'था' प्रत्यय होता है। जैसे—

सब्बेन पकारेन	**सब्बथा**=सभी प्रकार से
येन पकारेन	**यथा**=जिस प्रकार से
तेन पकारेन	**तथा**=उस प्रकार से

कथमित्थ ४ १०९—ये शब्द निपात है। जैसे—

केन पकारेन	**कथ**=कैसे ?
इमिना पकारेन	**इत्थ**=इस प्रकार

९ धा

§ ३५ **धा सख्याहि ४ ११०**—'इस प्रकार का' इस अर्थ मे, सख्या वाचक शब्दो से परे 'धा' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वीहि पकारेहि करोति—**द्विधा करोति**=दो प्रकार से करता है, या दो टुकडे करता है। इसी तरह, **'एकधा', बहुधा, पञ्चधा** इत्यादि।

१० एधा

§ ३६ द्वितीहेधा ४ ११२—ऊपर के ही अर्थ मे, 'द्वि' तथा 'ति' शब्दो से परे, विकल्प से 'एधा' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वेधा, तेधा। विकल्प से **द्विधा, तिधा** भी।

११. ज्झं

§ ३७ वेकाज्झ ४ १११—ऊपर के ही अर्थ मे, 'एक' शब्द से परे, विकल्प से 'ज्झ' प्रत्यय होता है। जैसे—

एकज्झ करोति, एकधा करोति=एक प्रकार से करता है।

१२. क्खत्तुं

§ ३८ वारसंख्याय क्खत्तु ४ ११४—'इतनी बार' इस अर्थ मे, सख्या-वाचक शब्दो से परे, 'क्खत्तु' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे वारे भुञ्जति—**द्विक्खत्तु भुञ्जति**=दो बार खाता है।

कतिम्हा ४ ११५—ऊपर के ही अर्थ मे, 'कति' शब्द से परे 'क्खत्तु' प्रत्यय होता है। जैसे—

कति वारे भुञ्जति—**कतिक्खत्तु भुञ्जति**=कितनी बार खाता है?

§ बहुम्हा धा च पच्चासत्तिय ४ ११६—यदि, बार जल्दी जल्दी हो, तो 'बहु' शब्द से परे 'धा' तथा 'क्खत्तु' प्रत्यय होते है। जैसे—

दिवसस्स बहू वारे भुञ्जति—**बहुधा, बहुक्खत्तु वा भुञ्जति**=दिन मे बार बार खाता है।

यदि, बार जल्दी जल्दी न हो, तो भी 'क्खत्तु' प्रत्यय हो सकता है, किंतु, 'धा' प्रत्यय नही। जैसे—**'मासस्स बहुक्खत्तु भुञ्जति'**—ऐसा तो हो सकता है, कितु 'मासस्स बहुधा भुञ्जति' ऐसा नही।

§ ३९ सकिं वा ४ ११७—'एक बार' इस अर्थ मे, विकल्प से 'सकिं' होता है। जैसे—

एक वार भुञ्जति—**सकिं भुञ्जति**=एक बार खाता है। विकल्प से—**एकक्खत्तु भुञ्जति।**

२५ अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

"सब्बेन सब्ब, सब्बथा सब्ब, सङ्खारा अनिच्चा, दुक्खा, अनत्ता"ति सब्बत्थ (सब्बधि) भावेतब्ब। कथ, कुहिं, कदा भावेतब्ब ति ? "सब्बे सङ्खारा सङ्खता, विपरिणाम-धम्मा, अविज्जा-पच्चया सम्भूता"ति एत्थ, परत्थ, सब्बत्थ, एकदा पि, अञ्ञदा पि, तदानि पि, इदानि पि, सब्बदा भावेतब्ब, मनसि-कातब्ब। ततो पट्ठाय। सब्बतो सवुतेन भवितब्ब। तिक्खत्तु उदान दानेसि। तिक्खत्तु चतुक्खत्तु विहारा निक्खमित्वा भावेतब्बानि झानानि भावितानि।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्ध को हमेशा, हर जगह, हर तरह से याद करो। एक, दो, तीन बार बुद्ध के शरण जाता हूँ। हर तरह मे धर्म्म को पूरा करना चाहिए। देवता लोग जब बुद्ध के पास आते थे, उस समय बडा प्रकाश फैलता था।

(ख) मेरे मकान के पास। वृक्ष के ऊपर। सूर्य्य के समान। नदी के दोनो तरफ। बालू के नीचे। दिन दोपहर को। रातो रात। लम्बे अरसे के बाद। निरन्तर अभ्यास के कारण। अक्सर पढते रहने से। जैसे हो तैसे। शीघ्र शीघ्र चलने की अपेक्षा। पुण्य करते ही। धीरे धीरे विपाक सामने दिखाई देना। ध्यान करने के लिए, जङ्गल के भीतर पैठना।

पाँचवाँ काण्ड

पहला पाठ

सन्धि-प्रकरण

१ स्वर सन्धि

§१ **सरो लोपो सरे १ २६**—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी पूव स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—

तत्र + इमे = **तत्रिमे** (तत्र + इमे = तत्र् + इमे = तत्रिमे)
सद्धा + इन्द्रिय = **सद्धिन्द्रिय**
नो हि + एत = **नो हेत**
भिक्खुनी + ओवादो = **भिक्खुनोवादो**
समेतु + आयस्मा = **समेतायस्मा**
अभिभू + आयतन = **अभिभायतन**
पुत्ता मे + अत्थि = **पुत्ता मत्थि**
असन्तो + एत्थ = **असन्तेत्थ**

§२ **परो क्वचि १ २७**—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी पर स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—

सो + अपि = (सो + पि) **सोपि**
सा + एव = **साव**
यतो + उदक = **यतोदक**
ततो + एव = **ततोव**
चत्तारो + इमे = **चत्तारो मे**

ते+अह=**तेह**
वसलो+इति=**वसलोति**
आकासे+इव=**आकासेव**

§ ३ **न द्वे वा १२८**—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी दोनो मे से किसी स्वर का लोप नही होता है। जैसे—

लता+इव=**लता इव**

विकल्प से—'लताव', तथा 'लतेव' भी।

§ ४ **युवण्णानमेओ लुत्ता १२९**—लुप्त हुए स्वर से परे, 'इ' का कभी कभी 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—

तस्स+इद=तस्स्+इद=तस्स्+एद=**तस्सेद**
वात+ईरित=वात्+ईरित=**वातेरित**
वाम+ऊरू=वाम्+ऊरू=**वामोरू**
अति+इव=अत्+इव=**अतेव**
वि+उदक=व्+उदक=**वोदक**

§ ५ **यवा सरे १३०**—'इ' तथा 'उ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी उनका क्रमश 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

वि+आकतो=**व्याकतो**
इति+अस्स=इत्यस्स=इच्चस्स[1]=**इच्चस्स**[2]
अधि+इणमुत्तो=अध्यिणमुत्तो=अभ्यिणमुत्तो=अभ्भिणमुत्तो=**अज्झिणमुत्तो**[3]
सु+आगत=**स्वागत**
बहु+आबाधो=**बव्हाबाधो**,[4] **बह्वाबाधो**

---

१ **तवग्गवरणान ये चवग्गबयञ्ञा १४८**—तवग, 'व,' 'र' तथा 'ण' यदि 'य' से सयुक्त हो, तो उनका क्रमश चवग, 'ब', 'य' तथा 'ञ' हो जाता है। जैसे—

इत्यस्स=**इच्यस्स**। तथ्य=**तछ्य**। यद्येव=**यज्येव**। अध्यत्त=**अभ्यत्त**।

§ ६ **एओन १३१**—'ए' तथा 'ओ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी उनका क्रमश 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

ते + अज्ज = **त्यज्ज**

सो + अह = **स्वाह** (सो + अह = स्व + ह = व्यञ्जने दीघ-रस्सा १३३ स्वाह)

मे + अय = **म्याय**

पब्बते + अह = **पब्बत्याह**

§ ७ **गोस्सावङ् १३२**—'गो' शब्द से परे कोई स्वर आवे, तो 'गो' शब्द का 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे

गो + अस्स = गव + अस्स = गव् + अस्स = **गवास्स**

निम्नलिखित सन्धि निपात है—

तथा + एव = **तथरिव**

यथा + एव = **यथरिव**

थन्य = **थञ्य**। दिव्य = **दिब्य**। पर्येसना = **पय्येसना**। पोक्खरण्यो = **पोक्खरञ्यो**।

२ **वग्गलसेहि ते १४९**—वर्गीय वर्ण, 'ल' या 'स' के साथ यदि 'य' सयुक्त हो, तो उसका भी ('य' का भी) वही अक्षर हो जाता है। जैसे—

इच्यस्स = **इच्चस्स**। तछ्य = **तछ्छ**। यज्येव = **यज्जेव**। अभ्क्यत्त = **अभ्-झत्त**। थञ्य = **थञ्ञ**। दिब्य = **दिब्ब**। पोक्खरञ्यो = **पोक्खरञ्ञो**। फल्यते = **फल्लते**। अस्यते = **अस्सते**।

३ **चतुत्थदुतियेस्वेस ततियपठमा १३५**—यदि किसी वग के दो चतुर्थ या द्वितीय वण सयुक्त हो, तो उनमें पहले का क्रमश (उसी वग का) तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है। जैसे—तछ्छ = **तच्छ**। अभ्झत्त = **अज्झत्त**। अभ्भिझणमुत्तो = **अज्भिझणमुत्तो**।

४ **वे वा १५१**—यदि 'ह', 'व' से सयुक्त हो, तो विकल्प से उनका उलट-पलट (= विपर्यास) हो जाता है। जैसे बह्वाबाधो = **बव्हाबाधो**।

[**हस्स विपल्लासो १५०**—यदि 'ह', 'य' से सयुक्त हो, तो उनका विपर्यास हो जाता है। जैसे—गुह्य = **गुय्ह**]

२ व्यञ्जन-सन्धि

§ ८ **ब्यञ्जने दीघरस्सा १३३**—बाद मे व्यञ्जन हो, तो प्राय पूर्वस्थित ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर का क्रमश दीर्घ तथा ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

तत्र+अय=(परो क्वचि, १२७ इस सूत्र से—तत्र+य)=**तत्राय**।

मुनि+चरे=**मुनी चरे**
सम्मा+एव=**सम्मदेव**[5]
माला+भारी=**मालभारी**
सम्म+धम्मो=**सम्मा धम्मो**
खन्ति+परम=**खन्ती परम**
जायति+सोको=**जायती सोको**

§ ९ **सरम्हा द्वे १३४**—स्वर से परे व्यञ्जन हो, तो उसका (=व्यञ्जन का) कभी २ द्वित्व हो जाता है। जैसे—

प+गहो=**पग्गहो**
दु+कत=**दुक्कत, दुक्कट**[6]

§ १० **चतुत्थदुतियेस्वेस ततियपठमा १३५**—यदि किसी वर्ग के दो चतुर्थ या द्वितीय वर्ण संयुक्त हो, तो उनके पहले का क्रमश (उसी वर्ग का)

---

५ **वनतरगा चागमा १४५**—स्वर से पूर्व, कही कही 'व', 'न', 'त', 'र', 'ग', 'म', 'य' 'तथा' 'द' का आगम होता है। जैसे—

सम्मा+एव=सम्मा+देव=**सम्मदेव**। अत्त+अत्थ=**अत्तदत्थ**। यथा+इद=**यथयिद**। इध+आहु=**इधमाहु**। पुथ+एव=**पुथगेव**। नि+ओज=**निरोज**। तस्मा+इह=**तस्मातिह**। इतो+आयति=**इतोनायति**। ति+अङ्गिक=**तिवङ्गिक**।

६ **तथनरान टठणला १५२**—'त', 'थ', 'न' तथा 'र' का विकल्प से क्रमश 'ट', 'ठ', 'ण', तथा 'ल' हो जाता है। जैसे—

दुक्कत=**दुक्कट**। अत्थकथा=**अट्ठकथा**। गहन=**गहण**। परिघो=**पलिघो**। परायति=**पलायति**।

तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है। जैसे—

नि+घोसो=(सरम्हा द्वे १ ३४ इस सूत्र से—निघ्घोसो)=**निग्घोसो**

अ+खन्ति=अख्खन्ति=**अक्खन्ति**
सेत+छत्त=सेतछ्छत्त=**सेतच्छत्त**
नि+ठान=निठ्ठान=**निट्ठान**
यस+थेरो=यसथ्थेरो=**यसत्थेरो**
अ+फुट=अफ्फुट=**अप्फुट**

§११ **वि ति स्से वे वा** १ ३६—यदि 'इति' शब्द के बाद 'एव' शब्द हो, तो विकल्प से 'इति' का 'इत्व' आदेश हो जाता है। जैसे—

इति+एव=**इत्वेव**। विकल्प से—**इच्चेव**।

§१२ **ए ओ न म व ण्णे** १ ३७—'ए' तथा 'ओ' के बाद यदि कोई भी वर्ण हो, तो उनका ('ए' तथा 'ओ' का) कहीं कहीं 'अ' हो जाता है। जैसे—

सो+सीलवा=**स सीलवा**
एसो+धम्मो=**एस धम्मो**
याचके+आगते=**याचकमागते**
अकरम्हसे+ते=**अकरम्हस ते**
एसो+अत्थो=**एस अत्थो**
अग्गो+अक्खायति=**अग्गमक्खायति**

३ निग्गहीत सन्धि

§१३ **नि ग्ग ही त** १ ३८—कहीं कहीं, निग्गहीत (=अनुस्वार) का आगम होता है। जैसे—

चक्खु+उदपादि=**चक्खुं उदपादि**
त+खणे=**तंखणे**
त+सभावो=**तंसभावो**
अव+सिरो=**अवंसिरो**

पुरिम + जाति = **पुरिम जाति**
याव + चिध = **यावञ्चिध**

§ १४ **लोपो १ ३९**—कहीं कहीं, निग्गहीत का लोप हो जाता है। जैसे—
स + रत्तो = स + रत्तो = (व्यञ्जने दीघरस्सा १ ३३) **सारत्तो**
स + रागो = **सारागो**
स + रम्भो = **सारम्भो**
बुद्धान + सासन = **बुद्धान सासन**
एव + अह = **एवाह**
कथ + अह = **कथाह**
गन्तु + कामो = **गन्तुकामो**

§ १५ **परसरस्स १ ४०**—निग्गहीत से परे आने वाले स्वर का कहीं कहीं लोप हो जाता है। जैसे—
त्व + असि = **त्वसि**
वीज + इव = **वीजव**
इद + अपि = **इदम्पि**
अभिनन्दु + इति = **अभिनन्दुन्ति**
कि + इति = **किन्ति**
किं + इदानि = **किन्दानि**
अल + इदानि = **अलन्दानि**
विकल्प से—**त्वमसि, बीजमिव** इत्यादि भी।

§ १६ **वग्गे वग्गन्तो १ ४१**—निग्गहीत से परे कोई वर्गीय वर्ण रहे, तो विकल्प मे उसका (= निग्गहीत का) उसी वर्ग का अन्तिम वर्ण हो जाता है। जैसे—
त + करोति = **तङ्करोति**
त + चरति = **तञ्चरति**
त + ठान = **तण्ठान**
त + धन = **तन्धन**
त + पाति = **तम्पाति**

§ १७ **ये व हि सु ञ्ञो** १ ४२—यदि बाद मे 'य', 'एव' तथा 'हि' शब्द हो, तो पूर्वस्थित निग्गहीत का कही कही 'ञ्ञ' हो जाता है। जैसे—

य + य एव = **यञ्ञदेव**
त + एव = **तञ्ञेव**
त + हि = **तञ्हि**

§ १८ **ये स स्स** १ ४३—'य' परे हो, तो पूर्वस्थित 'स' शब्द के निग्गहीत का 'ञ' हो जाता है। जैसे—

स + यमो = **सञ्ञमो**

§ १९ **म य दा स रे** १ ४४—स्वर परे हो, तो कही कही पूर्वस्थित निग्गहीत का 'म', 'य' तथा 'द' आदेश हो जाता है। जैसे—

त + अह = **तमह**
त + इद = **तयिद**
त + अल = **तदल**

द्रष्टव्य

§ २० **छा ळो** १ ४६—'छ' शब्द से परे आने वाले स्वर का कही कही 'ळ' हो जाता है। जैसे—

छ + अग्ग = **छळग्ग**
छ + आयतन = **छळायतन**

§ २१ **त द मि ना दी नि** १ ४७—निम्नलिखित सन्धि निपात है—

त + इमिना = **तदमिना**
सकि + आगामी = **सकदागामी**
एक + इध + अह = **एकमिदाह**
सविधाय + अवहारो = **सविदावहारो**
वारिनो + वाहको = **वलाहको**
जीवन + मूतो = **जीमूतो**
छव + सयन = **सुसान**

§२२ **सयोगादि लोपो १५३**—सयोग के आदिभूत अवयव का कही कही लोप हो जाता है। जैसे—

पुप्फ+अस्सा=**पुप्फसा**। 'अस्' जो आदिभूत अवयव है उसका लोप हो गया।

जायते+अग्गिनि=**जायते गिनि** ('अग्' जो आदिभूत अवयव है उसका लोप हो गया)।

२६. अभ्यास

१ सन्धि कीजिए —

(क) जिव्हा+इन्द्रिय। मन+इन्द्रिय। महा+ओघो। महा+इच्छो। सावु+आवुसो। मे+अत्थि। कतमो+अस्स। भिक्खुनी+ओवादो। देव+इन्दो।

(ख) चत्तारो+इमे। ते+इमे। ते+अपि। भगवा+इति। सो+अह। छाया+इव। सचे+अज्ज। वेदना+इति। बुद्धो+असि।

(ग) तत्र+अय। बुद्ध+अनुस्सति। देव+अनुभावो। सम्मन्ति+इध। बहु+उपकारो। बहु+उपायासो। विमुत्ति+इति।

(घ) सच+अह। साधु+इति। किंसु+इध। यो+अय। तथा+उपम। इतर+इतरो।

(ङ) उप+इतो। अव+इच्च। न+उपेति। मे+अय। ते+अह। सो+अय। अनु+एति। को+अत्थो। सो+एव। खो+अह। सु+आगत। ननु+एव। वि+आकतो। इति+एव।

(च) गच्छामि+अह। पञ्चहि+अङ्गेहि। वि+अकासि। परि+एसना। परि+ओसान। दु+अङ्गिक।

(छ) यथा+एव। तथा+एव। अपि+अज्ज। इध+अह। त+एव। एव+एत। त+आहु। धन+एव। त+अवोच। न+इद। मा+इद। लघु+एस्सति। एक+एकस्स। कसा+इव। सम्मा+अञ्ञा। सम्मा+अत्थो। सम्मा+अक्खातो। बहु+एव। पुन+एव। चिर+आयति। अविज्जा+अहोसि। तस्मा+इहा। यस्मा+इह। अज्ज+अग्गे। राजा+इव। सब्भि+एव।

(ज) मुनि+चरे। सम्म+सम्बुद्धो। खन्ति+परम। जायति+सोको। एसो+धम्मो। दीप+करो। पभ+करो। स+लापो। स+पलापो। स+

योगो । स+योजन । पुब्ब+गमा । याव+चिध । बुद्धान+सासन । देवान+पियो । स+रागो ।

(झ) एव+अस्स । इध+अह । अभि+अञ्ञासि । अति+अन्त । अपि+एव । इति+एव । इति+आदयो । अनु+एति । नि+सरण । उ+भवो । नि+आसो ।

२ सन्धि विच्छेद कीजिए—

एक मिदाह । अज्जतग्गे । पगेव । एकासने । कतिपाहच्चयेन । सो पज्ज दिस्सति । पाणुपेत । स्वागत । त्याह । देवानुभावो । सेय्यथापि । यथरिव । मनसाकासि । पुब्बङ्गमा । सेय्यथीद । इतरीतरेन । अज्झोगाहित्वा । पच्चन्ते । अब्भोकासिको । अपेव नाम । उप्पन्नो । कतावकासो । अन्वेति । जिह्विन्द्रिय । एतदह्योसि । मुनीचरे । गच्छामह । अहञ्ञेव । चाह । चक्क व । छायाव । भगवाति । इतिपि । परियोसान । सम्मावायामो । सम्मा-सम्बुद्धो । पञ्चिन्द्रिय । सकदागामी । बुद्धान सासन । देविन्दो । भिक्खुनोवादो । चक्खु उदपादि । सारत्तो ।

पाँचवाँ काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(आठवाँ भाग—सनन्त)

'ख', 'स', 'छ' प्रत्यय

§ २४ **तुस्मा लोपो चिच्छाय ते ५ ४**—इच्छा करने के अर्थ मे, 'तु'-प्रत्ययान्त धातु से परे, बहुधा 'ख', 'स' और 'छ' प्रत्यय होते है। इन प्रत्ययो के लगने से, 'तु' प्रत्यय का लोप हो जाता है। जैसे—

'ख'—भोत्तु इच्छति इति—**बुभुक्खति**=भोजन करने की इच्छा करता है।

'स'—जेतु इच्छति इति—**जिगिंसति**=जीतने की इच्छा करता है।

'छ'—घसितु इच्छति इति—**जिघच्छति**=खाने की इच्छा करता है।

नोट—यहाँ 'बुभुक्ख', 'जिगिस', 'जिघच्छ' आदि अपने मे स्वतत्र धातु हो गए, जिनके रूप सभी काल मे होगे। जैसे—**बुभुक्खति, बुभुक्खिस्सति, बुभुक्खि, बुभुक्खेय्य, बुभुक्खतु** इत्यादि।

§ २५ **खछसानमेकस्सरोदि द्वे ५ ६९**—'ख', 'छ', 'स', प्रत्ययो के लगने से, धातु के प्रथम एक स्वर-युक्त अश का द्वित्व हो जाता है। जैसे—तिज+ख+ति=तितिज+ख+ति=**तितिक्खति**

§ २६ **आदिस्मा सरा ५ ७१**—यदि धातु के आदि मे ही स्वर हो, तो उसको ले कर एक और स्वर तक द्वित्व होता है। जैसे—अस+स+ति=**असिसिसति**=खाने की इच्छा करता है।

§ २७ **चतुत्थदुतियान ततियपठमा ५ ७८**—द्वित्व होने पर, पूर्व-स्थित चतुर्थ वर्ण का तृतीय, और द्वितीय का प्रथम हो जाता है। जैसे—

भुज+ख+ति= भुभुज+ख+ति=बुभुज+ख+ति=**बुभुक्खति**। छिद+अ=**चिच्छेद**।

§ २८ **कवग्गहान चवग्गजा ५ ७९**—द्वित्व होने पर, पूर्वस्थित कवर्ग का चवर्ग, और 'ह्' का 'ज' हो जाता है। जैसे—कम+स+ति=ककम+स+ति=चकम+स+ति=**चिकमिसति**। हस+स+ति=हहस+स+ति=जहस+स+ति=**जिहसिसति**।

§ २९ **खछसेस्वस्सि ५ ७६**—'ख', 'छ', 'स', प्रत्ययो के आने से, द्वित्व होने पर, पूर्वस्थित अकार का इकार हो जाता है। जैसे—चकम+स+ति=**चिकमिसति**। जहस+स+ति=**जिहसिसति, पिपासति**।

§ ३० **ञि ब्यञ्जनस्स ५ १७०**—व्यञ्जन से शुरू होने वाला कोई प्रत्यय आवे, तो धातु के अन्त्य स्वर का 'इ' आदेश हो जाता है। जैसे—चकम+स+ति=**चिकमिसति**। जहस+स+ति=**जिहसिसति**।

§ ३१ **रस्सो पुब्बस्स ५ ७४**—द्वित्व होने पर, पूर्व स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—गाह+स+ति=गागाह+स+ति=जागाह+स+ति=जगाह+स+ति=**जिगाहिसति**। पाल+स+ति=पापाल+स+ति=पपाल+स+ति=**पिपालिसति**। **ददाति**। **जहाति**।

लोपो नादिब्यञ्जनस्स ५ ७५—द्वित्व होने पर, आदि से भिन्न पूर्व व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे—

असु+स+ति=असअस+स+ति=**असिसिसति**।

§ ३२ **यथिट्ठं स्यादिनो ५ ७३**—नाम-धातु मे, आदिभूत एक स्वर, या जैसी इच्छा, किसी दूसरे स्वर का द्वित्व कर देते है। जैसे—**पुपुत्तीयिसति, पुतित्तीयिसति**, या **पुत्तीयियिसति**।

§ ३३ **परस्स घ से ५ १०१**—'हन' धातु के द्वित्व होने पर, दूसरे 'ह' का 'घ' आदेश होता है। जैसे—हन+स+ति=हहन+स+ति=जघ+स+ति=**जिघसति**।

§ ३४ **जिहरान गि ५ १०२**—'जि' तथा 'हर' धातुओ के द्वित्व होने पर, दूसरे भाग का 'गिं' हो जाता है। जैसे—**जिगिंसति**। हर—**जिगिंसति**।

२७. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

जिघच्छा परमा रोगा ति । जिघच्छु हि **बुभुक्खति,** सीत वा उण्ह वा **तिति-क्खितु** न सक्कोति, धम्म **सुस्सूसन्तो** पि **वीमसितु** समत्थो नाम न होति । दान **दिच्छन्तेन** न किञ्चि **जिगुच्छितब्ब,** न दिन्न **जिगिसितब्ब** । अमत **पिवासुना** (पिपासुना) धम्मो वीमसितब्बो । गिलाने (बिमार) **तिकिच्छापेत्वा** सग्ग **जिगिसति ।**

२ ऊपर के काले अक्षरो में छपे पदो की व्युत्पत्ति बताइए ।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) खाने की इच्छा से खाता है, पीने की इच्छा से पीता है। मुझ न तो खाने की इच्छा है न पीने की इच्छा है, केवलमात्र भगवान् के धर्म्म को सुन कर, मनन करने की इच्छा है । क्या आप को कुछ कहने की इच्छा है ? नही, अब तो केवल पढने की इच्छा है ।

(ख) मरने की इच्छा । सोने की इच्छा। देखने की इच्छा करता है। जाने की इच्छा करेगा। बैठने की इच्छा करता है। पढने की इच्छा स। विचार करने की इच्छा। भूख प्यास के मारे भागने की इच्छा करता है। भगवान् को देखने की इच्छा। धम्म सुनने की इच्छा से, विहार जाने की इच्छा करता है । बुद्ध-धम्म जानने की इच्छा से त्रिपिटक पढने की इच्छा करता है । काम करने की इच्छा ।

४ निम्नलिखित वाक्य खण्डो के लिए एक पद लिखिए—

(क) खादितु इच्छति । गन्तु इच्छिस्सति । सोतु इच्छामि । पातु इच्छति । जेतु इच्छथ । अत्तु इच्छेय्यामि । विहरितु इच्छामि । पठितु इच्छिसु ।

(ख) गन्तु-कामो । खादितु-कामा । सोतु-कामेन । अत्तु-कामताय । विहरितु-कामा । जेतु-कामा । पातु-कामान । सोतु-कामेहि । गन्तु-कामा । पठितु-कामायो । पचितु-कामासु ।

पाँचवाँ काण्ड

तीसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(नवाँ भाग—नाम धातु)

नाम धातु

कभी कभी, हिन्दी मे भी सज्ञा या विशेषण के रूप कुछ बदल कर, उनसे क्रिया का काम ले लेते है। जैसे—'फूल' से 'फुलाना', 'जूता' से 'जुतियाना', 'गरम' से 'गरमाना', 'चटचट' से 'चटचटाना' इत्यादि। इन्हे नामधातु कहते हैं।

पाली मे भी, इसी तरह, सज्ञा (नाम) से क्रिया बनाने के लिए, उनके आगे—विशेष अर्थ में—पाँच प्रत्यय आते है—(१) ईय, (२) आय, (३) अस्स, (४) इ, (५) आपि। इन प्रत्ययो से युक्त होने पर जो रूप बनता है, उसे 'नाम धातु' कहते है। स्वतत्र धातु की तरह, 'नाम धातु' के भी रूप सभी काल मे होते है।

१ ईय

§ ३५ **ईयो कम्मा ५ ५**—इच्छा करने के अर्थ मे, इच्छा के कर्म से परे, 'ईय' प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्त इच्छति—**पुत्तीयति**=पुत्र की इच्छा करता है। **धनीयति**=धन की इच्छा करता है।

[**एकत्थताय २ १२१**—एकार्थी-भाव होने से (=अर्थात् नामधातु, समास और तद्धित मे), प्राय सभी विभक्तियो का लोप होता है। जैसे—पुत्त+ईय+ति=पुत्त+ई+ति=**पुत्तीयति**। रञ्ञो पुरिसो—**राजपुरिसो**। वसिट्ठस्स अपच्च—**वासिट्ठो**]

[कही कही लोप नही होता है। जैसे—**परन्तपो। भगन्दरो। परस्सपद। अत्तनोपद। गवम्पति। देवानम्पियतिस्सो। अन्तेवासी। जनेसुतो। ममत्त। मामको**]

§ ३६ **उपमानाचारे ५ ६**—'इस जैसा आचरण करता है', इस अर्थ मे उपमान-भूत कर्म से उत्तर 'ईय' प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्तमिवाचरति—**पुत्तीयति सिस्स**=शिष्य को पुत्र की तरह मानता है।

§ ३७ **आधारा ५ ७**—'इसमे ऐसा आचरण करता है', इस अर्थ मे उपमान के उत्तर 'ईय' प्रत्यय होता है। जैसे—कुटिय इव आचरति—**कुटीयति पासादे**=प्रासाद मे इस तरह रहता है, मानो कुटी मे। **पासादीयति कुटिय**=कुटी मे इस तरह रहता है, मानो प्रासाद मे।

२ आय

§ ३८ **कत्तुतायो ५ ८**—आचरण करने के अर्थ मे, कर्त्ता के उपमान के उत्तर 'आय' प्रत्यय होता है। जैसे—पब्बतो इव आचरति—**पब्बतायति**=पर्वत के ऐसा आचरण करता है।

§ ३९ **च्यत्थे ५ ९**—जो नही है उसके हो जाने के अर्थ मे, कर्त्ता से परे, कभी कभी 'आय' प्रत्यय होता है। जैसे—अभुसो भुसो भवति इति—**भुसायति**=जो अधिक नही था, वह अधिक हो जाता है। अपटपटो पटपटो भवति इति—**पटपटायति**=जो पटपट नही करता था, वह पटपट करता है। अलोहितो लोहितो भवति इति—**लोहितायति**=जो लाल नही था, वह लाल होता है।

§ ४० **सद्दादीनि करोति ५ १०**—शब्द आदि करने के अर्थ मे, 'आय' प्रत्यय होता है। जैसे—**सद्दायति**=शब्द करता है। **वेरायति**=वैर करता है। **कलहायति**=कलह करता है।

३ अस्स

§ ४१ **नमोत्वस्सो ५ ११**—'नमो' करने के अर्थ मे, उसके उत्तर 'अस्स' प्रत्यय होता है। **नमस्सति**=नमस्कार करता है।

४ इ

§ ४२ **धात्वत्थे नामस्मा इ** ५ १२—नाम-धातु में बहुधा 'इ' प्रत्यय है। जैसे—हत्थिना अतिक्कमति इति—**अतिहत्थयति**=हाथी से आक्रमण करता है। वीणाय उपगायति इति—**उपवीणायति**=वीणा के साथ गाता है। दल्ह करोति—**दल्हयति विनय**। विसुद्धा होति रत्ति—**विसुद्धयति**=साफ होती है। कुसल पुच्छति—**कुसलयति**=कुशल पछता है।

५ आपि

§ ४३ **सच्चादीहापि** ५ १२—'सच्च' आदि [देखिए-तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, नाम-धातु मे 'आपि' प्रत्यय होता है। जैसे—**सच्चापेति, सच्चापयति**=सत्य सिद्ध करता है। **सुखापेति, सुखापयति**=सुख करता है। इत्यादि

२८. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) किं सद्दायति ? यं धूमायति तं मेव सद्दायति । अथ खो सो पायासो उदके पक्खित्तो चिच्चिटायति, चिटिचिटायति, सन्धूपायति सम्पधूपायति । को समत्थो पब्बतायित्वा समुद्दायितु, समुद्दायित्वा पब्बतायितु च ? महामोग्गल्लानो ति । सो अन्तेवासिनो पुत्तीयति । अन्तेवासिनो पि पुत्तायन्ते । भिक्खु चीवरीयति, पत्तीयति, न खो धनीयति । सो मं कुसल-यित्वा अतिहत्थयितु पक्कामि ।

(ख) पब्बतायति । समुद्दायति । धूमायति । दारका पुत्तायन्ति । पुत्तायन्ते दारके अज्झापको पुत्तीयति । पत्तीयन्तान च वत्थीयन्तान च भिक्खून । चीवरीयमानान भिक्खुनीन । पुथुज्जनो वेरायति, थेनेति, सद्दायति, कलहा-यति । चित्रयति ।

२ पालि में अनुवाद कीजिए—

अपने पुत्र की इच्छा करता है । अपने धम्म की इच्छा करता है । राजा के समान आचरण करता है । मूख के समान आचरण करता है । पण्डित के समान आचरण करता है । दृढ करता है । बैर करता है । शब्द करता है । प्रणाम करता है । सुख, दुख, अनुभव करता है ।

३ (क) इच्छार्थक तथा नाम-धातु में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर समझाइए ।

(ख) प्रेरणाथक तथा नाम-धातु में क्या भेद है ? उदाहरण देकर समझाइए ।



पाँचवाँ काण्ड

चौथा पाठ

स्त्री प्रत्यय

पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, शब्द से परे सात प्रत्यय आते ह—(१) आ, (२) डी (३) इनी, (४) नी, (५) आनी, (६) ऊ, और (७) ति

१. आ

इत्थियमत्वा ३२६—पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, अकारान्त शब्द से परे 'आ' प्रत्यय आता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	*स्त्रीलिङ्ग*
सुसीलो	**सुसीला**
धम्मदिन्नो	**धम्मदिन्ना**
धनिको	**धनिका**
सबलो	**सबला**
बालको	**बालिका**[1]
कारको	**कारिका**[1]

---

१ **अधातुस्स के 'स्यादितो घे' स्सि ४ १४२**—स्त्री प्रत्यय आने से, अधातु शब्द के 'क' के पहले 'अ' का बहुधा 'इ' होता है। जैसे—

बालक—**बालिका**। कारक—**कारिका**।

२. ङी

नदादितो ङी ३ २७—'नद' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे 'ङी' प्रत्यय आता है। 'ङी' का केवल 'ई' रह जाता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	*स्त्रीलिङ्ग*
नद	**नदी**
मिग (=मृग)	**मिगी**
कुमार	**कुमारी**
तरुण	**तरुणी**
वारुण	**वारुणी**
गोतम	**गोतमी**

न्तन्तूनं ङिम्हि तो वा ३ ३६—'ङी' प्रत्यय लगने से, 'न्त' तथा 'न्तु' का विकल्प से 'त' आदेश हो जाता है (देखिए—पृ० ८२,१४२,१६०)। जैसे—

पुल्लिङ्ग	*स्त्रीलिङ्ग*
गच्छन्त	**गच्छती, गच्छन्ती**
गुणवन्तु	**गुणवती, गुणवन्ती**

भवतो भोतो ३ ३७—'ङी' प्रत्यय लगने से, 'भवन्त' शब्द का विकल्प से 'भोत' आदेश हो जाता है। जैसे—**भोती, भवन्ती।**

गोस्सावङ् ३ ३९—'गो' शब्द से 'ङी' प्रत्यय लगने से **'गावी'** रूप होता है।

पुथुस्स पथव-पुथवा ३ ४०—'ङी' प्रत्यय आने से, 'पुथु' (=पृथु) शब्द का 'पथव' तथा 'पुथव' आदेश हो जाता है। जैसे—**पथवी, पुथवी, पठवी।**

३ इनी

यक्खादितो इनी च ३ २८—यक्ख (=यक्ष) आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'इनी' प्रत्यय होता है, और 'ङी' भी। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
यक्ख	**यक्खिनी, यक्खी**
नाग	**नागिनी, नागी**
सीह (=सिंह)	**सीहिनी, सीही**

आ रा मि का दी हि २ २९—'आरामिक' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे 'इनी' प्रत्यय होता है। जसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
आरामिको (=आराम म रहने वाला)	**आरामिकिनी**
राजा	**राजिनी**
मानुस	**मानुसिनी**

४ नी

इ-उवण्णेहि नी ३ ३०—इकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, तथा उकारान्त शब्दो से परे, बहुधा 'नी' प्रत्यय आता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सदापयतपाणि	**सदापयतपाणिनी**
दण्डी	**दण्डिनी**
भिक्खु	**भिक्खुनी**
खत्तबन्धु	**खत्तबन्धुनी**
परचित्तविदू	**परचित्तविदुनी**

क्ति म्हा अञ्ञत्थे ३ ३१—अन्यार्थ (बहुव्रीहि) मे, यदि 'क्ति' प्रत्ययान्त शब्द हो, तो उससे परे 'नी' प्रत्यय होता हे। जैसे—

सा अहं अहिंसारतिनी=वह मैं अहिंसा मे रति रखने वाली। **साहं उपट्ठित-सतिनी**=वह मै उपस्थित स्मृति वाली।

घ रण्या द यो ३ ३२—'घरणी' (=गृहिणी) आदि शब्द निपात-सिद्ध है। जैसे—**घरणी, पोक्खरणी** (=पुष्करणी) इत्यादि।

५ आनी

मातुलादितो आनी भरियाय ३ ३३—भार्या होने के अर्थ मे, 'मातुल' (=मामा) आदि शब्दो से परे, 'आनी' प्रत्यय होता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	*उसकी भार्या*
मातुल	**मातुलानी**
वरुण	**वरुणानी**
गहपति	**गहपतानी**

६ ऊ

उपमा-सहित-सहित-सञ्ञत-सह-सथ -वाम-लक्खणा-दितो उरुतो ऊ ३ ३४—उपमान, तथा 'सहित' आदि शब्द यदि पूर्व में रहे, तो (स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए) 'उरु' शब्द से परे 'ऊ' प्रत्यय होता है। जसे—**करभोरू** (=करभ के समान जिसकी जाँघ हो), **सहितोरू** (=मिली हुई जघो वाली), **सहितोरू** (=मिली हुई जघो वाली), **सञ्ञतोरू** (=सयत जघो वाली), **सहोरू** (=साथ मिली हुई जघो वाली), **वामोरू** (=सुन्दर जघो वाली), **लक्खणोरू** (=लक्षित जघो वाली)।

७ ति

युवा ति ३ ३५—स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, 'युव' (=युवक) शब्द से परे 'ति' प्रत्यय होता है। जैसे—**युवति**।

रिरिय

करा रिरियो ५ ५१—स्त्रीलिङ्ग मे, 'कर' धातु से परे, 'रिरिय' प्रत्यय होता है। जैसे—कर+रिरिय=(रानुबन्धेन्त सरादिस्स ४ १३२) क्+इरिय=किरिय।

इत्थियमत्वा ३ २६—इस सूत्र से—**किरिया**=क्रिया। पालि मे **'क्रिया'** शब्द निपात है।

२६. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

माता कञ्ञायो नज्ज नहापेति। भिक्खुनियो भगवन्त दस्सन-कामा होन्ति। माणविकायो भिक्खुनी नमस्सन्ति। भोति देवते! चरहि को एत जानाति? गुणवतियो (गुणवन्तियो) इत्थियो महतिय परिसाय पि पससितायो होन्ति। कञ्ञाय धम्मी कथा सोतब्बा, मुसाय वाचाय वेरमणी हुत्वा पेमनीया सुभासिता वाचा भासितब्बा। सिया ब्राह्मणी, सिया खत्तिया, सिया गहपतानी वेस्सा, सिया सुद्दा—सब्बा इत्थियो झानीहि भावनारामेहि जिगुच्छितब्बायो।

२ निम्नलिखित शब्दों का स्त्रीलिङ्ग रूप लिखिए—

(क) गहपति, खत्तियो, ब्राह्मणो। देवो, इन्दो, राजा। पुत्तो, भाता, पिता, मातुलो। भिक्खु, सामणेरो, उपासको, आचरियो, उपज्झायो। यक्खो, नागो, कुमारो, हत्थि, अस्सो, हसो।

(ख) गच्छन्तो कुमारा। पस्सन्तो भातरो। खादन्तो दारका। पठन्तो माणवका। झायमाना भिक्खवो। पसन्ना देवा। निसिन्ना ब्राह्मणा।

३ निम्नलिखित स्त्री-प्रत्ययों के उदाहरण लिखिए—

आ। आनी। इनी। ऊ। डी। नी।

छठा काण्ड

पहला पाठ

(क)

तद्धित-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष प्रत्यय)

प्रथमान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ४२ **सास्स देवता पुण्णमासी** ४ १३—'वह इसकी देवता या पूर्णमासी है' इस अर्थ मे, उस शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। 'ण' का 'अ' रह जाता है। [देखिए—पृ० २५५ पाद-टिप्पणी] जैसे—

देवता—सुगतो देवता अस्साति—**सोगतो**=बौद्ध

महिन्दो देवता अस्साति—**माहिन्दो**=महेन्द्र का उपासक

यमो देवता अस्साति—**यामो**=यम का उपासक

वरुणो देवता अस्साति=**वारुणो**=वरुण का उपासक

पूर्णमासी—

फुस्सी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—**फुस्सो मासो**=पूस महीना।

माघी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—**माघो मासो**=माघ महीना।

फग्गुनी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—**फग्गुनो मासो**=फागुन महीना।

इसी तरह—**चित्तो**=चैत । **वेसाखो**=वैशाख । **जेट्ठमूलो**=जेठ । **आसाळ्हो**=असाढ । **सावणो** । **पुट्ठपादो**=भादो । **अस्सयुजो**=आसिन । **कत्तिको**=कातिक । **मागसिरो**=मृगशिरा ।

§ ४३ **त मि ध त्थि** ४ १९—'वह इस जगह पाया जाता है' इस अर्थ मे, उस शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है । 'ण' का 'अ' रह जाता है । जैसे—

उदुम्बरा अस्मि देसे सन्ति इति—**ओदुम्बरो**=जिस जगह गूलर बहुत पाया जाय ।

खदरा अस्मि देसे सन्ति इति—**खादरो**=जिस जगह 'खैर' बहुत पाया जाय ।

बब्बजा अस्मि देसे सन्ति इति—**बब्बजो**=जिस जगह बब्वज नाम की घास पाई जाती है ।

णिक, क

§ ४४ **त म स्स सि प्प सी ल प ण्य प ह र ण प यो ज न** ४ २७—'यह उसका शिल्प, शील, पण्य, अस्त्र या प्रयोजन है' इस अर्थ मे, उस शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है । 'णिक' का 'इक' रह जाता है। जैसे—

शिल्प—

वीणा-वादन सिप्पमस्स—**वेणिको**=वीणा बजाना जिसका शिल्प है । **मोदङ्गिको**=मृदङ्ग बजाना जिसका शिल्प है ।

शील—

पसुकूलधारण सीलमस्स—**पसुकूलिको**=फेंके चिथडे ही धारण करने का जिसनें शील ग्रहण किया है । **तेचीवरिको**=तीन चीवर ही धारण करने का जिसने शील ग्रहण किया है ।

पण्य—

गन्धो पण्यमस्स—**गन्धिको**=गन्ध बेचने वाला । **तेलिको**=तेल बेचने वाला ।

अस्त्र—

चापो पहरणमस्स—**चापिको**=तीर जिसका अस्त्र है । **तोमरिको**=भाला चलाने वाला । **मुग्गरिको**=मुग्दर चलाने वाला ।

प्रयोजन (=हेतु)

उपधिप्पयोजनमस्स—**ओपधिक**=पुनजन्म का जो हेतु हो। **सातिक**= स्वास्थ्य बनाए रखने का जो हेतु हो।

§ ४५ **निन्दा, अञ्ञात, अप्प, पटिभाग, रस्स, दया, सञ्ञासु को** ८ ४०—'निन्दा' आदि अर्थों मे, नाम से परे 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—

निन्दा—**मुण्डको, समणको**। *अज्ञात*—कस्साय अस्सोति—**अस्सको**। *अल्प*—**तेलक, घतक**। *प्रतिभाग*—हत्थि विय—**हत्थिको, अस्सको, बलि बद्दको**। *ह्रस्व*—**मानुसको, रुक्खको, पिलक्खको**। *दया*—**पुत्तको, वच्छको**। *सञ्ज्ञा*—मोरो विय—**मोरको**।

§ ४६ **तमस्स परिमाण णिको च** ४४१—'यह इसका परिमाण है' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है, और 'क' प्रत्यय भी। जैसे—

दोणो परिमाणमस्स—**दोणिको वीहि**=द्रोण भर धान। **खारसतिको वीहि**=सौ खार धान। **आसीतिको वयो**=अस्सी साल की आयु। **पञ्चक**= पाँच का। **छक्क**=छ का।

त्तक

§ ४७ **यतेतेहि त्तको** ४४२—ऊपर के ही अर्थ मे, 'य', 'त', तथा 'एत' शब्दो से परे, 'त्तक' प्रत्यय होता है। जैसे—

य परिमाणमस्स—**यत्तक**=जितना। **तत्तक**=तितना। **एत्तक**[1]=इतना।

आवन्तु

§ ४८ **सब्बा चावन्तु** ४४३—ऊपर के ही अर्थ मे, 'सब्ब', 'य', 'त', तथा 'एत' शब्दो से परे, 'आवन्तु' प्रत्यय होता है। जैसे—

---

१ **एतस्सेद् त्तके** ४१४०—'त्तक' प्रत्यय आने से, 'एत' शब्द का 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—एत परिमाणमस्स—एत+त्तक=ए+त्तक= **एत्तक**।

सब्ब परिमाणमस्स—**सब्बावन्त**=सभी। **यावन्त** =जितना । **तावन्त**= तितना। **एत्तावन्त**=इतना।

रति, रीव, रीवतक, रित्तक

§ ४६ **किम्हा रति-रीव-रीवतक-रित्तका** ४४४—ऊपर के ही अर्थ में, 'कि' शब्द से परे, 'रति', 'रीव', 'रीवतक', तथा 'रित्तक' प्रत्यय होते है। जैसे—

किं सख्यान परिमाणमेस—**कति, कीव, कीवतक, कित्तक**=**कितने**।

इनमे 'कीव' शब्द अव्यय है।

[देखिए—तद्धित परिशिष्ट]

इत

§ ५० **सजात तारकादित्वितो** ४४५—'यह इसमे उगा (=सजात) है' इस अर्थ मे, 'तारक' आदि शब्दो से परे 'इत' प्रत्यय होता है। जैसे—

तारका सजाता अस्स—**तारकित गगन**। **पुप्फितो रुक्खो**=पुष्पित वृक्ष। **पल्लविता लता**।

मत्त

§ ५१ **माने मत्तो** ४४६—'इतना भर' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'मत्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

पलमत्त=पल भर। **हत्थमत्त**=हाथ भर। **सतमत्त**=सौ भर। **दोणमत्त**= द्रोण भर।

तग्घो

§ ५२ **तग्घो चुद्ध** ४४७—ऊपर के ही अर्थ मे, यदि ऊँचाई प्रतीत हो, तो शब्द से परे 'तग्घ' प्रत्यय होता है, और 'मत्त' भी। जैसे—

जाणुतग्घ, जाणुमत्त=जाघ भर ऊँचा।

ण

§ ५३ **णो च पुरिसा** ४४८—ऊपर के ही अथ मे, यदि ऊँचाई प्रतीत हो, तो 'पुरिस' शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है, और 'मत्त' तथा 'तग्घ' भी। जैसे—

पोरिस, पुरिसमत्त, पुरिसतग्घ=पुरुष भर ऊँचा।

अय

§ ५४ **अयुभद्वितीहरो** ४४९—अश का यदि बोध होता हो, तो 'उभ', 'द्वि' तथा 'ति' शब्दो से परे 'अय' प्रत्यय होता है। जैसे—

उभो असा अस्स—**उभय**=दोनो अश। **द्वय**=दोनो अश। **तय**=तीनो अश।

क आकी

§ ५५ **एकाकाक्यसहाये** ४५५—'असहाय' के अथ मे, 'एक' शब्द से परे 'क' तथा 'आकी' प्रत्यय होते है। जैसे—

एकको, एकाकी=अकेला=असहाय।

रतर, रतम, इस्सिक, इय, इट्ठ

§ ५३ **किम्हा निद्धारणे रतर-रतमा** ४५७—बहुतो मे से एक का निर्धारण जाना जाय, तो 'कि' शब्द से परे 'रतर' तथा 'रतम' प्रत्यय होते है। जैसे—

कतरो कतमो वा देवदत्तो भवत=आप लोगो मे कौन देवदत्त है?

§ ५४ **तरतमिस्सिकियिट्ठातिसये** ४६४—अतिशय का अर्थ जाना जाय, तो शब्द से परे 'तर', 'तम', 'इस्सिक', 'इय', तथा 'इट्ठ' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अतिसयेन पापो—**पापतरो, पापतमो, पापिस्सिको, पापियो, पापिट्ठो**=अत्यन्त पापी।

जेय्यो, जेट्ठो[१]। **साधियो, साधिट्ठो**[२]। **नेदियो, नेदिट्ठो**। **सेय्यो, सेट्ठो**[३]। **कणियो, कणिट्ठो**[४]। **मेधियो, मेधिट्ठो**[५]।

§ ५५ **क्वचि प्पच्चये** ३ ६८—प्रत्यय परे हो, तो स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द कही कही पुल्लिङ्ग-रूप ग्रहण करता है। जैसे—अतिसयेन व्यत्ता—**व्यत्ततरा, व्यत्ततमा**।

द्वितीयान्त शब्दो से परे आने वाले प्रत्यय

ण, क, णिक

§ ५६ **तमधीते तं जानाति कणिका च** ४ १४—'उसको अध्ययन करता है, या जानता है', इस अर्थ मे शब्द से परे 'ण', 'क' तथा 'णिक' प्रत्यय होते है। जैसे—

व्याकरण अधीते जानाति वा—**वेय्याकरणो**। **छान्दसो**=छन्द-शास्त्र को जो अध्ययन करता है, या जानता है। **पदको**=पद को अध्ययन करने, या जानने वाला। **वेनयिको**=विनय को अध्ययन करने, या जानने वाला। **सुत्तन्तिको**=सूत्र-पिटक को अध्ययन करने, या जानने वाला।

---

२ **जो वुद्धस्सियिट्ठेसु** ४ १३५—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययो के आने से, 'वुद्ध' शब्द का 'ज' आदेश होता है। जैसे—अतिसयेन वुद्धो—**जेय्यो, जेट्ठो**।

३ **बाळ्हन्तिकपसत्थानं साधनेदसा** ४ १३६—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययो के आने से, 'बाळ्ह', 'अन्तिक', तथा 'पसत्थ' शब्दो का यथाक्रम 'साध', 'नेद' तथा 'स' आदेश होता है। जैसे—

अतिसयेन बाळ्हो—**साधियो, साधिट्ठो**। अतिसयेन अन्तिको—**नेदियो, नेदिट्ठो**। अतिसयेन पसत्थो—**सेय्यो, सेट्ठो**।

४ **कण्कनाप्पयुवानं** ४ १३७—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययो के आने से, अधिक अल्प के अर्थ मे, 'युव' शब्द का 'कण्' तथा 'कन' आदेश हो जाता है। जैसे—

कणियो, कणिट्ठो। कनियो, कनिट्ठो।

५ **लोपो वीमन्तुवन्तूनं** ४ १३८—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययो के आने से, 'वी', 'मन्तु' तथा 'वन्तु' प्रत्ययो का लोप हो जाता है। जैसे—

अतिसयेन मेधावी—**मेधियो, मेधिट्ठो**। अतिसयेन सतिमा—**सतियो, सतिट्ठो**। अतिसयेन गुणवा—**गुणियो, गुणिट्ठो**।

णिक

§ ५७ **त ह न्त र ह ति ग च्छ तु च्छ ति च र ति** ४ २८—'उसे बध करता है, उसे पाने का योग्य होता है, वहाँ जाता है, वहाँ उञ्छन करता है, उसका आचरण करता है'—इन अर्थो मे, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

पक्खिको, साकुणिको=चिडीमार। **मायूरिको**=मोर मारने वाला। **मच्छिको, मेनिको**=मछुआ। **मागविको, हारिणिको**=हरिण मारने वाला व्याधा। **सूकरिको**=सूअर मारने वाला।

सत अरहति इति—**सातिक**=सौ रुपये पा सकने वाला। **सन्दिट्ठिक**=जीते जी देखा जा सकने वाला। **एहिपस्सिको**=जिसके विषय मे यह कहा जा सके कि 'आवो, इसे देखो'।

परदार गच्छतीति—**पारदारिको**=परस्त्री-गमन करने वाला। **मग्गिको**=राह मे जाने वाला। **पञ्ञासयोजनिको**=पचास योजन जाने वाला।

खदरे उञ्छति इति—**खादरिको**=खैर इकट्ठा करने वाला। **सामाकिको**=सामाक धान बटोरने वाला।

धम्म चरति इति=**धम्मिको**। **अधम्मिको**।

ल्ल

§ ५८ **त न्नि स्सि ते ल्लो** ४ ६५—'उसको आधार मान कर होने वाले' के अर्थ मे, शब्द से परे 'ल्ल' प्रत्यय होता है। जैसे—

वेदनिस्सित—**वेदल्ल**। दुट्ठुनिस्सित—**दुट्ठुल्ल**।

णेय्य

§ ५९ **द क्खि णा या र हे** ४ ७६—'उसको पाने का योग्य होना' इस अर्थ मे, 'दक्खिणा' शब्द से परे 'णेय्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

दक्खिण अरहती ति—**दक्खिणेय्यो**=जो दक्षिणा पाने का योग्य पात्र है।

[**ण्यो तु म न्ता** ४ ७७—ऊपर के ही अर्थ मे, 'तु' प्रत्ययान्त होने से, 'ण्य'

प्रत्यय होता है। जैसे—

घातेताय वा घातेतु। पब्बाजेताय वा पब्बाजेतु]

तृतीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ६० **ण रागा तेन रत्त ४ ११**—'इस रँग से रगा हुआ', इस अर्थ मे शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। [पृ० २५५, पाद टि०] जैसे—

कासावेन रत्त—**कासाव**=काषाय रँग से रगा हुआ। **कोसुम्भ**=कुसुम के रग से रगा हुआ। **हालिद्द**=हल्दी के रग से रगा हुआ।

§ ६१ **नक्खत्तेनिन्दुयुत्तेन काले ४ १२**—यदि इन्दु-युक्त नक्षत्र से कोई काल लक्षित हो, तो उससे परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

फुस्सी रत्ति=पूस की रात। **फुस्सो अहो**=पूस का दिन।

§ ६२ **तेन निब्बत्ते ४ १८**—'उसके द्वारा बनाया गया' इस अर्थ मे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—कुसम्बेन निब्बत्तो—**कोसम्बी**=जो नगरी कुसम्ब ऋषि के द्वारा बसाई गई है। **काकन्दी। माकन्दी।** सहस्सेन निब्बत्ता **साहस्सी**—परिखा।

§ ६३ **तेनकत, कीत, बद्ध, अभिसखत, ससट्ठ, हत, हन्ति, जित, जयति, दिब्बति, खणति, तरति, चरति, वहति, जीवति ४ २९**—'इससे किया गया है, खरीदा गया है, बाँधा गया है, अभिसस्कृत किया गया है, लगा है, मारा गया है, मारता है, जीता गया है, जीतता है, खेलता है, खनता है, तरण करता है, आचरण करता है, वहन करता है, जीता है,'—इन अर्थों मे, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कायेन कत—**कायिक**=शरीर से किया गया। **वाचसिक**=वचन से किया गया। **मानसिक**=मन से किया गया। वातेन कतो आबाधो—**वातिको**= वायु के कारण उत्पन्न रोग।

सतेन कीत—**सातिक**=सौ रुपये मे खरीदा गया। **साहस्सिक**=हजार रुपए मे खरीदा गया।

वरत्ताय बद्धो—**वारत्तिको**=रस्सी से बँधा। **आयसिको**=लोहे से बँधा हुआ। **पासिको**=जाल से बँधा हुआ।

घतेन अभिसङ्खत ससट्ठ वा—**घातिक**=घी से तैयार हुआ, या मिला। **गोळिक**=गुड से ०। **दाधिक**=दही से ०। **मारीचिक**=मिर्च से ०।

जालेन हतो हन्तीति वा=**जालिको**=जाल से मरा हुआ, या मारने वाला। **बाळिसिको**=बंसी से ०।

अक्खेहि जित=**अक्खिक**=पासा से जीता गया। अक्खेहि जयति दिब्बति वा—**अक्खिको**=पासा से जीतने वाला, या खेलने वाला।

खणित्तिया खणतीति—**खाणित्तिको**=खन्ती से खनने वाला। **कुद्दालिको**=कुदाल से खनने वाला।

उलुम्पेन तरति इति—**ओलुम्पिको**=बेडा से पार करने वाला। **गोपुच्छिको**=गाय की पूँछ पकड कर पार करने वाला। **नाविको**=नाव से पार करने वाला।

सकटेन चरतीति—**साकटिको**=सगड के साथ चलने वाला। **रथिको**=रथ से चलने वाला।

बन्धेन वहति—**बन्धिको**=बाँध कर वहन करने वाला। **अंसिको**=कंधे पर वहन करने वाला। **सीसिको**=शिर से वहन करने वाला।

वेतनेन जीवति—**वेतनिको**=वेतन से जीने वाला। **भतिको**=मजदूरी से जीने वाला। **कयविक्कयिको**=क्रयविक्रय करके जीने वाला।

ल, इय

§ ६४ **तेन दत्ते लिया** ४५८—'उससे प्रदत्त है' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'ल' तथा 'इय' प्रत्यय होते है। जैसे—

देवेन दत्तो—**देवलो, देवियो**। ब्रह्मुना दत्तो—**ब्रह्मलो, ब्रह्मियो**। **सीवलो, सीवियो**। **नागलो, नागियो**।

इम

§ ६५ **भावा तेन निब्बत्ते** ४६३—'उससे तैयार किया गया है' इस अर्थ मे, भाव-वाचक शब्द से परे 'इम' प्रत्यय होता है। जैसे—

पाकेन निब्बत्त—**पाकिम**=जो पका कर तैयार किया गया है। सेकेन निब्बत्त—**सेकिम**=जो सींच कर तैयार किया गया है।

चतुर्थ्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय

णिक

§ ६६ **तस्स सवत्तति** ४३०—'इसके लिए होता है' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। [पृ० २५५—पाद टिप्पणी] जैसे—

पुनब्भवाय सवत्तति इति—**पोनोभविको**=जो पुनजन्म के लिए कारण हो। स्त्रीलिङ्ग मे—**पोनोभविका**। लोकाय सवत्तति—**लोकिको**=जो लोक के लिए हो। सग्गाय सवत्तति—**सोवग्गिको**=जो स्वग के लिए हो।

पञ्चम्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय

णिक

§ ६७ **ततो सम्भूतमागत** ४३१—'उससे सम्भूत, या आया हुआ' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता ह। जैसे—

मातितो सम्भूतमागत वा—**मत्तिक**=माँ की ओर से सम्भूत, या आया हुआ। **पेत्तिक**=पिता की ओर से ०।

'ण्य' 'रियण', 'र्य' प्रत्यय भी उक्त अथ मे होते हैं। जैसे—

सुरभितो सम्भूत—**सोरभ्य**=सुगन्धि से सम्भूत। थनतो सम्भूत—**थञ्ञ**=दूध। पिततो सम्भूतो—**पेत्तियो**। **मातियो, मत्तियो, मच्चो**।

छठा काण्ड

दूसरा पाठ

(ख)

तद्धित प्रकरण

षष्ठ्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण[1]

§ ६८ णो वापच्चे ४ १—'उसका अपत्य' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसिट्ठस्स अपच्च—वासिट्ठो, वासेट्ठो, वासिट्ठी=वशिष्ठ के अपत्य। रघुनो अपच्च—राघवो।

णान, णायन[1]

§ ६९ वच्छादितो णानणायना ४ २—ऊपर के ही अर्थ में, 'वच्छ' आदि गोत्र वाचक शब्दों से परे, 'णान' तथा 'णायन' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

वच्छानो, वच्छायनो=वत्स गोत्र में उत्पन्न। कच्चानो, कच्चायनो=कात्यायन गोत्र में उत्पन्न।

कातियानो। मोग्गल्लानो, मोग्गल्लायनो। साकटानो, साकटायनो। कण्हानो, कण्हायनो।

णेय्य, णेर[1]

§ ७० कत्तिकाविधवादीहि णेय्यणेरा ४ ३—ऊपर के ही अर्थ में,

'कत्तिका' आदि शब्दो से परे, 'णेय्य' तथा, 'विधवा' आदि शब्दो से परे 'णेर' प्रत्यय होते ह । जैसे—

कत्तिकेय्यो=कार्तिकेय । **वेनतेय्यो** । **भागिनेय्यो**=भाजा ।

वेधव्वेरो=विधवा का लडका । **बन्धकेरो**=वन्धकी अर्थात् अभिसारिका का पुत्र । **नाळिकेरो** । **सामणेरो** ।

ण्य[2]

§ ७१ **ण्य दिच्चादीहि** ४ ४—ऊपर के ही अर्थ मे, 'दिति' आदि शब्दो से परे 'ण्य' प्रत्यय होता है । जैसे—

देच्चो=दिति का अपत्य । **आदिच्चो**=अदिति का अपत्य । **कोण्डञ्ञो**=

---

१ **सरानमादिस्सायुवण्णस्सा ए ओ णानुबन्धे** ४ १२४—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के आदिभूत 'अ', 'इ', तथा 'उ' का यथाक्रम 'आ', 'ए' तथा 'ओ' हो जाता ह । जैसे—

अदितिया अपच्च—अदिति+ण्य=(लोपो' वण्णिवण्णान ४ १३१) आदित्+य=आदित्य=**आदिच्च** । रघु+ण=**राघवो** । विनता+णेय्य=**वेनतेय्यो** । मीन+णिक=**मेनिको** । उळुम्पेन तरतति—उळुम्प+णिक=**ओळुम्पिको** । दुभगस्स भावो—दुभग+ण्य=**दोभग्ग** ।

सयोगे क्वचि ४ १२५—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, सयुक्त अक्षर से पूर्व 'अ', 'इ' तथा 'उ' का कही कही यथाक्रम 'आ', 'ए' तथा 'ओ' होता है । जैसे—दितिया अपच्च—दिति+ण्य=**देच्चो** । कुण्डनिया अपच्च—**कोण्डञ्ञो** ।

बहुत स्थानो मे यह आदेश नही होता है । जैसे—वच्छ+णान=**वच्छानो** । कत्तिका+णेय्य=**कत्तिकेय्यो** । दक्ख+णि=**दक्खि** ।

उवण्णस्सावङ् सरे ४ १२६—यदि 'ण' अनुबन्ध वाला कोई प्रत्यय आवे, जिसके आदि में स्वर हो, तो नाम के अन्त्य 'उ' का 'अव' हो जाता है । जैसे—रघु+ण=**राघवो** ।

मज्झे ४ १२८—कही कही, मध्य मे भी स्थित 'अ', 'इ', तथा 'उ' का यथाक्रम 'आ', 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है । जैसे—वसिट्ठस्स अपच्च—वसिट्ठ+ण=**वासेट्ठो** ।

कुण्डनि का अपत्य। **गग्यो**=गग का लडका। **भातब्बो**[2]=भाई का लडका, भतीजा।

णि[2]

§ ७२ **आ णि ४ ५**—ऊपर के ही अर्थ मे, अकारान्त शब्द से परे विकल्प से 'णि' प्रत्यय होता है। जैसे—

दक्खि=दक्ष का अपत्य। **दत्ति**=दत्त का अपत्य। **दोणि**=द्रोण का अपत्य। **वासवि**=वासव का अपत्य। **वारुणि**=वरुण का अपत्य।

ञ्ञो

§ ७३ **राजतो ञ्ञो जातिय ४ ६**—यदि जाति का अर्थ प्रगट होता हो, तो अपत्य के अर्थ मे, 'राज' शब्द से परे 'ञ्ञ' प्रत्यय होता है। जैसे—

राजञ्ञो=राजा की जाति का।

य, इय

§ ७४ **खत्ता यिया ४ ७**—यदि जाति का अर्थ प्रगट होता हो, तो अपत्य के अर्थ मे, 'खत्त' शब्द से परे 'य' तथा 'इय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

खत्यो, खत्तियो=क्षत्रिय जाति का।

स्स, सण

§ ७५ **मनुतो स्ससण् ४ ८**—ऊपर के अर्थ मे, 'मनु' शब्द से परे, 'स्स' तथा 'सण्' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

मनुस्सो, मानुसो। स्त्रीलिङ्ग मे—**मनुस्सा, मानुसी**।

---

२ **यम्हि गोस्स च ४ १३०**—'य' से आरम्भ होने वाला कोई प्रत्यय आवे, तो 'गो' तथा उकारान्त शब्दो के अन्त्य स्वर का 'अव' आदेश हो जाता है। जैसे—गुन्न इद—गो+य=गव+य=(लोपो' वण्णिवण्णान ४ १३१) **गव्य**। भातुनो अपच्च—भातु+ण्य=**भातब्बो**।

ण

§ ७६ जनपदनामस्मा खत्तिया रञ्ञे च णो ४ ६—'वहाँ का क्षत्रिय या राजा' इस अर्थ मे, जनपद के नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

पञ्चालो=पञ्चाल का क्षत्रिय या राजा। **कोसलो**। **मागधो**। **ओक्काको**।

ण्य

§ ७७ ण्य कुरुसिवीहि ४ १०—अपत्य तथा राजा के अर्थ मे, 'कुरु' तथा 'सिवि' शब्दो से परे, 'ण्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

कोरब्यो=कुरु का अपत्य, या राजा। **सेब्यो**।

णो

§ ७८ तस्स विसये देसे ४ १५—'उनके आसपास की जगह' इस अर्थ मे, 'ग' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसातीन विसयो देसो—**वासातो**।

§ ७९ निवासे तन्नामे ४ १६—'उनके निवास करने की जगह' इस अर्थ में, नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

सिवीन निवासो देसो—**सेब्यो**=जिस जगह शिवी लोग निवास करे। **वासातो**=जिस जगह 'वसाती' लोग निवास करे

§ ८० अदूरभवे ४ १७—'उसके पास वाला देश' इस अर्थ मे, उस नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

विदिसाय अदूरभव—**वेदिस**=विदिशा के पास ही।

णिक

§ ८१ तस्सिद ४ ३३—'यह इसका है' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'णिक', 'किय', 'निय', तथा 'क' प्रत्यय होते है। जैसे—

सघस्स इद—**सङ्घिक**=जो सघ का हो। **पुग्गलिक**=जो किसी व्यक्ति-विशेष (=पुद्गल) का हो। **सक्यपुत्तिको**[3] सक्यपुत्तियो=जो शाक्यपुत्र का हो। **नाथपुत्तिको**=जो नाथपुत्र का हो। **जेनदत्तिको**=जो जैनदत्त का हो।

किय—**सकियो**=स्वकीय, अपना। **परकियो**=दूसरे का।

निय—**अत्तनिय**=अपना।

क—**सको**=अपना। **राजक**=राजा का।

ण

§ ८२ **णो ४ ३४**—'यह इसका है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

कच्चायनस्स इद—**कच्चायन व्याकरण**=कात्यायन का व्याकरण। **सोगत सासन**=सौगत बुद्ध का शासन। **माहिस**=भैंसे का दूध, मास आदि।

य

§ ८३ **गवादीहि यो ४ ३५**—ऊपर के ही अर्थ में, 'गो' आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे 'य' प्रत्यय होता है। जैसे—

गुन्न इद—**गव्य**=गाय का (दूध, मास या कुछ)। कविनो इद—**कव्य**= काव्य।

रेय्यण

§ ८४ **पितितो भातरि रेय्यण् ४ ३६**—'पितु' शब्द से परे, उसके भाई के अर्थ में, 'रेय्यण्' प्रत्यय होता है। जैसे—

पितुनो भाता—**पेत्तेय्यो**=चाचा।

छ

§ ८५ **मातितो च भगिनियं छो ४ ३७**—'मातु' तथा 'पितु' शब्दों से परे, उनकी बहन के अर्थ में 'छ' प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुया भगिनी—**मातुच्छा**=मौसी। पितुनो भगिनी—**पितुच्छा**=फूआ।

---

३. **णिकस्सियो वा ४ १४१**—'णिक' प्रत्यय का विकल्प से 'इय' आदेश हो जाता है। जैसे—सक्यपुत्तस्स अय—**सक्यपुत्तियो, सक्यपुत्तिको**।

आमह

§ ८६ मातापितुस्वामहो ४ ३८—'मातु' तथा 'पितु' शब्दो से परे, उनके पिता-माता के अर्थ मे, 'आमह' प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुया माता—**मातामही**=नानी। मातुया पिता—**मातामहो**=नाना। पितुनो माता—**पितामही**=दादी। पितुनो पिता—**पितामहो**=दादा।

रेय्यण

§ ८७, हिते रेय्यण् ४ ३९—'उनके हित के लिए' इस अर्थ मे, 'मातु' तथा 'पितु' शब्दो से परे 'रेय्यण्' प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुनो हिते—**मत्तेय्यो**। पितुनो हिते—**पेत्तेय्यो**।

तर

§ ८८ वच्छादितो तनुत्ते तरो ४ ६—उसका छोटा होने के अर्थ मे, 'वच्छ' आदि शब्दो से परे 'तर' प्रत्यय होता है। जैसे—

वच्छतरो=छोटा बछडा। **ओक्खतरो**=छोटा बैल। **अस्सतरो**=खच्चर (आधा घोडा, आधा गदहा)।

ण, णिक, णेय्य, मय

§ ८९ तस्स विकारावयवेसु णणिकणेय्यमया ४ ६६—'उसका विकार या अवयव' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'ण', 'णिक', 'णेय्य', तथा 'मय' प्रत्यय होते है। जैसे—

ण—**आयस**=लोहे का बना। **ओदुम्बर**=गूलर का। **कापोत**=कबूतर का।

णिक—**कप्पासिक**=कपास का बना।

णेय्य—**एणेय्य**=एणि मृग का। **कोसेय्य**=रेशम का बना।

मय—**तिणमय**=तृण का। **दारुमय**=लकडी का बना। **मत्तिकामय**= मिट्टी का बना। **गोमय**=गोबर।

स्सण

§ ९० जतुतो स्सण् वा ४ ६७—ऊपर के ही अर्थ मे, 'जतु' शब्द से परे,

विकल्प से 'स्सण्' प्रत्यय होता है। जसे—

जतुनो विकारो—**जातुस्स, जातुमय**=लाह का वना।

कण्ण, णिक

§ ९१ **समूहे कण्णिका** ४ ६८—'उनका समूह' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'कण', ण, तथा 'णिक' प्रत्यय होते है। जैसे—

कण्—**राजञ्ञक**=राजा की जाति के लोगो का जमाव। **मानुस्सक**=आदमियो का जमाव। **ओट्ठक**=ऊटो का जमाव। **ओरब्भक**=भेडो का०। **राजक**=राजो का०। **राजपुत्तक**=राजपुत्रो का०। **हत्थिक**=हाथी का०। **धेनुक**=गौवो का०।

ण—**काक**=कौओ का जमाव। **भिक्ख**=भिक्षुओ का०।

णिक—(केवल प्राणहीन से परे) **आपूपिक**=पूए की ढेर। **सकुलिक**=रोटी की ढेर।

ता

§ ९२ **जनादीहि ता** ४ ६९—'उनका समूह' इस अर्थ मे, 'जन' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे 'ता' प्रत्यय होता है। जैसे—

जनता=जन-समूह। **गजता**=गज-समूह। **बन्धुता**=बन्धु-समूह।

स्स

§ ९३ **चक्खादितो स्सो** ४ ७१—'उसके हित के लिए' इस अर्थ मे, 'चक्खु' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, 'स्स' प्रत्यय होता है। जेसे—चक्खुनो हित—**चक्खुस्स**। आयुनो हित—**आयुस्स**।

जातिय

§ ९४ **तब्बलि जातियो** ४ ११३—'उस प्रकार का' इस अर्थ मे, उस सामान्य वाचक शब्दो से परे 'जातिय' प्रत्यय होता है। जैसे—

पटुजातियो। **मुदुजातियो**।

सप्तम्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ६५ **तत्र भवे** ४२०—'उसमे हुआ' इस अर्थ मे, शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

उदके भवो—**ओदको**=जल मे उत्पन्न। **ओरसो**=उरुसे उत्पन्न। **जानपदो**=जनपद मे उत्पन्न हुआ। **मागधो**=मगध मे उत्पन्न हुआ। **कापिलवत्थवो**=कपिलवस्तु मे उत्पन्न हुआ। **कोसम्बो**=कोशाम्बी मे उत्पन्न। मनसि भवो—मन+ण=**मानसो**[4]।

तन

§ ६६ **अज्जादीहि तनो** ४२१—ऊपर के ही अर्थ मे, 'अज्ज' आदि शब्दो से परे 'तन' प्रत्यय होता है। जैसे—

अज्ज भवो—**अज्जतनो**=आज दिन हुआ। **स्वातनो**=कल होने वाला। **हिय्यत्तनो**=कल हुआ हुआ।

§ ६७ **पुरातो णो च** ४२२—ऊपर के ही अर्थ मे, 'पुरा' शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है, और 'तन' प्रत्यय भी। जैसे—

पुराणो, पुरातनो=जो बहुत पहले हो चुका है।

अच्च

§ ६८ **अमात्वच्चो** ४२३—साथ रहने के अर्थ मे, 'अमा' (=साथ) शब्द से परे 'अच्च' प्रत्यय होता है। जैसे—

अमच्चो=साथ रहने वाला, मत्री।

---

४ **मनादीनं सक्** ४१२८—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'मन' आदि शब्दो से परे 'स' का आगम होता है। जैसे—

मनसि भव—**मानस**। दुम्मनसो भावो—**दोमनस्स**। **सोमनस्स**।

इम

§ ९९ **मज्झादित्विमो ४ २४**—'उसमे हुआ' इस अर्थ मे, 'मज्झ' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो से परे, 'इम' प्रत्यय होता है। जैसे—

मज्झिमो=मध्य मे हुआ। **अन्तिमो**=अन्त मे हुआ।

कण, णेय्य, णेय्यक, य, इय

§ १०० **कणणेय्यणेय्यकयिया ४ २५**—ऊपर के ही अर्थ मे, शब्द से परे 'कण', 'णेय्य', 'णेय्यक', 'य', तथा 'इय' प्रत्यय होते है। जैसे—

कण—कुसिनाराय भवो—**कोसिनारको**। **मागधको**। **आरञ्ञको**=जगल में हुआ।

णेय्य—**गङ्गेय्यो**=गगा मे हुआ। **पब्बतेय्यो**=पवत पर हुआ। **वानेय्यो**=वन मे हुआ।

णेय्यक—**कोलेय्यको**=कुल मे हुआ। **बाराणसेय्यको**=बनारस मे हुआ। **चम्पेय्यको**=चम्पा मे हुआ।

य—**गम्मो**=ग्राम्य। **दिब्बो**=दिव्य।

इय—**गामियो**=ग्राम्य। **उदरियो**=उदर मे हुआ। **दिवियो**=स्वग मे हुआ। **पञ्चालियो**=पञ्चाल मे हुआ। **बोधिपक्खियो**=ज्ञान के पक्ष का। **लोकियो**=लोक मे हुआ।

णिक

§ १०१ **णिको ४ २६**—ऊपर के ही अर्थ मे, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

सारदिको=शरत्काल मे हुआ। **सारदिको दिवसो**। **सारदिका रत्ति**।

§ १०२ **तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो ४ ३२**—'वहाँ रहता है, वहाँ विदित है, उसमे भक्ति रखता है, वहाँ नियुक्त है'—इन अर्थों मे, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

रुक्खमूले वसति—**रुक्खमूलिको**=वृक्ष के नीचे रहने वाला। **आरञ्ञिको**=जगल मे रहने वाला। **सोसानिको**=स्मशान मे रहने वाला।

लोके विदितो—**लोकिको**।

चतुमहाराजेसु भत्ता—**चातुम्महाराजिका**=चतुमहाराजके भक्त।

द्वारे नियुत्तो—**दोवारिको**=द्वार पर नियुक्त पहरेदार।

ण्य

§ १०३ **ण्यो तत्थ साधु** ४७२—उस विषय मे कुशल, योग्य, तथा हितकर होने के अर्थ मे, शब्द से परे 'ण्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

सभाय साधु—**सब्भो**। परिसाय साधु—**पारिसज्जो**।

निय, ञ्ञ

§ १०४ **कम्मा नियञ्ञा** ४७३—ऊपर के ही अर्थ मे, 'कम्म' शब्द से परे 'निय' तथा 'ञ्ञ' प्रत्यय होते है। जैसे—

कम्मे साधु—**कम्मनिय, कम्मञ्ञ**।

इक

§ १०५ **कथादित्विको** ४७४—ऊपर के ही अर्थ मे, 'कथा' आदि शब्दो [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे 'इक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कथिको। धम्मकथिको। सङ्गामिको। पवासिको। उपवासिको।

णेय्य

§ १०६ **पथादीहि णेय्यो** ४७५—ऊपर के ही अर्थ मे, 'पथ' आदि शब्दो से परे 'णेय्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

पाथेय्य=पाथेय। **सापतेय्य**=धन।

अन्य प्रत्यय

दिस्सन्तञ्ञे' पि पच्चया ४१२०—जितने कहे गए है, उनसे भिन्न भी प्रत्यय देखे जाते है। जैसे—

विविधा+मातरो—**विमातरो**। तास पुत्ता—**वेमातिका** (यहाँ 'रिकण्'

प्रत्यय लगा) ।

पथ गच्छतीति—**पथावी** ('आवी' प्रत्यय) ।

इस्सा अस्स अत्थीति—**इस्सुकी** ('उकी' प्रत्यय) ।

धुर वहन्तीति—**धोरय्हा** ('य्हण' प्रत्यय) ।

स क त्थे ४ १२२—अपने ही अर्थ में भी, शब्द से परे कुछ प्रत्यय देखे जाते हैं । जैसे—**हीनको, पोतको, किच्चय** ।

३० अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) विपस्सी, सिखी, वेस्सभू च भगवन्तो गोत्तेन कोण्डञ्ञा अहेसु। ककुसन्धो, कोणागमनो, कस्सपो च भगवन्तो गोत्तेन कस्सपा अहेसु। अह एतरहि (भगवा) गोतमो गोत्तेन। **वासिट्ठा, भारद्वाजा, कच्चाना, वच्छायना, कण्हायना, अग्गिवेस्सा, कोसिका, भग्गवा,** ब्राह्मणा च खत्तिया च गहपतयो भगवन्त अभिवन्दन्ति, नमस्सन्ति, पञ्हे पुच्छन्ति। भगवा नेस पुट्ठे पुट्ठे पञ्हे व्याकरोति।

(ख) राजगहिका, **मागधिका, कापिलवत्थिका,** कोसविका गहपतयो भगवन्त भिक्खु-सङ्घ च उपट्ठहन्ति। **सुत्तन्तिका,** वेनयिका, **आभिधम्मिका** भिक्खू सज्झायन्ति। **कच्चानो मोग्गलानो च वेय्याकरणिका।** पसुकूलिका **तेचीवरिका** भिक्खू अब्भोकासिका हुत्वा विहरन्ति। भूते (भूत-काले) **अज्जतनी, हिय्यत्तनी** परोक्खा विभत्तियो होन्ति।

(ग) अथ खो राजा मागधो अजात-सत्तु वेदेहि-पुत्तो **कोसिनारकान** मल्लान दूत पाहेसि। **वेसालिका** लिच्छवी। कापिलवत्थवा सक्या। रामगामका कोलिया। वेठदीपको ब्राह्मणो। **पावेय्यका** मल्ला दूत पाहेसु। दोणो बाह्मणो किर भगवतो सरीरानि अट्ठधा सम सुविभत्त विभजित्वा, तेस अदासि। अदसु खो ते दोणस्स ब्राह्मणस्स कुम्भ याचमानस्स कुम्भ ति। पिप्फलिवनिया **मोरिया** पन अङ्गार हरिसु।

(घ) पितामहो, **मातामहो,** मज्झिमो, अन्तिमो, पापिट्ठो, सेट्ठो, **धम्मिको, मातुच्छा,** पितुच्छा, गारव, अज्जव, **पोरी,** सन्दिट्ठिक, एहिपस्सिक, **पोनो भविको, दक्खिणेय्यो,** आहुनेय्यो, अधिपतेय्य, देवता, जनता।

(ङ) **स्वातनाय** भत्त अधिवासेसि। **पेत्तिक** च **मत्तिक** च धन **सोगतान** सामणेरान च समणान अत्थाय विसज्जेसि। पायासि **राजञ्ञो** राजदाय **ब्रह्मदेय्य** सेतव्य अज्झावसति। **कोसिनारका** मल्ला पुरत्थिमेन द्वारेन निक्खमिसु।

२ ऊपर के काले अक्षरो में छपे शब्दो से वाक्य बनाइए।

३ पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) आज का भोजन। कल का दान। गत-कल की पूजा। मगध का राजा। शाक्य कुमार। कपिल-वस्तु के मनुष्य। कुरुदेश का राजा। इसी जन्म मे। मन की व्यथा। शरीर की व्याधि। सालाना त्यौहार। वर्षा का वास। पाँच महिने की चारिका। सघ को दान। ध्यान का आनन्द। व्याकरण जानने वालो की सभा। त्रिपिटक की गाथा। वशिष्ठ, भृगु, उदुम्बर गोत्र के ऋषि।

३ निम्नलिखित प्रत्ययो के कुछ उदाहरण दीजिए—

१ ण, २ णिक, ३ क, ४ त्तक, ५ रति, ६ रीव, ७ रीवतक, ८ इत, ९ तग्घ, १० काकी, ११ रतर, १२ रतम, १३ इय, १४ इट्ठ, १५ ल्ल, १६ णेय्य, १७ ण्य, १८ ल, १९ णान, २० णायन।

४ निम्नलिखित शब्दो में प्रत्यय का निर्देश कीजिए—

सोगतो। वेणिको। समणको। एत्तावन्तु। कति। कीव। पलमत्त। एकाकी। देवलो। वच्छानो। अज्जतन। जनता। जातुस्स। पितामहो। खत्यो। वारुणि। सामणेरो।

छठा काण्ड

तीसरा पाठ

समास-प्रकरण

स्यादि स्यादिनेकत्थ ३ १—स्याद्यन्त शब्द, स्याद्यन्त शब्द के साथ एकाथ होते है। यह, भिन्न अर्थों का एकाथ हो जाना समास कहा जाता है। समास छ है—१ अव्ययीभाव, २ बहुब्रीहि, ३ तत्पुरुष, ४ कमधारय, ५ क्रियाथ और ६ द्वन्द। जैसे—

१ अव्ययीभाव (*असख्य*)

§ १ **असख्य विभत्तिसम्पत्तिसमीपसाकल्याभावयथापच्छा-युगपदत्थे ३ २**—'विभक्ति, सम्पत्ति, समीप, साकल्य, अभाव, यथा, पश्चात्, और युगपद'—इन अर्थों मे, अव्यय के साथ समास होता है। जैसे—

विभक्ति—इत्थीसु कथा पवत्ता—**अधित्थि**।[1]

---

१ **पुब्बस्मामादितो २ १२२**—अव्ययी भाव समास होने पर, शब्द से परे, प्राय विभक्तियो का लोप होता है। जैसे—इत्थीसु कथा पवत्ता—**अधित्थि**।

कही कही नही होता है। जैसे—**यथापत्तिया**। यथापरिसाय।

नातो मपञ्चमिया २ १२३—अकारान्त अव्ययीभाव समास से परे, सभी विभक्तियो का लोप नही होता है। पञ्चमी को छोड, दूसरी विभक्तियो के साथ 'अ' तो होता है। जैसे—**उपकुम्भ**=घडे के पास।

वा ततिया सत्तमीन २ १२४—अकारान्त अव्ययीभाव समास से परे, तृतीया तथा सप्तमी विभक्ति मे भी, विकल्प से 'अ' होता है। जैसे—

उपकुम्भेन कत—**उपकुम्भ कत**। उपकुम्भे निधेहि—**उपकुम्भ निधेहि**।

सम्पत्ति—सम्पन्न ब्रह्म—**सब्रह्म लिच्छवीन**। समिद्धि भिक्खान—**सुभिक्ख**।

समीप—कुम्भस्स समीप—**उपकुम्भं**।

साकल्य—सतिण अज्भोहरति।

अभाव—विगता इद्धि सद्दिकान **दुस्सद्दिक**। अभावो मक्खिकान—**निम्मक्खिक**। अनिगतानि तिणानि—**नित्तिण**।

यथा[2]—**अनुरूप**। **अन्जद्धमास**। **यथासत्ति**।

पश्चात्—**अनुरथ**।

युगपद—**सचक्क**।[3]

§ **यावावधारणे ३४**—अवधारण (=इतना) के अर्थ मे, 'याव' शब्द के साथ समास होता है। जैसे—

यावामत्त (=जितने) ब्राह्मणे आमन्तय।

यावजीव=जीवन भर।

§ २ **पय्यपाबहितिरोपुरेपच्छा वा पञ्चम्या ३५**—'परि, अप, आ, बहि, तिरो, पुरे, पच्छा', इन शब्दो का पञ्चम्यन्त के साथ समास होता है, और द्वितीयान्त के साथ भी। जैसे—

परिपब्बत वस्सि देवो, परिपब्बता। अपपब्बत वस्सि देवो, अपपब्बता। आपाटलिपुत्त वस्सि देवो, आपाटलिपुत्ता। बहिगाम, बहिगामा। तिरोपब्बत, तिरोपब्बता। पुरेभत्त, पुरेभत्ता। पच्छाभत्त, पच्छाभत्ता।

§ ३ **समीपायामेस्वनु ३६**—सामीप्य, तथा आयाम (=विस्तार) के अर्थ मे, 'अनु' शब्द के साथ समास होता है। जैसे—

अनुवन **असनि गता**। अनुगङ्ग **बाराणसी**।

---

२ **यथा न तुल्ये ३३**—'यथा' शब्द, यदि 'तुल्य' के अर्थ मे समझा जाय, तो उसके साथ समास नही होता है। जैसे—

यथा देवदत्तो तथा यञ्ञदत्तो।

३ **अकाले सकत्थे ३८१**—यदि कालवाचक न हो, तो उसी अर्थ में, पूर्वपद के अप्रधान 'सह' शब्द का 'स' हो जाता है। जैसे—**सब्रह्म**। **सचक्क निधेहि**। **सधुर**।

§ ४. **ओरेपरिपटिपारेमज्झे हेट्ठुद्धाधोन्तो वा छट्ठिया ३ ८**—'ओरे, उपरि, पटि, पारे, मज्झे, हेट्ठा, उद्ध, अधो, अन्तो'—इन शब्दों का षष्ठ्यन्त के साथ समास होता है। जैसे—

गङ्गाय ओरे—**ओरेगङ्ग**। सिखरस्स उपरि—**उपरिसिखर**। **पटिसोत**। **पारेयमुन**। **मज्झेगङ्गं**। **हेट्ठापासाद**। **उद्धगङ्ग**। **अधोगङ्ग**। **अन्तोपासाद**।

§ ५. **तिट्ठगवादीनि ३ ७**—निम्नलिखित समास निपात हैं—

तिट्ठन्ति गावो यस्मिं काले—**तिट्ठगु कालो**। वहन्ति गावो यस्मिं काले—**वहग्गु कालो**। आयन्ति गावो यस्मिं काले—**आयतिगव**।

खले यवा यस्मिं काले—**खलेयव**। लूयमाना यवा यस्मिं काले—**लूनयव**। **लूयमानयवं**। **पातकाल**। **सायकाल**। **पातमेघ**। **सायमेघ**। **पातमग्ग**। **सायमग्ग**।

§ ६. **परस्स सङ्ख्यासु ३ ६०**—सङ्ख्यावाचक शब्द उत्तरपद में हों, तो 'पर' शब्द के अन्त्य स्वर का 'ओ' हो जाता है। जैसे—**परोसत**। **परोसहस्स**।

§ ७. **तं नपुंसकं ३ ९**—अव्ययीभाव समास होने से, शब्द नपुंसक लिङ्ग होता है,

कभी कभी नहीं भी होता है। जैसे—**यथापरिसं**, **यथापरिसाय**=अपनी अपनी सभा में।

२. बहुब्रीहि (*अञ्ञत्थ*)

§ ८. **वानेकञ्ञत्थे ३ १७**—कभी कभी, अनेक स्याद्यन्त शब्दों का समास हो कर, उनसे भिन्न एक अन्यपद का बोध होता है। जैसे—

बहूनि धनानि यस्स सो—**बहुधनो**। लम्बा कण्णा यस्स सो—**लम्बकण्णो**। वजिरं पाणिम्हि यस्स सो—**वजिरपाणि**। मत्ता बहवो मातङ्गा एत्थ—**मत्तबहुमातङ्ग वन**। आरूळ्हो वानरो यं रुक्खं सो—**आरूळ्हवानरो**। जितानि इन्द्रियानि येन सो—**जितिन्द्रियो**। दिन्नं भोजनं यस्स सो—**दिन्नभोजनो**। अपगतं काळकं परा सो—**अपगतकालको**। उपगता दस येसं ते—**उपदसा**। तयो दस परिमाणं एसं—**तिदसा**।

दक्खिणस्सा च पुब्बस्सा च दिसाय यदन्तरालं—**दक्खिणपुब्बा दिसा**। सह पुत्तेन आगतो—**सपुत्तो**। **सलोमको**=जिसके शरीर पर रोयें हैं। अत्थि खीरं यस्सा सा—**अत्थिखीरा ब्राह्मणी**।

ओट्ठमुखमिव मुखमस्स—**ओट्ठमुखो**=ऊँट के समान जिसका मुह हो। सुवण्णविकारो अलङ्कारो अस्स—**सुवण्णालङ्कारो**। पपतित पण्णमस्स—**पपतितपण्णो, पपण्णो**। अविज्जमाना पुत्ता अस्स—**अविज्जमानपुत्तो**। न सन्ति पुत्ता अस्स—**अपुत्तो**।

वहू मालायो एतस्स—**बहुमालो**[४] **पोसो**। चित्ता गावो अस्सेति—**चित्तगु**[५]।

§ ९ वहुब्रीहि समास के कुछ विशेप उदाहरण—

भवम्पतिट्ठा[६]। **गुणवन्तपतिट्ठो**[७]। **मनोसेट्ठा**[८]। **कुमारभरिया**। **सपुत्तो**[*]।

---

४ **घपस्सान्तस्साप्पधानस्स** ३ २४—अन्तभूत अप्रधान "घ", तथा "प" का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—**बहुमालो**। **निक्कोसम्बि**। **अतिवामोरु**।

५ **गोस्सु** ३ २५—अन्तभूत अप्रधान 'गो' शब्द का 'गु' हो जाता है।

उत्तरपदे ३ ५४—उत्तर पद परे हो, तो पूवपद मे निम्न प्रकार परिवतन होता है—

६ **ट न्तन्तून** ३ ५७—पूत्र पद के 'न्त' तथा 'न्तु' का कही कही 'अ' हो जाता है। जैसे—

भवपतिट्ठा अम्ह—भवन्त+पतिट्ठा=भव+पतिट्ठा=(निग्गहीत १ ३८) भव+पतिट्ठा=(वग्गे वग्गन्तो १ ४१) भवम्पतिट्ठा मय। भगवन्तु+मूलका=**भगवम्मूलका नो धम्मा**।

७ **अ** ३ ५८—पूवपद के 'न्तु' का कही २ 'न्त' हो जाता है। जैसे—

गुणवन्ता पतिट्ठा मम सोह—गुणवन्तु+पतिट्ठा=**गुणवन्तपतिट्ठो**।

८ **मनाद्यपादीनमोमये च** ३ ५९—'मय' प्रत्यय के साथ, तथा समास के पूवपद मे स्थित, 'मन' आदि तथा 'आप' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दो के अन्त्य स्वर का 'ओ' हो जाता है। जैसे—

मनो सेट्ठा एतेस इति—**मनोसेट्ठा**। मनसा निब्बत्ता—**मनोमया**। रजसो जल्ल—**रजोजल्ल** (तत्पुरुष)। रजसो विकारो—**रजोमय**। आपेसु गत—**आपोगत**। आपस्स विकारो—**आपोमय**। दिस दिस अनयन्ति—**दिसोदिस अनुयन्ति**।

* **वीच्छाभिक्खञ्ञेसु द्वे** १ ५४—बार बार होने के अर्थ मे, एक शब्द

सास्सत्थ[11]। **साग्गि**[12]। **सदोणा खारी**। **सोदरियो**[14]। **तन्दीपा**[15]। **दुविधो**[16]। **दिगुण**[17]। **द्वत्तिक्खत्तु**[18]।

को दो बार कहते है। जैसे—**रुक्ख रुक्ख सिञ्चति**। **गामो गामो रमणीयो**। **गामे गामे पानीय**। **दिस दिस अनुयन्ति**=चारो ओर घूमता है।

[**स्या दि लो पो पु ब्ब स्से क स्स** १ ५५—वीप्सा के अर्थ मे, 'एक' शब्द के द्वित्व होने पर, पहले की स्यादि विभक्ति का लोप होता है। जैसे—एकस्स एकस्स—**एकेकस्स**]

९ **इ त्थि य म्भा सि त पु मि त्थी पु मे वे क त्थे** ३ ६७—यदि उत्तर-पद समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग हो, तो स्त्रीप्रत्ययान्त पूर्वपद पुल्लिङ्ग का रूप ग्रहण करता है। जैसे—

कुमारी भरिया यस्स सो—**कुमारभरियो**। दीघा जङ्घा यस्स सो—**दीघजङ्घो**। युवति जाया यस्स सो—**युवजायो**।

१० **स ह स्स सो, ञ्ञ त्थे** ३ ७८—यदि अन्यपद का बोध होता हो, तो पूवपद 'सह' शब्द का विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे—सह पुत्तेन वत्तमानो सो—**सपुत्तो**। **सहपुत्तो**।

११ **स ञ्ञा य** ३ ७९—सञ्ज्ञा उत्तर पद मे हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का नित्य 'स' होता है। जैसे—सह अस्सत्थेन वत्तनि—**सास्सत्थ**। **सपलास**।

१२ **अ प च क्खे** ३ ८०—उत्तर पद यदि अप्रत्यक्ष हो, तो पूवपद 'सह' शब्द का नित्य 'स' होता है। सह अग्गिना विज्जमानो—**साग्गि** कपोतो, पिसाचो, वातमण्डलिका।

१३ **ग न्था न्ता धि क्ये** ३ ८२—यदि उत्तर पद ग्रन्थ-वाचक या आधिक्य-वाचक हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का 'स' आदेश होता है। जैसे—**सकल** जोतिम-धीते। **समुहुत्त**।

अधिको दोणो अस्साति—**सदोणा** खारी।

१४ **उ द रे इ ये** ३ ८४—'इय' के साथ 'उदर' शब्द उत्तर पद मे हो, तो पूर्वदप 'समान' का विकल्प से 'स' होता है। जैसे—**सोदरियो**। **समानोदरियो**।

१५ **त म म ञ्ञ त्र** ३ ८९—एक वचन मे, पूवपद 'तुम्ह' तथा 'अम्ह'

[सब्बादीनं वीतिहारे १५६—परस्पर व्यवहार करने के अर्थ मे, 'सब्ब' आदि शब्दो का द्वित्व होता है, तथा, पहले की स्यादि विभक्ति का लोप होता है। जैसे—**अञ्ञमञ्ञस्स भोजका। इतरीतरस्स भोजका]**

३ तत्पुरुष (*अमादि*)

§ १० **अमादि ३ १०**—'अं' आदि स्याद्यन्त शब्दो का स्याद्यन्त के साथ समास होता है। जैसे—

गामं गतो—**गामगतो**। मुहुत्तं सुखं—**मुहुत्तसुखं**। **कुम्भकारो**। **तन्तवायो**। **वराहरो**।

रञ्ञा हतो—**राजहतो**। असिना छिन्नो—**असिच्छिन्नो**। पितुना सदिसो—**पितुसदिसो**। **पितुसमो**। सुखेन सहगतं—**सुखसहगतं**। दधिना उपसित्तं भोजनं—**दधिभोजनं**। गुळेन मिस्सो ओदनो—**गुळोदनो**।

उरसा गच्छति—**उरगो**। पादेन पिवति—**पादपो**।

बुद्धस्स देय्यं—**बुद्धदेय्यं**। यूपाय दारु—**यूपदारु**। रजनाय दोणि—**रजनदोणि**

सवरेहि भयं—**सवरभयं**। गामस्मा निग्गतो—**गामनिग्गतो**। मेथुनस्मा अपेतो—**मेथुनापेतो**।

शब्दो का यथाक्रम 'त' तथा 'म' हो जाता है। जैसे—त्वं दीपो एस—**तन्दीपा**। **तसरणा**। **तय्योगो**। **मन्दीपा**। **मसरणा**। **मय्योगो**।

१६ **विधादिसु द्विस्स दु ३ ९१**—'विध' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] उत्तर पद मे हो, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'दु' आदेश होता है। जैसे—द्वे विधा पकारा अस्स—**दुविधो**। द्वे पट्टा अस्स चीवरस्स—**दुपट्टं**।

१७ **दिगुणादिसु ३ ९२**—'गुण' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] उत्तर पद मे हो, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'दि' आदेश होता है। जैसे—द्वे गुणा अस्स—**दिगुणं**। द्विन्नं रत्तीनं समाहारो—**दिरत्तं**। द्विन्नं गुन्नं समाहारो—**दिगु**।

१८ **तीस्व ३ ९३**—'ति' शब्द उत्तर पद मे हो, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'द्व' होता है। जैसे—द्वे वा तयो वा—**द्वत्तयो** वारे। **द्वत्तिपत्तपूरा**=दो या तीन पात्र भर कर।

कम्मा जात—**कम्मज** । **चित्तज** ।

रञ्ञो पुरुसो—**राजपुरिसो** । **चन्दनगन्धो** । **नदीसोतो** । **कञ्ञारूप** । **काय-सम्फस्सो** । **फलरसो** ।

§ ११ **क्व चेकत्तञ्च छट्ठिया ३ २२**—षष्ठी-तत्पुरुष समास कही कही नपुसकलिङ्ग एकवचनान्त होता है । जैसे—

सलभान छाया—**सलभच्छाय**[१९] । सकुन्तान छाया—**सकुन्तच्छाय** । **पासा-दच्छाय, पासादच्छाया** ।

समास होने पर, अमनुष्यो की सभा मे नपुसकलिङ्ग एक वचन होता है । जैसे—**ब्रह्मसभ** । **देवसभ** । **इन्दसभ** । **यक्खसभ** । **सरभसभ** ।

मनुष्यो की सभा मे—**खत्तियसभा, राजसभा** इत्यादि ।

§ १२ तत्पुरुष समास के कुछ विशेष उदाहरण—

इदप्पच्चया[२०] । **पुल्लिङ्ग**[२१] । **सत्थारदस्सन**[२२] । **तम्मुख**[२३] । **उदकुम्भो**[२४] । **दकसोत**[२५] ।

---

१९ स्यादिसु रस्सो ३ २३—विभक्तियो के आने से, नपुसक बने शब्द के अन्त्य स्वर का ह्रस्व होता है । जैसे—

सलभच्छाय, सलभच्छायेन, इत्यादि ।

२० इमस्सिद ३ ५५—पूर्वपद 'इम' का 'इद' आदेश हो जाता है । जैसे—

इमाय सम्मा पटिपत्तिया अत्थो—**इदमट्ठो** । **इमेस** पच्चया—**इदप्पच्चया** ।

२१ पु पुमस्स वा ३ ५६—पूर्वपद 'पुम' शब्द का विकल्प से 'पु' आदेश हो जाता है । जैसे—पुमस्स लिङ्ग—**पुलिङ्ग** । **पुमलिङ्ग** ।

पु+लिङ्ग=(लोपो १ ३९) पु+लिङ्ग=(सरम्हा द्वे १ ३४) **पुल्लिङ्ग** ।

२२ ल्तुपितादीनमारङरङ् ३ ६३—पूर्वपद 'ल्तु' प्रत्ययान्त, तथा 'पितु' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का विकल्प से यथाक्रम, 'आर' तथा 'अर' हो जाता है । जैसे—

सत्थुनो दस्सन—सत्थु+दस्सन=**सत्थारदस्सन** । कत्तुनो निद्देसो—**कत्तार-निद्देसो** । माता च पिता च—**मातरपितरो** (द्वन्द समास) ।

४. कर्मधारय (*एकाधिकरण*)

§ १३ **विसेसनमेकत्थेन ३ ११**—स्याद्यन्त विशेषण का अपने स्याद्यन्त विशेष्य के साथ समास होता है। जैसे—

नीलञ्च त उप्पल—**नीलुप्पल**। मुनि च सो सीहो चाति—**मुनिसीहो**। सीतमेव धन—**सीलधन**। **कण्हसप्पो**। **लोहितसालि**।

§ १४ **नञ् ३ १२**—'न' के साथ स्याद्यन्त का समास होता है। जैसे—

न ब्राह्मणो—**अब्राह्मणो**[६]। **अपुनगेय्या गाथा**। **अनोकास**[२७] **कारेत्वा**। **अमूलामूल गन्त्वा**। **नखो**[२८]। **नगो**[१९]।

विकल्प से—**सत्थुदस्सन, कत्तुनिद्देसो, मातापितरो**।

२३ **सब्बादयो वुत्तिमत्ते ३ ६९**—स्यादि तथा तद्धित मे, स्त्रीवाचक 'सब्ब' आदि शब्द पुल्लिङ्ग-रूप ग्रहण करते है। जैसे—

तस्सा मुख—**तम्मुख**। तस्स—**तत्र**। ताय—**ततो**। तस्स वेलाय—**तदा**।

२४ **कुम्भादिसु वा ३ ७२**—'कुम्भ' आदि शब्द यदि उत्तर पद मे हो, तो पूर्वपद 'उदक' शब्द का विकल्प से 'उद' आदेश हो जाता है। जैसे—उदकस्स कुम्भो—**उदकुम्भो, उदककुम्भो**। उदकस्स पत्तो—**उदपत्तो, उदकपत्तो**। उदकस्स बिन्दु—**उदबिन्दु, उदकबिन्दु**।

२५ **सोतादिसू लोपो ३ ७३**—'सोत' आदि शब्द यदि उत्तर पद मे हो, तो पूवपद 'उदक' शब्द के 'उ' का लोप हो जाता है। जैसे—उदकस्स सोतो—**दकसोत**। उदके रक्खसो—**दकरक्खसो**।

२६ **ट नञस्स ३ ७४**—पूवपद 'नञ्' का 'अ' आदेश होता है। जैसे—न ब्राह्मणो—**अब्राह्मणो**।

२७ **अन् सरे ३ ७५**—उत्तर पद यदि स्वर से आरम्भ होता हो, तो पूवपद 'नञ्' का 'अन्' आदेश होता है। जैसे—न ओकास—**अनोकास**। न अक्खात—**अनक्खात**।

२८ **नखादयो ३ ७६**—'नख' आदि शब्द निपात है। इन में पूवपद 'नञ' का 'अ' आदेश नही होता है। जैसे—नास्स खमत्थि इति—**नखो** (=नाखून)। नास्स कुलमत्थि इति—**नकुलो** (=नेवला)।

§ १५ **कुपादयो निच्चमस्यादि विधिम्हि ३ १३**—'कु', 'प' आदि शब्दों के साथ, स्याद्यन्त शब्दों का समास होता है। जैसे—

कुच्छितो ब्राह्मणो—**कुब्राह्मणो**। कु अन्न—**कदन्न**[30]। कु लवण—**कालवण**[31]। कु पुरिसो **कापुरिसो**[32]। ईसक उण्ह—**कदुण्ह**। **पनायको**। **अभिसेको**। **पकरित्वा**। **पकत**। **दुप्पुरिसो**। **दुक्कत**। **सुपुरिसो**। **सुकत**। **अभित्थुत**।

पगतो आचरियो—**पाचरियो**। **पन्तेवासी**। अतिक्कन्तो मञ्च—**अतिमञ्चो**। **अतिलाभो**। अवकुट्ठ कोकिलाय वन—**अवकोकिल**। **अवमयूर**। परिगिलानो अज्झेनाय—**परियज्झेनो**। निग्गतो कोसम्बिया—**निक्कोसम्बि**।

§ १६ कर्मधारय समास के कुछ विशेष उदाहरण—**पुथुज्जनो**[33]। **साह**[34]। **सपक्खो**[35]। **पुब्बन्हो**[3]।

'नख' आदि शब्द ये हैं—नख, नकुल, नपुसक, नक्खत्त, नाक।

२९ **नगो वा प्पाणिनि ३ ७७**—अप्राणी-वाचक होने से, विकल्प से 'नग' शब्द निपात होता है। जैसे—**नगा रुक्खा**। **अगा रुक्खा**। **नगा पब्बता**। **अगा पब्बता**। **नग=अचल**।

३० **सरे कद् कुस्सुत्तरत्थे ३ १०७**—उत्तर पद यदि स्वर से आरम्भ होता हो, तो पूर्वपद 'कु' शब्द का 'कद' आदेश हो जाता है। जैसे—कु अन्न—**कदन्न**। कु असन—**कदसन**।

३१ **काप्पत्थे ३ १०८**—अल्प होने के अर्थ मे, पूर्वपद 'कु' शब्द का 'का' आदेश होता है। जैसे—अप्पक लवण—**कालवण**।

३२ **पुरिसे वा ३ १०९**—'पुरिस' शब्द उत्तर पद मे हो, तो पूर्वपद 'कु' का विकल्प से 'का' आदेश होता है। जैसे—**कापुरिसो, कुपुरिसो**।

३३ **जने पुथस्सु ३ ६१**—'जन' शब्द यदि उत्तर पद मे हो, तो पूर्व पद 'पुथ' शब्द के अन्त्य स्वर का 'उ' हो जाता है। जैसे—अरियेहि पुथगेवाय जनो ति—**पुथुज्जनो**।

३४ **सो छस्साहायतने वा ३ ६२**—'अह' (=दिन) या 'आयतन' शब्द उत्तर पद मे हो, तो पूर्व पद 'छ' शब्द का विकल्प से 'स' आदेश होता है। जैसे—

छन्न अहान समाहारो—**साह, छाह**। छन्न आयतनान समाहारो—**सळा-**

§ १७ **स ख्या दि ३ २१**—आदि मे सख्या-वाचक शब्द हो, तो समाहार-समास नपुसक-लिगान्त होता है। जैसे—

पञ्चन्न गुन्न समाहारो—**पञ्चगव । चतुप्पथ ।**

५ क्रियार्थ समास

§ १८ **ची क्रि य त्थे हि ३ १४**—'ची' प्रत्ययान्त शब्द के साथ, क्रियाथ का समास होता है। जैसे—**मीलीनीकरिय ।**

§ १९ **भू स ना द रा ना द रे स्व ल सा सा ३ १५**—भूषण के अथ मे प्रयुक्त 'अल' शब्द, आदर के अथ मे प्रयुक्त 'स' शब्द, तथा अनादर के अथ मे प्रयुक्त 'अस' शब्द के साथ, क्रियाथ का समास होता है। [देखिए—पृ० १५५] जैसे—

अलकरिय । सक्कच्च । असक्कच्च ।

§ २० **अ ञ्ञे च ३ १६**—कुछ दूसरे भी शब्दो के साथ क्रियाथ का समास होता है। जैसे—

पुरोभूय । तिरोभूय । तिरोकरिय । उरसिकरिय । मनसिकरिय । मज्झेकरिय । तुण्हीभूय ।

§ २१ **री रि क्ख के सु ३ ८५**—'री', 'रिक्ख' तथा 'क' प्रत्ययो के[३७] आने से

यतन, छळायतन ।

३५ **स मा न स्स प क्खा दि सु वा ३ ८३**—'पक्ख' आदि शब्द उत्तर पद मे हो, तो पूवपद 'समान' शब्द का विकल्प से 'स' आदेश होता है। जैसे—समानो पक्खो—**सपक्खो, समानपक्खो । सजोति, समानजोति ।**

३६ **पु ब्ब, अ प र, अ ज्ज, सा य म ज्झे हि अ ह स्स अ न्हो ३ ११०**—'पुब्ब' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] यदि पूवपद हो, तो उत्तरपद 'अह' शब्द का 'अन्ह' आदेश होता है। जैसे—

पुब्बो अहो—**पुब्बन्हो । अपरन्हो । अज्जन्हो । सायन्हो । मज्झन्हो ।**

३७ **स मा न ञ्ञ भ व न्त या दि तु प मा ना दि सा क म्मे री रि क्ख का ५ ४३**—उपमा के अथ मे 'समान' आदि शब्दो से परे, 'दिस' =(दिखाई देना) धातु से परे 'री', 'रिक्ख', तथा 'क' प्रत्यय होते है। जैसे—

'समान' शब्द का 'स' आदेश होता है। जैसे—समानो विय दिस्सति—**सरी**,[३८] **सरिक्खो, सरिसो**।

§२२ **सब्बादीनमा ३ ८६**—इन प्रत्ययो के आने से, 'सब्ब' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—यो विय दिस्सति—**यादी, यादिक्खो, यादिसो** (=जैसा)।

§२३ **न्तकिमिमानं टाकीटी ३ ८७**—इन प्रत्ययो के आने से, 'न्त', 'कि', तथा 'इम' का यथाक्रम 'आ', 'की', तथा 'ई' आदेश हो जाता है। जैसे—भव विय दिस्सति—भवन्त+दिस+री=**भवादी**। **भवादिक्खो**। **भवादिसो**। **कीदी, कीदिक्खो, कीदिसो**। **ईदी, ईदिक्खो, ईदिसो**।

§२४ **तुम्हाम्हानं तामेकस्मिं ३ ८८**—इन प्रत्ययो के आने से, एकवचन 'तुम्ह' तथा 'अम्ह' शब्दो का यथाक्रम 'ता' तथा 'मा' आदेश होता है। जैसे—**तादी, तादिक्खो, तादिसो** (=तुम जैसा)। **मादी, मादिक्खो, मादिसो** (=मुझ जैसा)।

बहुवचन मे—**तुम्हादी, अम्हादी**, इत्यादि।

§२५ **वेतस्सेट् ३ ९०**—'री', 'रिक्ख', तथा 'क' प्रत्ययो के आने से, 'एत'

समानो विय दिस्सतीति—**सदी, सदिक्खो, सदिसो**। **अञ्ञादी, अञ्ञादिक्खो, अञ्ञादिसो**। **भवादी, भवादिक्खो, भवादिसो**। **यादी, यादिक्खो, यादिसो**। **तादी, तादिक्खो, तादिसो**।

३८ **रानुबन्धेन्तसरादिस्स ४ १३२**—'र' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के अन्त्य स्वर से ले कर शेष अवयव का लोप हो जाता है। जैसे—

किं+रति=क्+अति ('किं' शब्द के 'इ' का लोप)

क्+अति=**कति**। किं+रीव=**कीव**। कि+रीवतक=**कीवतक**। कि+रित्तक=**कित्तक**।

समानो विय दिस्सति—सदिस+री=**सदी** ('दिस' शब्द के 'इस' का लोप)

समाना रो रीरिक्खकेसु ५ १२५—'समान' शब्द से परे, 'दिस' का विकल्प से 'र' आदेश होता है। जैसे—

सदिस+री=सर+ई=सरी। सदी। **सरिक्खो, सदिक्खो**। **सरिसो, सदिसो**।

शब्द का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—**एदी, एतादी। एदिक्खो, एतादिक्खो। एदिसो, एतादिसो।**

§२६ **सञ्ञायमुदोदकस्स ३ ७१**—संज्ञा का अर्थ हो, तो पूवपद 'उदक', शब्द का 'उद' आदेश होता है। जैसे—

उदक धाति इति अस्मि—**उदधि**[39]। उदक पीयते अस्मि इति—**उदपान**[40]।

६ द्वन्द

§२७ **चत्थे ३ १९**—अनेक स्याद्यन्त शब्दो का, 'और' के अर्थ मे, समास होता ह। जैसे—

(क) समाहार[41]

इन मे नित्य समाहार-समास होता है—*प्राणी के अङ्गो मे*—चक्खु च सोत च—**चक्खुसोत। मुखनासिक। हनुगीव। छविमंसलोहित। नामरूप। जरामरण।**

बाजो के नाम मे—मुरज च गोमुख च—**मुरजगोमुख। पटहाळम्बर। मद्दविकपाणविक। गीतवादित। सम्मताळ।**

हल के अगो मे—**फालपाचन। युगनङ्गल।**

सेना के अगो मे—**असिसत्तितोमर। असिचम्म। धनुकलाप। पहरणवरण।**

नित्य-वैरियो मे—**अहिनकुल। बिळारमूसिक। काकोलूक। नागसुपण्ण।**

सख्या तथा परिमाण मे—**एककदुक। दुकतिक। तिकचतुक्क। चतुक्कपञ्चक। दसेकादसक।**

---

३९ **दाधातिव ५ ४५**—भाव तथा कारक मे, बहुधा 'दा' तथा 'धा' धातु के अन्त्य स्वर का 'इ' होता है। जैसे—**आदि, निधि, बालधि, उदधि।**

४० **अनो ५ ४८**—भाव तथा कारक मे, धातु से परे 'अन' का आगम होता है। जैसे—**उदपान, अपादान,** इत्यादि।

४१ **समाहारे नपुसक ३ २०**—समाहार-समास नपुसक लिङ् होता है।

क्षुद्र जन्तुओ मे—कीटपटङ्ग । कुन्थकिपिल्लिक । डसमकस । मक्खिक-किपिल्लिक ।

छोटी जातियो मे—ओरब्भिकसूकरिक । साकुन्तिकमागविक । सपाक-चण्डाल । वेनरथकार । पुक्कुसछवडाहक ।

चरण-साधारण मे—अतिसभारद्वाज । कठकालाप । सीलपञ्ञाण । समथविपस्सन । विज्जाचरण ।

ग्रन्थो के नाम मे—दीघमज्झिम । एकुत्तरसयुत्तक । खन्धकविभङ्ग ।

लिङ्ग विशेषो मे—इत्थिपुम । दासिदास । तिणकट्ठसाखापलास ।

विविध विरुद्धो मे—कुसलाकुसल । सावज्जानवज्ज । हीनप्पणीत । कण्ह-सुक्क । छेकपापक । अधरुत्तर ।

दिशाओ मे—पुब्बापर । दक्खिणुत्तर । पुब्बदक्खिण । पुब्बुत्तर । अपर-दक्खिण । अपरुत्तर ।

नदी के नामो मे—गङ्गायमुन । महीसरभु ।

(ख) समाहार—इतरेतर

इनमे समाहार-समास होता है, और इतरेतर भी—

तृण विशेषो मे—कासकुस, कासकुसा, । उसीरबीरण, उसीरबीरणा । मुञ्ज-वब्बज, मुञ्जवब्बजा ।

वृक्ष विशेषो मे—खदिरपलास, खदिरपलासा । धवास्सकण्ण, धवास्सकण्णा । पिलक्खनिग्रोध, पिलक्खनिग्रोधा । अस्सत्थकपित्थन, अस्सत्थकपित्थना । साकसाल, साकसाला ।

पशु विशेषो मे—गजगवज, गजगवजा । गोमहिस, गोमहिसा । एणेय्यगोम-हिस, एणेय्यगोमहिसा । एणेय्यवराह, एणेय्यवराहा । अजेळक, अजेळका । कुक्कुर-सूकर, कुक्कुरसूकरा । हत्थिगवास्सवळव, हत्थिगवास्सवळवा ।

पक्षी-विशेषो मे—हसबलाक, हसबलाका । कारण्डवचक्कवाक, कारण्डवच-क्कवाका । बकबलाक, बकबलाका ।

धन वाचक शब्दो मे—हिरञ्ञसुवण्ण, हिरञ्ञसुवण्णा । मणिसखमुत्ता-वेळुरिय, मणिसखमुत्तावेळुरिया । जातरूपरजत, जातरूपरजता ।

धान्य के नामो मे—सालियवक, सालियवका। तिलमुग्गमास, तिलमुग्ग मासा। निप्फावकुलत्थ, निप्फावकुलत्था।

व्यञ्जनो मे—साकसुव, साकसुवा। गव्यमाहिस, गव्यमाहिसा। एणेय्यवाराह, एणेय्यवाराहा। मिगमायूर, मिगमायूरा।

जनपदोमे—कासिकोसल, कासिकोसला। वज्जिमल्ल, वज्जिमल्ला। चेतिविस, चेतिविसा। मच्छसूरसेन, मच्छसूरसेना। कुरुपञ्चाल, कुरुपञ्चाला।

(ग) इतरेतर

इनमे इतरेतर-समास होता है—

चन्दिमो च सुरियो च—**चन्दिमसुरिया**। समणो च ब्राह्मणो च—**समणब्राह्मणा**। **मातापितरो**[४२]। **पितापुत्ता**[४३]। **जयम्पती**[४४]।

---

४२ **विज्जायोनिसम्बन्धानमा तत्र चत्थे ३ ६४**—विद्या तथा योनि के सम्बन्ध-वाचक ल्तुप्रत्ययान्त तथा 'पितु' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है, यदि उनका वैसे ही शब्दो के साथ द्वन्द समास हो। जैसे—

होता च पोता च—**होतापोतारो**। **मातापितरो**।

४३ **पुत्ते ३ ६५**—विद्या तथा योनि के सम्बन्ध-वाचक ल्तुप्रत्ययान्त, तथा 'पितु' आदि शब्दो के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है, यदि उन का समास 'पुत्त' शब्द के साथ हो। जैसे—पिता च पुत्तो च—**पितापुत्ता**। माता च पुत्तो च—**मातापुत्ता**।

४४ **जायाय जयं पतिम्हि ३ ७०**—'पति' शब्द यदि उत्तर पद मे हो, तो पूर्व पद 'जाया' शब्द का 'जय' आदेश हो जाता है। जैसे—जाया च पति च—**जयम्पती**।

३१. अभ्यास

१ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) **यावजीव, यथासत्ति, अन्तोपासाद** वा, अन्तोनगर वा, **बहि-नगर** वा, पुरे-भत्त वा, पच्छा-भत्त वा, कायगता-सति उपट्ठापेतब्बा। इद्धिया तिरोकुड्ड वा तिरोपाकार वा गन्तु सक्कोति। अनुलोम पटिलोम मनसि-कातब्ब।

(ख) (अम्बपाली-गाथातो) (पुरे) कालका भमर-वण्ण-सदिसा वेल्लितग्गा मम मुद्धजा (केसा) अहु। (इदानि) ते जराय **साणवास-सदिसा**। पुप्फ-पूर मम उत्तमङ्ग, त जराय **ससलोम-गन्धिक**। कानन व सहित सुरोपित **कोच्छ-सूचि-विचितग्ग-सोभित** त जराय विरळ तहि तहि। **सण्ह-गन्धक-सुवण्ण-मण्डित** सोभते सु वेणिहि (वेणीहि) अलङ्कत, त जराय खलति सिर कत। वट्ट-पलिघ-सदिसोपमा उभो सोभते सु बाहापुरे मम, ता जराय यथा पातली दुब्बलिका। **सण्ह-मुद्दिका-सुवण्ण-मण्डिता** हत्था मम, ते जराय यथा मूल-मूलिका। तूल-पुण्ण-सदिसोपमा पादा मम जराय फुटिका वलीमता। **पीन-वट्ट-सहितुग्गता** थनका मम रिन्दी व लम्बन्ते' नोदका। एदिसो अहु अय समुस्सयो जज्जरो बहुदुक्खान आलयो। सो' पलेप-पतितो **जरागतो, सच्चवादि-वचन** (बुद्ध-वचन) अनञ्अथा ति॥ (अञ्अथा न होती ति अम्बपाली-गाथा।) सुवुत्तवादी **द्विपदान-मुत्तमो, महाभिसक्को नरदम्म-सारथि**। चित्त चल **मक्कट-सन्निभ**। **अवीत-रागेन सुदुन्निवारिय** ति॥

(ग) **माला-गन्ध-विलेपन-धारण-मण्डन-विभूसनट्ठाना** पटिविरतो होति।

सत्ताह चतुसच्च तिलक्खनेन भावेतब्ब। विकाल-भोजना, अदिन्ना-दाना मुसा-वादा, पटिविरतेन भवितब्ब। **दीपङ्करो** भगवा **सत-सहस्स-छळभिञ्ञ-खीणासव-भिक्खूहि** अञ्जस (मग्ग) पटिपज्जि। **दिट्ठ-धम्म-सुख-विहारिनो** च **अपगत-भयभेरवा** च **कत-करणीया** च बुद्ध-पुत्ता विहरन्ति। **चीवर-पिण्ड-पात-सेनासन-गिलान-पच्चय-भेसज्ज-परिक्खारा** समुदानेतब्बा। **वीमसा-समाधि-पधान-सखार-समन्नागत** इद्धि-पाद भावेतब्ब। **ओट्ठ-पहत-मत्तेन** लपित-लापन-मत्तेन तावतकेनेव **आणवाद थेरवाद** न वत्तब्ब। भगवा हि **उत्तरि-मनुस्स-धम्मा** अल-

मरिय-ञाण-दस्सन-विसेस अज्झगमा। **एकन्त-परिपुण्ण** एकन्त-परिसुद्ध **सख-लिखित** ब्रह्मचरिय चरितु अगार अज्झावसता न सुकर होति। **राग-दोस-मोहा पमाद-करणा** ते खीणासव-भिक्खुनो पहीना **उच्छिन्न-मूला ताला-वत्थु-कता अनभावकता** आयति **अनुप्पाद-धम्मा**। **सञ्ञा-वेदयित-निरोध-समापत्तिया वुट्ठ-** हन्तस्स भिक्खुनो **विवेक-निन्न** चित्त होति विवेक-पोण विवेक-पब्भार ति। **निब्बाणोगध** हि ब्रह्म-चरिय (तथागतप्पवेदित-धम्म-विनये) **निब्बाण-परायण निब्बाण-परियोसान** ति।

२ ऊपर के काले शब्दो का विग्रह कोजिए, और उनके समास बताइए।

३ हिन्दी में अनुवाद कोजिए। काले छपे अशो के लिए एक ही पद (समास) का व्यवहार कोजिए—

उसके **कपडे लाल** है। यह **कमल नीला** है। यह **लम्बे कान वाला** है। उसकी **कीर्ति बहुत बढ़ी** है। वह **हाथ में तलवार लिए** है। वह **सोने के गहने पहने हुए** है। इस **जङ्गल में बडे मतवाले हाथी** है। यह **काम बहुत बुरा** है। **इसके पत्ते गिर गये** है। **पानी भरा घडा** यहाँ है। **उसके पास दूध** है। **भोजन कुछ कुछ गरम** है। **शक्ति के अनुसार** काम करता है। **वृक्ष पर बानर चढे** है। **लडके पढा दिये गये** है। **बडी विचित्र गायें रखने** वाला **आदमी** है। **चश्मे की** ओर जाता है। **ब्राह्मणो की सभा में** गया था। **उसका आदमी** है। **दो नाम** वाला ग्वाला आ गया है। **एक दूसरे का जोडा** मिल गया। वह मेरा **सगा भाई** है। **आप का नाम क्या है** ? **धुकती आग में** थोडा घी डालिये। वह **गुड से मिला हुआ चावल** खाता है। इस दरख्त के **फल पक गये** है। वह **अपने पिता के समान** है। उसको **कोई लडका नही** है।

४ निम्नलिखित शब्दो का विग्रह कोजिए, तथा उनके नियमो का निर्देश कोजिए—

जयम्पती। मिगमायूर। पिलक्खनिग्रोध। कुक्कुरसूकरा। गङ्गायमुन। अधरुत्तर। इत्थिपुम। एककदुक। विळारमूसिक। मादिक्खो। सरिक्खो। अल-करिय। सक्कच्च। पञ्चगव। अवकोकिल। अपुनगेय्या। लोहित सालि। नदीसोतो। चित्तज। यूपदारु। उरगो। दधिभोजन। तन्तवायो। सागि।

दिगुण। चित्तगु। अपुत्तो। पपण्णो। अत्थिखीरा। जिनिन्द्रियो। वजिरपाणि। साय-मग्ग। अधोगङ्ग।

५ समास कीजिए—

अनु+रथ। पटि+मोत। वहूनि धनानि यस्स। तयोदस परिमाण येस। पितुना सदिसो। सवरेहि भय। न कुसल। निग्गतो कोसम्बिया। परिगिलानो अज्झेनाय। कुच्छितो पुरिसो। पञ्चन्न गुन्न समाहारो। कम्मा जात। गामा निग्गतो। चित्ता गावो अस्स। परि पब्बत वस्सि देवो। दिन्न भोजन यस्स सो। नील उप्पल।

छठा काण्ड

चौथा पाठ

समासान्त प्रत्यय

अ

§१ समासन्त्व ३४० पापादीहि भूमिया ३४१—'पाप' आदि शब्दो के साथ, जब 'भूमि' शब्द का समास होता है, तो उस से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पापा भूमि यस्मि ठाने—पापभूमि+अ=**पापभूम**। जातिया उपलक्खिता भूमि यस्मि ठाने—जातिभूमि+अ=**जातिभूम**।

§२ सङ्ख्याहि ३४२—सख्या-वाचक शब्दो के साथ, जब 'भूमि' शब्द का समास होता है, तो उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे भूमियो अस्स भवनस्स—**द्विभूम**। **तिभूम**।

§३ नदीगोदावरीन ३४३—सख्या-वाचक शब्दो के साथ, जब 'नदी', तथा 'गोदावरी' शब्दो के साथ समास होता है, तो उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पञ्चन्न नदीन समाहारो—**पञ्चनद**। सत्तन्न गोदावरीन समाहारो—**सत्तगोदावर**।

§४ असङ्ख्येहि चाङ्गुल्या नञ्जसङ्ख्यत्थेसु ३४४—यदि बहुब्रीहि या अव्ययीभाव समास न हो, तो अव्यय तथा सख्यावाचक शब्दो के साथ 'अङ्गुली' शब्द का समास होने से, उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

निग्गत अङ्गुलीहि—**निरङ्गुल**। **अच्चङ्गुल**। द्वे अङ्गुलियो समाहरा—**द्वङ्गुल**।

§५ दीघाहोवस्सेकदेसेहि च रत्या ३४५—सख्यावाचक शब्द, तथा 'दीघ', 'अहो', 'वस्स', 'एक', और 'देस' के साथ 'रत्ति' का समास होने से,

उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

दीघा च सा रत्ति चाति—**दीघरत्त**। अहो च रत्ति चाति—**अहोरत्त**। वस्सासु रत्ति—**वस्सारत्त**। पुब्बा च सा रत्ति चाति—**पुब्बरत्त**। **अपररत्त**। अड्ढा च सा रत्ति चाति—**अड्ढरत्त**। अतिकन्तो रत्तिं—**अतिरत्तो**। द्वे रत्ती समाहरा—**द्विरत्त**। **एकरत्त, एकरत्ति**।

§६ **गोत्वचत्थे चालोपे** ३ ४६—यदि द्वन्द, बहुब्रीहि, या अव्ययीभाव न हो, तो समास होने पर 'गो' शब्द से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

रञ्ञो गो—**राजगवो**। परमो गो—**परमगवो**। पञ्च गावो धन अस्स—**पञ्चगवधनो**। दसन्न गुन्न समाहारो—**दसगव**।

§७ **रत्तिन्दिवदारगवचतुरस्सा** ३ ४७—निम्नलिखित समासान्त निपात है—

रत्तो च दिवा च—**रत्तिन्दिव**। रत्ति च दिवा च **रतिन्दिव**। दारा च गावो च—**दारगव**। चतस्सो अस्सियो अस्स—**चतुरस्सो**। [1]**अनुगव सकट**=बैल के बराबर ही लम्बी गाडी।

§८ **अक्खिस्माञ्ञत्थे** ३ ४६—बहुब्रीहि समास मे, 'अक्खि' शब्द से परे, 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

विसालानि अक्खीनि यस्स सो—**विसालक्खो**।

§९ **दारुम्ह्यङ्गुल्या** ३ ५०—बहुब्रीहि समास मे, 'दारु' समझे जाने पर, अङ्गुली शब्द से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे अङ्गुलियो अवयवा अस्स—**द्वङ्गुल दारु**=पुआल तृण आदि बटोरने के लिए दो अङ्गुलियो वाली बनी लकडी। **पञ्चङ्गुल** दारु।

§१० **चिवीतिहारे** ३ ५१—क्रिया का व्यतिहार (=अदला का बदला) समझा जाय, तो बहुब्रीहि समास मे 'चि' प्रत्यय होता है। 'चि' का 'इ' रह जाता है। जैसे—

[2] **केसाकेसी**=झोटाझोटी। **दण्डादण्डी**=लाठालाठी।

---

१ **आयामे नुगव** ३ ४८—निपात।

२ **तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सरूप** ३ १८—'उसे पकड कर, उससे

क

§ ११ **ल्त्वि त्थि यु हि को** ३ ५३—बहुब्रीहि समास मे, 'त्तु' प्रत्ययान्त, तथा स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त-ऊकारान्त शब्दो से परे बहुधा 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—

बहवो कत्तारो एतस्स—**बहुकत्तुको**। बहू कुमारियो एतस्मि गामे—**बहुकुमारिको** गामो। बहू ब्रह्मबन्धू एतस्मि गामे—**बहुब्रह्मबन्धुको** गामो।

§ १२ **वाञ्ञतो** ३ ५३—और भी स्थानो मे विकल्प से 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—

बहुमालको, बहुमालो।

मार मार कर, जैसे युद्ध करता है'—इस अर्थ मे समास होता है। जैसे—

केसेसु च केसेसु च गहेत्वा युद्धम्पवत्त—**केसाकेसी**। दण्डेहि च दण्डेहि च पहरित्वा युद्धम्पवत्त—**दण्डादण्डी**। **मुट्ठामुट्ठी**।

चि स्मि ३ ६६—'चि' प्रत्यय आने से, उत्तर पद से पहले 'आ' का आगम होता है। जैसे—**दण्डादण्डी**। **मुट्ठामुट्ठी**।

ण्वादि-वृत्ति

(उणादि)

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स

मोग्गल्लान 'ण्वादि'-वृत्ति

णु

१ **चर, दर, कर, रह, जन, सन, तल, साद, साध, कस, अस, चट, अस, वाहि णु**—इन धातुओ से परे, बहुधा 'णु' प्रत्यय होता है। 'णु' का 'उ' रह जाता है।

'अस्सा णानुबन्ध' ५ ८४—इस सूत्र से, धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' हो जाता है। जैसे—

चरति हदये मनुञ्ञभावेनाति—चर+णु=**चारु**=सुन्दर। दरीयतीति—**दारु**=लकडी। करोति इति—**कारु**=शिल्पी, इन्द्र, विश्वकर्मा। रहति, चन्दादीन सोभाविसेस नासेतीति—**राहु**=असुरेन्द्र। जायति गमनागमन अनेनाति—**जाणु**=घुटना। सनेति, अत्तनि भत्ति उप्पादेतीति—**सानु**=जो अपने मे भक्ति उत्पन्न करावे—पहाड की चोटी। तलन्ति, पतिट्ठहन्ति एत्थ दन्तानि—**तालु**। सादीयति अस्सादीयतीति—**सादु**=मधुर। साधेति अत्तपरहित इति—**साधु**=सज्जन। कसीयतीति—**कासु**=गढा। असति, सीघभावेन पवत्ततीति—**आसु**=शीघ्र। चटति, भिन्दति अमुञ्ञभावन्ति—**चाटु**=खुसामद। अयन्ति, पवत्तन्ति सत्ता एतेनाति—**आसु**=प्राण।

'आस्सा णापिम्हि युक्' ५ ९१—इस सूत्र से, 'आकारान्त' धातु से परे, 'य' का आगम होता है। जैसे—

वाति गच्छति इति—**वायु**=हवा।

२ **भ, रमर, चर, तर, अर, गर, घर, हन, तन, मन, भम, कित, धन, बह, कम्ब, अम्ब, इक्ख, चक्ख, भिक्ख, सँक, इन्द, अन्द, यज, पट,**

अण, अस, वस, पस, पस, बन्धा उ—इन धातुओं से परे 'उ' प्रत्यय होता है। जैसे—

भरतीति—**भरु**=पति। मरनि रूपकायेन सहेवाति—**मरु**=देव, निजल देश। चरीयति, भक्खीयतीति—**चरु**=हव्यपाक। तरन्ति अनेनाति—**तरु**=वृक्ष। अरति, सून-भावेन उद्ध गच्छतीति—**अरु**=व्रण। गरति, सिञ्चति, गिरति, वमति वा सिस्सेसु सिनेहन्ति—**गरु**, या गुरु। हनति, ओदनादिसु वण्णविसेस नासेतीति—**हनु**=ठुडढी। तनोति ससारदुक्खन्ति—**तनु**=शरीर। मञ्ञति सत्तान हिताहित इति—**मनु**=प्रजापति। भमति, चलतीति—**भमु**=भौं। केतति, उद्ध गच्छति, उपरि निवसतीति—**केतु**=ध्वजा। धनति, सद्द करोतीति—**धनु**=चाप। वह इति निद्देसा उम्हि निच्च निग्गहीत लोपो—वहति, बुद्धि गच्छतीति **बहु**=अधिक। कम्बति, सवरण करोतीति—**कम्बु**=शङ्ख। अम्बति, अभिनाद करोतीति—**अम्बु**=जल। चक्खति रूपन्ति—**चक्खु**=आँख। भिक्खतीति **भिक्खु**=श्रमण। सङ्कीयतीति—**सङ्कु**=शूल। इन्दति, नक्खत्तान परमिस्सरियं पवत्तेतीति—**इन्दु**=चाँद। अदति, बन्धति सत्ता एतायाति—**अन्दु**=जजीर। यजन्ति अनेनाति—**यजु**=वेद। पटति, ब्यत्तभाव गच्छतीति—**पटु**=विचक्षण। अणति, सुखुमभावेन पवत्ततीति—**अणु**=सूक्ष्म, धान्य विशेष। असन्ति, पवत्तन्ति सत्ता एतेहि—**असवो**=प्राण। सुख वसन्ति अनेनाति—**वसु**=धन। पसीयति, बाधीयति सामिकेहीति—**पसु**=चतुष्पाद। पसति, सोभाविसेस नासेतीति—**पसु**=धूल। बन्धीयति सिनेहभावेनाति—**बन्धु**=बान्धव।

ऊ

३ **बन्धा ऊ वधो च**—'बन्ध' धातु से परे 'ऊ' प्रत्यय होता है, और 'बन्ध' का 'वध' आदेश हो जाता है। जैसे—पञ्चहि कामगुणेहि अत्तनि सत्ते 'बन्धतीति—**वधु**=बहू।

४ **जम्बादयो**—'जम्बू' आदि 'ऊ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।

निपातन—अप्पत्तस्स पापन, पत्तस्स पापन, पत्तस्स पटिसेधो च। जनिस्मा ऊ बुचागमो। 'मनान निग्गहीत' ५ ६६—इस सूत्र से 'जन' धातु के

'न' का निग्गहीत हो गया। फिर, 'वग्गे वग्गन्तो' १ ८१—इस सूत्र से निग्गहीत का 'म' हो गया। जैसे—

जायति, जनीयतीति वा—जन+ऊ=जम्बू=वृक्ष।

'भम' धातु के 'अम' का लोप हो जाना है। जैसे—भमति कम्पति—भू या भमु।

करोतिस्मा ऊ। तस्स 'कन्धु' चागमो। 'परस्प-मयकार व्यञ्जने ५ ९५—इति धातु तस्स व्यञ्जनस्स पररूपत्त। रुधिरुप्पाद करोतीति—**कक्कन्धु**=वैर का फल।

आलम्बति, अवसतीति—**अलाबू**=तुम्बा।

सर=गतिहिंसाचिन्तासु। सरति गच्छतीति—**सरभू**=एक नदी का नाम। सरति, पाणे हिंसतीति—**सरबू**=क्षुद्र जन्तु विशेष।

चम=अदन। चमति, भक्खति निवापनन्ति—**चमू**=सेना।

तन=वित्थारे। तनोति ससारदुक्खति—**तनू**=शरीर इत्यादि।

कु

५ **तपुसवीधकुरपुथमुदा कु**—इन धातुओं से परे 'कु' प्रत्यय होता है। 'कु' का 'उ' रह जाता है। जैसे—

तापीयतीति—**तिपु**=सीसा। उसति, दाह करोतीति—**उसु**=वाण। वेधति रसीहि तिमिरन्ति—**विधु**=चन्द्र। कुरति, किच्चाकिच्च वदतीति—**कुरु**=राजा। **कुरवो**=जनपदा। पुथति, महन्तभावेन पत्थरतीति—**पुथु**=विस्तार। मोदन, मुदीयतीति वा—**मुदु**=नरम।

६ **सिन्धादयो**—'सिन्धु' आदि 'कु' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

सन्दति, पस्सवतीति—**सिन्धु**=नदी। वहन्ति अनेनाति—**बाहु**। बधति, उपद्दवे निवारेतीति—**बाहु**=भुजा। रघति, पवत्तति राजधम्मे'ति—**रघु**=राजा। विन्दन्ति, अनेन नन्दन्तीति—**बिन्दु**=कणिका। मञ्जति, जायति मधुर न्ति—**मधु** अथवा, मधुकरीहि कंत—**मधु**। रपति, जप्पति मन्तन्ति—**रिपु**=शत्रु। ससति, जीवतीति—**सुसु**=शिशु। अरति, महन्त भाव गच्छति इति—**उरु**=बडा। अरन्ति अनेनाति—**ऊरु**=जाँघ। आखञ्जतीति—**आखु**=चूहा।

तरतीति—**थरु**=तलवार की मूठ। लङ्घति, पवत्तति लघुभावेनाति—**लघु**=हलका। भञ्जति विसेसेनाति—**पभङ्गु**=अङ्कुर। ठाति, पवत्तति सुन्दरभावेनाति—**सुट्ठु**=अच्छा। ठाति, पवत्तति असुन्दरभावेनाति—**दुट्ठु**=बुरा इत्यादि।

इ

७ **इ**—धातु से परे बहुधा 'इ' प्रत्यय होता है। जैसे—

असति, खिपीयतीति—**असि**=तलवार। कसीयतीति—**कसि**=कृषि। आमसीयतीति—**मसि**=राख। कु=सद्दे, ओस्स अवादेसो, कब्यति, कथेतीति—**कवि**। रवति, गज्जतीति—**रवि**=सूय। सप्पति, पवत्ततीति—सप्पि=**घी**। गन्थेतीति—**गण्ठि**=गाँठ। राजति, पवत्ततीति—**राजि**—पक्ति। कलीयति, परिसीयतीति—**कलि**—पाप। बलन्ति, जीवन्ति अनेनाति—**बलि**=कर। धनति नदतीति—**धनि**=शब्द। अच्चीयति, पूजीयतीति—**अच्चि**=ज्वाला। वलन सङ्कोचन—**वलि**=सिकुडन। वल्लीयन्ति सवरीयन्ति सता एतायाति—**वल्लि**=लता इत्यादि।

८ **दध्यादयो**—'दधि' आदि 'इ' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

घतमादधातीति—**दधि**=दही। अहति, गच्छतीति—**अहि**=साँप। कम्पति, चलतीति—**कपि**=वानर। मनति जानातीति **मुनि**=श्रमण। मनति, महग्घभाव गच्छतीति—**मणि**=रत्न। इक्खति अनेनाति—**अक्खि**=आँख ('इक्ख' के 'इ' का 'अ' हो गया)। कमति, यातीति—**किमि**=कीडा ('कम' का 'किम' हो गया)। तुरितो तरति यातीति—**तित्तिरि**=पक्षी। कीळन—**केळि**=क्रीडा। उस्सति, दहतीति—**उक्खलि**=भाजन इत्यादि।

कि

९ **युवण्णुपन्ता कि**—जिन धातुओ के उपान्त मे 'इ' या 'उ' रहे, उनसे परे बहुधा 'कि' प्रत्यय होता है। 'कि' का 'इ' रहता है। जैसे—

सील इच्छतीति—**इसि**=तपस्वी। गिरति, पसवति छविमससारभूत भेसज्जा-

दीनि—**गिरि**=पहाड । सूचेति सुन्दरत्तन्ति—**सुचि**=पवित्र । रुचन्ति एतायाति **रुचि**=अभिलाषा इत्यादि ।

१० वप, वर, वस, रस, नभ, हर, हन, पण, इण्—इन धातुओ से परे 'इण्' प्रत्यय होता है । जैसे—

वपन्ति एतायाति—**वापि**=जलाशय । वारेन्ति एतेनानि—**वारि**=जल । वसन्ति एतायाति—**वासि**=बसुला । रसीयति, अस्सादनवसेन समोस्सरीयतीति—**रासि**=समूह । नमति, हिंसतीति—**नाभि** । हारेतीति—**हारि**=मनोज्ञ । हनन्ति एतेनाति—**घाति**=हथियार । पणति, वोहरतीति—**पाणि**=प्राणी । पणति, वोहरति एतेनाति वा—**पाणि**=हाथ ।

ईण

११ भू गमा ईण्—'भू' तथा 'गम' धातुओ से परे, भविष्यत्काल मे, 'ईण' प्रत्यय होता है । जैसे—भविस्सतीति—**भावी**=होने वाला । गमिस्सतीति—**गामी**=जाने वाला ।

ई

१२ तन्द लक्खा ई—इन धातुओ से परे, 'ई' प्रत्यय होता है । जैसे—तन्दन=**तन्दी**=आलस्य । लक्खीयन्ति सत्ता एतायाति—**लक्खी**=श्री ।

रो

१३ गमा रो—'गम' धातु से परे, 'रो' प्रत्यय होता है । 'रो' का 'ओ' रह जाता है ।

रानुबन्धेन्तसरादिस्स ४ १३२—इस सूत्र से 'गम' के 'अम' का लोप हो गया । जैसे—

गच्छतीति—**गो**=पशु ।

क

१४ इभी काकर अरव कसक वाहि को—इन धातुओ से परे, 'क' प्रत्यय होता है । जैसे—

एति पवत्ततीति—**एको**=असहाय। भायन्ति अस्मा इति—**भेको**=मेढक। काति, सद्द करोतीति—**काको**=कौआ। करोति वण्णन्ति—**कक्को**=एक तरह का रग। अरति, यातीति—**अक्को**=सूरज। वक्कति, ओदनमाददातीति—**वक्क**=देहकोट्ठासविसेसो। सक्कोतीति—**सक्को**=इन्द्र। वाति, बन्धति एतेनाति **वाको**=वल्कल।

१५ **ऊकादयो**—'ऊका' आदि, 'क' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

ऊहीयति विचिनीयतीति—**ऊका**=जूँ। उन्दति, द्रव करोतीति—**उदक**=जल। भायति एतस्मानि—**भीको**=भीरु। सक्कोति धारेतुन्ति—**सिक्का**=सिकहर। हीयति साधूहि—**हाको**=क्रोध। सम्बति, उदक मण्डेतीति—**सम्बुको**=जलजन्तु विशेष। पुथति, पत्थरति अत्तनो बालभाव—**पुथुको**=मूख। सोचन्ति एतेनाति—**सुक्क**=उजला। उपचिनन्तीति—**उपचिका**=दीमक। कम्पति, चलतीति—**पङ्को**=कीचड ('कम्प' का 'प' आदेश)। उमतीति—**उक्का**=ज्वाला। उसति, दहतीति—**उम्मुक**=अलात। वमीयतीति—**वम्मिको**=दीयड। मसीयति पेमेनाति—**मत्थक**=शिर ('स' का 'त्थ' होता है)।

आनक

१६ **भीत्वानको**—'भी' धातु से परे 'आनक' प्रत्यय होता है। जैसे—भायन्ति एतस्मा ति—**भयानको**।

आणिक, आटक

१७ **सिङ्घा आणिकाटका**—'सिघ' धातु से परे 'आणिक' तथा 'आटक' प्रत्यय होते है। जैसे—

सिङ्घायति पस्सवतीति—**सिङ्घाणिका**=नाक का पोटा। सिङ्घति एकीभाव यातीति—**सिङ्घाटक**=चौराहा।

अक

१८ **करादित्वको**—'कर' आदि धातुओ से परे, 'अक' प्रत्यय होता है। जैसे—

करीयतीति—**करको**=कमण्डलु। करोतीति—**करको**=वस्मोपलो। सरति उदकमेत्थाति—**सरको**=जल पीने का भाजन। नरन्ति पापुणन्ति सत्ता एत्थाति—**नरको**। तरन्ति अनेनाति—**तरको**=तरण। वारेतीति—**वरको**=वरण करना, धान्यविशेष। जनेतीति—**जनको**=पिता। कनति दिब्बतीति—**कनक**=सोना। कटति, मद्दति निवारेति रिपवोति—**कटक**=नगर। कुरतीति **कोरको**= कली। थवीयतीति—**थवको**=गुच्छा।

१९ **बलपतेह्याको**—'बल' तथा 'पत' धातु से परे 'अक' प्रत्यय होता है। जैसे—

बलति जीवतीति—**बलाका**=पक्षी-विशेष। पतति, यातीति—**पताका**।

२० **सामाकादयो**—'सामाक' आदि, 'आक' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

साति, देह तनु करोतीति—**सामाको**=तृण धान्य। पिवति रत्तन्ति—**पिनाको**=शिव का धनुष। गवति, नदति एतेनाति—**गुवाको**=सुपारी। पटति, यातीति **पटाका**=पताका। सलति, यातीति—**सलाका**=शलाका, वैद्यो के चीर-फाड के लिए। विदति, जानातीति—**विदाको**=विद्वान्। पणीयति, वोहरीयतीति—**पिञ्ञाको**=तिलका पीना, खरी।

किक

२१ **विच्छालगमसुसा किको**—'विच्छ', 'अल', 'गम', तथा 'मुस' धातुओ से परे 'किक' प्रत्यय होता है। जैसे—विच्छति, यातीति—**विच्छिको**= बिच्छू। अलति, बन्धति एतेनाति—**अलिक**=असत्य। गच्छतीति—**गमिको**= जाने वाला। मुसति, थेनेतीति—**मूसिको**=चूहा।

२२ **किंकणिकादयो**—'किंकणिका' आदि 'किक' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

कणति, सद्द करोतीति—**किंकणिका**=छोटी घण्टियाँ। मुदन्ति एतायाति—**मुद्दिका**=अगूठी, फल विशेष। महीयति पूजीयतीति—**महिका**=हिम। कलीयति, परिमीयतीति—**कलिका**=कली। सप्पति, गच्छतीति—**सिप्पिका**= सीपी इत्यादि।

कीक

२३ **इसा कीको**—'इस' धातु से परे 'कीक' प्रत्यय होता है। जैसे—इच्छीयतीति—**इसीका**=सीक।

णुक

२४ **कमपदा णुको**—कम', तथा 'पद' धातुओ से परे, 'णुक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कामेतीति—**कामुको**=कामी। पज्जति, याति एतायाति—**पादुका**=खडाऊँ।

णूक

२५ **मण्डसला णूको**—'मण्ड', तथा 'सल' धातुओ से परे, 'णूक' प्रत्यय होता है। जैसे—

मण्डेति, जल भूसेतीति—**मण्डूको**=मेढक। सलति, गोचरत्त उपयातीति—**सालूक**=उत्पलकन्द।

२६ **उलूकादयो**—'उलूक' आदि 'णुक' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

उलति, गवेसतीति—**उलूको**=उल्लू। मञ्ञतीति—**मधुको**=वृक्ष ('मन' के 'न' का 'ध' हो गया)। जलतीति—**जलूका**=जोक इत्यादि।

सक

२७ **कसा सको**—'कस' धातु से परे, 'सक' प्रत्यय होता है। जैसे—कस्सतीति—**कस्सको**=कृषक।

तिक

२८ **करा तिको**—'करोति' से परे, 'तिक' प्रत्यय होता है। जैसे—करोन्ति कीळ एत्थाति—**कत्तिका**=कार्तिक।

ठकण्

२९ इसा ठकण्—'इस' धातु से परे, 'ठकण्' प्रत्यय होता है। जैसे—
इच्छीयतीति—**इट्ठका**=ईंट।

ख

३० समा खो—'सम' धातु से परे, 'ख' प्रत्यय होता है। जैसे—
उपसमेतीति—**सङ्खो**=शङ्ख।

३१ मुखादयो—'मुख' आदि, 'ख' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—
मुनन्ति, बन्धन्ति एतेनाति—**मुख**।

सयन्ति एत्थ ऊका कुसुमादयो वाति—**सिखा**=चूडा। विसन्ति एत्थ, पविसन्ति वाति—**विसिखा**=गली। कनति, दिपतीति—**निक्खो**=सुवण्णविकारो। मयति यातीति—**मयूखो**=किरण। लुनाति, छिन्दति सोभन्ति—**लूखो**=रूखा। अरन्ति, यन्ति एतेनाति—**अक्खो**=अक्ष, पासा। यसति, पयतति बलिमाहरणत्थायाति—**यक्खो**=यक्ष। रुहति, जनेतीति—**रुक्खो**=वृक्ष। उसति, दहति कायग्गिनाति—**उक्खो**=बैल। सहति, अत्तनि कतापराध खमतीति—**सखो**=मित्र इत्यादि।

गक्

३२ अज वज मुद गद गमा गक्—इन धातुओ से परे, 'गक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

अजति, गच्छति सेट्ठभावन्ति—**अग्गो**=अगुआ। वजति, समूहत्त गच्छतीति—**वग्गो**=समूह। मुदन्ति एतेनाति—**मुग्गो**=मूँग। गदतीति—**गग्गो**=एक ऋषि। गच्छतीति—**गङ्गा** ('मनान निग्गहीत ५ ९६—इस सूत्र से 'गम' धातु के 'म' का अनुस्वार हो गया)।

३३ सिङ्गादयो—'सिङ्ग' आदि, 'गक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

सयति, पवत्तति मत्थके ति—**सिङ्ग**=सीग ('सी' धातु का ह्रस्व हो गया, और निग्गहीत का आगम हुआ)। फुरति, चलतीति—**फुलिङ्गो**—चिनगारी।

उच्चलति, कम्पतीति—**उच्चालिङ्गो**=एक उजला कीडा। कलति, नाद करोति बहुराजिकायाति—**कलिङ्गो**=दक्खिणापथो। भमतीति—**भिङ्गो**=भौरा। पतन्तो गच्छतीति—**पटङ्गो, पटगो**=फतिंगा।

गि

३४ अगा गि—अग=कुटिल गमने। इस धातु से परे, 'गि' प्रत्यय होता है। जैसे—

अगति, कुटिलो हुत्वा गच्छतीति—**अग्गि**=आग।

गु

३५ या व ला गु—'या' तथा 'वल' धातुओं से परे, 'गु' प्रत्यय होता है। जैसे—

या=पापुणने। यातीति—**यागु**=यवागु। वलीयति, सवरीयतीति—**वग्गु**=मनोज्ञ।

३६ फेग्वादयो—'फेग्गु' आदि, 'गु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

फलति, निट्ठान गच्छतीति—**फेग्गु**=सारहीन। भरतीति—**भगु**=भृगु ऋषि। हिनोति, पवत्ततीति—**हिङ्गु**=हीग। कमीयतीति—**कङ्गु**=धान्य-विशेष इत्यादि।

घ

३७ जना घो—'जन' धातु से परे, 'घ' प्रत्यय होता है। जैसे—

जायति गमनमेतायाति—**जङ्घा** ('जन' धातु के 'न' का निग्गहीत हो गया—मनान निग्गहीत ५ ६६)।

३८ मेघादयो—'मेघ' आदि, 'घ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

मेहति, सिञ्चतीति—**मेघो** (मिह=सेचने। 'ह' लोपो)। मुय्हन्ति सत्ता एत्थाति—**मोघो**=तुच्छ। सेति, लहु हुत्वा पवत्ततीति—**सीघ**=शीघ्र। निदहतीति—**निदाघो**=ग्रीष्म। महीयति, पूजियतीति—**मघा**=एक नक्षत्र इत्यादि।

च

३९ चु-सर-वरा चो—इन धातुओं से परे, 'च' प्रत्यय होता है। जैसे—

चवति रुक्खाति—**चोच**=उपभुत्तफलविमेमा। सरति, आयति दुक्ख हिंसतीति—**सच्च**=सत्य। वारेति सुखन्ति—**वच्च**=पाखाना।

चु, ईचि

४० **मरा चु ईचि च**—'मर' धातु से परे, 'चु' तथा 'ईचि' प्रत्यय होते हैं, और 'च' प्रत्यय भी। जैसे—

मरण—**मच्चु**=मौत। मारेति, अन्धकार विनासेतीति—**मरीचि**=किरण, मृगतृष्णा। मरतीति—**मच्चो**=प्राणी।

छिक्

४१ **कुस-पसा छिक्**—इन धातुओं से परे, 'छिक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

कुसीयति, अक्कोसीयतीति—**कुच्छि**=पेट। पसीयति, बाधीयति एत्थाति—**पच्छि**=खाँची, डाली।

छुक्

४२ **कस-उसा छुक्**—इन धातुओं से परे, 'छुक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कसन्ति, विलेखन्ति एत्थाति—**कच्छु**=खुजली।

छो

४३ **अस-मस-वद-कुच-कचा छो**—इन धातुओं से परे, 'छ' प्रत्यय होता है। जैसे—

असति, खिपतीति—**अच्छो**=भालू। आमसति जलन्ति—**मच्छो**=मछली। वदतीति—**वच्छो**=वत्स। कुचीयति, सकोचीयतीति—**कोच्छो**=पीढा। कचीयति, बन्धीयतीति—**कच्छो**=तराई।

४४ **गुच्छादयो**—'गुच्छ' आदि 'छ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

गोपीयतीति—**गुच्छो**=गुच्छा। तुमन्ति अनेनाति—**तुच्छ**=मिथ्या। पोसन्ति तनुमनेनाति—**पुच्छो**=पूँछ इत्यादि।

उट्, जु

४५ **अरा-जु उट् च**—'अर' धातु से परे, 'जु' प्रत्यय, होता है। 'अर' का 'उ' आदेश होता है। जैसे—अरति, अकुटिलभावेन पवत्ततीति—**उजु**=सीधा।

४६ **रज्जादयो**—'रज्जु' आदि 'जु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

रुन्धन्ति एतेनाति—रज्जु=रस्सी ('रुध' धातु का 'रध' हो गया)। अमञ्जित्थाति—**मञ्जु**=मञ्जुल इत्यादि।

झक्

४७ **गिधा झक्**—गिध=अभिकङ्खाय। इस धातु से परे, 'झक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

गेधतीति—**गिज्झो**=गीध।

४८ **वञ्झादयो**—'वञ्झ' आदि 'झक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वन=याचने। वनोति, अत्तान अनुभवितु याचतीति—**वञ्झो**=फलहीन वृक्ष। **वञ्झा**=बाँझ स्त्री। 'वन' का 'विन' आदेश हो जाने से—**विञ्झो**=पवत। सञ्जयतीति—**सज्झ**=रजत इत्यादि।

ञ

४९ **कम-यजा ञो**—इन धातुओ से परे, 'ञ' प्रत्यय होता है। जैसे—

कमीयतीति—**कञ्ञा**=कुमारी ('कम' धातु के 'म' का निग्गहीत हो गया)। यजन्ति अनेनाति—**यञ्ञो**=यज्ञ।

५० **पुणा ञ**—'पु' धातु से परे, विकल्प से 'ञ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पुणाति, सुन्दरत्त करोतीति—**पुञ्ञ**=कुशल कम।

५१ **अर-हा ञो हास्स हिरञ् च**—'अर' तथा 'हा' धातु से परे, 'ञ' प्रत्यय होता है। 'हा' का 'हिरञ्' आदेश हो जाता है। जैसे—

अरीयते, गम्यतेति—**अरञ्ञ**=वन। जहाति सत्तान हीनत्तति—**हिरञ्ञ**=धन, सोना।

कीट

५२ किर-तरा कीटो—इन धातुओ से परे, 'कीट' प्रत्यय होता है। जैसे—

सोभेतुमेत्थ रतनानि विकिरीयन्तीति—**किरीट**=मकुट। तरन्ति, यन्ति सुरूपत्तमनेनाति—**तिरीट**=पगडी।

अट

५३ सकादीह्यटो—'सक' आदि धातुओ से परे, 'अट' प्रत्यय होता है। जैसे—

सक्कोति भार वहितुन्ति—**सकटो**=गाडी। अकसि, निरोजत्त अगमीति—**कसट**=बुरा, अप्रिय। करोति अमनायन्ति—**करटो**=कौआ। मक्कति चलतीति—**मक्कटो**=वानर। देवीयति पूजीयनीति—**देवटो**=ऋषि। कमनि, इच्छति आरोहत्तन्ति—**कमटो**=बोना।

५४ मकुट-आवाट-कवाट-कुक्कुट्टा—ये शब्द निपात है। जैसे—

मङ्कोति, सोभेतीति—**मकुट**=मकुट। अव्यते, खञ्जते 'ति—**आवाटो**=गढा। कवति, रवतीति—**कवाट**=किवाड। कुकति, गोचरमाददातीति—**कुक्कुटो**=मुर्गा।

ठ

५५ कम-उस-कुस-कसा ठो—इन धातुओ से परे, 'ठ' प्रत्यय होता है। जैसे—

ओदनादीनि कामेतीति—**कण्ठो**=गला। ओदनादीसु उण्हेन उसीयतीति—**ओट्ठो**=ओठ, ऊँट। कुसीयति, अक्कोसीयति—**कोट्ठो**=धान की कोठी। कसति, याति विनासन्ति—**कट्ठ**=लकडी।

५६ कुट्ठादयो—'कुट्ठ' आदि 'ठ' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

कुच्छीयतीति—**कुट्ठ**=कुष्ट। कुणति, नदतीति—**कुण्ठो**=अत्यन्त क्षीण। अक्कोसीयतीति—**कुण्ठो**=जिसका हाथ पैर कटा हो। दसति एतायाति—

दाठा=दाट। कामीयति दिन्नेहीति—**कमठो**=भिक्षा भाजन, बौना, कछुआ। फुस्सतीति—**फुट्ठो**=स्पर्श इत्यादि।

अण्ड

५७ **वर-करा अण्डो**—इन धातुओं से परे, 'अण्ड' प्रत्यय होता है। जैसे—

अत्तनि पेम वारयतीति—**वरण्डो**=मुखरोग। करीयतीति—**करण्डो**= भाण्ड विशेष।

ड

५८ **मनन्ता डो**—मकारान्त तथा नकारान्त धातुओं से परे, बहुधा 'ड' प्रत्यय होता है। जैसे—

सम=उपसमे। समन—**सण्ड**=समूह। कमति यातीति—**कण्डो**=वाण, परिच्छेद। दम्यन्ते अनेनाति—**दण्डो**=सजा। अमन्ति, उप्पज्जन्ति एत्थाति—**अण्डो**=अण्डा। गच्छति सूनभावन्ति—**गण्डो**=व्याधि, गाल। रमन्ति एत्थाति—**रण्डा**=विधवा। मञ्ञन्ति एतेनाति—**मण्डो**=माड। खञ्ञतीति—**खण्डो**= खाड। लमति, हिंसति सुचिभावन्ति—**लण्डो**=लेड इत्यादि।

५९ **कुण्डादयो**—'कुण्ड' आदि 'ड' प्रत्ययान्त शब्द नियत हैं। जैसे—

कामीयतीति **कुण्ड**=भाजन। मञ्ञति हिताहितन्ति—**मुण्डो**=शिर मुडाया हुआ। तनोति एतेनाति—**तुण्ड**=मुख। ईरित कम्पतीति—**एरण्डो**=रेड, व्याघ्रपुच्छ। सुगन्ध सेवतीति—**सिखण्डो**=चोटी इत्यादि।

किण

६० **तिज-कस-तस-दक्खा किणो जस्स खो च**—इन धातुओं से परे, 'किण' प्रत्यय होता है तथा, 'ज' का 'ख' होता है। जैसे—

तेजीयित्थाति—**तिखिण**=तेज। कसति पवत्ततीति—**कसिण**=अशेष। तसन—**तसिणा**=तृष्णा। दक्खति, वुद्धि गच्छति एतेनाति—**दक्खिणा**= दक्षिणा, दान।

णि

६१ वी आदितो णि—'वी' आदि धातु से परे, 'णि' प्रत्यय होता है। जैसे—

वीयतीति—वेणि=जूरा। सेवन—सेणि=पमान शिल्पिया का समूह। निसेवीयतीति—निसेणि=निसेनी। सपति, पस्सवतीति—सोणि=चूतड। दवति, वहतीति—दोणि=नाव। कीयतेति—केणि=क्रय। इत्यादि

अणि

६२ गहादीह्यणि—'गह' आदि धातुओं से परे, 'अणि' प्रत्यय होता है। जैसे—

गण्हातीति—गहणि=जठराग्नि। अरीयति, गमीयतीति—अरणि=अग्नि-मन्थन की लकडी। धारतीति—धरणि=पृथ्वी। सरीयति, गमीयतीति—सरणि=मार्ग। तरन्ति अनेनाति—तरणि=समुद्र, सूर्य।

णु

६३ री-वी-हाहि णु—इन धातुओं से परे, 'णु' प्रत्यय होता है। जैसे—

रीयति पस्सवतीति—रेणु=रज। वेति, पवत्ततीति—वेणु=बास। भाति, दिप्पतीति—भाणु=किरण।

६४ खाण्वादयो—'खाणु' आदि 'णु' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

खञ्जति, अवदारीयतीति—खाणु=ठूँठ। जायति गमनमनेनाति—जाणु, जण्णु=घुटना। हरीयतीति—हरेणु=गन्ध-द्रव्य इत्यादि।

ण

६५ क्वादितो णो—'कु' आदि शब्दो से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

कवति, नदति एत्थाति—कोणो=पास, अश, वीणा आदि का दण्ड। सुणोतीति—सोणो=कुत्ता, मनुष्य।

दवति, पवत्ततीति—दोणो=एक परिमाण। विरूपत्त वारेतीति—वण्णो=रग। सवन करोतीति—कण्णो=कान। पणीयति, वोहरीयतीति—पण्णो=

पन्ना । नायनीति—**नाण**=रक्षा । निलीयन्ति एत्थाति—**लेण**=गुफा, छिपने का स्थान ।

णक्

६६ **सु वी हि ण क्**—'सु' तथा 'वी' धातु से परे, 'णक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

सुणोतीति—**सुणो**=कुत्ता । वीयतीति—**वीणा** ।

६७ **ति णा द यो**—'तिण' आदि, 'ण' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

तिज=निसाने । ज लोपो । तेजेति एतेनाति—**तिण**=तृण । लीयति, रसतो सब्बत्थ अल्लीयतीति—**लोण**=निमक । लेहीयतीति—**लोण** । गच्छतीति—**गोणो**=बैल । हरीयतीति—**हरिणो**=मृग । अत्तनो लूखभावे सम्पत्ते ईरति कम्पतीति—**इरिण**=ऊसर । अभित्थवीयतीति—**थूण**=नगर । थूणो=घर का खम्भा इत्यादि ।

६८ **र व ण - व र ण - पू र णा द यो**—'रवण' आदि शब्द, 'अण' प्रत्यय से सिद्ध होते हैं । जैसे—

रवतीति—**रवणो**=कोयल । वाहेतीति—**वरणो**=चहारदिवारी । पूरीयते अनेनाति—**पूरणो**=पूरा करने वाला ।

अति

६९ **पा - व सा अ ति**—'पा' तथा 'वस' धातु से परे, 'अति' प्रत्यय होता है । पूर्व स्वर का लोप होता है । जैसे—

पाति, रक्खतीति—**पति**=स्वामी । वसन्ति एत्थाति—**वसति**=घर ।

तु

७० **धा - हि - सि - त न - ज न - ग म - स चा तु**—इन धातुओं से परे, 'तु' प्रत्यय होता है । जैसे—

धारेतीति—**धातु**=गेरुक आदि । हिनोति, पवत्तति फल एतेनाति—**हेतु**=कारण । सेवीयति जनेहि इति—**सेतु**=पुल । तन्यतेति—**तन्तु**=सूत्र ।

जनीयते कम्मकिलेसेहीति—**जन्तु**। जायति कम्मकिलेसेहि—**जन्तु**। जग्तीति—**जत्तु**=पसुली। गच्छतीति—**गन्तु**=जाने वाला। सचति, सयेनीति—**सत्तु**=सत्तू।

७१ अरिस्सुट् च—'तु' प्रत्यय आने से, 'अर (=गमन) का 'उ' आदेश हो जाता है। जैसे—

अरति, पवत्ततीति—**उतु**=ऋतु।

७२ पितादयो—'पितु' आदि, 'तु' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

पा=रक्खने। आस्स इत्त। पाति, रक्खतीति—**पिता**। मानेतीति **माता**। भातीति—**भाता**=भाई। धा=धारणे आस्स ईत्त धारीयतीति—**धीता**=बेटी। दुहति, बन्धवे पपूरेतीति—**दुहिता**=बेटी। जन=जनने अस्स आत्त मा चन्तादेसो पपुत्ते जनेतीति—**जामाता**=दामाद। नहीयति, बन्धीयति पेमेनाति **नत्ता**=नाती। हवति, पूजेतीति—**होता**=हवन करने वाला। पुनाति, आयति भव पवित्त करोतीति—**पोता**=पोता।

रतु

७३ जनकरा रतु—'जन' तथा 'कर' धातु से परे, 'रतु' प्रत्यय होता है। 'र' अनुबन्ध, अन्त स्वरादि को लोप करने के लिए है। जैसे—

जायतीति—**जतु**=लाह। करीयतीति—**कतु**=यज्ञ।

उन्त

७४ सका उन्तो—सक=सत्तिय। इस धातु से परे, 'उन्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

[आकासे गन्तु] सक्कोतीति—**सकुन्तो**=पक्षी।

ओत

७५ कपा ओतो—कप=अच्छादने। इस धातु से परे, 'ओत' प्रत्यय होता है। जैसे—

कपतीति—**कपोतो**=कबूतर। कही कही, 'त' का 'ट' हो जाता है—**कपोटो**=कबूतर।

अन्त

७६ **वसादीह्यन्तो**—'वस' आदि धातु से परे, 'अन्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसन्ति एतस्मि काले कीळापसुता इति—**वसन्तो** । रुहति, जायतीति—**रुहन्ता**=वृक्ष, इस नाम का एक मृगराज । भद्द=कल्याणे भद्दिस्स सयोगादि-लोपो भज्जति कल्याणधम्मति—**भदन्तो**=प्रव्रजित । नन्दति एतायाति—**नन्दन्ती**=सखी । जीवन्ति एतायाति—**जीवन्ती**=औषधि । सूयतीति—**सवन्ती**=नदी । रोदापेतीति—**रोदन्ती**=औषधि । अवति रक्खतीति—**अवन्ती**=जनपद ।

७७ **हिसीनमुक् च**—'हि' तथा 'सि' धातु से परे, 'अन्त' प्रत्यय होता है, उससे परे 'म' का आगम होता है। जैसे—

हिनोति, अयति पवत्तति एतस्मिन्ति—**हेमन्तो**=ऋतु । सयन्ति एत्थ ऊका कुसुमादयोति—**सीमन्तो**=माँग ।

इत

७८ **हर-रुह-कुला इतो**—इन धातुओ से परे, 'इत' प्रत्यय होता है। जैसे—

अत्तनो सिनेह हरतीति—**हरितो**=हरा रग । रुहतीति—**रोहितो**=एक तरह की मछली । रुहति, सरीरे व्यायनवसेनाति—**रोहित** (रस्स लत्ते—**लोहित**)=खून । अत्तनो गुण कुलिति, पत्थरतीति—**कोलितो**=द्वितीय अग्र श्रावक, इस नाम का एक ग्राम ।

अत

७९ **भरादीह्यतो**—'भर' आदि धातुओ से परे 'अत' प्रत्यय होता है। जैसे—

भरतीति—**भरतो**=नट । रञ्जन्ति एत्थाति—**रजत**=चाँदी । यजितब्बोति—**यजतो**=आग । पचतीति—**पचतो**=रसोइया ।

आतक्

८० **किरादीह्यातक्**—'किर' आदि धातु से परे, 'आतक्' प्रत्यय होता

हैं। जैसे—

किरतीति—**किरातो**=एक जगली जात। 'र' का 'ल' हो जाने मे—**किलातो।** अलतीति—**अलात**=तितकी, लुकारी। चिलतीति—**चिलातो**=एक तरह की मछली।

अत्त

८१ अ मा दी ह्य त्तो—'अम' आदि धातुओ म परे, अत्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

अमति, कालन्तर पवत्ततीति—**अमत्त**=भाजन। पुब्बसर लोपो मान—**मत्त**=परिमाण, इतना भर। वारन्ति अनेनाति—**वरत्त**=रस्मी, लगाम। कलति, परिच्छिन्दतीति—**कलत्त**=भार्या।

त

८२ **वा दो हि तो**—'वा' आदि धातुओ से परे, 'त' प्रत्यय होता है। जैसे—

वायतीति—**वातो**=हवा। तायतीति—**तातो**=पिता। तनोतीति—**तन्त**=तात। दमतीति—**दन्तो**=दात। अमति, यातीति—**अन्तं**=समाप्ति, आँत। सेवीयतीति—**सेतो**=उजला। सुणन्ति अनेनाति—**सोत**=कान। सवतीति—**सोतो**=सोता। पुनीयतीति—**पोतो**=बच्चा। गोपीयतीति—**गोत्त**=गोत्र। योजन्ति अनेनाति—**योत्त**=रस्सी। ममायन्तेहि गय्हतीति—**गत्त**=शरीर। आबाधा निरन्तर अतति पवत्तति इति—**अत्ता**—मन आदि। खिपीयति एत्थाति—**खेत्त**=खेत।

तक्

८३ **घ रा दी हि त क्**—'घर' आदि धातुओ मे परे, 'तक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

घरति, सिञ्चतीति—**घत**=घी। सेवीयतीति—**सितो**=उजला। दुब्बलत्ता दवति उपतपतीति—**दूत**। मिज्जति, सिनेहतीति—**मित्तो**=मित्र। चिन्तेतीति—**चित्त**=विज्ञान, चित्त—कम आदि। पोसीयतीति—**पुत्तो**=बेटा। विन्दति पीतिमनेनाति—**वित्त**=धन। वरण—**वत्त**=ब्रह्मचय आदि व्रत।

८४ **नेत्तादयो**—'नेत्त आदि, 'नक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

नयति, पापेतीति—**नेत्त**=आंख। करण—**कुत्त**=क्रिया। कमति यातीति—**कुन्तो**=एक हथियार। सुट्ठु रमतीति—**सूरतो**=सुख सवास। मिहति, सिञ्चतीति—**मुत्त**=पेशाब। पालीयतीति—**पलित**=बाल का पकना। पलित यस्स अत्थि सो—**पलितो**। **पलिता** इत्थी। मिहन—**सित**=मुसकुराहट ['मिह' का 'सि' आदेश हो गया]।

मिहन—**मिहित**=मुसकुराहट। कुसीयति, अक्कोसीयतीति—**कुसीतो**=काहिल। मेन्ति बन्धन्ति घरावास एतायाति—**सीता**=हल की जोत इत्यादि।

अथ

८५ **समादीह्यथो**—'सम' आदि धातुओ से परे, 'अथ' प्रत्यय होता है। जैसे—

समेतीति—**समथो**=समाधि। दरण—**दरथो**=पीडा। दमन—**दमथो**=दमन। किलमन—**किलमथो**=परिश्रम। सपन—**सपथो**=सौगन्ध। आवसन्ति एत्थाति—**आवसथो**=घर।

८६ **उपवसा वस्सोद् च**—'उप'-पूर्वक 'वस' धातु से परे, 'अथ' प्रत्यय होता है, 'वस' का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—

उपवसन्ति एत्थाति—**उपोसथ**=तिथिविशेष, नवाँ हस्ति-कुल।

थक्

८७ **रमा थक्**—'रम' धातु से परे, 'थक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

रमन्ति, कीळन्ति एतेनाति—**रथो**।

८८ **तित्थादयो**—'तित्थ' आदि, 'थक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

तर=तरणे अस्स इत्त, पररूपादि। तरन्ति अनेनाति—**तित्थ**=घाट। सेचतीति—**सित्थ**=मोम। हसन्ति अनेनाति—**हत्थो**=हाथ, नक्षत्र। गायतीति **गाथा**=पद्य विशेष। अरन्ति, पवत्तन्ति अनेनाति—**अत्थो**=धन। रोग तुदति, पीळेतीति—**तुत्थ**=दवा। यु=मिस्सने। यवतीति—**यूथो**=किन्ही जानवरो का समूह। पटिकूलत्ता गोपीयतीति—**गूथो**=मैला इत्यादि।

थु

८९ **वस-मस-कुसा थु**—इन धातुओं से परे, 'थु' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसन्ति एत्थाति—**वत्थु**=पदार्थ। दधि आमसतीति—**मत्थु**=मट्ठा। कुसति, अक्कोसति भेरवनादत्तानि—**कोत्थु**=सियार।

थि

९० **सक-वसा थि**—'सक' तथा 'वस' धातु से परे, 'थि' प्रत्यय होता है। जैसे—

सक्कोति गन्तुमनेनाति—**सत्थि**=जाँघ। वसीयति अच्छादीयतीति—**वत्थि**=पेडू।

थिक्

९१ **वीतो थिक्**—'वी' धातु से परे, 'थिक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

वीयन्ति, गच्छन्ति एतायाति—**वीथि**=गली।

रथिण्

९२ **सरिस्मा रथिण्**—'सर' धातु से परे, 'रथिण्' प्रत्यय होता है। जैसे—

सारेतीति—**सारथि**=रथ हाँकने वाला।

इथि

९३ **ताता इथि**—'ता' तथा 'अत' धातु से परे, 'इथि' प्रत्यय होता है। जैसे—

तायति, पालेतीति—**तिथि**। अतति, गच्छतीति—**अतिथि**।

थी

९४ **इसा थी**—'इस' धातु से परे, 'थी' प्रत्यय होता है। जैसे—

इच्छति, इच्छीयतीति वा—**इत्थी**=नारी।

दक्

९५ **रुद-खिद-मुद-मद-छिद-सूद-सप-कमा दक्**—इन धातुओं से परे, 'दक्' प्रत्यय होता ह। जैसे—

रुदतीति—**रुद्दो**=उमापति। 'र' का 'ल' होने से, **लुद्दो**=बहेलिया। खिदति, असहतीति—**खुद्दो**=क्षुद्र। मोदन्ति एतायाति—**मुद्दा**=अँगूठी। मज्जन्ति अस्मिन्ति—**मद्दो**=माद्र जनपद। छिज्जतीति—**छिद्द**=छेद। सूदति, सामिकेहि भति पक्खरतीति—**सुद्दो**=शूद्र। सपन्ति अनेनाति—**सद्दो**=शब्द। कामीयतीति—**कन्दो**=मूल विशेष।

९६ **कुन्दादयो**—'कुन्द' आदि, 'दक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

कामीयतीति—**कुन्दो**=एक प्रकार का फूल। मञ्ञतेति—**मन्दो**=जड। वुणीयति सवरीयतीति—**बुन्दो**=मूल प्रदेश। निन्दीयतीति—**निद्दा**=नीद। उन्दति, किलेदतीति—**उद्दो**=ऊद बिलवा। सम्मा उन्दति, किलेदतीति—**समुद्दो**=समुद्र। पुलति, हिसतीति—**पुलिन्दो**=शवर इत्यादि।

दु

९७ **ददा दु**—दद=दाने, इस धातु से परे, 'दु' प्रत्यय होता है। जैसे—

दुक्ख ददातीति—**दद्दु**=दाद।

ध

९८ **खण-अन-दम-रमा धो**—इन धातुओं से परे, 'ध' प्रत्यय होता है। जैसे—

आणेन खञ्ञते ति—**खन्धो**=राशि। अनति, जीवति एतेनाति—**अन्धो**=अधा। दमेतब्बोति—**दन्धो**=जड। रमन्ति एत्थ सप्पादयो ति—**रन्ध**=बिल।

९९ **मुद्धादयो**—'मुद्ध' आदि, 'ध' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

मोदन्ति एत्थ ऊकादयोति—**मुद्धा**=शिर। अरन्ति, यन्ति एत्थाति—**अद्धा**=माग, काल। गेधतीति—**गद्धो**=गिज्भो। पटिवेधतीति—**विद्ध**=निमल इत्यादि।

धुक्

१०० **सीतो धुक्**—'सी' धातु से परे, 'धुक्' प्रत्यय होता है। जसे—

सयन्ति एतायाति—**सीधु**=एक प्रकार की सुरा।

कुन

१०१ **वर-अर-कर-तर-दर-यम-अज्ज-मिथ-सका कुनो**—इन धातुओ से परे, 'कुन' प्रत्यय होता है। जैसे—

वारेतीति—**वरुणो**=इस नाम के ईश्वर देवराज, वृक्ष [रा नस्स णो ५ १७१]। अरति, गच्छतीति—**अरुणो**=सूय। परदुक्खे सति साधून हृदयकम्पन करोतीति—**करुणा**=दया। बालभाव अतरि, तरतीति—**तरुणो**=युवा। विदारेतीति—**दारुणो**=कडा। यमेति, नासेतीति—**यमुना**=नदी। अज्जति, धनसञ्चय करोतीति—**अज्जुनो**=राजा, वृक्ष विशेष। मिथो सङ्गमो ति—**मिथुन**=जोडा। सक्कोति इति—**सकुनो**=पक्षी। **सकुनी**। **सकुणो**। **सकुणी**।

इन

१०२ **अजा इनो**—अज, वज=गमने। इस धातु से परे, 'इन' प्रत्यय होता है। जैसे—

अजति, विक्कय यातीति—**अजिन**=चमडा।

१०३ **विपिनादयो**—'विपिन' आदि, 'इन' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

वपन्ति एत्थाति—**विपिन**=वन। सुपन्ति एतेनाति **सुपिन**=नींद, सपना। तुदन्ति, सत्ते पीळेतीति—**तुहिन**=हिम। कप्पति, रिपवो विजेतु समत्थेतीति—**कप्पिनो**=राजा। कमन्ति, एत्थ मीनादयो पविसन्तीति—**कुमिन**=मछली बझाने का छोप। देन्ति एतेनाति—**दिन**=दिन।

कन

१०४ **किरा कनो**—'किर' धातु से परे, 'कन' प्रत्यय होता है। जैसे—

किरन्ति पत्थरन्तीति—**किरणा**=किरण। [रा नस्स णो ५ १७१—इस सूत्र से, 'र' के उत्तर 'न' का 'ण' हो गया।]

नक्

१०५ **दी-जि-इ-मी हि नक्**—इन धातुओं से परे, 'नक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

अदेसि, खयमगमासि इति—**दीनो**=निर्धन। पञ्च मारे अजिनीति—**जिनो**=बुद्ध। एसि, इस्सरत्त अगमासीति—**इनो**=स्वामी। मीयते, हिंसीयते ति—**मीनो**=मछली।

न

१०६ **सि-धा-वी-वा हि नो**—इन धातुओं से परे, 'न' प्रत्यय होता है। जैसे—

सेति, बन्धतीति—**सेनो**=बाज। सेना। धारेतीति—**धाना**=भूँजा। वेति, पवत्ततीति—**वेनो**=एक हीन जाति। सत्तेसु वाति, पवत्ततीति—**वान**=तृष्णा।

१०७ **ऊनादयो**—'ऊन' आदि, 'न' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

ऊह=वितक्के। ह लोपो। ऊहन—**ऊनो**=अपूर्ण। हि=गतिय। दीघरत्त हेसि, हीनत्तमगमीति—**हीनो**। चि=चये। दीघरत्त चयन्ति एत्थ रतनानीति—**चीनो**=चीन देश। हनिस्स जघो। हञ्ञतीति—**जघन**=कटि। ठाति पवत्ततीति—**थेनो**=चोर ['ठ' का 'थ' हो गया]। उन्दीयतीति—**ओदनो**=भात ['उन्द' का 'ओद' हो गया]। रज्जते अनेनाति—**रजन**=रग। रञ्जति एतायाति—**रजनी**=रात। पज्जति, गच्छतीति—**पज्जुन्नो**=इन्द्र, मेघ। गच्छन्ति एत्थ विहङ्गादयोति—**गगन**=आकाश इत्यादि।

तन

१०८ **वी-पता तनो**—इन धातुओं से परे, 'तन' प्रत्यय होता है। जैसे—

वेति, पवत्तति एतेनाति—**वेतन**=वेतन। पतन्ति एत्थाति—**पत्तन**=नगर।

तनक्

१०९ रमा तनक्—'रम' धातु से परे, 'तनक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

रमन्ति एत्थाति—**रतन**=मणि आदि, हाथ भर लम्बा। [गमादिरान लोपो' न्तस्स ५ १०९—इस सूत्र से 'रम' धातु के 'म' का लोप हो गया।]

नुक्

११० सू-भा हि नुक्—इन धातुओ से परे, 'नुक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

पसवीयतीति—**सूनु**=पुत्र। भाति, दिप्पतीति—**भानु**=सूरज।

१११ धास्से च—धा=धारणे। इस धातु से परे, 'नुक्' प्रत्यय होता है, तथा 'धा' का 'धे' आदेश होता है। जैसे—धारेतीति—**धेनु**=गाय।

अनि

११२ वत्त-अट-अव-धम-असेह्य नि—वत्तन्ति एतेनाति—**वत्तनि**=कन्नन दड?। **वत्तनी**=मार्ग। अटते, गम्मते ति—**अटनि**=मञ्चङ्गो?। सत्ते अवति, रक्खतीति—**अवनि**=पृथ्वी। धमन्ति एतेन वीणादयोति—**धमनि**—**धमनी**=सिरा। भण्डत्थाय असीयते, खिपीयतेति—**असनि**=वज्र।

नि

११३ युतो नि—यु=मिस्सन। इस धातु से परे, 'नि' प्रत्यय होता है। जैसे—

यवन्ति, सत्ता अनेन एकीभाव गच्छन्तीति—**योनि**=भग।

प

११४ चम-आय-पा-वपा पो—इन धातुओ से परे, 'प' प्रत्यय होता है। जैसे—

चमन्ति, अदन्ति एत्थाति—**चम्पा**=नगर। अपेसि, ईसकमत्त अगमासीति—**अप्प**=थोडा। अपाय पाति, रक्खतीति—**पाप**। वपन्ति एत्थाति—**वप्पो**=खेत।

११५ यु-थु-कून दीघो च—इन धातुओ से परे, 'प' प्रत्यय होता है,

तथा उनका दीघ होता है। जैसे—

यवन्ति, सह वत्तन्ति एत्थाति—**यूपो**=यज्ञ की लाठ, प्रासाद। थवीयतीति—**थूपो**=चैत्य, स्तूप। कवन्ति, नदन्ति एत्थाति—**कूपो**=कूआ।

पक्

११६ **खिप-सुप-नी-सू-पूहि पक्**—इन धातुओ से परे, 'पक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

खिपति, खय गच्छतीति—**खिप्प**=शीघ्र। सुपन्ति एत्थ सुनखादयो 'ति—**सुप्प**=सूप। नयन्ति एतस्मा फलन्ति—**नीपो**=वृक्ष। सवति, रुचि जनेतीति—**सूपो**=व्यञ्जन। पवीयति, मरिचजीरकादीहि पवित्त करीयतीति—**पूपो**=पूआ।

११७ **सिप्पादयो**—'सिप्प' आदि, 'पक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

सपति अनेनाति—**सिप्प**=कला ['सप' का 'सिप' हो गया]। विज्ज वपतीति—**विप्पो**=ब्राह्मण। वमति, बहि निक्खमति हदयङ्गतसोकेनाति—**बप्पो**=आसू ['व' का 'ब' हो गया]। छुप=सम्फस्से। उस्स ए। छुपति अनेनाति—छेप्प=अगूठा। रुप्पति, विकारमापज्जतीति—**रूप** इत्यादि।

अप

११८ **सासा अपो**—सास=अनुसिट्ठिय। इस धातु से परे, 'अप' प्रत्यय होता है। जैसे—

सासीयन्ति एतेनाति—**सासपो**=सरसो।

११९ **विटपादयो**—'विटप' आदि, 'अप' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

वट=वेठने। अस्स इत्त। वटति, वेठति एतेनाति—**विटपो**। कुथ=पूतिभावे। थस्स णो। अकुथि, पूतिभाव अगमीति—**कुणपो**=मृतक। मण्डीयति जनेहीति—**मण्डपो** इत्यादि।

फ

१२० **गुपा फो**—'गुप' धातु से परे, 'फ' प्रत्यय होता है। जैसे—

गोपीयतीति—**गोप्फो**=गिट्टा।

ब

१२१ गर-सरादीहि बो—'गर,' 'सर' आदि धातुओं से परे, 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—

गरति, अञ्ञे अनेन पीळेतीति—**गब्बो**=अभिमान। सरति, पवत्ततीति—**सब्बो**=सकल। फलकामेहि जनेहि अमीयति, गमीयतीति—**अम्बो**=आम। पुत्तेन अमीयति, गमीयतीति—**अम्बा**=माता।

१२२ निम्बादयो—'निम्ब' आदि, 'ब' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

नमति फलभारेनाति—**निम्बो**=नीम। वित्तादयो वमति, उग्गिरतीति—**खिम्ब**=शरीर। तित्तेन कुसीयति, अक्कोसीयतीति—**कोसम्बो**=एक वृक्ष। कदन्ति एतेन द्वारादीनि इति—**कदम्बो**=वृक्ष। जनेहि कोटीयति, पवत्तीयतीति—**कुटुम्ब**। तण्डुलादयो अनेन कण्डन्ति परिच्छिन्दन्तीति—**कुटुबो, कुडुबो**=पैला इत्यादि।

बि

१२३ दरा बि—दर=विदारणे। इस धातु से परे, 'बि' प्रत्यय होता है। जैसे—

ओदनादीनि दारेन्ति एतायाति—**दब्बि**=कलछुल।

अभ

१२४ कर-सर-सल-कल-वल्ल-वसा अभो—इन धातुओं से परे, 'अभ' प्रत्यय होता है। जैसे—

करोतीति **करभो**=ऊँट। सरति, गच्छतीति—**सरभो**=मृगविशेष। सलति, गच्छतीति—**सलभो**=फतिंगा। कलीयति, परिमीयति वयसा ति **कलभो**—हाथी का बच्चा। **कळभो**। वल्लेति, सवरण करोतीति—**वल्लभो**=प्रिय। वसन्ति अनेनाति—**वसभो**=पुङ्गव।

रभ

१२५ **गदा रभो**—'गद' धातु से परे, 'रभ' प्रत्यय होता है। जैसे—

गदतीति—**गद्रभो**=गदहा।

कभ

१२६ **उस-रासा कभो**—इन धातुओ से परे, 'कभ' प्रत्यय होता है। जैसे—

उसनि पटिपक्खे निदहतीति—**उसभो**=श्रेष्ठ। रासति नदतीति—**रासभो**=गदहा।

भक्

१२७ **इतो भक्**—'इ' धातु से परे, 'भक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

एति गच्छतीति—**इभो**=हाथी।

भ

१२८ **गर-अवा भो**—इन धातुओ से परे, 'भ' प्रत्यय होता है। जैसे—

गरति, बहि निक्खमनवसेन सिञ्चतीति—**गब्भो**=गभ, प्रसूति-गृह। अवति, सत्ते रक्खतीति—**अब्भ**=मेघ।

१२९ **सोब्भादयो**—'सोब्भ' आदि, 'भ' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

सीदन्ति एत्थाति—**सोब्भ**=दरार ['सिद' के 'इ' का 'ओ' हो गया]। **सोब्भो**=एक जलाशय। कामीयतीति—**कुम्भो**=घडा ['कम' के 'अ' का 'उ' हो गया]। कुसति, अव्हयतीति—**कुसुम्भ**=एक फूल, जिससे रग तैयार किया जाता है। **कुसुम्भो**=सोना इत्यादि।

कुम

१३० **उस-कुस-पद-सुखा कुमो**—इन धातुओ से परे, 'कुम' प्रत्यय होता है। जैसे—

उसति दहतीति—**उसुम**=गरम। कुसति अव्हयतीति—**कुसुम**=फूल।

पज्जति देवपूजाय यातीति—**पदुम**=कमल। सुखयतीति—**सुखुम**=सूक्ष्म।

१३१ पटुमादयो—'पटुम' आदि, 'कुम' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वजन्ति एत्थाति—**पटुम**=रास्ना [वजिस्सन्तस्स टो]। मिलिस्सतीति—**सिलेसुमो**=कफ (सिलिसस्स लिस्से)। कामीयनीति—**कुङ्कुम**=केसर इत्यादि।

उम

१३२ गुधा उमो—गुध=परिवेठने। इस धातु से परे, 'उम' प्रत्यय होता है। जैसे—

गुधति, परिवेठतीति—**गोधुमो**=गेहूँ।

अम, इम

१३३ पठ-चरा अमिमा—'पठ' तथा 'चर' धातु से परे, यथाक्रम 'अम' तथा 'इम' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

पठीयति, उच्चारीयति उत्तमभावेनाति—**पठम**=श्रेष्ठ, पहला। चरति, हीनत्त यातीति—**चरिम**=पिछला।

मक्

१३४ हिधूहि मक्—हि=गतिय। धू=कम्पने। इन धातुओ से परे, 'मक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

हिनोति, पवत्ततीति—**हिम**=पाला। धुनाति, कम्पतीति—**धूमो**=धूवाँ।

रीसन

१३५ भीतो रीसनो च—'भी' धातु से परे, 'रीसन,' तथा 'मक्' प्रत्यय होते है। जैसे—

भायन्ति एतस्मा 'ति—**भीसनो**=भयानक। **भीमो**=भयानक।

म

१३६ खी-सु-वी-या-गा-हि-सा-लू-खु-हु-मर-धर-कर-घर-जम-अम-समा मो—इन धातुओं से परे, 'म' प्रत्यय होता है। जैसे—

खेमन, निरुपद्दवकरणतायाति—**खेमो**=क्षेम। सुणातीति—**सोमो**=चाँद। वायन्ति एतेनाति—**वेमो**=करघा। यातीति—**यामो**=दिन का छठा या आठवाँ भाग। गायन्ति एत्थाति—**गामो**=गाँव। हिनोति, पवत्ततीति—**हेम**=सोना। साति, सुन्दरत्त तनु करोतीति—**सामो**=काल। लूयते ति—**लोम**=रोवा। ख्यायते उत्तम भावेना ति—**खोम**=अतसि। हवन हूयते वा—**होमो**=आहुति। मरन्ति अनेनाति—**मम्म**=मम। अत्तान धारेन्ते अपाये वट्टदुक्खे च अपतमाने कत्वा धारेतीति—**धम्मो**=परिपत्त्यादि, धम। करण, करीयतीति वा **कम्म**=कम, सुखदुक्खफलद। सेदो पग्घरति अनेना ति—**घम्मो**=घाम। जमेति अभक्खितब्ब अदतीति—**जम्मो**=निहीन, बिना सोचे विचारे करने वाला। अमेति पेमेन पवत्तति पुत्तकेमूति—**अम्मा**=माता। समेन्ति अनेनाति—**सम्मा**=ठीक तरह।

१३७ अस्मादयो—'अस्म' आदि, 'म' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

अस=खेपने। अस्सतेति—**अस्मा**=पत्थल। भस=भस्मीकरणे। भसति पग्घरतीति—**भस्म**=राख। उसति, निदहतीति—**उस्मा**=तेजो धातु। पविसन्ति एत्थाति—**वेस्म**=घर। भायति एतस्माति—**भेस्मा**=भयानक। अस्सति, जनेहि चजीयते ति—**अधमो**=निहीन ['अस' के 'स' का 'ध' हो जाता है]। करोतीति—**कुम्मो**=कछुआ ['कर' के 'अ' का 'उ' हो गया] इत्यादि।

मि

१३८ नीतो मि—'नी' धातु से परे, 'मि' प्रत्यय होता है। जैसे—

नयतीति—**नेमि**=चक्रान्त।

१३९ ऊमि-भूमि-निमि-रस्मि—'ऊमि' आदि 'मि' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

ऊह=वितक्के। ह लोपो। ऊहन्ति वितक्केन्ति एतेनाति—**ऊमि**=तरङ्ग। भवन्ति एत्थाति—**भूमि**=पृथ्वी। नेति, सुगति पापेतीति—**निमि**=राजा। रसन्ति सत्ता एतायाति—**रस्मि**=रस्सी।

य

१४० **मा-छा हि यो**—'मा' तथा 'छा' धातु से परे, 'य' प्रत्यय होता है। जैसे—

मेति, परिमेति अञ्ञेन उत्तमेन गुणेन अत्तनो गुणन्ति—**माया**=सन्त दोस-पटिच्छादनलक्खणा। छिन्दति ससयन्ति—**छाया**=प्रतिबिम्ब।

१४१ **जनिस्स जा च**—'जन' धातु से परे, 'य' प्रत्यय होता है। 'जन' धातु का 'जा' आदेश होता है। जैसे—

जनेतीति—**जाया**=भार्य्या।

१४२ **हदयादयो**—'हदय' आदि, 'य' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

हरतीति—**हदय**=चित्त, मनो धातु, तथा मनोविज्ञान धातु का आश्रय ['हर' के 'र' का 'द' हो गया]। अत्तनि पेम तनोतीति—**तनयो**=बेटा। सरति गच्छतीति—**सुरियो**=सूरज ['सर' का 'सुरि' हो गया]। मुखमाहरतीति—**हम्मिय**=मुण्डच्छदन पासादो ['हर' का 'हम्मि' हो गया]। कमनि वुद्धि यातीति—**किसलय**=पल्लव ['कस' का 'किसल' हो गया] इत्यादि।

रक्

१४३ **खी-सि-सि-नी-सी-सु-वी-कु-सू हि रक्**—इन धातुओं से परे, 'रक' प्रत्यय होता है। जैसे—

खयति, दुहनेनाति—**खीर**=दूध। कुसुमादीहि सेवीयतीति—**सिरो**=शिर। सेति, सरीर बन्धतीति—**सिरा**=नाडी। नेति, परेहि वा नीयतीति—**नीर**=जल। सयतीति—**सीरो**=फाल। अनिट्ठफलदायकत्त सवतीति—**सुरा**=मदिरा। सुणोति उत्तमगीतादिन्ति—**सुरो**=देवता। वेति, उत्तमभाव यातीति—**वीरो**=बहादुर। कवति, नदतीति—**कुर**=भात। भयट्ठितान पठमकप्पिकान मूरत्त पसवतीति—**सूरो**=बहादुर, सूरज।

१४४ **हि-चि-दु-मीन दीघो च**—इन धातुओं से परे, 'रक्' प्रत्यय होता है, और अन्त का दीघ होता है। जैसे—

हिनोति, पवत्ततीति—**हीर**=हीरा। चयतीति—**चीर**=वल्कल। दुक्खेन

गमीयतीति—**दूर**=दूर। मीयते पक्खिपीयते 'ति'—**मीरो**=समुद्र।

१४५ धा ता न मी च—'धा' तथा 'ता' धातु से परे, 'रक्' प्रत्यय होता है। अन्त्य स्वर का 'ई' आदेश होता है। जैसे—

धारेतीति—**धीरो**=धैयवान्। जल तायतीति—**तीर**=तट।

१४६ भ द्रा द यो—'भद्र' आदि, 'रक्' प्रत्ययान्त शब्द निपान है। जैसे—

भद्द=कल्याणे। द लोप, पररूपाभावा। भजीयतीति—**भद्र**=कल्याण। भायन्ति एतायाति—**भेरी**=दुन्दुभि। विचिन्तितब्बन्ति—**विचित्र**=नाना प्रकार का। या=पापुणने। रस्स त्रञ्। यातीनि-**यात्रा**=यान। गोपीयतीति—**गोत्त**=गोत्र। भस्म करोति एतायाति—**भस्त्रा**=भाथी, 'कम्मारगग्गरि'। सोकेन ताळेन्ते उसति, दहतीति—**उरो**=छाती इत्यादि।

उर

१४७ मन्द-अङ्क-सस-अस-मथ-चता उरो—इन धातुओ से परे, 'उर' प्रत्यय होता है। जैसे—

मन्दि, असुन्दरत्ता जळत्तमगमीति—**मन्दुरा**=अस्तबल। अङ्कीयति, लक्खीयतीति—**अङ्कुरो**। ससति, हिसतीति—**ससुरो**=ससुर। असियित्थाति—**असुरो**=राक्षस। अरीहि मथीयति, मलोळियतीति—**मथुरा**=नगर। चलीयतीति—**चतुरो**=चालाक।

१४८ विधुरादयो—'विधुर' आदि, 'उर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वेधति, हिंसति इति—**विधुरो**=रड्डुआ। उन्दति, किलेदतीति—**उन्दुरो**=चूहा। मङ्कति, अनेन अत्तान अलकरोतीति—**मकुरो**=आइना, रथ, मछली। कुकति, ससादयो आददातीति—**कुक्कुरो**=कुत्ता। अमङ्गि, पसत्थमगमीति—**मङ्गुरो**=एक तरह की मछली इत्यादि।

किर

१४९ तिम-रुह-रुध-बध-मद-मन्द-वज-अज-रुच-कसा किरो—इन धातुओ से परे, 'किर' प्रत्यय होता है। जैसे—

तेमेतीति—**तिमिर**=अन्धकार, पानी। रुहति, पवत्ततीति—**रुहिर**=लहू।

जीवित रुन्धतीति—**रुधिर**=लहू । वाधीयतीति—**वधिरो**=बहरा । जना मज्जन्ति एतायाति—**मदिरा**=शराव । मोदन्ति एत्थाति—**मन्दिर**=घर । वजतीति—**वजिर**=वज्र । अजति, गच्छति एत्थाति—**अजिर**=आगन । रोचतीति—**रुचिर**=सुदर । कमीयति, दुक्खेन गमीयतीति—**कसिर**=थोडा ।

१५० **थिरादयो**—'थिर' आदि, 'किर' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

ठातीति—**थिर**=स्थिर । इच्छीयतीति—**सिसिरो**=शिशिर ऋतु । खादीयति पाणकेहीति **खदिरो**=दतवन । इत्यादि

१५१ **ददगरेहि दुरभरा**—'दद' तथा 'गर' धातु से पर, यथाक्रम 'दुर' तथा 'भर' होता है । जैसे—

अत्तान ददातीति—**दद्दरो**=मेढक। गरति सिञ्चतीति—**गब्भर**=गुहा ।

(द्वित्व)

१५२ **चर-दर-जर-गर-मरेहि ते**—'चर' आदि धातुओ से परे, वे ही 'चर' आदि होते है। जैसे—

चरन्ति एत्थाति—**चच्चर**=चोराहा, आगन । दरीयतीति—**दद्दर**=एक पक्षी, भेरी । अजरीति, **जज्जरो**=जर्जर । गरति, सिञ्चतीति—**गग्गरो**=गडगडाहट, हस की आवाज़ । मरीयतीति—**मम्मरो**=सूखे पत्तो की मरमर आवाज़ ।

क्वर

१५३ **पीतो क्वरो**—पी=तप्पने । इस धातु से परे, 'क्वर' प्रत्यय होता है । जैसे—

अपीनीति—**पीवर**=मोटा ।

१५४ **चीवरादयो**—'चीवर' आदि, 'क्वर' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

चिनातिस्स दीघरत्त, चीयतीति—**चीवर**=काषाय । परिळाह समेतीति—**सवरी**=रात्रि । धारेतीति—**धीवरो**=मल्लाह ('धा' का 'धी' हो गया) । येन केन चि अत्तान तायतीति—**तीवरो**=एक हीन जाति । नयन्ति एत्थ सत्ताति—**नीवर**=घर । इत्यादि

कर

१५५ कुतो करो—कु=सद्दे। इस धातु से परे, 'कर' प्रत्यय होता है। जैसे—

कवति, नदतीति—**कुररो**=एक पक्षी (कुररी)

छर

१५६ वस-असा छरो—इन धातुओ से परे, 'छर' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसन्ति एत्थाति—**वच्छरो**=वष। सवसन्ति एत्थाति —**सवच्छरो**=वष। असति विमज्जेतीति—**अच्छरा**=देवकन्या, चुटकी।

छेर

१५७ मसा छेरो च—मस=आमसने। इस धातु से परे, 'छेर' प्रत्यय होता है, और 'छर' भी। जैसे—

तण्हाय परामसन—**मच्छेर**=कजूसी। **मच्छर**=कजूसी।

सर

१५८ धू-वातो सरो—धुनातीति—**धूसरो**=रूखा, हलका पीला रग। वाति, गच्छतीति—**वासरो**=दिन।

अर

१५९ भमादीह्यरो—'भम' आदि, धातुओ से परे 'अर' प्रत्यय होता है। जैसे—

भमतीति—**भमरो**=भौरा। तसति, भय गण्हातीति—**तसरो**=मन्दन्ति, मोदन्ति एत्थाति—**मन्दरो**=पवत। कन्दति, अव्हयतीति—**कन्दरो**=कन्दरा। देवन्ति कीळन्ति एतेनाति—**देवरो**=देवर।

१६० वदिस्स बदा च—'वद' धातु से परे, 'अर' प्रत्यय होता है। 'वद' का 'बद' आदेश होता ह। जैसे—

वदन्ति एतेनाति—**बदरा**=बैर का फल। बदरी।

१६१ **वदजनान ठड च**—'वद' तथा 'जन' धातु मे पेर, 'अर' प्रत्यय होता है, तथा अन्त का 'ठ' आदेश होता है। जैसे—

वदतीति—**वठरो**=मूख। जनयनि (एतस्माति)—**जठर**=उदर।

१६२ **पचिस्सिठड च**—'पच' धातु मे पर, 'र' प्रत्यय होता है, तथा 'पच' का 'पिठ' आदेश होता ह। जसे—

पचन्ति एतायाति—**पिठरो**=पकाने का बरतन

अरण

१६३ **वका अरण**—वक=आदान। इस धातु मे पर, 'अरण' प्रत्यय होता है। जैसे—

वकेति, आददाति एतायानि—**वाकरा**=जाल।

आर

१६४ **सिङ्गि-अग-अग-मज्ज-कल-अल आरा**—इन नाम धातुओ से परे, 'आर' प्रत्यय होता है। जैसे—

किलेससिङ्गकरण—**सिङ्गारो**। अङ्गति—विनाम गच्छतीति—**अङ्गारो**। अगन्ति, गच्छन्ति एत्थाति—**अगार**=घर। लीहनेन अत्तनो सरीर मज्जति, निम्मलत्त करोतीति—**मज्जारो**=विलार। एतेन गुण कलीयति परिमीयतीति—**कळारो**=मटमैला रग। दीघत्त अलति यातीति (दन्ते)=**अळारो**=टेढा।

१६५ **कमिस्सस्सु च**—'कम'=इच्छाय। इस धातु म परे 'आर' प्रत्यय होता है। 'कम' का 'कुम' आदेश होता ह। जसे—

कामीयतीति—**कुमारो**।

१६६ **भिङ्कारादयो**—'भिङ्कार' आदि, 'आर' प्रत्ययान्त शब्द निपात ह। जैसे—

भरति, दधाति उदकन्ति—**भिङ्कारो**=सोने की झारी ['भर' का 'भिङ्क' आदेश हो गया]। क्रेदीयतीति-**केदार**=खेत [क्लिद=अल्लभावे। 'ल' का लोप हो गया]। के जले सति दारो विदारणमस्सानि वा—**केदार**=खेत। कु

पठविं विदति नत्तापन्नतायाति—**कोविळारो**=दुगना हुआ (विद=लाभे। इमस्मा कुपुब्बविदा आरो। दस्स ळत्त। इस्स एत्ताभावो। समासे कुस्स ओ च) इत्यादि।

मार

१६७ करा मारो—'कर' धातु से परे, 'मार' प्रत्यय होता है। जैसे—

लोहकिच्च करोतीति—**कम्मारो**=लोहार।

खर

१६८ पुस-सरेहि खरो—'पुस' तथा 'सर' धातु से परे, 'खर' प्रत्यय होता है। जैसे—

पोमीयति जलेनाति—**पोक्खर**=कमल। सरति विकार गच्छतीति—**सक्खरा**=सक्कर।

कीर

१६९ सर-वस-कला कीरो वस्सुट् च—इन धातुओं से परे, 'कीर' प्रत्यय होता है, 'व' का 'उ' होता है। जैसे—

सरीयतीति—**सरीर**=शरीर। करोन्ति वास एतेनाति—**उसीर**=खस। अनेन थूलादि कलीयति परिमीयतीति—**कलीरो**=बॉस का अकुर।

१७० गम्भीरादयो—'गम्भीर' आदि, 'कीर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

गो वुच्चति पठवी। त भिन्दित्वा गच्छति पवत्ततीति—**गम्भीरो, गभीरो**=गहरा। पादे कुलति, पत्थरतीति—**कुळीरो** (कुलीरो)=केकडा इत्यादि।

ऊर

१७१ खज्ज-वल्ल-मसा ऊरो—इन धातुओं से परे, 'ऊर' प्रत्यय होता है। जैसे—

खज्जियतीति—**खज्जुरो, खज्जुरी**=खजूर। वल्लीयति, सवरीयतीति—**वल्लूरो**=सूखा मास। मसीयतीति—**मसूरो**=मसूर की दाल।

१७२ **कप्पूरादयो**—'कप्पूर' आदि, 'ऊर' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

बुद्धिं उप्पादेतुं कप्पति सक्कोतीति—**कप्पूर**=कपूर=घनसार। किब्बिस करोतीति—**कुरूरो**=पापकारी। पम=बाधने। पमति पीळेतीति—**पमूरो**= दूर, व्यञ्जन इत्यादि।

ओर

१७३ **कठ-चका ओरो**—इन धातुओं से परे, 'ओर' प्रत्यय होता है। जैसे—

कठति, किच्छेन जीवतीति—**कठोरो**=कठोर। चकति, परिवितक्केतीति—**चकोरो**=पक्षी विशेष।

१७४ **मोरादयो**—'मोर' आदि, 'ओर' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

मी=हिंसाय। ई लोपो। भीयति हिंसतीति—**मोरो**। कस=गमने। अस्स इ। कसति, गच्छतीति—**किसोरो**=किशोर, अश्व। महीयति पूजियतीति=**महोरो**= वल्मीक इत्यादि।

एरक

१७५ **कुतो एरक्**—कवति, नदतीति—**कुबेरो** [युवण्णानमियङुवङ सरे ५ १३६]

रिक

१७६ **भू-सूहि रिक्**—इन धातुओं से परे, 'रिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

भवतीति—**भूरि**=बहुत। भूरी=मेधा। सवति, हितं पसवतीति—**सूरि**= विचक्षण।

रु

१७७ **भी-कसी-नीहि रु**—इन धातुओं से परे, 'रु' प्रत्यय होता है। जैसे—

रसीहि अन्धकार मीयति हिसतीति—**मेरु**=सुमेरु पवत। के, जले, सयति पवत्ततीति—**कसेरु**=पानी मे जमने वाला एक कन्द। अत्तनिस्सिते सुन्दरत्त नेति, पापेतीति—**मेरु**=पवत।

एरु

१७८ **सिना एरु**—सिना=सोचेय्ये। इस धातु मे पर, 'एरु' प्रत्यय होता है। जैसे—

सिनाति, सुचि करोतीति—**सिनेरु**=पवतराज।

रुक्

१७९ **भी-रू हि रुक्**—इन धातुओ से परे, 'रुक' प्रत्यय होता है। जैसे—

भायन्ति एतस्माति— **भीरु**=भयानक (?) डरपोक। रवतीति **रुरु**=मिगो, मृग।

बूल

१८० **तमा बूलो**—नम=भूसने। इस धातु से परे, 'बूल' प्रत्यय होता है। जैसे—

मुख तमेति, भूसेतीति—**तम्बूल**=पान।

लक्, वाल

१८१ **सितो लक् वाला**—सि=सेवाय। इस धातु से परे, 'लक्' तथा 'वाल' प्रत्यय होते है। जैसे—

सत्तेहि सेवीयतीति—**सिला**=शिला। **सेलो**=पवत। जल सेवतीति—**सेवालो**=सेवार।

अल

१८२ **मङ्ग-कम-सम्ब-सब-सक-वस-पिस-केव-कल-पल्ल-कठ-पठ-कुण्ड-मण्डा अलो**—इन धातुओ से परे, 'अल' प्रत्यय होता है। जैसे—

मङ्गन्ति, सत्ता एतेन वुद्धि गच्छन्तीति—**मङ्गल**। कामीयतीति—**कमल**। सम्बेति खण्डेतीति—**सम्बल**=पाथेय। **सबल**=चितकबरा। सक्कोति वत्तुन्ति—**सकल**=सब। वसतीति—**वसलो**=शूद्र। पियभाव पिसति गच्छन्तीति—**पेसलो**=प्रियशील। केवति, पवत्ततीति—**केवल**=सकल। कलीयति परिमीयति उदक मेतेनाति—**कलल**=गर्भ की एक अवस्था कीचड। पल्लति, आगच्छति उदक-मेतस्माति—**पल्लल**=जलाशय। कठन्ति, एत्थ दुक्खेन वसन्तीति—**कठल**=कपाल-खण्ड। पटति वुद्धि गच्छन्तीति—**पटल**=समूह। धमनेन कुण्ठति दहतीति—**कुण्डल**। मण्डीयति, परिच्छेदकरणवसेन भूसीयतीति—**मण्डल**=घेरा।

कल

१८३ **मुसा कलो**—'मुस' धातु से परे, 'कल' प्रत्यय होता है। जैसे—**मुसलो**=अयोग्य।

१८४ **फलादयो**—'फल' आदि, 'कल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

तिट्ठति एत्थाति—**थल**=ऊँची जगह (उम्म थो। पुब्बसर लोपो)। उदक पिवतीति—**उप्पल**=उत्पल। पतति गच्छति परिपाकन्ति—**पाटलो**=फल, सुवणकुसुम। वेहति वुद्धि गच्छतीति—**बहल**=घना। चपति, एकत्थ न तिट्ठ-तीति—चपलो इत्यादि।

कालो, कल

१८५ **कुला कालो च**—कुल=पत्थारे। इस धातु से परे, 'काल' प्रत्यय होता ह, और 'कल' भी। जैसे—

कुलति, अत्तनो सिप्प पत्थरतीति—**कुलालो**=कुम्हार। कुलति, पक्खे पसारे-तीति—**कुललो**=टिटिहरी चिडिया।

१८६ **मुळालादयो**—'मुळाल' आदि, 'काल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

मील=निमीलने। उद्धरमत्ते निमीलतीति—**मुळाल**=मृणाल। मूसिका-दिखादनेन वलति जीवतीति—**विळालो**=बिलार। कप्पति जीवितु एतेनाति **कपाल**=घटादि-खण्ड। पी=तप्पने। अत्तनो फलेन सत्ते सन्तप्पेतीति—**पियालो**

=पियाल फल । कुण=सद्दे । वातसमुट्ठिता वीचिमाला एत्थ कुणन्ति नदन्तीति—**कुणालो**=एक महा सर । पविसन्ति एत्थाति—**विसालो**=विस्तार । पल=गमने । वातेन पलति, गच्छतीति—**पलाल**=पुआल । ससादयो सरति, हिंसतीति—**श्रिङ्गालो** (**सिगालो**) =सियार इत्यादि ।

णाल

१८७ **चण्डपता णालो**—'चण्ड' तथा 'पत' धातु से परे 'णाल' प्रत्यय होता है । जैसे—

चण्डेति पीळेतीति—**चण्डालो** । अधो गच्छतीति—**पाताल**=रसातल ।

ल

१८८ **मादितो लो**—'मा' आदि धातु से परे, 'ल' प्रत्यय होता है। जैसे—

मीयति, परिमीयतीति—**माला** । एति, गच्छतीति—**एला**=मुँह का लार । पीनेति, तप्पेति एत्थाति—**पेलो**=बेत की बनी डलिया। दूयति परितापेतीति—**दोला**=हिडोला । **कल**=सङ्ख्याने । **कलन**—**कल्ल**=युक्त ।

इल

१८९ **अन-सल-कल-कुक-सठ-मह्ा इलो**—इन धातुओ से परे, 'इल' प्रत्यय होता है । जैसे—

अनति पवत्ततीति—**अनिलो**=हवा । सलति, गच्छतीति—**सलिल**=जल । कलति पवत्ततीति—**कलिल**=गहन । कुकति, अत्तनो नादेन सत्तान मन गण्हातीति—**कोकिलो**=कोयल । सठति, वञ्चेतीति—**सठिलो**=शठ । महीयति पूजीयतीति—**महिला**=स्त्री ।

किल

१९० **कुटा किलो**—कुट=कोटिल्ये । इस धातु से परे, 'किल' प्रत्यय होता है । जैसे—

अकुटि, कुटिलत्तमगमीति—**कुटिलो**=टेढा ।

१९१ सिथिलादयो—'सिथिल' आदि, 'किल' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

महितु अलन्ति—**सिथिल** ['सह्' धातु का 'मिथ' आदेश हो गया]। परदुक्खे सति कम्पतीति—**कपिलो**=ऋषि। अकखि, नीलादिवण्णत्तमगमीनि—**कपिलो**=मटमैला रग। मथीयतीति—**मिथिला**=पुरी इत्यादि।

कुल

१९२ चट-कण्ड-वट्ट-पुथा कुलो—इन धातुओ से परे, 'कुल' प्रत्यय होता है। जैसे—

चटति, मित्ते भिन्दतीति—**चटुलो**=खुसामदी। कण्डीयति छिन्दीयनीति—**कण्डुलो**=वृक्ष। वट्टतीति—**वट्टुलो**=परिमण्डल। अपत्थरीति—**पुथुलो**=विस्तार।

१९३ तुमुलादयो—'तुमुल' आदि, 'कुल' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

तम=छेदने। अतमि, विटि-ण्णत्तमगमीति—**तुमुल**=फैलने वाला। तमीयति, विकारमापादीयतीति—**तण्डुलो**=चावल। अत्थिकेहि निचीयते कि—**निचुलो**=हिज्जलो, एक वनस्पति-विशेष इत्यादि।

ओल

१९४ कल्ल-कप-तक्क-पटा ओलो—इन धातुओ से परे, 'ओल' प्रत्यय होता है। जैसे—

वातवेगेन समुद्दतो कल्लति, रवतीति—**कल्लोलो**=समुद्र का लहर। कपति, दन्ते अच्छादेतीति—**कपोलो**=गाल। तक्कीयतीति—**तक्कोल**=एक फल। पटति, व्याधिमेतेन गच्छतीति—**पटोलो**=एक सब्जी इत्यादि।

उल, उलि

१९५ अङ्गा उलोलि—अङ्ग=गमने। इस धातु से परे, 'उल' तथा 'उलि' प्रत्यय होते है। जैसे—

अङ्गन्ति, एतन जानन्तीति—**अङ्गुल**=प्रमाण। अङ्गति, उग्गच्छतीति—**अङ्गुलि**।

अलि

१९६ अञ्जालि—अञ्ज=व्यत्तिमक्खनगतिकन्तिसु। इस धातु से परे, 'अलि' प्रत्यय होता है। जैसे—

अञ्जेति, भत्ति अनेन पकासेतीति—**अञ्जलि**।

लि

१९७ छदा लि—छद=सवरणे। इस धातु से परे, 'लि' प्रत्यय होता है। जैसे—

छादेतीति—**छल्ली**=छल्ली।

१९८ अल्यादयो—'अल्लि' आदि, 'लि' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

अर=गमने। अरति, पवत्ततीति—**अल्लि**=वृक्ष। अत्थिकेहि नीयतीति—**नीलि, नीली**=एक प्रकार का गाछ। द्वित्व होने से, **'निल्ली'** भी होता है। पालेति, रक्खतीति—**पालि। पाली**=पक्ति। पालेति, रक्खतीति—**पल्लि**=कुटि। चोदीयतीति—**चुल्ली**=चूल्हा इत्यादि।

अव

१९९ पिलादीह्यवो—'पिल' आदि धातुओ से परे, 'अव' प्रत्यय होता है। जैसे—

पिल=वत्तने। पिल्यतेति—**पेलवो**=पतला। पल्लीयतीति—**पल्लवो**। पणीयतीति—**पणवो**=एक तरह का ढोल इत्यादि।

२०० साळवादयो—'साळव' आदि, 'अव' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सलति, पवत्ततीति—**साळवो**=अच्छी तरह तैयार किया गया, 'खदर' आदि फल का एक खाद्य। कित=निवासे। किच्छतीति—**कितवो**=ठग, जुआरी।

म=बन्धने । मुनाति बन्धतीति—मुतवो=चण्डाल । वल, वल्ल=संवरण । वलति, वल्लतेति वा—वळवा=अश्वराज । मुर=संवेठने । मुरीयतीति—मुखो=मृदङ्ग इत्यादि ।

आव

२०१ सरा आवो—'सर' धातु से परे, 'आव' प्रत्यय होता है । जैसे—
सरति, पवत्ततीति—सराव=प्याला ।

णुव

२०२ अल-मल बिला णुवो—इन धातुओं से परे, 'णुव' प्रत्यय होता है । जैसे—
लताहि अल्लीयतीति—आलुवो=एक गाछ। मलति, धारेतीति—मालुवा=लता, अमर बेल । विलति, भिन्दतीति—बेलुवो=बेल ।

ईव

२०३ गा त्वीवो—गा=सद्दे । इस धातु से परे, 'ईव' प्रत्यय होता है । जैसे—
गायन्ति एतायाति—गीवा=गला ।

क्व, क्वा

२०४ सुतो क्व क्वा—'सु' धातु से परे, 'क्व' तथा 'क्वा' प्रत्यय होते है । जैसे—
सुणातीति—सुवो=सुग्गा । सुवा=सुग्गा ।
२०५ विद्वा—'विद' धातु से परे, 'क्वा' प्रत्यय होता है, तथा उसका पर-रूप-भाव होता है । यह निपात है । जैसे—
विदति, जानातीति—विद्वा=विद्वान ।

रेव

२०६ थुतो रेवो—थु=अभित्थवे । इस धातु से परे, 'रेव' प्रत्यय होता

है। जैसे—

थवति, सिञ्चनीति—**थेवो**=जल बिन्दु।

रिव

२०७ समा रिवो—सम=उपसमे। इस धातु से परे, 'रिव' प्रत्यय होता है। जैसे—

समेति, उपसमेतीति—**सिवो**=शिव, उमापति। **सिवा**=सियार। **सिव**=शान्ति।

रवि

२०८ छदा रवि—छद=सवरणे। इस धातु से परे, 'रवि' प्रत्यय होता है। जैसे—

छादेतीति—**छवि**=द्युति, त्वचा के ऊपर की पपडी।

किस

२०९ पूर-तिमा किसो रस्सो च—'पूर' तथा 'तिम' धातु से परे, 'किस' प्रत्यय होता है। 'ऊ' का 'उ' हो जाता है। जैसे—

पूरेतीति—**पुरिसो**=पुरुष। पुरे, उच्चे ठाने सेति, पवत्ततीति—**पुरिसो**=पुरुष। तेमीयतीति—**तिमिस**=अन्धकार।

ईस

२१० करा ईसो—'कर' धातु से परे, 'ईस' प्रत्यय होता है। जैसे—

करीयतीति—**करीस**=गुह।

२११ सिरीसादयो—'सिरीस' आदि, 'ईस' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

सप्पदट्ठकालादिसु सरीयतीति—**सिरीसो**=वृक्ष। पूरेतीति—**पुरिस**=गुह। तलति, सत्तान पतिट्ठान भवतीति—**तालिस**=एक दवा का गाछ इत्यादि।

रिब्बिम

२१२ करा रिब्बिसो—'वर' धातु से परे, 'रिब्बिम' प्रत्यय होता है। जैसे—

करीयतीति—**किब्बिस**=पाप।

स

२१३ सस-अस-वस-जिस-हन-वन-भन-अन-कमा सो—इन धातुओ से परे, 'स' प्रत्यय होता है। जसे—

ससन्ति, जीवन्ति सत्ता एतेनाति **सस्स**=सस्य। असति, खिपतीति—**अस्सो**=घोडा। वसन्ति एत्थाति —**वस्स**=वर्ष। विसतीति—**वेस्सो**=वैश्य। हञ्ञतेति—**हसो**। वनोति, पत्थरतीति—**वंसो**=वंश, बाँस। भञ्ञतेति—**भस**=भास। अनति, जीवति एतेनाति **अंसो**=हिस्सा, कंधा। कामीयतीति—**कंसो**=एक नाप।

सक्

२१४ आमि-थु-कु-सीतो सक्—इन धातुओ से परे, 'सक' प्रत्यय होता है। जैसे—

आमीयति, अन्तो पक्खिपीयतीति—**आमिस**=भोग्य पदार्थ। थवीयतीति—**थुसो**=भुस्सा। कवति, वातेन नदतीति—**कुसो**=कुश घास। सयन्ति एत्थ ऊकादयो ति—**सीस**=सिर, सीसा।

२१५ फस्सादयो—'फस्स' आदि, 'सक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

फुस=सम्फस्से। उस्स अ। फुसति इति—**फस्सो**=स्पर्श। **फुस्सो**=एक नक्षत्र। पोसीयतीति—**पोसो**=पुरुष। **पुस्स**=फल-विशेष। अभवीति—**भुस**=भुस्सा। अङ्केति अनेन अञ्ञे 'ति— **अङ्कुसो**। फायति, वुद्धि गच्छतीति—**पप्फास**=पेट के भीतर का एक अवयव। कलीयति, परिमीयतीति—**कम्मासो**=चितकबरा। **कम्मास**=पाप। कुलति पत्थरतीति—**कुम्मासो**=एक खाद्य। मञ्जति सधनत्त एतायाति—**मञ्जूसा**=बक्सा। पीनेतीति—**पीयूस**=अमृत। कुल=सवर्णे।

कुलीयति, सवरीयतीति—**कुलिसं**=वज्र। बल=सवरणे। वलति, एतेन मच्छे गण्हातीति—**बळिसो**=वसी। महीयति इति—**महेसी**=पट रानी इत्यादि।

णिसक्

२१६ **सुतो णिसक**—'सु' धातु से परे, 'णिसक' प्रत्यय होता है। जसे—सुणातीति—**सुणिसा**=पतोहू।

अस

२१७ **वेत-अत-यु-पन-अल-कल-चमा असो**—इन धातुओ से परे, 'अस' प्रत्यय होता है। जैसे—

वेतति, पवत्ततीति—**वेतसो**=बत। अतति, वातकम्पितो निच्च वेधत्त यातीति—**अतसो**=वातो। **अतसी**=अलसी। यवीयति, मिस्सीयतीति—**यवसो**=पशुओ का चारा। पन्यते, थवीयतेति—**पनसो**=कटहल। अलीयति, बन्धीयतीति—**अलसो**=आलसी। कलीयतीति—**कलसो**=कलश। चमति, अदति अनेनाति—**चमसो**=चमचा, श्रुवा।

असण्

२१८ **वय-दिव-कर-करेहि असण् सक् पास कसा**—'वय' आदि धातुओ से परे, यथाक्रम 'असण्' आदि प्रत्यय होते है। जैसे—

वयति, गच्छतीति—**वायसो**=कौआ। दिब्बन्ति एत्थाति—**दिवसो**=दिन। करीयतीति—**कप्पासो**=कपास। किब्बिस करोतीति—**कक्कसो**=ककश।

सु

२१६ **सस-मस-दस-असा सु**—'सस' आदि धातुओ से परे, 'सु' प्रत्यय होता है। जैसे—

ससति, जीवति इति—**सस्सु**=सास। मसीयतीति—**मस्सु**=दाढी। दसीयति परायत्तो एतेनाति—**दहसु**=चोट। असीयति, खिपीयतीति—**अस्सु**=आँसू।

दसुक्

२२० विदा दसुक्—'विद धातु से परे, दसुक्' प्रत्यय होता है। जैसे—विदति, जानातीति—**विदस्सु**=विद्वान ।

रीहो

२२१ससा रीहो—सस धातु से परे, रीह' प्रत्यय होता है । जैसे—ससति, हिंसतीति—**सीहो**=सिंह ।

ह

२२२ जीवामा हो नमा च—'जीव तथा 'अम' धातु से परे, 'ह' प्रत्यय होता है । जैसे—

जीवन्ति एतायानि—**जिव्हा**=जीभ । अमति पवत्ततीति—**अम्ह**=पत्थर । पपुब्बो अमति पवत्ततीति—**पम्ह**=प्रमुख ।

२२३ तण्हादयो—'तण्हा आदि, 'ह' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

तसति, पातुमिच्छति एतायाति—**तण्हा**=तृष्णा । कस=विलेखने । कसतीति—**कण्हो**=काला । जोतेतीति—**जुण्हा**=चादनी । निमीलन्ति अनेन अक्खीनीति—**मीळह**=गुह । गय्हतीति—**गाळ्ह**=गाट । दहतीति—**दळ्ह**=दृढ । वहति, वुद्धि गच्छतीति—**बाळ्ह**=मजबूत । गच्छतीति—**गिम्हो**=ग्रीष्म । पटति, यातीति—**पटहो**=एक बाजा । कलीयति, परिमीयति अनेन सूरभावन्ति—**कलहो**=विवाद । कटन्ति, एत्थ ओसधादि महन्तीति—**कटाहो**=कडाही । वरीयतीति—**वराहो**=सूअर । लुनाति एतेन, ति—**लोह**=लोहा इत्यादि ।

हि, ही

२२४ पणुस्सहा हिही णो लड् च—'पण' तथा उ-पूर्वक 'सह' धातु से परे, यथाक्रम 'हि ही' प्रत्यय होते हैं। अन्त का 'ण' तथा 'लड्' आदेश होता है । जैसे—

पणीयति, वोहरीयतीति—**पण्ही**=एडी । उस्सहतीति—**उस्सोळ्हि**=वीय ।

ळ

२२५ **खी-मि-पी-चु-मा-वा-काहि ळो उस्स वा दीघो च**—इन धातुओ से परे, 'ळ' प्रत्यय होता है, तथा 'उ' का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे—

खीयतीति—**खेळो**=थूक। मीयति, पम्खिपीयतीति—**मेळा**=राख। पीनेतीति—**पेळा**=पेडा। चवतीति—**चूळा**=चूडा। **चोळो**=कपडा। मीयति परिमीयतीति—**माळो**=एक कूट वाला, अनेक कोनो वाला सभागृह। वाति गच्छनीति **वाळो**=जगली जानवर। काति, फरुस वदतीति **काळो**=कृष्ण।

ळक्

२२६ **गुतो ळक् च**—गु=सद्दे। इस धातु से परे, 'ळक्' प्रत्यय होता है, और 'ळ' भी। जैसे—

गवति, (सद्द) पवत्तति एतेनाति—**गुळो**=गुड। **गोळो**=बौना।

२२७ **पङ्गुळादयो**—'पङ्गुळ' आदि 'ळक' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

खञ्ज= गतिवेकल्ले। पङ्गु आदयो अखञ्जि, गतिवेकल्ल आपज्जि इति—**पङ्गुळो**=लूभः। किब्बिस करोतीति—**कक्खलो**=क्रूर। कुक्कति, पापकारीहि आदीयतीति—**कुक्कुळ**=एक नरक। मङ्केति, वन मण्डेतीति—**मकुळो**=कली।

ळि

२२८ **पातो ळि**—'पा' धातु से परे, 'ळि' प्रत्यय होता है। जैसे—

अत्थ पाति, रक्खतीति—**पाळि**=पालि भाषा।

लु

२२९ **वीतो लु**—'वी' धातु से परे, 'लु' प्रत्यय होता है। जैसे—

वेति पवत्ततीति—**वेलु**=बाँस।

॥ इति 'ण्वादि' वृत्ति ॥

पहला परिशिष्ट

मोग्गल्लान सूत्र-पाठ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

मोग्गल्लान व्याकरण

सिद्धमिद्धगुण साधु नमस्सित्वा तथागत
सधम्मसङ्घ भासिस्स मागध सद्दलक्खण ॥

पालि-व्याकरण मे सूत्र पॉच प्रकार के है—१ सज्ञा, २ परिभाषा, ३ विधि, ४ नियम, ५ अधिकार।

१ सज्ञा-सूत्र

'सज्ञा' का अर्थ है 'नाम-करण'। मोग्गल्लान व्याकरण के प्रथम बारह सूत्र 'सज्ञा-सूत्र' है। पहला सूत्र[1] 'वर्ण' का नाम-करण करता है, दूसरा[2] 'स्वर' का, तीसरा[3] 'सवर्ण' का, चौथा[4] 'ह्रस्व' का, पॉचवा[5] 'दीर्घ' का, छठा[6] 'व्यञ्जन' का, सातवॉ[7] 'वर्ग' का, और आठवॉ[8] 'निग्गहीत' का।

नवॉ सूत्र है—**इयुवण्णा झ-ला नामस्सन्ते** १ ६—अर्थात्, किसी पुल्लिङ्ग या नपुसकलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ' या 'ई' की सज्ञा 'झ', तथा 'उ' या 'ऊ' की सज्ञा 'ल' है।

'झ' या 'ल' शब्द का, अपने मे कोई अर्थ नही है। किंतु व्याकरण-शास्त्र में, जहॉ कही 'झ' सज्ञा आती है, उससे झट नाम के अन्त्य 'इ' या 'ई' का बोध हो

---

१ अ आदयो तितालीस वण्णा। २ दसादो सरा। ३ द्वे द्वे सवण्णा। ४ पुब्बो रस्सो। ५ परो दीघो। ६ कादयो ब्यञ्जना। ७ पञ्च पञ्चका वग्गा। ८ बिन्दु निग्गहीत।

जाता है। उसी तरह, 'ल' सज्ञा कहने से, नाम का अन्त्य 'उ' या 'ऊ' समझ लिया जाता है।

दसवा सूत्र है— **पित्थिय** ११०—अर्थात, स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ', 'ई', 'उ' या 'ऊ' की सज्ञा 'प' होगी। आगे के सूत्रो मे, जहाँ कही 'प' सज्ञा आवेगी, उससे झट स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य इ, ई, उ या ऊ का बोध हो जायगा।

ग्यारहवाँ सूत्र है **'घा'**[1] १११—अर्थात्, स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'आ' की **'घ'** सज्ञा होती है। आगे के सूत्रो मे, जहा कही **'घ'** सज्ञा आवेगी, उससे झट 'आ'कारान्त स्त्रीलिङ्ग' नाम के अन्त्य 'आ' का बोध हो जायगा।

बारहवाँ सूत्र है—**गोस्यालपने** ११२—अर्थात्, सम्बोधन के अथ मे (=आलपने) प्रयुक्त 'सि' विभक्ति की सज्ञा 'ग' होगी।

२. परिभाषा-सूत्र

बहुत से स्थानो पर एक ही बात को बार-बार कहने से बचने के लिए, कोई नियम या छोटा सकेत निश्चित कर लेते है। ऐसे नियम या सकेत निश्चित करने वाले सूत्र 'परिभाषा-सूत्र' कहे जाते है।

मोग्गल्लान व्याकरण मे, परिभाषा के (१३–२५) तेरह सूत्र है। इन तेरह सूत्रो मे, पहले के पाच सूत्र नियम निर्धारित करते है—

(क) नियम-निर्धारक-सूत्र

विधिब्बिसेसनन्तस्स ११३—सूत्र मे यदि कोई विशेषण-पद आवे, तो वह विशेषण जिसके अन्त मे हो उसी शब्द का ग्रहण होता है। जैसे—

'अतो योन टा टे'—इस सूत्र मे, 'अतो' का अर्थ है 'अ' से परे। किंतु, यह पद नाम का विशेषण है, इसलिए, इसका अथ हुआ—'अ' जिसके अ त मे हो,

---

[1] **पो इत्थिय**

[2] **घो + आ**

ऐसे नाम से परे। फलत, इस सूत्र का अथ हुआ—अकारान्त नाम से परे 'यो' विभक्तियो का 'टा-टे' आदेश हो जाता है।

सत्तमिय पुब्बस्स १ १४—सूत्र के किसी पद मे सप्तमी विभक्ति होने पर, उसमे (व्यवधान रहित) पूवका काय जानना चाहिए। जसे—

'सरो लोपो सरे'। इस सूत्र म, 'सरे' पद सप्तम्यन्त है। अत, इस सूत्र का अथ हुआ—स्वर से (व्यवधान रहित) पूव स्वर का लोप होता है। जैसे—

सम्मन्ति+इध=सम्मतिध। यहाँ, 'इध के 'इ' से (व्यवधान रहित) पूर्व 'सम्मन्ति' के 'इ' का लोप हो गया।

पञ्चमिय परस्स १ १५—सूत्र के किसी पद मे पञ्चमी विभक्ति होने पर, उससे पर का (=बाद का) कार्य जानना चाहिए। जैसे—

'अतो योन टा टे'। इस सूत्र मे 'अतो' पद पञ्चम्यन्त है, अत, इसका अर्थ हुआ—अकारान्त नाम से (व्यवधान रहित) पर म (=बाद म)। फलत, इस सूत्र का अथ हुआ—अकारान्त नाम से (व्यवधान रहित) परे, 'यो' विभक्तियो का 'टा-टे' आदेश होता है।

'आदिस्स' १ १६—पर का जो काय होना कहा गया है, वह उसके आदि वण के स्थान मे समझना चाहिए। जैसे—

र सख्यातो वा ४ १०—इस सूत्र म, सख्या से परे 'दस' शब्द का 'र' आदेश किया गया है। 'दस' शब्द के 'र' आदेश होने का अथ है—'दस' शब्द के आदि-वण 'द' के स्थान मे 'र' होना। जैसे—ते+दस=तेरस।

'छट्ठियन्तस्स' १ १७—सूत्र के किसी पद मे षष्ठी विभक्ति होने पर, उससे उसके अन्तिम वण का काय समझना चाहिए। जैसे—

'राजस्स इ नाम्हि'—इस सूत्र मे 'राजस्स' पद षष्ठ्यन्त है। अत, इस सूत्र का अथ हुआ—'राज' शब्द के अन्तिम वण 'अ' का 'इ' हो जाता है, यदि 'ना' विभक्ति परे हो। जैसे—राज+ना=राजिना।

(ख) सकेत (=अनुबन्ध) निश्चय करने वाले सूत्र

ङ अनुबन्धो १ १८—जिसमे 'ङ' अनुबन्ध (=सकेत) लगा हो, उसका आदेश, षष्ठ्यन्त पद के अन्तिम वण के स्थान मे होता है।

टनुबन्धानेकवण्णा सब्बस्स १ १९—जिसमे 'ट' अनुबन्ध (=सकेत) लगा

हो, और जो अनेक वर्णो वाला आदेश हो, वह सम्पूण षष्ठचन्त पद के स्थान मे होता है। जैसे—

'अतो योन टा टे' इस सूत्र मे, 'योन' पद मे पष्ठी विभक्ति ह, अत, ऊपर कहे गये सूत्र 'छट्ठियन्तस्स' के अनुसार, 'यो' पद के अन्तिम वण 'ओ' का लोप होना चाहिए था। किंतु, प्रस्तुत सूत्र के अनुसार, सम्पूण पद 'यो' का 'आ' तथा 'ए' आदेश होगा, क्योकि 'आ-ए' के साथ 'ट' अनुबन्ध (=सकेत) लगा ह। जैसे— बुद्ध+यो=बुद्धा, बुद्धे।

अनेक वर्णो वाला आदेश भी सम्पूण पष्ठचन्त पद के स्थान मे होता है।

ञ कानुबन्धाद्यन्ता १ २०—जिसमे 'ञ' अनुबन्ध (=सकेत) लगा हो, वह षष्ठचन्त पद के आदि मे आता है। जैसे—

'सुञ् सस्स'। इस सूत्र के 'सुञ्' पद मे, 'ञ्' अनुबन्ध (=सकेत) लगा है। इससे मालूम होता है, कि पष्ठचन्त पद 'स' के आदि मे 'सु' का आगम होगा। 'सु' का 'स' ही रहता है, क्योकि 'उ' केवल उच्चारण-सौकय के लिए लगा दिया गया ह। अत—बुद्ध+स=बुद्ध+स्स=बुद्धस्स।

जिसमे 'क' अनुबन्ध (=सकेत) लगा हो, वह षष्ठचन्त पद के अन्त मे आता है। जैसे—

(अत्त-आतुमान) 'सुहिसु नक्'—यहाँ, 'नक्' पद मे 'क' अनुबन्ध (=सकेत) लगा है, इससे मालूम होता है, कि 'न का आगम पष्ठचन्त पद 'अत्त' तथा 'आतुम' के अन्त मे होगा—'सु-हि' विभक्तियाँ यदि परे हो। जैसे—अत्त+सु= अत्तन+सु=अत्तनेसु।

मनुबन्धो सरानमन्ता परो १ २१—जिसमे 'म' अनुबन्ध लगा हो, वह षष्ठचन्त शब्द के अन्तिम स्वर से परे आता है। जैसे—

'म च रुधादीन'। इस सूत्र के 'म' पद मे, 'म' अनुबन्ध (=सकेत) लगा है, इससे मालूम होता है, कि 'अ' का आगम षष्ठचन्त शब्द 'रुध' के अन्तिम 'स्वर' 'उ' से परे होगा। जैसे—रुन्धति।

(ग) साधारण परिभाषा-सूत्र

विप्पटिसेधे १ २२—यदि एक ही जगह, परस्पर भिन्न दो सूत्र (नियम) लगते हो, तो उनमे बाद मे कहा गया सूत्र लगता है।

सकेतो ऽनवयवोनुबन्धो १ २३—किसी शब्द मे, 'अनुबन्ध' सिफ एक सकेत के लिए लगाया जाता है। 'अनुबन्ध' केवल इस बात का सकेत करने के लिए लगाया जाता है, कि वह आदेश किसके स्थान पर, या वह आगम कहाँ पर होगा। 'अनुबन्ध', शब्द का अङ्ग नही होता है, अत, आदेश या आगम के समय, वह छोड दिया जाता है। [देखिए—पृ० ४३९, ४४०, ४४९, ४५०]

अनुबन्धो के सकेत—

१ **'ङ'**—षष्ठचन्त पद के अन्तिम वण के स्थान मे आदश करने का सकेत करता है।

२ **'ट'**—सम्पूण षष्ठचन्त पद के स्थान मे आदेश करने का सकेत करता है।

३ **'ञ'**—षष्ठचन्त पद के आदि म आगम करने का सकेत करता है।

४ **'क'**—षष्ठचन्त पद के अन्त मे आगम करने का सकेत करता है।

५ **'म'**—षष्ठचन्त पद के अन्तिम स्वर मे परे आगम करने का सकेत करता है।

वण्णपरेण सवण्णो'पि १ २४—स्वर के साथ 'वण्ण' शब्द लगा देने से, उसके सवण का भी ग्रहण होता है। 'अवण' कहने से, 'आ' का भी ग्रहण होता है, 'इवण' कहने से, 'ई' का भी ग्रहण होता है। इत्यादि।

न्तु वन्तु मन्त्वा वन्तु तवन्तु सम्बन्धी १ २५—सूत्र म, जहाँ 'न्तु' शब्द का प्रयोग आवे, वहा 'वन्तु', 'मन्तु' 'आवन्तु' तथा 'तवन्तु'—इन्ही के 'न्तु' का ग्रहण करना चाहिए। [जन्तु, तन्तु आदि शब्दो के 'न्तु' का नहीं]

२ विधि-सूत्र

विभक्ति-प्रत्ययादि के विपय मे विधान करने वाले सूत्र 'विधि-सूत्र' है। 'विधि-सूत्र' ही, व्याकरण मे सव-प्रधान है, क्योकि, दूसरे सूत्र तो विधि-सूत्र के काय-सम्पादन के सौकर्य के लिए ही बनाए गए है। जैसे—

ण्य दिच्चादीहि ४ ४—अर्थात्, 'दिति' आदि शब्दो से परे, अपत्य के अर्थ मे 'ण्य' प्रत्यय होता है। दिति+ण्य=देच्चो।

कम्मे दुतिया २ २—कम मे द्वितीया विभक्ति होती है।

अतो योन टाटे २ ४३—अकारान्त नाम से परे, 'यो' विभक्तियो का 'टा-टे' आदेश होता है। इत्यादि।

४. नियम-सूत्र

किन किन स्थान मे कोई खास नियम लागू होते है या नही, उसे बताने वाले सूत्र 'नियम-सूत्र' ह । जैसे—

न खादादीन २ ६—अर्थात्, ऊपर कहा गया नियम 'खाद' आदि धातुओ के साथ नही लगता है ।

वहिस्सानिमन्तु के २ ७—अर्थात्, 'वह' धातु के प्रयोज्यकर्ता मे तृतीया विभक्ति होती है, यदि उसका कर्ता नियन्ता न हो ।

५. अधिकार-सूत्र

किसी प्रकरण-विशेष की सूचना देने वाले सूत्र 'अधिकार-सूत्र' ह । जैसे—

बहुल १ ५८—अर्थात्,आगे आने वाले सभी सूत्रो मे 'बहुल' का नियम लगा है।

उत्तरपदे ३ ५४—अर्थात्, आगे आने वाले सूत्रो के काय तभी होते है, यदि 'उत्तर पद' परे हो । इत्यादि ।

सूत्र-पाठ

पठमो कण्डो

१ अ आदयो तितालीस वण्णा
२ दसादो सरा
३ द्वे द्वे सवण्णा
४ पुब्बो रस्सो
५ परो दीघो
६ कादयो ब्यञ्जना
७ पञ्च पञ्चका वग्गा
८ बिन्दु निग्गहीत
९ इयुवण्णा झला नामस्सन्ते
१० पित्थिय
११ घा
१२ गो स्यालपने
(सञ्ञाधिकार)
१३ विधिब्बिसेसनन्तस्स
१४ सत्तमिय पुब्बस्स
१५ पञ्चमिय परस्स
१६ आदिस्स
१७ छट्ठियन्तस्स
१८ ङ नुबन्धो
१९ टनुबन्धानेकवण्णा सब्बस्स

---

९ उ । १० प+इ० । ११ घ+आ । १२ सि+आ० । १७ अ० । १८ ङ+

२० अकानुबन्धाद्यन्ता
२१ मनुबन्धो सरानमन्ता परो
२२ विप्पटिसेधे
२३ सकेतो 'नवयवो' नुबन्धो
२४ वण्णपरेन सवण्णो' पि
२५ न्तु वन्तुमन्त्वावन्तु तवन्तुसम्बन्धी (परिभासायो)
✓२६ सरो लोपो सरे
२७ परो क्वचि
२८ न द्वे वा
२९ युवण्णानमेओ लुत्ता
३० यवा सरे
३१ एओन
३२ गोस्सावङ्
३३ व्यञ्जने दीघरस्सा
३४ सरम्हा द्वे
३५ चतुत्थदुतियेस्वेस ततियपठमा
३६ वितिस्सेवे वा
३७ एओनमवण्णे
३८ निग्गहीत
३९ लोपो
४० परसग्स्स
४१ वग्गे वग्गन्तो
४२ येवहिसु ञ्ञो
४३ ये सस्स
४४ मयदा सरे
४५ वनतरगा चागमा
४६ छा ळो
४७ तदमिनादीनि
४८ तवग्गवरणान ये चवग्गवयञा
४९ वग्गलसेहि ते
५० ह्रस्स विपल्लासो
५१ वे वा
५२ तथनरान टठणला
५३ सयोगादि लोपो
✓५४ वीच्छाभिक्खञ्ञेसु द्वे
५५ स्यादिलोपो पुब्बस्सेकस्स
५६ सब्बादीन वीतिहारे
५७ याव बोध सम्भमे
५८ बहुल

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) सञ्ञादिकण्डो पठमो

अ०। २० न्धा+आदि+अन्ता। २१ न+अ०। २९ इ+उ=यु। ३२ स्स+अ। ३५ सु+एस (चतुत्थ-दुतियान)। ३६ वो+इतिस्स+एवे। ३७ न+अ। ४२ य+एव। ४४ म, य, द०। ४५ व, न, त, र, ग०। ४८ तवग्ग-व-र-णानये चवग्ग-ब-य-ञा। ४९ वग्ग-ल-से हि ते (=ते एव वग्ग-ल-सा)। ५२ त-थ-न-रान ट-ठ-ण-ला। ५४ च्छा+आ०। ५५ स्स+ए०। ५६ ब्ब+आ०।

दुतियो कण्डो

(स्यादि)

१ द्वे द्वेकानेकेसु नामस्मा सि यो अ यो ना हि स न स्मा हि स न स्मिं सु	२० लक्खणे
	२१ हेतुम्हि
२ कम्मे दुतिया	२२ पञ्चमीणे वा
३ कालद्धानमच्चन्तसयोगे	२३ गुणे
४ गतिबोधाहारसद्दत्थाकम्मक भज्जादीन पयोज्जे	२४ छट्ठी हेत्वत्थेहि
	२५ सब्बादितो सब्बा
५ हरादीन वा	२६ चतुत्थी सम्पदाने
६ न खादादीन	२७ तादत्थ्ये
७ वहिस्सानियन्तुके	२८ पञ्चम्यवधिस्मा
८ भक्खिस्साहिंसाय	२९ अपपरीहि वज्जने
९ ध्यादीहि युत्ता	३० पटिनिधिपटिदानेसु पतिना
१० लक्खणित्थम्भूतवीच्छास्वभिना	३१ रिते दुतिया च
११ पतिपरीहि भागे च	३२ विनाञ्ञत्र ततिया च
१२ अनुना	३३ पुथनानाहि
१३ सहत्थे	३४ सत्तम्याधारे
१४ हीने	३५ निमित्ते
१५ उपेन	३६ यब्भावो भावलक्खण
१६ सत्तम्याधिक्ये	३७ छट्ठी चानादरे
१७ सामित्ते 'धिना	३८ यतो निद्धारण
१८ कत्तुकरणेसु ततिया	३९ पठमात्थमत्ते
१९ सहत्थेन	४० आमन्तणे

---

१ द्वे+एक+अने० । ४ गति-बोध-आहार-सद्दत्थ-अकम्मक-भज्जादीन पयोज्जे। ७ स्स+अ०। ८ स्स+अ०। ९ धि+आ०। १० लक्खण-इत्थभूत-वीच्छासु अभिना। १६ मी+आ०। २२ मी+इ०। २८ मी+अ०। ३२ ना+अ०। ३३ पुथ-नानाहि। ३९ मा+अ०।

४१ छट्ठी सम्बन्धे
४२ तुल्यत्थेन वा ततिया
४३ अतो योन टाटे
४४ नीन वा
४५ स्मास्मिन्न
४६ सस्साय चतुत्थिया
४७ घपतेकस्मि नादीन यया
४८ स्सा वा तेतिमामूहि
४९ नम्हि नुक् द्वादीन सत्तरसन्न
५० बहुकतिन्न
५१ ण्ण ण्णन्न तितोज्झा
५२ उभिन्न
५३ सुञ सस्स
५४ म्स स्सा स्सायेस्वितरेकञ्ञेतिमानमि
५५ ताय वा
५६ तेतिमातो सस्स स्साय
५७ रत्यादीहि टो स्मिनो
५८ सुहिसुभस्सो
५९ ल्तुपितादीनमा सिम्हि
६० गे अ च
६१ अयून वा दीघो
६२ घब्रह्मादिते
६३ नाम्मादीहि
६४ रस्सो वा
६५ घो स्सस्सास्सायातिसु
६६ एकवचनयोस्वघोन
६७ गे वा
६८ सिस्मि नानपुसकस्स
६९ गोस्सागमिहिनसु गावगवा
७० सुम्हि वा
७१ गव सेन
७२ गुन्न च नना
७३ नास्सा
७४ गावुम्हि
७५ य पीतो
७६ न भीतो
७७ योन नोने पुमे
७८ नो
७९ स्मिनो नि
८० अम्ब्वादीहि
८१ कम्मादितो

---

४६ स्स+आ०। ४७ घ-पतो एकस्मि ना-आदीन यया। ४८ ता+एता+इमा+अमूहि। ५० बहु-कतिन्न। ५४ स्स-स्सा-स्सायेसु इतर-एक-अञ्ञ-एत-इमान इ। ५६ ता+एता+इमा०। ५७ त्ति+आ०। ५८ सु-हि-सु उभस्स ओ। ५९ न+आ०। ६१ अ+इ+उ (इच्चेस)। ६२ तो+ए। ६३ न+अ०। ६५ स्स+स्सा+स्साय+अ+ति (इच्चेतेसु)। ६६ एकवचन-योसु अ-घ-ओन। ६८ न+अ०। ६९ स्स+अ०। ७७ नो-ने। ८० म्बु+आ०। ८१ म्म+आ०।

८२ नास्सेनो
८३ झला सस्स नो
८४ ना स्मास्स
८५ ला योन वो पुमे
८६ जन्त्वादितो नो च
८७ कूतो
८८ लोपो' मुस्मा
८९ न नो सस्स
९० यो लोपनिसु दीघो
९१ सुनहिसु
९२ पञ्चादीन चुद्दसन्नम
९३ य्वादो त्तुस्स
९४ न्तस्स च ट वसे
९५ योसुज्झिस्स पुमे
९६ वेवोसु लुस्स
९७ योम्हि वा क्वचि
९८ पुमालपने वे वो
९९ स्मा-हि-स्मिन्न म्हा-भि-म्हि
१०० सुहिस्वस्से
१०१ सब्बादीन नम्हि च
१०२ स-सान
१०३ घ-पा सस्स स्सा वा
१०४ स्मिनो स्स
१०५ य
१०६ ति सभापरिसाय
१०७ पदादीहि सि
१०८ नास्स सा
१०९ कोधादीहि
११० अतेन
१११ सिस्सो
११२ क्वचे वा
११३ अन्नपुसके
११४ योन नि
११५ झला वा
११६ लोपो
११७ जन्तु हेत्वीघपेहि वा
११८ ये पस्सिवण्णस्स
११९ गसीन
१२० असख्येहि सब्बास
१२१ एकत्थताय
१२२ पुब्बस्मामादितो
१२३ नातो' मपञ्चमिमा
१२४ वा ततिया सत्तमीन
१२५ राजस्सि नाम्हि

---

८२ स्स+ए०। ८३ झ-ल०। ८६ न्तु+आ०। ९१ सु-न-हिसु। ९२ पञ्च-आदीन चुद्दसन्न अ। ९३ यो+आ०। ९४ वा+असे। ९५ योसु झ-इस्स०। १०० सु+अस्स+ए। ११० तो+ए०। १११ स्स+ओ। ११२ चि+ए०। ११३ अ+न०। ११७ जन्तु-हेतु-ई-घ-पेहि वा। ११८ स्स+इ०। १२२ स्मा+अ०। १२३ न+अतो+अ+अपञ्चमिया। १२५ स्स+इ।

१२६ सु-न-हिमु
१२७ इमस्सानित्थिय टे
१२८ नाम्हिनिमि
१२९ सिम्हनपुसकस्साय
१३० त्यतेतान तस्स सो
१३१ मस्सामुस्स
१३२ के वा
१३३ ततस्स नो सब्बासु
१३४ ट सस्मास्मिस्सायस्ससामम्हा-म्हिस्विमस्स च
१३५ टे सिस्सिसिस्मा
१३६ दुतियस्स योस्स
१३७ एकच्चादीहतो
१३८ न निस्स टा
१३९ सब्बादीहि
१४० योनमेट्
१४१ नाञ्ञञ्च नामप्पधाना
१४२ ततित्थयोगे
१४३ चत्थसमासे
१४४ वेट्
१४५ पुब्बादीहि छहि
१४६ मनादीहि म्हिमनास्मान सिमा ओमासा
१४७ मता सब्भ
१४८ भवतो वा भोन्तो गयोनासे
१४९ मिस्साग्गितो नि
१५० न्तस्स
१५१ मूतो
१५२ महन्तारहन्तान टा वा
१५३ न्तुस्स
१५४ अड नपुमके
१५५ हिमवतो वा ओ
१५६ राजादियुवादित्वा
१५७ वा म्हानट्
१५८ योनमानो
१५९ आयो नो च सखा
१६० टे स्मिनो
१६१ नोनासेस्वि
१६२ स्मानसु वा
१६३ योस्वहिसु चारङ्
१६४ ल्तुपितादीनमसे
१६५ नम्हि वा

---

१२७ स्स+अ०। १२८ नाम्हि अन-इमि (इच्चादेस्सा होन्ति)। १२९ सिम्हि अनपुसकस्स अय। १३० त्य+एत०। १३१ स्स+अ०। १३४ ट स-स्मा-स्मि-स्साय-स्स-स्सा-स-म्हा-म्हिसु इमस्स च। १३५ स्स+इ०। १३७ दीहि+अतो। १४० न+एद्। १४१ न+अ०। म+अ०। १४४ वा+एट्। १४६ मन-आदीहि—

स्मि=सि। स=सो। अ=ओ। ना=सा। स्मा=सा।

१६६ आ
१६७ सलोपो
१६८ सुहिस्वारङ्
१६९ नज्जा योस्वाम्
१७० टि कतिम्हा
१७१ ट पञ्चादीहि चुद्दसहि
१७२ उभगोहि टो
१७३ आरङ्स्मा
१७४ टोटे वा
१७५ टा नास्मान
१७६ टि स्मिनो
१७७ दिवादितो
१७८ रस्सारङ्
१७९ पितादीनमनत्त्वादीन
१८० युवादीन सुहिस्वानङ्
१८१ नोनानेस्वा
१८२ स्मास्मिन्न नाने
१८३ योन नोने वा
१८४ इतो' ञ्ञत्थे पुमे
१८५ ने स्मिनो क्वचि
१८६ पुमा
१८७ नाम्हि
१८८ सुम्हा च
१८९ गस्स
१९० सास्ससे चानङ्
१९१ वत्तहा सनन्न नोनान
१९२ ब्रह्मस्सु वा
१९३ नाम्हि
१९४ पुमकम्मथामद्धान वा सस्मासु च
१९५ युवा सस्सिनो
१९६ नोत्तातुमा
१९७ सुहिसु नक्
१९८ स्मास्स ना ब्रह्मा च
१९९ इमेतानमेनान्वादेसे दुतियाय
२०० किस्स को सब्बासु
२०१ कि स-स्मिसु वानित्थियं
२०२ किमसिसु सह नपुसके
२०३ इमस्सिद वा
२०४ अमुस्सादु
२०५ सुम्हाम्हस्सास्मा
२०६ नम्हि तिचतुन्नमित्थियं तिस्स चतस्सा
२०७ तिस्सो चतस्सो योम्हि सविभत्तीन
२०८ तीणि चत्तारि नपुसके
२०९ पुमे तयो चत्तारो
२१० चतुरो वा चतुस्स
२११ मयमस्माम्हस्स
२१२ नसेस्वस्माक मम
२१३ सिम्हह
२१४ तुम्हस्स तुव त्वमम्हि च

---

२०१ वा+अ० । २०३ स्स+इ० । २०४ स्स+अ० । २०५ सुम्हि+अम्हस्स+अस्मा । २०६ म+इ० । २११ मय+अस्मा+अम्हस्स । २१२ सु+अ० । २१३ म्हि+अ० । २१४ त्व+अ० ।

२१५ तया-तयीन त्व वा तस्स
२१६ स्माम्हि त्वम्हा
२१७ न्तन्तून न्तो योम्हि पठमे
२१८ त नम्हि
२१९ तोतातिता सस्मास्मिनासु
२२० टटाग्र गे
२२१ योम्हि द्विन्न दुवे द्वे
२२२ दुविन्न नम्हि वा
२२३ राजस्स रञ्ञ
२२४ नास्मासु रञ्ञा
२२५ रञ्ञो रञ्ञस्स राजिनो से
२२६ स्मिम्हि रञ्ञे राजिनि
२२७ समासे वा
२२८ स्मिम्हि तुम्हाम्हान तयि मयि
२२९ ग्रम्हि त म तव मम
२३० नास्मासु तया मया
२३१ तव मम तुम्ह मय्ह से
२३२ डडाक नम्हि
२३३ दुतिये योम्हि वा
२३४ ग्रपादादो पदतेकवाक्ये
२३५ यो-न-हिस्वपञ्चम्या वो नो
२३६ ते मे नासे
२३७ ग्रन्वादेसे
२३८ सपुब्बा पठमन्ता वा
२३९ नचवाहाहेवयोगे
२४० दस्सनत्थेनालोचने
२४१ ग्रामन्तण पुब्बमसन्त व
२४२ न सामञ्ञवचनमेकत्थे
२४३ बहुसु वा

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) स्यादिकण्डो दुतियो

ततियो कण्डो

(समासो)

१ स्यादि स्यादिनेकत्थ
२ ग्रसरय विभत्तिसम्पत्तिसमीपसाकल्याभावयथापच्छायुगपदत्थे
३ यथा न तुल्ये
४ यावावधारणे
५ पय्यपावहितिरोपुरे पच्छा वा पञ्चम्या
६ समीपायामेस्वनु

---

२३४ ग्रपाद+ग्रादो पदतो+एकवाक्ये। २३५ सु+ग्र०। २३९ न-च-वा-हि-एव योगे। २४० त्थे+ग्रना०।

१ ना+ए०। ४ व+ग्र०। ५ परि-ग्रप-ग्रा-बहि-तिरो-पुरे-पच्छा वा पञ्चम्या। ६ प+ग्रा०। सु+ग्र०।

७ तिट्ठग्वादीनि
८ ओरे-परि-पटि-पारे-मज्झे हेट्ठु-द्धाधोन्तो वा छट्ठिया
९ त नपुसक
१० अमादि
११ विसेसनमेकत्थेन
१२ नञ्
१३ कुपादयो निच्चमस्यादि विधिम्हि
१४ ची क्रियत्थेहि
१५ भूसनादरानादरेस्वल सासा
१६ अञ्ञे च
१७ वानेकञ्ञत्थे
१८ तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सरूप
१९ चत्थे
२० समाहारे नपुसक
२१ सख्यादि
२२ क्वचेकत्तञ्च छट्ठिया
२३ स्यादिसु रस्सो
२४ घपस्सान्तस्साप्पधानस्स
२५ गोस्सु
२६ इत्थियमत्वा
२७ नदादितो डी
२८ यक्खादित्विनी च
२९ आरामिकादीहि
३० युवण्णेहि नी
३१ क्तिम्हाञ्ञत्थे
३२ घरण्यादयो
३३ मातुलादित्वानी भरियाय
३४ उपमा-सहित-सहित-सञ्ञत-सह-सथ-वाम-लक्खणादितुरुतू
३५ युवा ति
३६ न्तन्तून डीम्हि तो वा
३७ भवतो भोतो
३८ गोस्सावङ्
३९ पुथुस्स पथव-पुथवा
४० समासन्त्व
४१ पापादीहि भूमिया
४२ सरयाहि
४३ नदीगोदावरीन
४४ असरयेहि चाङ्गुल्या नञासख्यत्थेसु

---

७ गु+आ०। ८ हेट्ठा+उद्धो+अधो+अन्तो। ११ म+ए०। १३ च्च+अ०। १५ भूसन+आदर+अनादरेसु अल, सा सा। १७ वा+अ०। २२ चि+ए०। २३ सि+आ०। २५ गोस्स+उ। २६ इत्थिय+अतो+आ। २८ तो+इ०। ३० इ+उ=यु। ३१ म्हा+अ०। ३२ णी+आ०। ३३ तो+इनी। ३४ लक्खणादितो+उरुतो+ऊ। ३८ स्स+अ०। ४० न्तो+अ। ४४ असख्येहि च+अङ्गुल्या+अनञ्+असख्यत्थेसु।

४५ दीघाहोवस्सेकदेसेहि च रत्या
४६ गोत्वचत्थे चालोपे
४७ रत्तिदिवदारगवचतुरस्सा
४८ आयामे 'नुगव
४९ अक्खिस्मा'ञ्ञत्थे
५० दारुम्ह्यङ्गुल्या
५१ चि वीतिहारे
५२ ल्त्वित्थियूहि को
५३ वाञ्ञतो
५४ उत्तरपदे
५५ इमस्सिद
५६ पु पुमस्स वा
५७ ट न्तन्तून
५८ अ
५९ मनाद्यपादीनमो मये च
६० परस्स सरयासु
६१ जने पुथस्सु
६२ सो छस्साहायतने वा
६३ ल्तुपितादीनमारङरङ्
६४ विज्जायोनिसम्बन्धानमा तत्र चत्थे
६५ पुत्ते
६६ चिस्मिं
६७ इन्थियम्भासितपुमित्थी पुमेवेकत्थे
६८ क्वचि पच्चये
६९ सब्बादयो वुत्तिमत्ते
७० जायाय जयम्पतिम्हि
७१ सञ्ञायमुदोदकस्स
७२ कुम्हादिसु वा
७३ सोनादिसूलोपो
७४ ट नञ्स्स
७५ अन् सरे
७६ नखादयो
७७ नगो वाप्पाणिनि
७८ सहस्स सो'ञ्ञत्थे
७९ सञ्ञाय
८० अपच्चक्खे
८१ अकाले सकत्थे
८२ गन्थान्ताधिक्ये
८३ समानस्स पक्खादिसु वा
८४ उदरे इये
८५ रीरिक्खकेसु
८६ सब्बादीनमा

---

४५ दीघ+अहो+वस्स+एकदेसेहि च रत्या, ४६ गोतो+ अचत्थे+च+अलोपे। ४७ रत्तिन्दिव-दारगव-चतुरस्सा। ५० म्हि+अ०। ५२ ल्तु+इत्थि इ+उ०। ५३ वा+अ०। ५५ स्स+इद। ५९ मनादि+अपादीन+ओ मये च। ६१ स्स+उ। ६२ स्स+अ०। ६३ न+आ०। ६४ न+आ। ६७ इत्थिय भासितपुमा इत्थी पुमा इव एकत्थे। ६८ चि+प०=चिप्प०। ७० जय पतिम्हि। ७१ य+उ०। ७३ सोतादिसु उ-लोपो। ७७ वा+अ०। ८२ न्ते+आ०। ८६ न+आ।

८७ न्तकिमिमान टाकीटी
८८ तुम्हाम्हान तामेकस्मिं
८९ त ममञ्ञत्र
९० वेतस्सेट्
९१ विधादिसु द्विस्स दु
९२ दि गुणादिसु
९३ तीस्व
९४ आ सख्यायासतादो' नञ्ञत्थे
९५ तिस्से
९६ चत्तालीसादो वा
९७ द्विस्सा च
९८ बा चत्तालीसादो
९९ वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णुपन्ना
१०० चतुस्स चुचो दसे
१०१ छस्स सो
१०२ एकट्ठानमा
१०३ र सख्यातो वा
१०४ छतीहि ळो च
१०५ चतुत्थततियानमड्ढुड्ढतिया
१०६ दुतियस्स सह दियड्ढ-दिवड्ढा
१०७ सरे कद् कुस्सुत्तरत्थे
१०८ काप्पत्थे
१०९ पुरिसे वा
११० पुब्बापरज्जसायमज्झेहाहस्सन्हो

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) समासकण्डो ततियो

चतुत्थो-कण्डो

(णादि)

१ णो वापच्चे
२ वच्छादितो णानणायणा
३ कत्तिका-विधवादीहि णेय्य-णेरा
४ ण्य दिच्चादीहि
५ आ णि
६ राजतो ञ्ञो जातिय
७ खत्ता यिया
८ मनुतो स्ससण्

---

८७ न्त-किं-इमान टा-की-टी । ८८ तुम्ह-अम्हान ता-मा एकस्मिं । ८९ त म अञ्ञत्र । ९० वा एतस्स एद् । ९३ तीसु अ । ९५ तिस्स ए । ९७ द्विस्स आ च । ९८ बा अचत्तालीसादो । १०२ न आ । १०५ न अड्ढा उड्ढतिया । १०७ स्स+उ । १०८ का अप्पत्थे (=अल्पार्थे) । ११० पुब्ब-अपर-अज्ज-साय-मज्झेहि अहस्स अन्हो ।

१ वा+अ० । ७ य-इया । ८ स्स, सण् ।

९ जनपदनामस्मा खत्तिया रञ्ञे च णो
१० ण्य कुरुसिवीहि
११ ण रागा तेन रत्त
१२ नक्खत्तेनिन्दुयुत्तेन काले
१३ सास्स देवता पुण्णमासी
१४ तमधीते त जानाति कणिका च
१५ तस्स विसये देसे
१६ निवासे तन्नामे
१७ अदूरभवे
१८ तेन निब्बत्ते
१९ तमिधत्थि
२० तत्र भवे
२१ अज्जादीहि तनो
२२ पुरातो णो च
२३ अमात्वच्चो
२४ मज्झादित्विमो
२५ कण्णेय्यणेय्यकयिया
२६ णिको
२७ तमस्स सिप्प सील पण्य पहरण पयोजन
२८ त हन्तरहति गच्छनुच्छति चरति
२९ तेन कत कीत बद्धमभिसखत ससट्ठ हत हन्ति जित जयति दिब्बति खणति तरति चरति वहति जीवति
३० तस्स सवत्तति
३१ ततो सम्भूतमागत
३२ तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो
३३ तस्सिद
३४ णो
३५ गवादीहि यो
३६ पितितो भातरि रेय्यण्
३७ मातितो च भगिनिय च्छो
३८ मातापितुस्वामहो
३९ हिते रेय्यण्
४० निन्दा ञ्ञातप्पपटिभागरस्सदया सञ्ञासु को
४१ तमस्स परिमाण णिको च
४२ यतेतेहि त्तको
४३ सब्बा चावतु
४४ किम्हा रति-रीव-रीवतक-रित्तका
४५ सजात तारकादित्वीतो
४६ माने मत्तो
४७ तग्घो चुद्ध
४८ णो च पुरिसा
४९ अयुभद्वितीहसे

---

१२ न+इ०। १४ क, णिका। १९ त इध अत्थि। २३ अमातो अच्चो। २४ तो+इ०। २५ कण्-णेय्य-णेय्यक-य+इया। २८ न्ति+अर०। ति+उ०। ३३ स्स+इ०। ३८ सु+आ०। ४० निन्दा-अञ्ञात-अप्प-पटिभाग-रस्स-दया-सञ्ञासु को। ४२ यतो एतेहि त्तको। ४५ दितो-इतो। ४७ च उद्ध। ४९ अयो उभ-द्वि-तीहि असे।

५० मरयाय **सच्चुतीसासदसन्ताधिकास्मि** सतसहस्से डो
५१ तस्स पूरणेकादसादितो वा
५२ म पञ्चादिकतीहि
५३ सतादीनमि च
५४ छा ट्ठ-ट्ठमा
५५ एका काक्यसहाये
५६ वच्छादीहि तनुत्ते तरो
५७ किम्हा निद्धारणे रतर-रतमा
५८ तेन दत्ते **लिया**
५९ तस्स भावकम्मेसु त्त-तात्तन-ण्य-णेय्य-णिय-णिया
६० ब्य वद्धदासा वा
६१ नण् युवा खो च वस्स
६२ अणुवादित्विमो
६३ भावा तेन निब्बत्ते
६४ तरतमिस्सिकियिट्ठा' तिसये
६५ तन्निस्सिते ल्लो
६६ तस्स विकारावयवेसु ण-णिक-णेय्य-मया
६७ जतुतो स्सण् वा
६८ समूहे कण्ण-णिका
६९ जनादीहि ता
७० इयो हिते
७१ चक्खादितो स्सो
७२ ण्यो तत्थ साधु
७३ कम्मा **नियञ्ञा**
७४ कथा**दित्विको**
७५ पथादीहि णेय्यो
७६ दक्खिणायारहे
७७ रायो तुमन्ता
७८ तमेत्थस्सत्थीति मन्तु
७९ **वन्त्ववण्णा**
८० दण्डादित्विक ई वा
८१ तपादीहि स्सी
८२ मुखादितो रो
८३ तुण्डयादीहि भो
८४ सद्धादित्व
८५ णो तपा
८६ आल्वभिज्झादीहि
८७ पिच्छादित्विलो
८८ सीलादितो वो
८९ मायामेधाहि वी
९० सिस्सरे **आम्युवामी**
९१ लक्ख्या णो अ च
९२ अङ्गा नो कल्याणे

---

५० सति-उति-ईस-आस-दसन्ताधिकास्मि। ५३ न+इ। ५५ एका क-आकी असहाये। ५८ ल-इया। ६२ अणु-आदितो इमो। ६४ तर-तम-इस्सिक-इय-इट्ठा अतिसये। ७३ निय, आ। ७४ दितो-इको। ७८ त एत्थ अस्स अत्थि, इति मन्तु। ७९ न्तु+अ०। ८० तो+इ०। ८४ तो अ। ८६ लु+अ०। ८७ तो+इ०। ९० आमी-उवामी।

९३ सो लोमा
९४ इमिया
९५ तो पञ्चम्या
९६ इतोतेत्तो कुतो
९७ अभ्यादीहि
९८ आद्यादीहि
९९ सब्बादितो सत्तम्या त्र-त्था
१०० कत्थेत्थकुत्रात्र क्वेहिध
१०१ धि सब्बा वा
१०२ या हिं
१०३ ता ह च
१०४ कुहिं कह
१०५ सब्बेकञ्ञयतेहि काले दा
१०६ कदा कुदा सदाधुनेदानि
१०७ अज्जसज्ज्वपरज्ज्वेतरहि करहा
१०८ सब्बादीहि पकारे था
१०९ कथमित्थ
११० था सत्याहि
१११ वेकाज्झ
११२ द्वितीहेधा
११३ तब्बति जातियो
११४ वारसरयाय क्खत्तु
११५ कतिम्हा
११६ बहुम्हा धा च पच्चासत्तिय
११७ सकि वा
११८ सो वीच्छाप्पकारेसु
११९ अभूततब्भावे करासभूयोगे विकारा ची
१२० दिस्सन्तञ्ञे'पि पच्चया
१२१ अञ्ञस्मि
१२२ मकत्थे
१२३ लोपो
१२४ सरानमादिस्सायुवण्णस्साएओ णानुबन्धे
१२५ स्योगे क्वचि
१२६ मज्झे
१२७ कोसज्जाज्जवपारिसज्जसुहज्ज महवारिस्सामभाजञ्ञथेय्यबाहुसच्चा
१२८ मनादीन मक्
१२९ उवण्णस्सावङ् सरे
१३० यम्हि गोस्स च

---

९६ इतो, अतो, एत्तो, कुतो। १०० कत्थ, एत्थ, कुत्र, अत्र, क्व, इह, इध। १०५ सब्ब-एक-अञ्ञ-य-त०। १०६ सदा अधुना इदानि। १०७ अज्ज, सज्जु, अपरज्जु, एतरहि, करहा। १०९ थ+इ०। १११ वा एका ज्झ। ११२ द्वि+ए०। ११९ अभूत-तब्भावे कर-अस-भू-योगे विकारा ची। १२० न्ति+अ०। १२४ सरान आदिस्स अ-इ-उवण्णस्स आ-ए-ओ ण-अनुबन्धे। १२७ कोसज्ज-अज्जव-पारिसज्ज-सुहज्ज-मद्दव-आरिस्स-आसभ-आजञ्ञ-थेय्य-बाहुसच्चा। १२९ स्स+अ०।

१३१ लोपो' वण्णिवण्णान
१३२ रानुबन्धे'न्त सरादिस्स
१३३ किसमहतमिमे कस्महा
१३४ आयुस्सायस्मन्तुम्हि
१३५ जो बुद्धस्सियिट्ठेसु
१३६ वाळ्हन्तिकपसत्थान साधने दसा
१३७ कणकनाप्पयुवान
१३८ लोपो वीमन्तु-वन्तून
१३९ डे सतिस्स तिस्स
१४० एतस्सेट् त्तके
१४१ णिकस्सियो वा
१४२ अधातुस्स के 'स्यादितो घे'स्सि

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) णादिकण्डो चतुत्थो

पञ्चमो कण्डो

(खादि)

१ तिज मानेहि ख-सा खमा-वी मसासु
२ किता तिकिच्छा-ससयेसु छो
३ निन्दाय गुप-बधा बस्स भो च
४ तुस्मा लोपो चिच्छाय ते
५ ईयो कम्मा
६ उपमानाचारे
७ आधारा
८ कत्तुतायो
९ चयत्थे
१० सद्दादीनि करोति
११ नमोत्वस्सो
१२ धात्वत्थे नामस्मि
१३ सच्चादीहापि
१४ क्रियत्था
१५ चुरादितो णि
१६ पयोजकव्यापारे णापि च
१७ क्यो भावकम्मेस्वपरोक्खेसु मानन्तत्यादिसु
१८ कत्तरि लो

---

१३१ अवण्ण-इवण्णान। १३३ किस-महत इमे कस्-महा। १३४ स्स+आ०। १३५ वुद्धस्स इय-इट्ठसु। १३६ बाळ्हअन्तिक-पसत्थान साध-नेद-सा। १३७ कण-कना अप्पयुवान। १४१ स्स+इ०। १४२ घे अस्स इ।

पञ्चमो कण्डो

४ च+इ०। ६ ना+आ०। ८ तो+आयो। ९ ची+अत्थे। ११ नमोतो अस्स ओ। १७ क्यो भाव-कम्मेसु अपरोक्खेसु मान-न्त-ति आदिसु।

१९ म च रुधादीन
२० णिणाप्यापीहि वा
२१ दिवादीहि यक्
२२ तुदादीहि को
२३ ज्यादीहि क्ना
२४ क्यादीहि क्णा
२५ स्वादीहि क्णो
२६ तनादित्वो
२७ भावकम्मेसु तब्बानीया
२८ घ्यण्
२९ आस्से च
३० वदादीहि यो
३१ किच्च-घच्च-भच्च-भब्ब-लेय्या
३२ गुहादीहि यक्
३३ कत्तरि ल्तु-णका
३४ आवी
३५ आसिसायमको
३६ करा णनो
३७ हातो वीहि-कालेसु
३८ विदा कू
३९ वितो ञातो
४० कम्मा
४१ क्वचण्
४२ गमा रू
४३ समानञ्ञभवन्तयादितुपमाना दिसा कम्मे रीरिक्खका
४४ भावकारकेस्वघण्-घका
४५ दाधात्वि
४६ वमादीह्यु
४७ क्वि
४८ अनो
४९ इत्थियमणक्तिकयक्या च
५० जा-हाहि नि
५१ करा रिरियो
५२ इ-कि-नी सरूपे
५३ मीलाभिक्खञ्ञावस्सकेसुणी
५४ थावरित्तरभङ्गुरभिदुरभासुर भस्सरा
५५ कत्तरि भूते क्तवन्तु-क्तावी
५६ क्तो भाव-कम्मेसु
५७ कत्तरि चारम्भे
५८ ठास-वस-सिलिस-मी-रुह-जर-जनीहि
५९ गमनत्थाकम्मकाधारे च

---

२० णि-णापि-आपीहि वा। २३ जि+आ०। २४ की+आ०। २५ सु+आ०। २६ तो+ओ। २९ आस्स+ए। ३० द+आ०। ३२ ह+आ०। ३५ य+अको। ४१ क्वचि अण्। ४३ समान-अञ्ज-भवन्त-य आदितो उपमाना दिसा कम्मे री-रिक्ख-का। ४४ सु+अ०। ४५ दा-आतो इ। ४६ वम-आदीहि अथु। ४९ इत्थिय अ, ण, क्ति, क, यक्, या च। ५३ ल+आ०। ञ्ञ+आ०। ५४ थावर-इत्तर-भङ्गुर-भिदुर-भासुर-भस्सरा। ५७ च+आ०।

६० आहारत्था
६१ तु-ताये-तवे भावे भविस्सति क्रियाय तदत्थाय
६२ पटिसेधे' लखलून तून-क्त्वा-नक्त्वा वा
६३ पुब्बेककत्तुकान
६४ न्तो कत्तरि वत्तमाने
६५ मानो
६६ भाव-कम्मेसु
६७ ते स्सपुब्बानागते
६८ ण्वादयो
६९ खछसानमेकस्सरोदि द्वे
७० परोक्खायञ्च
७१ आदिस्मा सरा
७२ न पुन
७३ यथिट्ठ स्यादिनो
७४ रस्सो पुब्बस्स
७५ लोपो' नादिब्यञ्जनस्स
७६ ख-छ-सेस्वस्सि
७७ गुपिस्सुस्स
७८ चतुत्थदुतियान ततियपठमा
७९ कवग्ग-हान चवग्ग-जा
८० मानस्स वी परस्स च म
८१ कितस्सासस्ये ति वा
८२ युवण्णानमे ओप्पच्चये
८३ लहुस्सुपन्तस्स
८४ अस्सा णानुबन्धे
८५ न ते कानुबन्धनागमेसु
८६ वा क्वचि
८७ अञ्ञत्रापि
८८ प्ये सिस्सा
८९ एओनमयवा सरे
९० आयावा णानुबन्धे
९१ आस्साणापिम्हि युक्
९२ पदादीन क्वचि
९३ म वा रुधादीन
९४ क्विम्हि लोपो' न्तब्यञ्जनस्स
९५ पररूपमयकारे ब्यञ्जने
९६ मनान निग्गहीत
९७ न ब्रूस्सो
९८ कगा चजान घानुबन्धे
९९ हनस्स घातो णानुबन्धे
१०० क्विम्हि घो परिपच्च समोहि
१०१ परस्स घ से

---

६७ ते (=न्तमाना) सपुब्बा अनागते। ६८ णु+आ०। ६९ ख-छ-सान एक-स्सरोदि द्वे। ७३ यथा+इट्ठ। ७६ ख-छ-सेसु अस्स इ। ७७ स्स+उ०। ८१ स्स+आ०। ८२ इ+उ=यु। न ए-ओ। ८३ स्स+उ०। ८४ अस्स आ। ८५ न ते (ए-ओ-आ) क+अनुबन्ध—न+आगमेसु। ८८ सिस्स आ। ८९ ए-ओन अय-अवा सरे। ९० आय-आवा णानुबन्धे। ९१ स्स+आ०। ९६ म-नान। ९७ ब्रूस्स+ओ।

१०२ जि-हरान गिं
१०३ धास्स हो
१०४ णिम्हि दीघो दुसस्स
१०५ गुहिस्स सरे
१०६ मुह-बहानञ्व ते कानुबन्धे'त्वे
१०७ वहस्सुस्स
१०८ धास्स हि
१०९ गमादि-रान लोपो'न्तस्स
११० वचादीन वस्सुट् वा
१११ अस्सु
११२ वद्धस्स वा
११३ यजस्स यस्स टियी
११४ ठास्सि
११५ गा-पानमी
११६ जनिस्सा
११७ सासस्स सिस् वा
११८ करस्सा तवे
११९ तु-तून-तब्बेसु वा
१२० ञास्स ने जा
१२१ सकापान कुक्कु णे
१२२ नितो चिस्स छो
१२३ जर-सदानमीम् वा
१२४ दिसस्स पस्स दस्स दस् द दक्खा
१२५ समाना रो री-रिक्ख-केसु
१२६ दहस्स दस्म डो
१२७ अनघणुस्वापरीहि ळो
१२८ अत्यादिन्तेस्वत्थिस्स भू
१२९ अआस्साआदिसु
१३० न्तमानान्तियियुस्वादि लोपो
१३१ पादितो ठास्स वा ठहो क्वचि
१३२ दास्सियङ
१३३ करोतिस्स खो
१३४ पुरस्मा
१३५ नितो कमस्स
१३६ युवण्णानमियङुवङ् सरे
१३७ अञ्आदिस्मास्सी क्ये
१३८ तनस्सा वा
१३९ दीघो सरस्स
१४० सानन्तरस्स तस्स डो
१४१ कसस्सिम् च वा
१४२ घस्तो-ञस्ता
१४३ पुच्छादितो

---

१०६ ते=तकारे। १०७ स्स+उ०। १०९ रान=रकारन्तान। ११० स्स+उट्। १११ अस्स उ। ११४ ठास्स इ। ११५ गा-पान ई। ११६ जनिस्स आ। ११८ स्स+आ। १२१ क+आ०। १२३ न ईम्। १२७ अन-घणसु आ-परीहि ळो। १२८ ति+आ०। सुच-अ०। १२९ अ-आ-स्सा आदिसु। १३० न्त-मान-अन्त-इय-इयुसु आदि लोपो। १३२ स्स+इ०। १३६ इ-उवण्णान इयङ्-उवङ् सरे। १३७ अ-आदिस्स आस्स ई क्ये। १३८ स्स+आ। १४० स+अ०। १४१ स्स+इ०।

१४४ सास-वस-सस-ससा थो
१४५ धो धहभेहि
१४६ दहा ढो
१४७ बहस्सुम् च
१४८ रुहादीहि हो ळ च
१४९ मुहा वा
१५० भिदादितो नो क्त-क्तवन्तून
१५१ दात्विन्नो
१५२ किरादीहि णो
१५३ तरादीहि रिण्णो
१५४ गो भञ्जादीहि
१५५ सुसा खो
१५६ पचा को
१५७ मुचा वा
१५८ लोपो वड्ढा क्तिस्स
१५९ क्विस्स
१६० णिणापीन तेसु
१६१ क्वचि विकरणान
१६२ मानस्स मस्स
१६३ ञिलस्से
१६४ प्यो वा त्वास्स समासे
१६५ तु याना
१६६ हना रच्चो
१६७ सासाधिकरा चचरिच्चा
१६८ इतो च्चो
१६९ दिसा वानवा स् च
१७० ञि ब्यञ्जनस्स
१७१ रा नस्स णो
१७२ न न्तमानत्यादीन
१७३ गमयमिसासदिसान वा च्छङ्
१७४ जर-मराणमीयङ
१७५ ठा-पान तिट्ठ-पि वा
१७६ गम-वद-दान घम्म-वज्ज-दज्जा
१७७ करस्स सोस्स कुब्ब-कुरु-कयिरा
१७८ गहस्स घेप्पो
१७९ णो निग्गहीतस्स

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) खादिकण्डो पञ्चमो

---

१४५ ध-ह-भेहि=धकारन्त-हकारन्त-भकारन्तेहि क्रियत्थेहि। १४७ स्स+उ०। १५१ दातो इन्नो। १६३ ञि-लस्स ए। १६७ स-अस-अधिकरा च-च-रिच्चा। १६९ दिसा वान-वा स् च। १७३ गम-यम-इस-आस-दिसान वा च्छङ्। १७४ ण+ई०।

छट्ठो कण्डो

(त्यादि)

१ वत्तमाने ति अन्ति, सि थ, मि म, ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे
२ भविस्सति स्सति स्सन्ति, स्ससि स्सथ, स्सामि स्साम, स्सते स्सन्ते, स्ससे स्सव्हे, स्स स्साम्हे
३ नामे गरहाविम्हयेसु
४ भूते ई उ, ओ त्थ, इ म्हा, आ ऊ, से व्ह्, अ म्हे
५ अनज्जतने आ ऊ, ओ त्थ, अ म्हा, त्थ त्थु, से व्ह, इ म्हसे
६ परोक्खे अ उ, ए त्थ, अ म्ह, त्थ रे, त्थो व्हो, इ म्हे
७ एय्यादो वातिपत्तिय स्सा स्ससु, स्से स्सथ, स्स स्सम्हा, स्सथ स्सिसु, स्ससे स्सव्हे, स्स स्साम्हसे
८ हेतुफलेस्वेय्य एय्यु, एय्यासि एय्याथ, एय्यामि एय्याम, एथ एर, एथो एय्यव्हो, एय्य एय्याम्हे
९ पञ्हपत्थनाविधिसु
१० तु अन्तु, हि थ, मि म,, त अन्त, स्सु व्हो, ए आमसे
११ सत्यरहेस्वेय्यादि
१२ सम्भावने वा
१३ मायोगे ई आ आदि
१४ पुब्बपरच्छक्कानमेकानेकेसु तुम्हाम्हसेसेसु द्वे द्वे मज्झिमुत्तमपठमा
१५ आ-ईस्सादिस्वञ् वा
१६ अआदिस्वाहो ब्रूस्स
१७ भुस्स वुक्
१८ पुब्बस्स अ
१९ उस्सस्वाहा वा
२० त्यन्तीन टटू
२१ ई-आदो वचस्सोम्
२२ दास्स द वा मि-मेस्वद्वित्ते
२३ करस्स सोस्स कु
२४ का ई आदिसु
२५ हास्स चाहङ् स्सेन
२६ लभ-वस-च्छिद-भिद-रुदान च्छङ्
२७ मुज-मुच-वच-विसान क्खङ्
२८ आ ई आदिसु हरस्सा
२९ गमिस्स
३० ङसस्स च छङ्
३१ हूस्स हे-हेहि-होहि स्सच्चादो
३२ णा-नासु रस्सो

---

११ सत्ति-अरहेसु एय्य आदि। १४ न+ए०। म्ह+अ०। म+उ०। १५ सु+अ०। १६ सु+आ०। १९ उस्स असु आहा वा। २० ति-अन्तीन ट-टू। २१ स्स+ओ। २८ स्स+आ। ३१ स्सति+आदो।

३३ आ ई ऊ म्हा स्सा स्सम्हान वा
३४ कुसरुहेहीस्स छि
३५ अ ई स्सादीन ब्यञ्जनस्सिञ्
३६ ब्रूतो तिस्सीञ्
३७ क्यस्स
३८ एय्याथस्से अ आ ई थान ओ अ अ त्थ त्थो व्होक्
३९ उ स्सिं स्वसु
४० एओत्ता सु
४१ हूतो रेसु
४२ ओस्स अ इ त्थ त्थो
४३ सि
४४ दीघा ईस्स
४५ म्हात्थानमुञ्
४६ इस्स च सिञ्
४७ एय्यु स्सु
४८ हिस्सतो लोपो
४९ क्यस्स स्से
५० अत्थितेय्यादिच्छन्न स-सु-ससथ स-साम
५१ आदिद्विन्नमिया इयु
५२ तस्स थो
५३ सि-हिस्वट्
५४ मि-मान वा म्हि-म्हा च
५५ एसु स्
५६ ई आदो दीघो
५७ हिमिमेस्वस्स
५८ सका णास्स ख ई आदो
५९ स्से वा
६० तेसु सुतो क्णोक्णान रोट्
६१ आस्स सनास्स नायो तिम्हि
६२ आम्हि ज
६३ एय्यस्सियाञा वा
६४ ई सच्चादिसु क्नालोपो
६५ स्सस्स हि कम्मे
६६ एतिस्मा
६७ हना छेखा
६८ हातो ह
६९ दक्खखहेहि होहीहि लोपो
७० कयिरेय्यस्सेय्युमादीन
७१ टा
७२ एथस्सा
७३ लभा इईन यथा वा
७४ गुरुपुब्बा रस्सा रे न्ते न्ती न
७५ एय्येय्यासेय्यन्न टे
७६ ओ-विकरणस्सु परच्छक्के
७७ पुब्बच्छक्के वा क्वचि
७८ एय्यामस्सेमु च

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) त्यादिकण्डो छट्ठो

---

३४ कुस-रुहेहि ईस्स छि। ३५ स्स+इञ्। ३६ स्स+ईञ्। ५० अत्थितो+एय्यादि०। ५१ न्न+इ०। ५३ सु+अट्। ५७ सु+अ०। ७६ स्स+उ। ७८ एय्यामस्स एमु च।

दूसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान धातु-पाठ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

दूसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान-धातुपाठो

अ-अन्तो उच्चारणत्थो, सेसा धात्वत्था

सख्या

२५ अग्घ (भू) अग्घने=योग्य होना, बराबरी करना, कीमत का होना

३ अक (भृ) लक्खणे=निशान बनाना, लिख लेना

४५१ अङ्क (चु) लक्खणे=निशान बनाना, लिख लेना

२२ अङ्ग (भू) गमनत्थे=जाने के अथ मे

४५६ अच्च (चु) पूजाय=पूजा करना

३८ अच्च (भू) पूजाय=पूजा करना

४८ अज (भू) गमने[1]=जाना

६१ अज्ज (भू) गमने=जाना

३७ अञ्च (भू) गमने=जाना

४६६ अञ्च (चु) पूजाय=पूजा करना

४३ अञ्छ (भू) आयामे=खीचना । निकालना

५८ अञ्ज (भू) व्यक्ति मक्खन०=व्यक्त करना, मालिश करना, जाना

५८ अञ्ज (भू) व्यक्तिमक्खनगतिकन्तिसु=व्यवत करना, मालिश करना, जाना, चमकना

---

१ अज ('सम' पूर्वक)+य=समज्जा । ५ ४६

संख्या

४६४ अज्ज (चु) मज्जने=साफ करना
७० अट (भू) गमनत्थे=घूमना
९६ अण (भू) सद्दत्थे=शब्द करना
४९७ अत्थ (चु) याचने[2]=माँगना
१३० अद्ध (भू) भक्खने=खाना
१३२ अछ (भू) गतियाचनेसु=जाना, माँगना
१४९ अन (भू) पाणने=जीना, रक्षा करना
११७ अन्द (भू) बन्धने=बान्धना
१९२ अम (भू) गमने=जाना
१६८ अम्ब (भू) सद्दे=शब्द करना
१९५ अय (भू) गमनत्थे=जाना
२१२ अर (भू) गमने[3]=जाना
२६८ अरह (भू) पूजाय=पूजा करना
२३० अव (भू) रक्खणे=रक्षा करना
४२२ अस (जि) भोजने=खाना
३७३ अस (दि) क्खेपने=फेकना
३०३ अस (भू) भुवि[4]=होना

---

२ अत्थ+आपि=अत्थापेति। ५ १३

३ ०+अन=अरण। ५ १७१

४. विधि ६ ५०—

अस्स अस्सु

अस्स अस्सथ

अस्स अस्साम

०+एय्य=सिया। ०+एय्यु=सियु। ६ ५१

०+ति=अत्थि। ०+तु=अत्थु। ६ ५२

०+सि=असि। ०+हि=अहि। ६ ५३

सरया

२४० आस (भू) उपवेसने[7]=बैठना
२८८ इ (भू) अज्झने गति कन्तिसु[8]=पढना। जाना
१३ इक्ख (भू) दस्सने=देखना
२२ इङ्ग (भू) गमनत्थे=जाना
३४५ इध (दि) सेसिद्धिय=बढना। उन्नति करना
११८ इन्द (भू) परमिस्सरिये=मालिक बनना। ऐश्वय-लाभ करना
१४७ इन्ध (भू) दित्तिय=प्रदीप्त होना
२३८ इस (भू) इच्छायं[9]=चाहना।
२५२ इस्स (भू) इस्साय=डाह करना
५१६ ईर (चु) खेपे=फेंकना। प्रेरणा करना
२४ ईस (दि) इस्सरिये=ऐश्वय करना

---

७ ०('उप' पूवक)+अन=उपासना। ५ ४६
+क्त (भाव, कम)=उपासितो। ५ ५८
+क्त=आसित (आधारे, कत्तरि, भावे, कम्मे)। ५ ५६
+ति=अच्छति
न्त=अच्छन्तो
मान=अच्छमानो। ५ १७३

८ ०सीले, निपात=इत्वणे। ५ ५४
०('अधि' पूवक)+प्य=अधिच्च
त्वा=अधीयित्वा
०('सम' पूर्वक)+प्य=समेच्च
त्वा=समेत्वा। ५ १६८
०+स्सति=एहिति, एस्सति। ६ ६६

६ ०+तब्ब=एसितब्ब। ५ ८३
+ति=इच्छति
न्त=इच्छन्तो

सत्या

२८२ ईह (भू) घट्टने[1] =चेष्टा करना
८२ उञ्छ (भू) उञ्छे=कणो को चुनना
१६८ उसूय (भू) दोसाविकरणे=दोष का आरोप करना
५४६ ऊह (चु) विम्हापने=ठगना
२८३ ऊह (भू) वितक्के=वितर्क करना
६८ एज (भू) कम्पने=काँपना
१७७ उद्रम (भू) अद्रमे=खाना
१२१ उन्द (भू) किलदने=भिगोना
६६ उज्झ (भू) उस्सग्गे=छोड़ना
१४० एध (भू) वुद्धिय=वृद्धि करना
२३६ एस (भू) मग्गने=खोजना
१७ कङ्ख (भू) इच्छाय=चाहना
७७ कट (भू) मद्दने=चूर चूर करना
६२ कड्ढ (भू) कड्ढने=निकालना
६६ कण (भू) सद्दत्थे=शब्द करना
६५ कण (भू) निमीलने=मूँदना
४७७ कण्ठ (चु) सोके=शोक करना
८४ कण्ड (भू) भेदने=तोड़ना
४७८ कण्ड (चु) भेदने=तोड़ना
२३३ कण्डुव (भू) कण्डुवने=खुजलाना
४८७ कण्ण (चु) सवने=सुनना
३१० कन (रु) छेदने=छेदना। काटना
१०४ कत्थ (भू) सिलाघाय=प्रशंसा करना
४८६ कथ (चु) वाक्यापबन्धे=कहना

मान=इच्छमानो। ५ १७३
१० ० +अ =ईहा। ५ ४६

सत्था

१५० कन (भू) दितिगतिकन्तिसु=चमकना, जाना
११४ कद (भू) व्हानरोदनेसु=पुकारना, रोना
१६२ कप्प (भू) सामत्थिये=समर्थ होना
५१३ कप्प (चु) वितक्के=वितर्क करना
१८२ कम (भू) पदविक्खेपे=टहलना
५१६ कम (चु) इच्छाय[11]=चाहना
१५६ कम्प (भू) चलने=कांपना
१६६ कम्ब (भू) संवरणे=आच्छादित करना
४४३ कर (त) करणे[12]=करना

---

११ ०+ति (पुनः पुनः)=चङ्कमति। ५ ७०
 ० ('नि' पूर्वक)+ति=निक्खमति। ५ १३५
१२ ०+णि=कारेति (प्रेरणार्थक)
 णापि=कारापेति (प्रेरणार्थक)। ५ १६ १६०
 ०+णि=कारेन्तो, कारयन्तो
 णापि=कारापेन्तो, कारापयन्तो, कारापेति, कारापयति। ५ २०
 ०+तब्ब, अनीय=कत्तब्ब। करणीय। ५ २७
 ०+घ्यण्=कारिय। ५ २८
 ०+य=किच्च। ५ ३१
 ०+णन=कारण (कत्तरि)। ५ ३६
 ०+अण=कुम्हकारो। ५ ४१
 ०+अ=करो (भाव)। ५ ४४
 ०+अ (कम)=ईसक्करो, दुक्करो, सुकरो
 ०+ण=कारा
 अन=कारणा। ५ ४६
 ०+रिरिय=किरिया। ५ ५१
 ०+णी (सीले)=अवस्सकारी। ५ ५३

सख्या

५२६ कल (चु) सरयाने=गिनना

०+क्त=कतो। ५ ५६

० ('प' पूवक)+क्त=पकतो (क्रियारम्भ में)। ५ ५७

०+तु, ताये, तवे=कातु, कत्ताये, कातवे। ५ ६१

०+णक=कारक। ५ ८४

०+क्त=कतो। ५ १०९

०+तवे=कातवे। ५ ११८

०+तु=कातु, कत्तु

तून=कातून, कत्तून

तब्ब=कातब्ब, कत्तब्ब

० ('स' पूवक)+यण=सङ्खारो (कम्म) सङखरीयति। ५ १३३

० ('पुर' पूवक) निपात=पुरक्खत्वा, पुरेक्खारो। ५ १३४

०+मान=कराणो

० ('स', 'असं', 'अधि' पूर्वक)+प्य=सक्कच्च, असक्कच्च, अधि-
किच्च। ५ १६७

०+न्त=करोन्तो

मान=कुरुमानो

न्ति=करोन्ति। ५ १७२

०+ति=कुब्बति, कयिरति, करोति

न्त=कुब्बन्तो, कयिरन्तो, करोन्तो

मान=कुब्बमानो, कयिरमानो, कराणो

ते=कुब्बते, कुरुते, कयिरते। ५ १७७

०+मि=कुम्मि, करोमि

म=कुम्म, करोम। ६ २३

०+ई=अकासि, अकरि

उ=अकसु, अकंसु

सरया

२४५ कस (भू) गतिहिंसा विलेखनेसु[१३]=जाना। मारना। जोतना

३२२ का (दि) सद्दे=शब्द करना

२५५ कास (भू) दित्तिय=शोभित होना

३५ किञ्च (भू) मद्दने=तोडना। चूर चूर कर देना

१०० कित (भ) निवासे[१४]=रहना

आ=अका, अकरा। ६ २४

०+स्सति=काहति, करिस्सति

स्सा=अकाहा, अकरिस्सा। ६ २६

०+ई=अकासि, अका। ६ ४४

०+इ=अकासि, अकरि

इम्हा=अकासिम्हा, अकरिम्हा

त्थ=अकासित्थ, अकरित्थ। ६ ४६

कर (=कयिर)+एय्यु=कयिरु

एय्यासि=कयिरासि

एय्याथ=कयिराथ

एय्यामि=कयिरामि

एय्याम=कयिराम। ६ ७०

०+एय्य=कयिरा। ६ ७१

०+एथ=कयिराथ। ६ ७२

०+एय्य=करे, करेय्य

एय्यासि=करे, करेय्यासि

एय्य=करे, करेय्य। ६ ७५

१३ ०+क्त=किट्ठ, कट्ठ

तब्ब=कसितब्ब। ५ १४१

१४ ०+छ (ससये)=विचिकिच्छति, विचिकिच्छा। ५ २

०+छ (तिकिच्छाय)=तिकिच्छति, तिकिच्छा। ५ २ ८१

सरया

४६३ कित्त (चु) ससद्दे=बार बार, या विशेष रूप से कहना

३६८ किर (तु) विकिरणे[15]=बिखेर देना

१८७ किलम (भू) गिलाने=ग्लानि को प्राप्त होना

३६८ किलिस (दि) उपतापे=क्लेश पाना

४२३ की (की) दब्बविनिमये[16]=खरीदना

२२४ कील (भू) बन्धे=बाधना

२८५ कीळ (भू)=खेल करना

२ कु (भू) सद्दे=शब्द करना

८६ कुण्ड (भू) दाहे=जलाना

३८६ कुच (तु) सकोचे=सिकोडना

३४३ कुध (दि) कोपे=क्रोध करना

६४ कुज (भू) अव्यत्ते सद्दे=पक्षियो का आवाज करना

३६० कुट (तु) कोटिल्ये=टेढा होना

७५ कुट (भ) च्छेदने=काटना

४७ कुट (भू) च्छेदने=काटना

४७१ कुट (चु) आकोटने=मारना पीटना

१६६ कुण (भू) सद्दत्थे=शब्द करना

३५४ कुप (दि) कोपे[17]=क्रोध करना

४०१ कुर (तु) सद्दे=शब्द करना

४०६ कुरु (तु) च्छेदने=काटना

२५१ कुस (भू) अक्कोसे आव्हाने च[18]=बुरा-भला कहना । पुकारना

---

१५ ०+क्त=किण्णो । +क्तवतु=किण्णवा । ५ १५२

१६ ०+ति=किणाति । ६ ३२

१७ ०+अ (परोक्खे)=चुकोय । ५ ७६

१८ ०+ई (भूत) =अक्कोच्छि, अक्कोसि । ६ ३४

०+तब्ब=कोसितब्ब

सरया

५३८ कुस (चु) अक्कोसे=बुरा-भला कहना
२२५ कूल (भू) आवरणे=ढकना
२२७ केल (भू) चलने=हिलना
४७० कोह (चु) च्छेदने=छेदना
७५ कोह (चु) च्छेदने=छेदना
३६८ क्लम (भू) गिलाने=परेशान होना
३६८ क्लिस (दि) उपतापे=क्लेश उठाना
६७ खञ्ज (भू) गतिवेकल्ले=लगडाना
१५१ खण (भू) अवदारले=फाडना
८७ खण्ड (भू) च्छेदने=काटना
४७८ खण्ड (चु) च्छेदने=काटना
१५१ खन (भू) अवदारणे[19]=खनना
१८३ खम (भू) सहने=सहना। क्षमा करना
१७५ खम्भ (भू) पतिबन्धे=आड देना
२८९ खर (भू) विनासे=नाश होना
५२४ खल (भ) सोचेय्ये=साफ करना
२१६ खल (भू) कम्पने=काँपना
२८९ खा (भू) कथने=कहना
३८१ खा (दि) पकासने=प्रकाशित होना
३३८ खिद (दि) असहने=खिन्न होना
३३६ खिद (दि) दीनभावे[20]=दुखित होना
३९५ खिप (तु) पेरणे=फेकना
४०५ खिल (तु) भेदने=तोडना
४१८ खिप (जि) क्खेपे[21]=फेकना

---

१९ ०+क्त=खतो। ५ १०९
२० ०+क्त=खिन्नो। क्तवन्तु=खिन्नवा
२१ ०+क=खिपो। ५ ४४
०+णक=खिपको। ५ ८७

सरया

२५ खी (दि) खये =क्षय होना
९ खी (भू) खये = ,,
४२५ खी (की) खये[22]= ,,
४३८ खी (सु) खये = ,,
१३६ खुद (भू) जिघच्छाय=भूख लगना
३५९ खुभ (दि) सञ्चलने=क्षुब्ध होना
१७२ खुभर (भू) सञ्चलने= ,,
४०२ खुर (तु) च्छेदनविलेखनेसु=काटना। खुरेदना
२२७ खेल (भू) चलने=खेलना
२८९ ख्या (भू) कथने=कहना
६३ गज्ज (भू) सद्दे =गरजना
४८६ गण (चु) सङ्ख्याने=गिनना
१२४ गद (भू) व्यत्तवचने=साफ साफ बोलना
४९५ गन्थ (चु) गन्थने=गूथना
५०६ गन्ध (चु) सूचने=सूचित करना
१७६ गब्भ (भू) पागब्भिये=बकवाद करना
१९२ गम (भू) गमने[23]=जाना

---

२२ ०+क्त=खीणो। +क्तवन्तु=खीणवा। ५ १५२

२३ ०+आ=अगमा, गमा
ई=अगमी, गमी
स्सा=अगमिस्सा, गमिस्सा। ६ १५
०+स्स=गच्छ, गच्छिस्स। ६ २६
०+आ=अगा, अगमा। +ई=अगा, अगमी। ६ २९
०+आ=अगञ्छा, अगच्छा। +ई=अगञ्छि, अगच्छि। ६ ३०
०+आ=गमा, गम
ई=गमी, गमि

सख्या

२०९ गर (भू) सेचने=सीचना

२७७ गरह (भू) निन्दाय=निन्दा करना

२३७ गम (भू) अदने[२४]=खाना

२१७ गल (भू) अदने= ,,

२३९ गवेस (भू) मग्गने=खोजना

३१८ गह (रू) उपादाने[२५]=पकडना

ऊ=गमू, गमु

म्हा=गमिम्हा, गमिम्ह

स्सा=गमिस्सा, गमिस्स

म्हा=गमिस्सम्हा, गमिस्सम्ह । ६ ३३

०+उ=अगमिसु, अगमसु, अगमु । ६ ३९

०+म्हा=अगमुम्हा, अगमिम्हा

त्थ=अगमुत्थ, अगमित्थ । ६ ४५

०+हि=गच्छ, गच्छाहि । ६ ४८

०+एय्यु=गच्छु, गच्छेय्यु । ६ ४७

०+न्ति, न्ते=गच्छरे । गमिस्सरे । ६ ७४

०+य=गम्म । ५ ३०

०+रू=वेदगू, पारगू । ५ ४२

०+अन=गमन । ५ ४८

०+अ (परोक्खे)=जगाम । ५ ७०

०+तब्ब=गन्तब्ब । ५ ९६

०+क्त=गतो । ५ १०९

०+ति, न्त मान=गच्छति, गच्छन्तो, गच्छमानो । ५ १७३

०+ति, न्त, मान=घम्मति, घम्मन्तो, घम्ममानो । ५ १७६

२४ ०+क्वी=(भत्त गसन्ति गण्हन्ति वा एत्थ) भत्तग्ग । ५ ९४ ४७

२५ ०+अ (भाव)=पग्गहो, निग्गहो । ५ ४४

सरया

३२२ गा (दि) सद्दे =गाना
१४१ गाध (भू) पतिठ्ठाय=प्रतिष्ठित होना
२८४ गाह (भू) विलोळने=ग्राह लेना
४३४ गि (सु) सद्दे=कहना
४२६ गि (कि) सद्दे= ,,
२ गिर (भू) निगिरणे=निगलना
३९९ गिर (तु) निगिरणे=निगलना
४०४ गिल (तु) अदने=खाना
३६२ गिला (दि) हासक्खणे=दुखित होना
६८ गुज (भू) अव्यत्तेसद्दे=गूँजना
३ गुण (भू) आमन्तणे=आमन्त्रित करना
१५३ गुण (भू) रक्खणे[२७]=रक्षा करना
४७६ गुण्ठ (चु) बेठने=लपेटना
२६ गुध (दि) परिबेठने=चारो ओर से लपेटना
२७४ गुह (भू) सवरणे[२८]=ढकना

०+क्वी=सलाकग्ग । ५ ४७
०+क्वी (भत्त गण्हन्ति एत्थ)=भत्तग्ग । ५ ४९
०+त्वा=गहेत्वा । ५ १६३
०+ति, न्त, मान=घेप्पति, घेप्पन्तो, घेप्पमानो । ५ १७८
०+तब्ब, तु, न्त=गण्हितब्ब, गण्हितु, गण्हन्तो

२६ ०+क्त=गीत । +त्वा=गायित्वा । ५ ११५

२७ ०+छ (निन्दाय)=जिगुच्छा । जिगुच्छति । ५ ३
०+अ=जिगुच्छा । ५ ४९ ६९ ७७

२८ ०+यक्=गुय्ह । ५ ४९ १०५
०+क=गुहा । ५ ४९
०+य, अन=गुय्ह, निगूहन । ५ १०५
०+क्त=गूळ्हो । ५ १०६ १४८

सरया

८० घट (भू) ईहाय=चेष्टा करना
२३७ घस (भू) अदने[28]=खाना
४६९ घट्ट (चु) घट्टने=चेष्टा करना
७३ घट्ट (भू) घट्टने= ,,
२०९ घर (भ) सेचने=सीचना
२५९ घस (भू) घसने=रगडना
३२३ घा (दि) गन्धोपादाने=सूँघना
४०३ घुर (तु) भीमे=घुरघुराना
५३५ घुस (चु) सद्दे=घोषित करना
४ घुस (भू) सद्दे=घोषित करना
१३ चक्ख (भू) दस्सने=देखना
५४ चज (भू) हानिय[3]=छोडना
४७३ चट (चु) भेदने=कूटना
११६ चन्द (भू) दित्तिहिलादनेसु=चमकना, प्रसन्न होना–करना
२०३ चर (भ) गतिभक्खणेसु[31]=चलना, खाना, चरना
२१६ चल (भू) कम्पने=काँपना
१९७ चाय (भू) पूजाय=पूजना
४१२ चि (जि) चये[32]=चुनना

---

२९ ०+छ=जिघच्छा, जिघच्छति। ५ ४
३० ०+घ्यण (भाव)=चागो। ५ ४४
३१ ० ('परि' पूवक)+य=परिचरिया। ५ ४९
३२ ०+घ्यण=चेय्य। ५ २८
०+अ (भाव)=चयो। ५ ४४
०+तब्ब=चेतब्ब। ५ ८२
०+क्त, तब्ब, तु=चितो, चिनितब्ब, चिनितु। ५ ८५
०+('नि' पूर्वक)+अ=निच्छयो। ५ १२२

सख्या

१६ चिक्ख (भ) वचने=कहना
४९२ चित (चु) सचेतने=होश मे होना
४८९ चिन्त (चु) चिताय=चिन्ता करना
१५८ चुप (भू) मन्द गमने=धीरे चलना
४८५ चुप्प (चु) सचुण्णने=चूण करना
१६४ चुम्ब (भू) बदन सयोगे=चूमना
४४७ चुर (तु) थेय्ये[33]=चोरी करना
२२७ चेल (भू) चलने=गति करना
४८३ छड्ड (चु) छड्डने=फेंकना
५०४ छद्द (चु) वमने=उलटी करना
५०१ छन्द (भू) इच्छाय=चाहना
५०० छद (चु) सवरणे[34]=छिपाना
३१२ छिद (रु) द्वेधाकरणे[35]=टुकडे करना
३३५ छिद (दि) द्वेधाकरणे=काटना, टुकडे करना
३९६ छु (तु) सम्फस्से=छूना।
१९ जग्ग (भू) निद्दाखये=जागना
२४ जग्घ (भू) हसने=हँसना

०+क्य (कर्म)=चीयते। ५ १३९
०+क्त=चिण्णो, क्तवन्तु=चिण्णवा। ५ १५३
३३ ०+णि=चोरयति। ५ १५
०+णि (प्रेरणार्थ)=चोरेति, चोरयति, चोरेन्तो, चोरयन्तो। ५ २०
३४ ०+क्त=छन्नो। +क्तवन्तु=छन्नवा। ५ १५०
३५ ०+स्सा=अच्छेच्छा, अच्छिन्दिस्सा, +स्सति=छेच्छति, छिन्दिस्सति उ=अच्छेच्छु, अच्छिन्दिसु। ६ २६
०+अ (परोक्खे)=चिच्छेद। ५ ७८
०+क्त, क्तवन्तु=छिन्नो, छिन्नवा। ५ १५०

सरया

७९ जट (भू) सङ्घाते=ढेर होना
३५२ जन (दि) जनने[३६]=उत्पन्न करना
१५७ जप (भू) वचने=बोलना
१७४ जम्भ (भू) गत्तविनामे=जँभाई लेना
२११ जर (भू) जीरणे[३७]=जीण होना
२१९ जल (भू) दित्तिय[३८]=जलना
✓जा (की) वयोहानिय[३९]=उम्र घटना
२१३ जागर (भू) निद्दाखये[४०] =जागना
२९० जि (भू) जये[४१]=जीतना

---

३६ ० ('अनु' पूर्वक)+क्त (भाव, कम) =अनुजातो। ५ ५८
०+घ=जङ्घा। ५ ९६
०+क्त, त्वा=जातो, जनित्वा। ५ ११६
३७ ० ('अनु' पूवक)+क्त (भाव, कम) =अनुजिण्णो। ५ ५८
०+अन, ति, णापि, अ=जीरण, जीरति, जीरापेति, जरा। ५ १२३
०+क्त=जिण्णो।+क्तवन्तु=जिण्णवा। ५ १५३
०+न्त=जीयन्तो, जीरन्तो
मान=जीयमानो, जीरमानो
ति=जीयति, जीरति। ५ १७४
३८ ०+ति (अधिक के अथ में) =दद्दल्लति। ५ ७०
३९ ०+नि=जानि (भाव)। ५ ५०
४० ०+य=जागरिया। ५ ४९
४१ ०+स (इच्छाय) =जिगिंसति, जिगिंसा। ५ ४
०+घ्यण्=जेय्य। ५ २८
०+अ (भाव) =जयो। ५ ४४ ८९
० ('वि' पूर्वक)+क्तवन्तु=विजितवा।+क्तावी=विजितावी। ५ ५५

सख्या

४६ जि (भू) जये=जीतना
४११ जि (जि) जये=जीतना
२२६ जीव (भू) पाणधारणे[४२]=जीना
४७ जु (भू) जवे=वेग मे होना
६८ जुत (भू) दित्तिय=चमकना
५१२ झप (चु) दाहे=जलाना
३३० झा (दि) चिन्ताय[४३]=चिन्ता करना (शास्त्र आदि की), ध्यान करना
५१० ञप (चु) मरण तोसननिसाने=मरना, मतुष्ट होना, तेज करना
४१२ ञा (जि) अवबोधने[४४]=जानना
८ टीक (भू) गमनत्थे=जाना
२६२ ठा (भू) गतिविधाने[४५]=ठहरना

---

० ('वि' पूवक) +स, अ=विजिगिंसा। ५ १०२
०+ति=जयति। ५ १३६

४२ ०+अक (आशीर्वादाथक)=जीवको। ५ ३५

४३ ०+अण्=मन्तज्झायो। ५ ४१

४४ ०+ति=नायति, जानाति। ६ ६१
०+एय्य=जञ्ञा, जानेय्य। ६ ६२
०+एय्य=जानिया, जञ्ञा, जानेय्य। ६ ६३
०+ई (भूत)=अञ्ञासि, अजानि
स्सति=ञस्सति, जानिस्सति। ६ ६४
० ('वि' पूर्वक)+कू=विञ्ञू। ५ ३६ ४०
०+तु, न्त, ति, क्त=जानितु, जानन्तो, जानेति, ञातो। ५ १२०

४५ ०+क्य (कम, भाव)=ठीयमान, ठीयते। ५ १७
सीले, निपात=थावर। ५ ५४
० ('उप' पूवक)+क्त (कम, भाव)=उपट्ठितो। ५ ५८
०+न्त=तिट्ठन्तो।+मान=तिट्ठमानो। ५ ६४ ६५

सख्या

२६३ डी (भू) आकासगमने[46]=उडना
२५३ डस (भू) दसने[47]=डसना
४५० तक्क (चु) वितक्के=तक करना
४१ तच्छ (भू) तनुकरणे=छीलना, पतला करना
४६३ तज्ज (चु) सतज्जने=डराना, धमकाना
६२ तज्ज (भू) हिंसाय=हिंसा करना
४३६ तन (त) वित्थारे[48]=फैलाना
१५४ तप (भू) सतापे=तपाना
३५५ तप (दि) सतापे=तपाना
१६० तप्प (भू) सतप्पने=तृप्त करना
२०१ तर (भू) तरणे[49]=तरना

०+मान (भाव, कम)=ठीयमान। ५ ६६
०+न्त, मान (भविष्यत्)=ठस्सन्तो, ठस्समानो
मान (भाव, भवि०)=ठीयिस्समान। ५ ६७
०+क्त=ठितो।+त्वा=ठत्वा। ५ ११४
० ('स' पूर्वक)+न्त, ति=मण्ठहन्तो, सन्तिट्ठन्तो। सण्ठहति, सन्तिट्ठति। ५ १३१
०+ति=तिट्ठति, ठाति
मान, न्त=तिट्ठमानो, तिट्ठन्तो। ५ १७५

४६ ०+क्त=डीनो।+क्तवन्तु=डीनवा। ५ १५०

४७ ०+आ=अडञ्छा, अडसा
ई=अडञ्छि, अडसि। ६ ३०

४८ ०+क्य (कम, भाव)=तायते, तञ्जते। ५ १३८
०+क्ति=तन्ति। ५ ४६
०+क्त=ततो। ५ १०६
०+ते=तनुते। ६ ७६

४९ ०+ण=तारा। ५ ४६

संख्या

✓५५१ तळ (चु) पतिट्ठाय=प्रतिष्ठित करना
२६१ तस (भू) उब्बेगे[५] =सताना
३६९ तस (दि) पिपासाय=पाना, चाहना
३३१ ता (दि) पालने=पालना
✓१९६ ताप (भू) सतापे=क्लेश देना, तपाना
४६६ तिज (चु) निसाने=तेज करना
५२ तिज (भू) निसाने[५१]=तेज करना
५२१ तीर (चु) कम्मसमत्तिय=तरना, काम खतम करना
३८३ तुद (तु) व्यथने=तकलीफ देना, सताना
३८४ तुल (चु) उम्माने=तोलना
२४९ तुस (भू) तुट्ठिय[५२]=खुश करना
३७० तुस (दि) तुट्ठिय=खुश करना
~~२६१ त्रस (भू) उब्बेगे=सताना~~
४४९ थक (चु) पतिघाते=रोकना
५०८ थन (चु) देवसद्दे=गजना (मेघ का)
१७५ थम्भ (भू) पतिबन्धे=रोकना
२०२ थर (भू) सत्थरणे=फैलाना
१०२ थु (भू) अभित्थवे=तारीफ करना
४१४ थु (जि) अभित्थवे=तारीफ करना
३२ थेन (चु) चोरिये=चुराना
५१६ थोम (चु) सिलाघाय=तारीफ करना
४८२ दण्ड (चु) दण्डने=सजा देना

---

० + क्त=तिण्णो। + क्तवन्तु=तिण्णवा। ५ १५३
५० ० + क्त (निपात)=त्रस्तो । ५ १४२
५१ ० + ख, अ=तितिक्खा । ५ १ ४९ ६९
५२ ० + क्त, क्तवन्तु, तब्ब, क्ति=तुट्ठो, तुट्ठवा, तुट्ठब्ब, तुट्ठि। ५ १४०

सख्या

१९४ दप (भू) दान गतिहिसादानेसु=देना, जाना, हिसा करना, लेना
२०७ दा (भू) दारणे=फाडना
२१८ दल (भू) विदारणे=फाडना
२१९ दल (भू) दित्तिय=दीप्त होना, चमकना
१३३ दलिद्द (भू) दुग्गतिय=निधन होना
२६९ दह (भू) भस्मीकरणे[52]=भस्म करना
१०७ दा (भू) दाने[53]=देना
१२ दिक्ख (भू) मुण्डियोपनयननियमवतादेसेसु=मुण्डन करना, उपनयन करना, नियम करना, व्रत करना, धर्म सिखाना

---

५२ ०+ण=डाहो, दाहो, डहति, दहति। ५ १२६
०+क्त=दड्ढो। ५ १४६
० ('आ' पूवक)+अन=आळाहन। परिळाहो। ५ १२७

५३ ०+मि=दम्मि, देमि, ददामि
म=दम्म, देम, ददाम। ६ २२
०+ई (भूत)=अदासि, अदा। ६ ४४
०+घ्यण्=देय्य। ५ २९
०+अ (कम)=अन्नदो, पुरिन्ददो। ५ ४४
०+इ=आदि। ५ ४५
०+णी (सीले)=सतन्दायी। ५ ५३
०+ति=ददाति। ५ ७४
०+णक, अन, णापि=दायको, दान, दापयति। ५ ९१
०+त्वा=अनादियित्वा।+ति=समादियति।
+प्य=आदाय। ५ १३२
०+क्य (कर्म, भाव)=दीयते। ५ १३७
०+क्त, क्तवन्तु=दिन्नो, दिन्नवा। ५ १५१
० ('अ' पूवक)+अन्ति=अदेन्ति। ५ १६३
०+ति, न्त, मान=दज्जति, दज्जन्तो, दज्जमानो। ५ १७६

संख्या

३५६ दिप (दि) दित्तिय=चमकना

३१९ दिव (दि) कीलाविजिगिंसा ओहारज्जुतित्थुतिगतिसु	खेलना, जीतने की इच्छा करना, =व्यापार करना, चमकना, तारीफ करना, जाना

४०९ दिस (तु) अतिसज्जने[५४]=इनाम देना

३७२ दिस (दि) अप्पीतिय=घृणा करना

२४३ दिस (भू) पेक्खने[५५]=देखना

२४४ दिस (भू) अतिसज्जने=इनाम देना

५४० दिस (चु) उच्चारणे=उच्चारण करना

२७३ दिह (भू) उपचये=बढ़ना

३८३ दीं (दि) अवखडने=टुकड़ करना

३३३ दी (दि) खये[५६]=नष्ट होना, क्षीण होना

---

५४ ०+ति, न्त, मान=दिच्छति, दिच्छन्तो, दिच्छमानो। ५ १७३

५५. ०+आवी=भयदस्सावी। ५ ३४

०+री, रिक्ख, क=सरी, सदी, सरिक्खो, सदिक्खो, सरिसो, सदिसो। ५ ४३ १२५

०+स्सति=दक्खति, दक्खिस्सति। ६ ६९

०+क्त=दिट्ठो। ५ ८५

०+आ, ई, स्सति=अद्दा, अद्दक्खि, दक्खिस्सति। (कम) दिस्सति। ५ १२४

०+अन, ति तब्ब, तु, अ, आ=दस्सन, दस्सेति, दट्ठब्ब, दट्ठु, दुद्दसो, अद्दस। ५ १२४

०+अन, तु, ति, ञी=विपस्सना, विपस्सितु, विपस्सति, सुदस्सी-पियदस्सी-धम्मदस्सी। ५ १२४

०+त्वा=दिस्वा, पस्सित्वा, दिस्वान। ५ १६९

५६. ०+क्त, क्तवन्तु=दीनो, दीनवा। ५ १५०

सख्या

✓१०६ दु (भू) द्रवे=पिघलना

१०८ दु (भू) गमने=जाना

३३ दुभ (चु) जिघसाय=हिंसा की इच्छा करना

५२६ दुल (चु) उक्खेपे=ऊपर फेकना

३७२ दुस (दि) अप्पीतिय[57]=घृणा करना

२७५ दुह (भू) पपूरणे[58]=दुहना

४३८ दू (त) परितापे=पछताना

१७८ दूभ (भू) जिघसाय=हिंसा की इच्छा करना

२३१ देव (भू) गमने=जाना

२५३ दस (भू) दसने=डसना

* धन (चु) सद्दे=आवाज करना

१९१ धम (भू) सद्दे=बजाना (शङ्ख आदि का)

२०६ धर (भू) धारणे=धारण करना

५२० धर (चु) धारणे=धारण करना

२५९ धस (भू) धसने[59]=ध्वस करना

१३८ धा (भू) धारणे[60] =धारण करना

२३४ धाव (भू) गतिसुद्धिय=दौडना

४१५ धू (जि) कम्पने[61]=हिलाना

---

५७ ०+णि, क्त=दूसितो। ५ १०४

५८ ०+यक्=दुय्ह। ५ ३२

०+क्त=दुद्ध। ५ १४५

५९ ०+क्त (निपात)=धस्तो। ५ १४२

६० ०+ति=दहति। ५ १०३

०+इ=निधि, बालधि। ५ ४५

० ('नि' पूर्वक)+क्त, क्तवन्तु=निहितो, निहितवा। ५ १०८

६१ ०+ति=धुनाति। ६ ३२

संख्या

१३९ धे (भू) पाने=पीना

५ धोव (भू) धोवने=धोना

६ नच्च (भू) नच्चने=नाचना

४७२ नट (चु) नाटये=नाटय (अभिनय) करना

७२ नट (भू) नच्चे=नृत्य करना

१२९ नद (भू) अव्यत्ते सद्दे=नाद करना

११२ नन्द (भू) समिद्धिय[62]=समृद्ध होना

१८९ नम (भू) नमने=झुकना, नमस्कार करना

१९५ नय (भू) गमनत्थे=जाना

३७६ नस (दि) अदस्सने=नष्ट होना

३७९ नह (दि) बन्धने=बाँधना

३५० नहा (दि) सोच्चे=नहाना

१०५ नाथ (भू) याचनोपतापिस्सरियासिसासु=माँगना, बीमार होना, श्रीमान् होना, आशिष देना

११३ निन्द (भू) गरहाय=निन्दा करना

२९४ नी (भू) पापुणने[63]=पहुँचाना, प्राप्त कराना

२२३ नील (भू) वण्णे=रँगना, नीला रँगना

३८४ नुद (तु) क्खेपे[64]=फेकना

०+तब्ब, तु, अन=धुनितब्ब, धुनितु, धुनन
+णि-तब्ब, णापि-तब्ब, णि-तु=धुनयितब्ब, धुनापेतब्ब, धुनयितु। ५ ८५

६२ ०+अक (आशीर्वादार्थक)=नन्दको। ५ ३५

६३ ०+उ=नेसु, नयिसु। ६ ४०
०+तब्ब=नेतब्ब। ५ ८२
०+णि-ति=नायति। ५ ९०

६४ ० ('प' पूर्वक)+अन=पनूदन। ५ ८७

सरया

३३ पच (भू) पाके[65]=पकाना
४५७ पच (चु) वित्थारे=फैलाना
७० पट (भू) गमनत्थे=जाना
८१ पठ (भू) उच्चारणे[66]=उच्चारण करना, पढना
९४ पण (भू) व्यवहारत्थुतिसु=व्यापार करना, बडाई करना
✓४८० पण्ड (चु) परिहारे=खण्डन करना, नष्ट करना
९६ पण्ड (भ) लिङ्गवैकल्ये
✓९९ पत (भू) पतने=गिरना
१०१ पत (भू) गमने=जाना
✓२०२ पत्थर (भ) सथरणे=बिछाना
३९४ पथ (तु) वित्थारे=फैलाना
१०१ पथ (भू) गमने=जाना
३३६ पद (दि) गमने[67]=जाना

---

६५ ०+ल-मान, न्त, ति=पचमानो, पचन्तो, पचति। ५ १८
०+घ (कारक)=निपको। ५ ४४
०+घ्यण (भाव)=पाको। ५ ४४
०+अ (भाव)=पचो। ५ ४४
०+ति (सरूपे)=पचति। ५ ५२
०+मान (भाव, कम)=पच्चमानो। ५ ६६
०+मान (कर्म-भविष्य)=पचिस्समानो। ५ ६७
०+क्त, क्तवतु=पक्को, पक्कवा। ५ १५६
०+क्य (कर्म)=पचीयति, पच्चति। ६ ३७
०+मि, म, हि=पचामि, पचाम, पचाहि। ६ ५७
६६ ०+णक, ल्तु=पाठको, पठिता। ५ ३३
६७ ०+घ्यण (कारक)=पादो। ५ ४४
० ('आ' पूवक)+अ=आपदा। ५ ४९

संख्या

१९५ पय (भू) गमनत्थे=जाना
२९७ पा (भू) रक्खणे=रक्षा करना
२९६ पा (भू) पाने[६८]=पीना
✓७ पाण (भू) चागे=त्यागना
५२२ पार (चु) सामत्थिये=सकना, समर्थ होना
५२३ पाल (चु) रक्खने=पालना
७९ पिट (भू) सङ्घाते=ढेर करना
४८१ पिण्ड (चु) सङ्घाते=ढेर करना
२१५ पिलु (भू) गमनत्थे=जाना
५३४ पिस (चु) गमने=जाना
५४७ पिह (चु) इच्छाय=चाहना
२६० पिंस (भू) सचुण्णने=पीसना
५०९ पी (चु) तप्पने[६९]=तृप्त करना
५४९ पीळ (चु) बाधाय=तकलीफ देना

---

० ('नि' पूर्वक)+तब्ब, तु, अन=निपज्जितब्ब, निपज्जितु, निपज्जन। ५ ९२
० ('उ' पूर्वक)+क्त, क्तवन्तु=उप्पन्नो, उप्पन्नवा। ५ १५०
० ('उ' पूर्वक)+ई (परोक्खे)=उदपादि। ५ १६१

६८ ०+स-अ=पिपासा। ५ ४६ ७६
०+णी (सीले)=खीरपायी। ५ ५३
०+क्त=पीत (आधारे, कम्मे, कत्तरि, भावे)
०+क्त, त्वा=पीत, पीत्वा। ५ ११५
०+ति, न्त, मान=पिवति, पाति, पिवन्तो, पिवमानो। ५ १७५

६९ ०+क=पियो। ५ ४४
०+तब्ब, तु, अन, ति=पीनेतब्ब, पीनयितु-पीनितु, पीनन, पीनयति। ५ ८५
०+क्त, क्तवन्तु=पीनो, पीनवा। ५ १५०

सख्या

३६ पुच्छ (भू) पुच्छने[70] =पूछना
४५ पुञ्छ (भू) पुञ्छने=पोछना
४७३ पुट (चु) भेदने=तोडना
३६२ पुण (तु) कम्मनि सुभे=धम कृत्य करना
३६४ पुथ (तु) वित्थारे=फैलना
१६३ पुप्फ( )विकसने=फूलना
५३२ पुल (चु) महत्ते=ऊँचा होना
५३१ पुल (चु) समुस्सये=ढेर करना
२४८ पुस (भू) पोसने=पोसना, पालना
५३७ पुस (चु) पोसने=पोसना, पालना
४१६ पू (जि) पवने=पवित्र करना
१५२ पू (भू) पवने=पवित्र करना
४६७ पूज (चु) पूजाय=पूजना
२०४ पूर (भू) पूरणे[71]=भरना
२२७ पेल (भू) चलने=चलना
२१५ प्लु (भू) गमनत्थे=जाना
✓८ फण (भू) फरणे=व्याप्त होना
११५ फन्द (भू) किञ्चि चलने=धडकना, हिलना
८ फर (भू) फरणे=व्याप्त होना
२२१ फल (भू) निप्फत्तिय=फलना
१६६ फाय (भू) वुड्ढिय=बढना
४०० फुर (तु) चलने=फडकना
२२० फुल्ल (भू) विकसने=फूलना

---

७० ०+क्त=पुट्ठो। ५ ८५
०+क्त, त्वा=पुट्ठो, पुच्छित्वा
७१ ०+क्त=पुण्णो।+क्तवन्तु=पुण्णवा। ५ १५२

संख्या

४१० फुस (तु) सम्फस्से=छूना
३१४ बध (रु) बन्धने[72]=बँधाना
१४६ बध (भू) बन्धने=बाँधना
९ बल (भू) पाणने=सास लेना
२८१ बह (भ) वुद्धिय[73]=बढना
१४२ बाध (भू) निबाधाय=पीडा देना
३४१ बुध (दि) अवगमने=जनाना, समझना
२८१ ब्रह (भू) बुद्धिय=बढना
२९८ ब्रू (भू) वचने[74]=बोलना
२८१ ब्रूह (भू) वुद्धिय=बढना
१४ भक्ख (भू) अदने=खाना
४५३ भक्ख (चु) अदने=खाना
५० भज (भू) सेवाय[75]=सेवा करना
६५ भज्ज (भू) पाके[76]=भूनना

---

७२ ०+छ=बीभच्छा, बीभच्छति (निन्दाय)। ५ ३
७३ ०+क्त=बाळ्हो। ५ १०६
०+क्त=बुड्ढो। ५ १४७
७४ ०+आ, उ=आह, आहु इत्यादि। ६ १६
०+उ=आहसु, आहु। ६ १९
०+ति, अन्ति=आह, आहु। ६ २०
०+ति=ब्रवीति, ब्रूति। ६ ३६
०+मि, इ=ब्रूमि, अब्रवि। ५ ९७
०+णि-ति, न्ति=ब्रूति, ब्रुवन्ति
७५ ०+क्ति=भत्ति। ५ ४९
०+घ्यण्=भाग्य। ५ ९८
७६ ०+क्त=भट्ठो। ५ १४३

संख्या

५७ भज्ज (भू) ओमद्दने[७७]=नष्ट करना
७८ भट (भू) भतिय=नौकरी करना
९३ भण (भू) भणने=स्पष्ट कहना
४८० भण्ड (चु) परिहासे=उपहास करना
३०३ भद्द (चु) कल्याणे=शुभ कम करना, सुखी होना
११९ भद्द (भू) कल्याणे=शुभ कम करना, सुखी होना
१८४ भम (भू) अनवट्ठाने=घूमना
१० भर (भू) भरणे[७८]=पालना
३७५ भस (दि) अधोपतने=नीचे गिरना, निन्दित होना
२६४ भस (भू) भस्मीकरणे=भस्म करना
२९० भा (भू) दित्तिय[७९]=चमकना
✓२९१ भा (भू) अवबोधने=जनाना, प्रकाशित करना
२५६ भास (भू) वचने=बोलना
११ भिक्ख (भू) याचने[८०]=माँगना
३११ भिद (रु) विदारणे[८१]=तोडना, फोडना, चीरना
३३४ भिद (दि) विदारणे=तोडना, फोडना, चीरना

---

७७ ० (सीले-निपात) =भङ्गुर । ५ ५४
० +क्त, क्तवन्तु =भग्गो, भग्गवा । ५ १५४
७८ ० +य =भच्चो (निपात) । ५ ३१
७९ ० (सीले-निपात) =भासुर, भस्सर । ५ ५४
८० ० +अ =भिक्खा । ५ ४९
८१ ० +स्सा =अभेच्छा, अभिन्दिस्सा । ६ २६
० +क्ति =भित्ति । ५ ४९
० (सीले-निपात) =भिदुर । ५ ५४
० +तब्ब =भेत्तब्ब, भिन्दितब्ब । ५ ९५
० +क्त, क्तवन्तु =भिन्नो, भिन्नवा । ५ १५०

संख्या

१६९ भी (भू) भये=डरना
३८८ भुज (तु) कोटिल्ले=टेढा होना
३०९ भुज (रु) पालनज्झोहारेसु[३]=पालना, खाना
५३६ भूस (चु) अलङ्कारे=सजाना
२५४ भूस (भू) अलङ्कारे=सजाना
१ भू (भू) सत्ताय[३]=होना

---

८२ ०+ख (इच्छाय)=बुभुक्खति, बुभुक्खा। ५ ४ ७८
०+स्सा=अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा
स्सति=भोक्खति, भुञ्जिस्सति। ६ २७
०+य=भोज्ज। ५ ३०
०+क=भुजो। ५ ४४
०+णी (सीले)=उण्हभोजी। ५ ५३
०+क्त=भुत्त (आधारे, कम्मे, कत्तरि, भावे)। ५ ६०
०+तु=भुञ्जितु, भोत्तु ('तु' प्रत्ययके प्रयोग)। ५ ६१ १७०
८३ ०+अ=बभूव। ६ १७ १८
०+त्थ, स्सा, स्सति=बभूवित्थ-अभवित्थ, अभविस्सा, अनुभविस्सति,
अनुभोस्सति। ६ ३५
०+एय्याथ, स्से=भवेय्याथो, भवेय्याथ, अभविस्से, अभविस्स,
+अ, आ=अभव, अभव, अभवित्थ, अभवा,
+ई, थ=भवथव्हो, भवथ। ६ ३८
०+ओ=अभव, अभवि, अभवित्थ, अभवित्थो, अभवो। ६ ४२
० ('अनु' पूर्वक) +क्य-स्सा=अन्वभविस्सा, अन्वभूयिस्सा,
+स्सति=अनुभविस्सति, अनुभूयिस्सति। ६ ४६
०+एय्याम=भवेमु, भवेय्यामु, भवेय्याम। ६ ७८
०+य=भब्ब। ५ ३१
०+अ (भाव)=भवो। ५ ४४ ८९

सख्या

२८७ भू (भ्) सत्ताय=होना
४५४ मक्ख (भू) मक्खने=जाना
१८ मग्ग (भू) अन्वेसने=खोजना
४५६ मग्ग (चु) अन्वेसने=खोजना
२१ मङ्ग (भू) मङ्गल्ये=मङ्गल होना
११ मज्ज (भू) ससुद्धिय=सशोधन करना, साफ करना
९६ मण (भू) सद्दत्थे=शब्द करना
४७९ मण्ड (चु) भूसाय=सजाना
८५ मण्ड (भू) भूसने=सजाना
१०३ मथ (भ) विलोळने=मथना
२७ मद (दि) उम्मादे=नशे मे होना, पागल होना
१३१ मद्द (भू) मद्दने=मसलना
३५१ मन (दि) ञाने=जानना
४४१ मन (त) बोधने=विचारना, मनन करना

---

० + घ्यण (भाव) = भावो । ५ ४४
० + क्वी = अभिभू, सयम्भू । ५ ४७ १५९
० + क्ति = भूति । ५ ४९
० + तब्ब = भवितब्ब । ५ ८२
० + णि-ति = भावयति । ५ ९०
० + ति = भवति । ५ १३६
० ('अभि' पूर्वक) + त्वा, य्य = अभिभवित्वा, अभिभूय । ५ १६४
८४ ० + य = मज्ज । ५ ३०
० ('प' पूवक) + तब्ब, तु = पमज्जितब्ब, पमज्जितु,
+ अन, ण = पमज्जन, पादो । ५ ९२
८५ ० + स = वीमसा, वीमसति । ५ १ ४९ ६९ ८०
० + क्त = मतो । ५ १०९

संख्या

४६० मन्त (चु) गुत्तभासने=सलाह करना
१०३ मन्थ (भू) विलोळने=मथना
१६५ मय (भू) गमनत्थे=जाना
२०५ मर (भू) पाणचागे[८६]=मरना
२४६ मस (भू) आमसने=माफ करना
४५६ मह (चु) अन्वेसने=खोजना
२६८ मह (भू) पूजाय=पूजना
५०७ मान (चु) पूजाय=पूजना
२८ मिद (दि) स्नेहने=स्नेहयुक्त होना
१३५ मिद (भ) सिनेहे=स्नेहयुक्त होना
१२ मिध (भू) सङ्गमे[८७]=जोडना, युक्त करना
३४० मिध (दि) अभिकखाय=चाहना
३६३ मिला (दि) गत्तविनामे=अँगडाई लेना
५४४ मिस्स (चु) सम्मिस्से=मिलाना
२७६ मिह (भू) सेचने=गीला करना, सींचना
२६६ मिह (भू) ईस हसने=मुसकराना
५४८ मिह (चु) पूजाय=पूजना
३०६ मुच (रु) मोचने[८८]=छुडाना, मुक्त करना
३५ मुच (चु) पमोचने=छुडाना, मुक्त करना
४० मुच्छ (भू) मोहे=मुरझाना

---

८६ ० + न्त, मान ति=मीयन्तो, मरन्तो, मीयमानो, मरमानो, मीयति, मरति। ५ १७४

८७ ० + अ=मेधा। ५ ४६

८८ ० + क्त, क्तवन्तु=मुक्को, मुत्तो, मुक्कवा, मुत्तवा। ५ १५७
० + स्सा=अमोक्खा, अमुञ्चिस्सा
स्सति=मोक्खति, मुञ्चिस्सति। ६ २७

संख्या

५६ मुज्ज (भू) मुज्जने[८९]=गोता लेना
८८ मुण्ड (भू) खण्डने=मूँडना
१२२ मुद (भू) तोसे[९०]=सतुष्ट होना
४०७ मुस (तु) थेय्ये=चोरी करना, ठगना
२८० मुह (भू) मुच्छाय[९१]=मूर्च्छित होना, मुरझाना
३८० मुह (दि) वेचित्ते=मोहित होना, मूढ होना
४१७ मी (जि) हिंसाय=हिसा करना
१३ मील (भू) निमीलने=मूँदना
५२७ मील (चु) निमीलने=मूँदना
४१६ मू (जि) बन्धने=बाँधना
१८१ मू (भू) बन्धने=बाँधा
१२ मेध (भू) सङ्गमे=लटाई करना
८५५ मोक्ख (चु) मोचने=छुडाना
५१ यज (भू) देवपूजा सङ्गति करण दानेसु[९२]=देवपूजा करना, मिलना, देना
४६४ यत (चु) निय्यातने=बाहर भेजना

---

८६ ० ('नि' पू०)+क्त, क्तवन्तु=निमुग्गो, निमुग्गवा। ५ १५४
९० ०+क=मुदा। ५ ४६
०+क्त=मुदितो, मोदितो। ५ ८६
० ('अनु' पू०)+त्वा=अनुमोदित्वा, अनुमोदियान। ५ १६५
९१ ० निपात—मोमुहो। ५ ७०
०+क्त=मूळ्हो। ५ १०६
+क्त=मूल्हो, मुद्धो। ५ १४६
९२ ०+यक्=इज्जा। ५ ४६
०+क्ति=इट्ठि। ५ ४६
०+क्त, त्वा=इट्ठ, यिट्ठ, यजित्वा। ५ ११३ १४३

संख्या

४६१ यन्त (चु) संकोचने=सकुचना
१८० यम (भू) मेथुने[93]=विवाहित होना
१६० यम (चु) उपरमे=रुकना
३७४ यस (दि) पयतने=यत्न करना
३०० या (भू) पापुणने[94]=प्राप्त करना
३१ याच (भू) याचने=माँगना
३२८ युज (दि) समाधिम्हि=ध्यान करना
४६६ युज (चु) संयमे=संयम करना
३०८ युज (रु) योगे=जोडना
३४२ युध (दि) सम्पहारे[95]=लडना, जूझना
१५ रक्ख (भू) पालने=पालना
२२ रङ्ग (भू) गमनत्थे=जाना
४६१ रच (चु) पतियतने
५५ रञ्ज (भू) रागे=रँगना
३२७ रञ्ज (दि) रागे=रँगना
७१ रट (भू) परिभासने=रटना
६६ रण (भू) सद्दत्थे=आवाज करना
१३४ रद (भू) विलेखणे=खोदना
१५७ रप (भू) वचने=बोलना
१४ रभ (भू) राभस्से=जल्दी मे होना
८८ रम (भू) कीळाय[96]=खेलना

---

९३ ०+ति, न्त, मान=यच्छति, यच्छन्तो, यच्छमानो । ५ १७२

९४ ०+क्त=यात (आधारे, कत्तरि, भावे, कम्मे) । ५ ५६

९५ ० ('आ' पूर्वक)+क=आयुध । ५ ४४
०+कि=युधि । ५ ५२

९६ ०+क्त=रतो । ५ १०६

संख्या

१७१ रम (भू) आरम्भे=शुरू करना
१६५ रम्ब (भू) अवसेसने=बचाना
✓१६५ रम (भू) गमनत्थे=जाना
५८२ रस (चु) अस्साद स्नेहनेसु=स्वाद लेना, गीला होना, प्यार करना
२६३ रस (भू) अस्सादनेसु=स्वाद लेना
२७६ रह (भू) चागे=त्यागना
५४२ रह (चु) चागे=त्यागना
३०१ रा (भू) आदाने=लेना
४६ राज (भू) दित्तिय=शोभा देना
३८५ राध (दि) ससिद्धिय=सिद्ध होना
३४८ राध (दि) हिंसाय=हिंसा करना
२३ रिच (क) विरेचने=दस्त आना
३२५ रिच (दि) विरेचने=दस्त आना
३६ रिञ्च (भू) रिञ्चने=खाली होना
२०० रु (भू) सद्दे[९७]=शब्द करना
३८७ रुज (तु) भङ्गे=टूटना
✓३७ रुच (चु) भासने=चमकना
३६ रुच (चु) रोचने=पसन्द आना
२९ रुच (दि) रोचने=पसन्द आना
३० रुच (भू) दित्तिय=चमकना
३२४ रुच (दि) रोचने=पसन्द आना
३८७ रुज (तु) भङ्गे[९८]=बुरा होना, पीडा होना, पीडा देना
३९१ रुठ (तु) उपसघाते=मारना, लूटना

---

९७ ०+अ (भाव)=रवो। ५४४
९८ ०+क=रुजा। ५४९
०+घ्यण् (कारक)=रोगो। ५४४

सरया

१२० रुद (भू) रोदने[१] =रोना
३०५ रुध (रु) आवरणे[२] =रोकना, घेर लेना
३४९ रुध (दि) आवरणे=रोकना, घेर लेना
३६१ रुस (दि) रोसे=रूसना, नाराज होना
२४६ रुस (भू) रोसे=रूसना, नाराज होना
५३९ रुस (चु) फारुसिये=कठोर होना
२७१ रुह (भू) जनने[१ ३]=उगना
४३२ लक्ख (चु) दस्सणे=देखना
२२ लङ्घ (भू) गमनत्थे=जाना, लाघना
२६ लङ्घ (भू) गतिसोसनेसु=जाना, सूखना
६० लज्ज (भ) लज्जने=लजाना, शरमाना
४४ लञ्छ (भू) लक्खणे=निशान करना
५११ लप (भू) वचने=बोलना, बातचीत करना
१५७ लप (भू) वचने=बोलना, बातचीत करना
✓२० लभ (भू) सङ्गे[१ २]=आसक्त होना, पाना

---

९९ ०+स्सा=अरुच्छा, अरोदिस्सा
स्सति=रुच्छति, रोदिस्सति । ६ २६
०+क्त=रुदित, रोदित । ५ ८६
१०० ०+ल-ति, मान, न्त=रुन्धति, रुन्धमानो, रुन्धन्तो । ५ १९
०+तु, ण=रुन्धितु, रुज्झितु, निरोधो
१०१ ० ('अभि' पू०)+ई=अभिरुच्छि, अभिरुहि । ६ ३४
० ('आ' पू०)+क्त (भाव, कम) =आरूळ्हो। ५ ५८
०+क्त, तु=अरूळ्हो, आरोहितु। ५ १४८
१०२ ०+स्सा=अलच्छा, अलभिस्सा
+स्सति=लच्छति, लभिस्सति । ६ २६
०+घ्यण=लाभो । ५ ४४

सरया

१७० लभ (भू) लाभे=पाना

१६५ लम्ब (भू) अवससने=लटकना

५५२ लळ (चु) उपसेवाय[13]=पालना, पोसना

२८६ लळ (भू) विलासे=ऐश करना

५३३ लल (चु) इच्छाय=चाहना

२६२ लस (भू) कन्तिये=शोभा देना

३०१ ला (भू) आदाने=ग्रहण करना

३८५ लिख (तु) लेखने=खोदना (लोहे की लेखनी आदि से अक्षर आदि का)

३१५ लिप (रु) लिम्पने=लीपना

३६७ लिस (दि) लेसे=आलिङ्गन करना

२७२ लिह (भू) अस्सादने[14]=चाटना

३६४ ली (दि) सिलेसन द्रवीकरणेसु[15]=चिपकाना, पिघलाना

३२९ लुज (दि) विनासे=नाश करना

१५ लुञ्च (भू) अपनयने=उखाडना (बाल आदि का)

३९१ लुठ (तु) उपसघाते=मारना-लूटना

३१६ लुप (रु) छेदने[16]=काटना

३५७ लुप (दि) च्छेदने=काटना

३५८ लुभ (दि) लोभे=लोभ करना

---

० + ई (भूत) = अलत्थ, अलभि

इ (भूत) = अलत्थ, अलभि । ६ ७३

० + क्त = लद्ध । ५ १४५

१०३ ० + णि = लाळयति । ५ १५

१०४ ० + य = लेय्य । ५ ३१

१०५ ० + क्त, क्तवन्तु = लीनो, लीनवा । ५ १५०

१०६ ० निपात—लोलुपो । ५ ७०

संख्या

४२० लू (जि) छेदने[७]=काटना
४४८ लोक (चु)= देखना
४४८ लोच (चु) दस्सने=देखना
६ वक (भू) आदाने=लेना
५ वङ्क (भू) कोटिल्लो=टेढा होना
२२ वङ्ग (भू) गमनत्थे=जाना
३७ वच (चु) भासने[८]=बोलना=बातचीत करना
३८ वच (चु) भासने=बोलना=बातचीत करना
२६ वच (भ) व्यत्तवचने=बोलना
४६० वच्च (चु) अज्झेने=पढना
४८ वज (भू) गमने[९]=जाना
४६२ वज्ज (चु) वज्जने=मना करना
४५८ वञ्च (चु) पलम्भने=ठगना
३७ वञ्च (भू) गमने=जाना
१४० वड्ढ (भू) वुड्ढिय[११]=बढना

---

१०७ ०+अण्=सरलावो। ५ ४१
०+क्त, क्तवन्तु=लूनो, लूनवा। ५ १५०
१०८ ०+ई=अवोच। ६ २१
स्सा, स्सति=अवक्खा, अवचिस्सति, वक्खति, वचिस्सति। ६ २७
०+घ्यण्=वाक्य। ५ २८ ६८
०+अ (भाव)=वचो। ५ ४४
०+घ (भाव)=वको। ५ ४४
०+इ (स्वरूप)=वचि। ५ ५२
+क्त=उत्त, वुत्त, उत्थ, वुत्थ। ५ ११० १११
१०९ ० ('प' पूर्वक)+य=पब्बज्जा। ५ ४६
११० ०+क्ति=वड्ढि। ५ १५८

सख्या

९१ वड्ढ (भू) वड्ढने=बढाना
१४८ वण (भू) सम्हत्तिय=आवाज करना
४७४ वण्ट (चु) विभाजने=बाँटना
७६ वण्ट (भू) विभाजने=बाँटना
४८४ वण्ण (चु) वण्णने=वणन करना
९७ वत्त (भू) वत्तने=होना
११० वद (भ) वचने[111]=बोलना
१४३ वध (भू) हिंसाय[112]=हिंसा करना
४४० वन (त) याचने[113]=माँगना
५०२ वन्द (चु) अभिवादनथुतिसु[114]=नमस्कार करना, तारीफ करना
१११ वन्ध (भू) अभिवादनथुतिसु=नमस्कार करना, तारीफ करना
१५९ वप (भू) वीजनिक्खेपे=बोना
१८६ वम (भू) उग्गिरणे[115]=उलटी करना
५१४ वम्ह (चु) गरहाय=निदा करना
१९५ वप (भू) गमनत्थे=जाना
५१८ वर (चु) आवरणिच्छासु=छिपाना, चाहना
२१४ वर (भू) वारणसम्भतिसु=मना करना, विभाग करना
२२६ वल (भू) सवरणे=छिपाना
२२६ वल्ल (भू) सवरणे=छिपाना
५४१ वस (चु) अच्छादने=ढकना

---

१११ ०+य=वज्ज। ५ ३०
०+ति, न्त, मान=वज्जति, वज्जन्तो, वज्जमानो। ५ १७६
११२ ०+णक्=वधको। ५ ८७
११३ ०+ति=वनुति, वनोति। ६ ७७
११४ ०+अन=वन्दना। ५ ४९
११५ ०+थु=वमथु। ५ ४६

, सख्या

१७ वस (भू) निवासे[११६]=रहना
✓१६ वस्स (भू) सेवने=सेवन करना
७४ वह (भू) वहने=ढोना
२७० वह (भ) पापुणने[११७]=पाना
३६५ वा (दि) गतिबन्धनेसु=जाना, बाधना
३०२ वा (भू) गमने=जाना
३८९ विज (तु) भयचलनेसु[११८]=डरना, कॉपना
३४० विद (दि) सत्ताय=होना
३९३ विद (तु) ञाणे[११९]=जानना
३१३ विद (रु) लाभे=पाना
४९८ विद (चु) ञाणे[११९]=जानना
३४६ विध (दि) वेधने=बींधना
१४५ विध (भू) वेधने=बींधना
४०८ विस (तु) पवेसने[१२]=घुसना

---

११६ ०+स्सा=अवच्छा, अवसिस्सा
स्सति=वच्छति, वसिस्सति । ६ २६
० ('अनु' पू०)+क्त (भाव, कर्म)=अनुवुसितो । ५ ५८
०+क्त=वुत्थ । ५ १४४
११७ ०+क्त=वूळ्हो । ५ १०७ १४८
११८ ० ('स' पू०)+क्त=सविग्गो ।+क्तवन्तु=सविग्गवा । ५ १५४
११९ ०+णि-ति=वेदियति । ५ १३६
०+यक्=विज्जा । ५ ४९
०+अन=वेदना । ५ ४९
०+कू=विदू (लोकविदू) । ५ ३८
१२० ० ('प' पूर्वक)+स्सा=पावेक्खा, पाविसिस्सा
स्सति=पवेक्खति, पविसिस्सति

सख्या

३०२ वी (भू) गमने=जाना

२२८ वी (भू) तन्तसन्ताने=बुनना (कपडे का)

६६ वीज (भू) वीजने=हवा करना

४२६ वु (की) सवरणे=ढकना

४३३ वु (सु) सवरणे=ढकना

४७५ वेठ (चु) वेठने=लपेटना

१५६ वेप (भू) चलने[१२१]=कॉपना

२२७ वेल (भू) चलने=हिलना

१०६ व्यथ (भू) दुखभयचलनेसु=दुखी होना, डरना, कापना

२६७ व्हे (भू) अव्हाने=पुकारना

४३७ सक (त) सत्तिय[१२२]=सकना, समथ होना

४३४ सक (कि) सत्तिय[१२२]=सकना, समथ होना

४३५ सक (सु) सत्तिय[१२२]=सकना, समथ होना

८ सक्क (भू) गमनत्थे=जाना

४ सङ्क (भू) सङ्काय=सन्देह करना

५१७ सङ्गाम (चु) युद्धे=लडाई करना

३४ सच (भू) समवाये

✓५३ सज (भू) विस्सजनालिङ्गननिम्मानेसु=छोडना, गले लगाना, बनाना

ई=पावेक्खि, पाविसि । ५ २७

०+घ्यण (कारक)=वेसो । ५ ४४

१२१ **०+थु=वेपथु । ५ ४६**

१२२ **०+न्त, ति=सक्कुणन्तो, सक्कुणोति, सक्कोति । ५ १२१**

०+ई, उ (भूत)=असक्खि, असक्खिसु । ६ ५८

०+स्सा=सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा

स्सति=सक्खिस्सति, सक्कुणिस्सति । ६ ५६

०+स्सति=सक्खति, सक्खिस्सति । ६ ६६

सरया

३२६ सज (दि) सङ्गे=आसक्त होना

६१ सज्ज (भू) अज्जने=उपाजन करना

४६४ सज्ज (चु) अज्जने=उपाजन करना

५६ सञ्ज (भू) सङ्गे=आसक्त होना

८२ सठ (भू) केतवे=ठगना

१२६ सद (भू) विसणगत्यवसादनादानेसु[१२३]=जीण होना, जाना, नीचे गिराना, लेना

४३६ सन (त) दाने=दान करना

१२५ सन्द (भू) पस्सवने=टपकना

१५५ सप (भू) अक्कोसे=कोसना, शाप देना

१६१ सप (भू) गमने=जाना, रेंगना

३६० सम (दि) उपसमखेदेसु[१२४]=(व्रत आदि से) शान्ति प्राप्त करना, पसीना छूटना

१८५ सम (भू) परिस्समे=थकना

४६८ समाज (चु) पीतिदस्सने=खातिर करना

१६७ सम्ब (भू) मण्डने=सजाना

१७९ सम्भ (भू) विस्सासे=भरोसा रखना

४२८ सम्भु (की) पापुणने=इकट्ठा करना, प्राप्त करना

२०८ सर (भू) गतिहिंसाचिन्तासु[१२५]=आना, हिंसा करना, सोचना=चिन्ता करना

२१५ सल (भू) गमनत्थे=जाना

---

१२३ ० ('नि' पूवक)+तब्ब=निसीदितब्ब।+अन=निसीदन। +तु=निसीदितु।+ति=निसीदति। ५ १२३
०+क्त, क्तवन्तु=सन्नो, सन्नवा। ५ १५०

१२४ ०+क्त=सञ्जतो। ५ १०९

१२५ ०+अन=सरण। ५ १७१ ०+घ्यण् (कारक)=सारो। ५ ४४

सरया

२४२ सस (भू) गतिहिंसापाणनेसु = जाना, हिंसा करना, साँस लेना
२५८ सस (भू) पससने[१२६] = बड़ाई करना
२७८ सह (भू) मरिसने = क्षमा करना
३७८ सा (दि) तनूकरणावसानेसु = पैना करना-शान धरना, खतम करना
१२३ साद (भू) अस्सादने = स्वाद लेना
३४५ साध (दि) ससिद्धिय = सिद्ध करना
१९३ साय (भू) सायने = चाटना
२४१ सास (भू) अनुसिट्ठिय[१२७] = अनुशासन करना
४२१ सि (जि) बन्धने[१२८] = बाँधना
४४५ सि (त) वन्धने = बाँधना
२३५ सि (भृ) सेवाय[१२९] = टहल करना
१० सिक्ख (भू) विज्जोपादाने = सीखना (विद्या आदि का)
२७ सिङ्घ (भू) घायने = सूँघना
३०७ सिच (रु) क्खरणे = टपकना
३३७ सिद (दि) पाके[१३] = पकाना
१३७ सिद (भू) पाके = पकाना
१४४ सिध (भू) गमने = जाना
३४५ सिध (दि) ससिद्धिय = सिद्ध होना
* सिना (दि) सोचेय्ये = नहाना = पवित्र होना

---

१२६ ० + क्त = पसत्थ, सत्थ । ५ १४४

१२७ ० + क्ति = सिट्ठि । ५ ४९ ० + क्त = सिट्ठ, सत्थ । ५ ११७
० + क्त, तु = सत्थ, सासितु । ५ १४४
० + यक् = सिस्सो । ५ ३२

१२८ ० + ति = सिनोति । ५ ८५

१२९ ० ('नि' पूर्वक) + प्य = निस्साय । ५ ८८

१३० ० + क्त, क्तवन्तु = सिन्नो, सिन्नवा । ५ १५०

संख्या

३८२ सिनिह (दि) पीणने=स्नेह करना
२३ सिलाघ (भू) कत्थने=बखान करना
३६६ सिलिस (दि) आलिङ्गने[131]=गले लगाना
७ सिलोक (भू) सघाते=शब्द योजना (काव्य आदि के रूप मे) करना
५४३ सिस (चु) विसेसने=बचाना, बाकी रखना
२३८ सिस (भू) इच्छाय=चाहना
३२० सिव (दि) तन्तुसन्ताने=सीना
३०४ सी (भू) सये[132]=सोना
२२२ सील (भू) समाधिम्हि=शील पालन करना
५२८ सील (चु) उपधारणे=चुनना, कन कन उठाना
४३१ सु (सु) सवने[133]=सुनना
४३० सु (की) सवने[133]=सुनना
४४६ सु (त) अभिसवे=नहाना
✓ सुच (चु) पेसुञ्ञे=सूचना (खबर) देना
३२ सुच (भू) सोके=शोक करना

---

१३१ ० ('आ' पूर्वक)+क्त (भाव, कम)=आसिलिट्ठो। ५ ५०

१३२ ०+य=सेय्या ५ ४९ ० ('अधि' पूर्वक)+क्त (भाव, कम)=अधिसयितो। ५ ५८

१३३ ०+क्य=सूयमान, सूयते। ५ १७ १३९ ०+तून=सोतून, सुत्वान सुत्वा ('अल-खलु' के साथ)। ५ ६२ ०+तब्ब=सोतब्ब। ५ ८२ ०+क्त, तब्ब, तु=सुतो, सुणितब्ब, सुणितु। ५ ८५
०+ति= सुनोति। ५ ८५
०+उ=अस्सोसु, अस्सु। ६ ४०
०+ई (भूत)=अस्सोसि, असुणि
+स्स=अस्सोस्सा, असुणिस्सा
+स्सति=सोस्सति, सुणिस्सति। ६ ५०

सरया

३४४ सुध (दि) सोचेय्ये=शोधना, पवित्र करना

३९७ सुप (तु) सये[१३४]=सोना

१७३ सुभ (भू) सोभने=शोभा देना

३७७ सुस (दि) सोसने[१३५]=सूखना

२३६ सू (भू) पसवे=पैदा करना

१८ सू (भू) पस्सवने[१३६]=उत्पन्न करना

१२७ सूद (भू) क्खरणे=टपकना

१९ सूल (भू) रुजाय=दर्द होना

२३२ सेव (भू) सेवने=सेवा करना

२५८ सस (भू) ससने=वडाई करना

३८२ स्निह (दि) पीणने=प्रेम करना

८३ हठ (भू) बलक्कारे=हठ करना

३५३ हन (दि) हिसाय=हिसा करना, मारना

२९५ हन (भू) हिसाय[१३७]=हिसा करना, मारना

* हनु (भू) अपनयने=छिपाना

३६१ हर (दि) लज्जाय=लजाना, शरमाना

---

१३४ ० ('प' पूर्वक)+क्त=पसुत्त। ५ ५७

१३५ ०+क्त, क्तवन्तु=सुक्खो, सुक्खवा। ५ १५५

१३६ ०+क्त, क्तवन्तु=सूनो, सूनवा। ५ १५०

१३७ ०+य=घच्चो। ५ ३१ ०+स्साम=हञ्छेम, हनिस्साम। पटिहङ्खामि, पटिहनिस्सामि। ६ ६७ ० ('आ' पूवक)+क्त=आघातो। ५ ९९ ० ('परि' पूवक)+क्वी=पलिघो। ० ('पटि' पूवक)+क्वी=पटिघो। निपात-अघ, सघो, ओघो। ५ १०० ०+स, अ=जिघसा। ५ १०१ ०+क्त=हतो। ५ १०९ ०+ति=हन्ति। ५ १६१ ० ('आ' पूवक)+प्य=आहच्च, आहनित्वा। ५ १६६

सरया

* हर (भू) हरणे[१३८]=हरना, चुराना
२५० हस (भू) हसने=हँसना
* हस (भू) आलिक्ये=ठट्ठा करना, मजाक करना
२६५ हा (भू) चागे[१३९]=त्यागना, छोडना
३८१ हा (दि) परिहाने=हानि होना
४४२ हि (त) गतिय[१४०]=जाना
९० हिण्ड (भू) आहिण्डने=भटकना, खोजते फिरना
१२५ हिलाद (भू) सुखे=सुखी होना
५०५ हिलाद (चु) सुखे=सुखी होना
३६१ हिरि (दि) लज्जाय=लजाना, शरमाना
५५० हीळ (चु) निन्दाय=निन्दा करना
३१७ हिंस (रु) हिसाय=हिसा करना, मारना
२१५ हुल (भू) गमनत्थे=जाना
२८७ हू (भू) सत्ताय[१४१]=होना

---

१३८ ०+आ=अहा, अहरा ।+ई=अहासि, अहरि । ६ २८ ०+ण=हारा । ५ ४६ ०+अन=हारणा । ५ ४६ ०+स-अ=जिगिंसा । ५ १०२ ० ('अभि' पूर्वक)+तु=अभिहट्ठु । +त्वा=अभिहरित्वा । ५ १६५

१३९ ०+स्सति=हायिस्सति, हाहति । +स्सा=अहाहा, अहायिस्सा । ६ २५ ०+णन=हायना (वीहि) । हायनो (सवच्छरो) । ५ ३७ ०+नि=हानि । ५ ५० ०+स्सति=हाहति, जहिस्सति । ६ ६८ ०+ति, तब्ब, तु=जहाति, जहितब्ब, जहितु । ५ ७० ७९

१४० ०+ति, तब्ब=हिनोति, पहिणितब्ब
+तु, अन=पहिणितु, पहीणन

१४१ ०+स्सति=हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति । ६ ३१
०+रेसु=अहेसु, अभवु । ६ ४१

सख्या

२४६ हस (भू) तुट्ठिय=सन्तुष्ट होना

०+ओ=अहोसि, अहुवो। ६४३

० (=हेहि)+स्सति=हेहिति, हेहिस्सति। ६६६

० (=होहि)+स्सति=होहिति, होहिस्सति। ६६६

तीसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान गण-पाठ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

तीसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान गण-पाठो

व्याकरण मे कुछ ऐसे नियम आते है, जो कुछ निश्चित शब्द अथवा धातु पर ही लागू होते है। जैसे—

ध्यादीहि युत्ता २ ६—अर्थात् 'धि' आदि शब्दो के योग मे दुतिया विभक्ति होती है। *'धि' आदि शब्द आठ है*—धि, हा, अन्तरा, अन्तरेन, अभितो, परितो, सब्बतो, उभयतो।

ऊपर के सूत्र मे, इन आठो शब्दो का उल्लेख न करके, सरलता के लिए, उनका बोध 'धि-आदि' से कर लिया गया है। इस तरह, इन आठ शब्दो का एक गण हुआ, जिसका नाम 'ध्यादि' पडा, क्योकि यह गण 'धि' शब्द से आरम्भ होता है।

मोग्गल्लान व्याकरण मे ऐसे अस्सी गण है। कुछ तो छोटे छोटे गण है, जिन मे दो या तीन ही शब्द या धातु है, परन्तु, बडे बडे गणो मे उनकी सख्या तीस-चालीस तक भी है।

किसी गण को आसानी से खोज निकालने के लिए, अ-कारादि क्रम से गणो की एक सूची दे दी जाती है—

मोग्गलान गण-पाठ की सूची

अङ्गुलि	आदि	४	३५	अभिज्झा	आदि	४	८६
अज्ज	,,	४	२१	अम्मा	,,	२	६३
अणु	,,	४	६२	आदि	,,	४	६८

वद	आदि	५	३०	सद्धा	आदि	४	८४
विध	,,	३	६१	सब्ब	,,	२	१०१
विधवा	,,	४	३	साखा	,,	४	३५
वम	,,	५	४६	स	,,	५	४३
सक्करा	,,	४	३५	सील	,,	४	८८
सच्च	,,	५	१३	सुमेध	,,	२	१३०
सत	,,	३	६४ ५३	सोत	,,	३	७२
सद्द	,,	५	१०	हर	,,	२	५

पठमो कण्डो

तदमिनादीनि। १ ४७

तदमिना, सकदागामी, एकमिदाह, सविदावहारो, वलाहको, जीमूतो, सुसान, उदुक्खल, पिसाचो, मयूरो, दोवारिको, मीहो, नियको, मेखला, मागविको, सोवग्गिको, लोलुपो, मोमुहो, महिंसो, पिमोदर, पुरेक्खारो, आकासानञ्च, अञ्ञोञ्ञ, दुस्स, विहगो, द्विजो, कळभो, दक्खिति, अभिसखासि, पिदहति, पिदहन्तिच्चादयो, अपिपुब्बदयातिना, निप्फन्ना, लुत्ता, कारा, सद्दा, **इति तदमिनादि।** (आकतिगणोऽय)

(य य लक्खणेनानुपपन्न त सब्ब तदमिनादिपक्खेन साधेतब्ब।)

दुतियो कण्डो

गतिबोधाहारसद्दत्थाकम्मकभज्जादीन पयोज्जे। २ ४

भज्ज=पाके, कुट कोट्ट=च्छेदने, थर=सन्थरणे **इति भज्जादि।**

हरादीन वा। २ ५.

हर=हरणे, अज्झोपुब्ब-हर=अज्झोहारे, कर=करणे, दिस=पेक्खने, अभिवादि=(नाम धातु) अभिवादने **इति हरादि।**

न खादादीन। २६

खाद=भक्खने, अद=भक्खने, व्हे=अव्हाने, सद्दाय=(नाम धातु) सद्दकरणे, कन्द=व्हान रोदनेसु, नी=पापुणने, (अनियन्तुके कत्तरि गम्यमाने) वह=पापणे, (अहिंसाय गम्यमानाय) भक्ख=अदने, **इति खादादि।**

ध्यादीहि युत्ता। २९

धि, हा, अन्तरा, अन्तरेन, अभितो, परितो, सब्बतो, उभयतो, **इति ध्यादि** (आकतिगणोय)।

ल्तुपितादीनमा सिम्हि। २५९

पितु, मातु, भातु, धीतु, दुहितु, जामातु, नत्तु, होतु, पोतु, **इति पितादयो।**

घ ब्रह्मादिते। २६२

ब्रह्म, कत्तु, इसि, सख, मुनि, भदन्त, **इति ब्रह्मादि।** (आकतिगणोथ)

नाम्मादीहि। २६३

अम्मा, अन्ना, अम्बा, ताता, **इति अम्मादि।** (आकतिगणोय)
[सम्बोधने गस्स एकारलाभिनो घसञ्ञा सब्बे एत्थ दट्ठब्बा।]

अम्ब्वादीहि। २८०

अम्बु, पसु, **इच्चादि अम्बु–आदि।** (अयञ्चाकतिगणो)

[यस्स सद्दस्स सत्तम्येकवचने नि-आदेसो वा दिस्सति, सो'य अम्ब्वादिसु दट्ठब्बो।]

कम्मादितो। २८१

कम्म, चम्म, वेस्म, भस्म, ब्रह्म, अत्त, आतुम, घम्म, मुद्ध, (कालद्धान वाचि) अद्ध, अस्म, गाण्डीवधन्व, अणिम, लघिम, कसिम, महिम, **इच्चादि कम्मादि।** (अयम्पाकतिगणो)

[यस्स सद्दस्स सत्तम्येकवचने वा नि आदेसो, ततियेकवचने वा एनादेसो च दिस्सति, अय कम्मादिसु दट्ठब्बो।]

जन्त्वादितो णो च। २ ८९

जन्तु, गोत्रभू, सहभू एवमादि **जन्त्वादि**। (अयमाकतिगणो)

[यतो परेस योन वो-नो-आदेसा वा दिस्सन्ति, अय जन्त्वादिसु दट्ठब्बो।]

सब्बादीन नम्हि च। २ १०१

सब्ब, कतर, कतम, उभय, इतर, अञ्ञ, अञ्ञतर, अञ्ञतम, (ववत्थाय असञ्ञाय वत्तमाना) पुब्ब, पर, अपर, दक्खिण, उत्तर, अधर, य, त्य, त, एत, इम, अमु, कि, एक, तुम्ह, अम्ह **इति सब्बादि**।

[किञ्चापि कच्चानेन त्यसद्दो सब्बादिसु न पठितो, तथापि 'खिड्डा पणिहिता त्यासु रति त्यासु पतिट्ठिता' त्यादि पाळिय पयोगस्स दिस्समानत्ता 'सो' पि सब्बादिसु दट्ठब्बो।]

पदादीहि सि। २ १०७

पद, बिल **इति पदादि**।

कोधादीहि। २ १०९

कोध, अत्थ इति कोधादि

[मुखदमादीहपि परस्स नास्स सादेसो दिस्सते देसनाय।]

एकच्चादीहतो। २ १३७

एकच्च, एस, स, पठम, कतिपय, इच्चादि **एकच्चादि**।

मनादीहि स्मि-स-ना-स्मान सि-सो-ओ-सा-सा। २ १४९

मन, तम, तप, तेज, सिर, उर, वच, ओज, रज, यस, पय, (जलासयवाचि) सर, (अक्खयवाचि) वय, (लोहवाचि) अय, (पटवाचि) वास, (मनोवाचि) चेत, छन्द, **इति मनादि**।

[अञ्ञे हि तु अह-रह-सद्दापि मनादिसु पठीयन्ते, तथापि 'अह' सद्दस्स मनादिसु कारियासम्भवा, 'रह-'सद्दस्स च निपातत्ता न इह ते मनादिसु दट्ब्बानि परिक्खित्ता। यदिपि रहसीति च पयोगो दिस्सते पाळिय, तथापि एत्थापि न सत्तम्यन्तो रह-सद्दो। कित्वयमपि सत्तम्यन्तपतिरूपको विसु येव निपातो।

'मनादीन सक्' इति ४ १२८ एत्थ तु सुमेधादयो'पि मनादिसु पठीयन्ते, णानुबन्धप्पच्चये परे सकागमत्थ सकागमसुत्तमन्तरेन अञ्ञत्र तु ते'पि न मनादिसु दट्ठब्बा।]

सुमेधादीनमवुद्धि च (५)

सुमेध, भूरिमेध, मन्दमेध, अप्पमेध, **इच्चादि सुमेधादि**।

[पाणिनीयेहि समासन्तान विधानावसरे नञ्दुसु इच्चेतेहि परेहि अकारन्ते हि त्थिलिङ्गेहि पजा-मेधासद्देहि "नित्यम्सिच् प्रजामेधयो ५ ४ १२४" इच्चनेन सुत्तेन अस् विधाय सकारन्ता "अप्रजस्, दुष्प्रजस्, सुप्रजस् अमेधस्, दुर्मेधस्, सुमेधस्" इच्चेते सद्दा निप्फादीयन्ते।

[चन्दव्याकरणे तु "प्रजाया असिच् ४ ४ १०७ मन्दाल्पाच्च मेधाया ४ ४ १०८" इति सुत्तेहि द्वीहेतेहि यथावुत्ता चेव पाणिनीया तदधिका "मन्दमेधस्, अल्पमेधस्" इति सद्दा च निप्फादीयन्ते।

अस्मिमपि सद्दलक्खणे 'सुमेधादीनम वुद्धि च इति गण-सुत्तेनानेन यथावुत्तेसु तेसु सकारन्तेसु ये ये बुद्धवचने दिस्सन्ति तेसमेव सद्दान गहणन्ति मञ्ञाम।]

राजादियुवादित्वा। २ १५६

राज, ब्रह्म, सख, अत्त, आतुम, अस्म, मुद्ध, (कालद्धानवाचि) अद्ध, गाण्डीव-धन्व, (अञ्ञत्थे वत्तमानधम्मसद्दन्ता) दळ्हधम्म, पच्चक्खधम्म, कल्याणधम्म, अधीतधम्म (इच्चादयो विकप्पेन, भावे, इमप्पच्चयन्ता) अणिम, लघिम, महिम, कसिम् **इच्चादयो च राजादयो।**

युव, सा, सुवा, मघव, पुम, वत्तह **इच्चादयो युवादयो**।

(इमे'पि द्वे आकतिगमणा'व, तेन यथागममञ्ञे'पि सद्दा एत्थ दट्ठब्बा।)

दिवादितो। २ १७७

दिव, भू, **इति दिवादि**।

पितादीनमनत्वादीन। २ १७९

पितादयो दस्सितपुब्बा'व। नत्तु, होतु, पोतु, **इति नत्तादि**।

(इति स्यादि कण्डो दुतियो)

ततियो पाठो

तिट्ठग्वादीनि । ३ ७

तिट्ठगु, वहग्गु, आयतिगव, सलेयव, लूनयव, लूयमानयव, सहट्यव, उम्मत्त-गङ्ग, लोहितगङ्ग, समम्भूमि, समप्पदाति, सुसम, विसम केसाकेसि, मुट्ठामुट्ठि, दण्डादण्डि, मुसलमामुसलि, (उच्चादयो चयन्त।), पातनहान, मायनहान, पातकाल, मायकाल, पातमेघ, मायमेघ, पातमग्ग, पायमग्ग, **इच्चादि तिट्ठग्वादि** । (आकतिगणोय)

कुपादयो निच्चमस्यादि विधिम्हि । ३ १३

प, परा, अप, स, अनु, अव, ओ, नि, दु, वि, अधि, अपि, अति, सु, उ, अभि, पति,परि, उप, आ, **इति पादि**।

(किञ्चापि कच्चानेहि ओ-उपसग्ग पहाय 'वि-नी' इति द्वे उपसग्गा पठिता, तथापि इह यथा **दूरक्ख-वीनिहार-अतीसारादिसु** 'दू-वी-अतीन' दीघेन सिद्धि, तथेव नी-सद्दस्सापि दीघेन सिद्धि भवतीति, नी-सद्द पहाय ओ-उपसग्गो पठितो।)

नदादितो ङी। ३ २७

नद, मह, कुमार, तरुण, वरुण, नगर, ब्राह्मण, सूकर, हम, कुक्कुट, किसोर, कलभ, हरीतक, देव, मातामह, पितामह, विसालक्ख, सख, काळ, अतस, नीलि, पालि, भूरि, खज्जूर, बदर, कुरर, सवर, भेर, दब्बि, धमनि, वत्तनि, सकुन, सकुण, पुत्त, सोणि, दोणि, वलि, वल्लि, पञ्चम, छट्ठ, छट्ठम, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसम, कतिमादयो (पूरणत्थपच्चयन्ता) , नन्दन्त, जीवन्त, सवन्त, रोदन्त, अवन्तादयो (अन्तप्पच्चयन्ता), पचन्त, महन्त, भवन्तादयो (न्तप्पच्चयन्ता), वासिट्ठ, गोतम, माणव, ओपगव, मानुस, तापस, कोसम्ब, काकन्द, माकन्द, साहस्स, फुस्स, वेसाख, मागसिरादयो (णप्पच्चयन्ता) वच्छतर, उक्खतर अस्सतर, उसभतर, महत्तरादयो (केचि तर-पच्चयन्ता), वेनतेय्य, सामणेरादयो (णेय्य-णेरन्ता), नाविकादयो (णिकन्ता), गुणवन्त, सुतवन्त, सतिमन्त, गोमन्तादयो (न्तवन्ता), गो (विकप्पेन), पयोगतो इत्थिय वत्तमाना पुमुनो सञ्ञाभूता अपालकन्ता सद्दा **इच्चादि नदादि**। (आकतिगणोय)

[यतो यतो नामस्मा इत्थिय डीपच्चयो दिस्मते, सो नदादिसु दट्ठब्बो। कुतोचि नामस्मा डीपच्चयो विकप्पेन भवति। कुतोचि निच्च। तस्मा यथा यथा जिनवचने दिस्सति, तथा तथा एव डीपच्चयो नदादितो दट्ठब्बो।]

यक्खादित्विनी च। ३ २८

यक्ख, नाग, सीह, सपत्ति, **इच्चादि यक्खादि**। (आकतिगणोय)

आरामिकादीहि। ३ २९

आरामिक, अनन्तरायिक, राज, दोहळ, (सञ्ञाय गम्यमानाय) मानुस एवमादि **आरामिकादि**। (आकतिगणोय)

घरण्यादयो। ३ ३२

घरी, पोक्खरी, उदरी, वपुलत्थप्पकासी, मनोरथपूरी, पपञ्चसूदी, तिरोकरी, आचरिय एवमादि **घरण्यादि**। (आकतिगणोय)

मातुलादित्वानी भरियाय। ३ ३३

मातुल, वरुण, इन्द, गहपति, आचरिय, (अभरियाय) खत्तिय, अय्यक एवमादि **मातुलादि**।

पापादीहि भूमिया। ३ ४१

पाप, जाति इति **पापादि**।

मनाद्यपादीनमो मये च। ३ ५९

मानदि वुत्तपुब्ब। आप, दिसा, अह, रह, वाय, सरद इच्चादि **आपादि**। (आकतिगणोय)

कुम्भादिसु वा। ३ ७२

कुम्भ, पत्त, बिन्दु **इच्चादि केम्भादि**। (आकतिगणोय)

सोतादिसू लोपो। ३ ७३

सोत, रक्खस, आसय इच्चादि **सोतादि**। (आकतिगणोय)

[येसु सद्देसु परेसु उदकसद्दस्स उकारो लुप्पते, ते सद्दा नोनादिसु दट्ठब्बा। केचि तु दकसद्दमेविच्छन्ति, नेवुलोप।]

नखादयो। ३ ७६

नख, नकुल, नपुसक नक्खत्त, नाक, नमुचि, नक्क, एवमादि **नखादि**। (आकतिगणोय)

समानस्स पक्खादिसु वा। ३ ८३

पक्ख, जोति, जनपद, रत्ति, पत्तिनि, पत्ती, नाभि, बन्धु, ब्रह्मचारी, नाम, गोत्त, रूप, ठान, वण्ण, वयो, वचन, धम्म, जातिय, घच्च इति **पक्खादि**।

विधादिसु द्विस्स दु। ३ ६१

विध, पट्ट, रत्ति, अङ्ग, (हळादेसलाभि) हृदय, इति **विधादि**।

दि गुणादिसु। ३ ६२

गुण, रत्ति, गो, पद, सत, सहस्स, वचन, इति **गुणादि**।

आ सङ्ख्यायासतादो नञ्ञत्थे। ३ ६४

सह, सहस्स, सतसहस्स, लक्ख, कोटि, एवमादि **सतादि**।

चत्तालीसादो वा। ३ ६६

चत्तालीस, पञ्ञास, सट्ठि, सत्तति, असीति, नवुति, इति **चत्तालीसादि**।

(इति समासकण्डो ततियो)

चतुत्थो कण्डो

वच्छादितो णान-णायना। ४ २

कच्छ, कच्च, कातिय, मोग्गल्ल, सकट, (ब्राह्मणे) कण्ह, अस्सल, बदर, अग्गिवेस्स, मुञ्ज, कुञ्ज, हरित, गग्ग, दक्ख, दोण एवमादि **वच्छादि**। (आकतिगणोय)

[उभो णान-णायना उभिन्नमञ्ञतरो वा येहि दिस्सते ते सब्बे वच्छादिसु दट्ठब्बा।]

कत्तिकाविधवादीहि णेय्य-णेरा। ४ ३

कत्तिका, विनता, भगिनी, रोहिनी, अत्ति, पण्हि, गङ्गा, नदी, अन्त, अहि, कपि, सुचि, बाला, इच्चादि **कत्तिकादि**। (आकतिगणोय)

[येभुय्येन घपसञ्ञा अञ्ञे च केचि अत्ति पण्हि इच्चादयो एत्थ दट्ठब्बा।]

विधवा, वन्धकी, नाळिकी, समण, चटक, गोधा, काण, दासी इच्चादि **विधवादि**। (आकतिगणोय)

[यतो णेर-प्पच्चयो दिस्सति सो विधवादिसु दट्ठब्बो।]

ण्य दिच्चादीहि। ४ ४

दिति, अदिति, कुण्डनी, गग्ग, भातु, कत, मुग्गल, वच्छ, अग्गिवेस्स, इच्चादि **दिति-आदि**। (आकतिगणोय)

[येहि ण्यो दिस्सति ते दिच्चादिसु दट्ठब्बा। सक्कते गग्गादिगणतोपि यो यो इध जिनवचने लब्भति सो' पि एत्थेव दट्ठब्बो।]

अज्जादीहि तनो। ४ २१

अज्ज, स्वे, हिय्यो, साय इति **अज्जादि**।

मज्झादित्विमो। ४ २४

मज्झ, अन्त, हेट्ठा, उपरि, ओर, पार, पच्छा, अब्भन्तर, पच्चन्त इति **मज्झआदि**।

गवादीहि यो। ४ ३५

गो, कवि, दु इति **गो-आदि**।

साखादीहि इयो (४३)

साखा, मेघ, कुसग्गिय इति **साखा-आदि**।

मुखादीहि यो (४४)

मुख, जघन, इति **मुखादि**।

सक्करादीहि णो (४६)

सक्करा, कपालिका इति **सक्करादि**।

अङ्गुल्यादीहि ण्कि (४७)

अङ्गुलि, मुनि, बाल, कुलिम, एकमाला, कवक, लोहित इति **अङ्गुल्यादि।**

सञ्जात तारकादित्वितो। ४४५

तारका, पुप्फ, पल्लव, फल, कण्टक, कण्टक, सुत्त, मुत्त, उच्चार, विचार, पचार, मुकुळ, कुसुम, थवक, किसलय, कुतहल, निद्दा, मुद्दा, नन्दा, बुभुक्खा, पिपासा, मुच्छा, जिगुच्छा, सका, आसङ्का, सद्द, सुख, दुक्ख, उक्कण्ठा, बाधा, आबाधा, भर, व्याधि, अन्ध, वधिर, पण्ड, भसय, विम्हय, एवमादि **तारकादि।** (आकतिगणोय)

तस्स पूरणेकादसादितो वा। ४५१

एकादस—अट्ठारस, एकूनवीसति—एकूनतिसति—एकूनचत्तालीस—एकूनपञ्ञास—अट्ठपञ्ञास इति **एकादसादि।**

म पञ्चादिकतीहि। ४५२

पञ्च, सत्त, अट्ठ, नव, दस—अट्ठादस, एकूनवीसति—एकूनतिसति इच्चादि **पञ्चादि।**

[छ-सङ्ख्याय सतादीहि च विना तदितरेहि येहि सङ्ख्यासद्देहि मप्पच्चयो दिस्सते ते सब्बे पञ्चादिसु दट्ठब्बा।]

सतादीनमि च। ४५३

सत—दससत, सहस्स—सतसहस्स इति **सतादि।**

वच्छादीहि तनुत्ते तरो। ४५६

वच्छ, उक्ख, अस्स, उसभ, इति **वच्छादि।**

अण्वादित्विमो। ४६२

अणु, लघु, महन्त, किस, गरु इति **अण्वादि।**

जनादीहि ता। ४६९

जन, गज, बन्धु, गाम, सहाय, नगर इति **जनादि।**

चक्खवादितो स्सो । ४७१

चक्खु, आयु इति **चक्खवादि।**

कथादित्विको। ४७४

कथा, वम्मकथा, सङ्गाम, पवास, उपवास इति **कथादि।**

पथादीहि णेय्यो। ४७५

पथ, सपति, पदीप इति **पथादि।**

दण्डादित्विक ई वा। ४८०

दण्ड, गन्ध, रूप, रस, सीस, केस, सस, धम्म, सङ्घ, ञाण, गण, चक्क, पक्ख, दाठा, रट्ठ, कुट्ठ, जटा, छत्त, मन्त, योग, भोग, भाग, चाग, काम, धज, यान, कर, कुसल, मुसल, कखा, विचिकिच्छा, धनसद्दो, (असम्पत्ते वत्तब्बे) अत्थसद्दो, पुञ्ञत्थ, धम्मत्थ, धनत्थादयो ('अत्थ' सद्दन्ता)। ब्रह्मवण्ण, देववण्ण, सुवण्ण, वण्णादयो (वण्णन्ता), (जातिय गम्यमानाय) हत्थ, दन्तसद्दा, (ब्रह्मचारिणि वाचिनि) वण्णसद्दो, (देसे वत्तब्बे) पोक्खर, उप्पल, कुमुद,भिस, मुळाल, सालूक, पदुम, कद्दमादि, पोक्खरादि, (क्वचि अदेसे'पि) पदुमसद्दो, नावासद्दो, सुख, दुक्खसद्दा च, सिखा, माला, सील, बल, मेखला, वीणा, सञ्ञा, वळवा, अट्ठका, बलाका, पताका, कम्म, वम्म, उस्साह, कूल, मूल, आयाम, वायाम, उपयाम, आरोह, अवरोह, एवमादि सिखादि, वाहुबल, ऊरुबल सद्दा च इच्चादि **दण्डादि।** (आकति-गणोय)

तपादीहि स्सी । ४२१

तप, यस, तेज, मन, पय, इति **तपादि ।**

मुखादितो रो ४८२

मुख, सुसि, ऊस, मधु, ख, कुञ्ज, नग, नख, (उन्नतदन्ते वत्तब्बे) दन्त, रुचि, सुभ, सुचि, इति **मुखादि ।**

तुट्ठ्यादीहि भो। ४८३

तुट्ठि, सालि, वलि, इति **तुट्ठ्यादि ।**

आल्वभिज्झादीहि। ४ ८६

अभिज्झा, सीत, धज, दया, सद्धा, निद्दा, इति **अभिज्झादि।**

पिच्छादित्विलो। ४ ८७

पिच्छ, फेण (फेन), जटा, वाचा, तुण्ड इच्चादि **पिच्छादि** । (आकतिगणोय)

सीलादितो वो। ४ ८८

सील, केस, अण्ण, (मञ्ञाय वत्तब्बाय) गाण्डी, राजी च एवमादि **सीलादि।** (आकतिगणोय)

अभ्यादीहि। ४ ९७

अभि, परि, पच्छा, हेट्ठा, ओर, पार, पुगादि **अभ्यादि।**

आद्यादीहि। ४ ९८

आदि, मज्झ, अन्त, पिट्ठि, पस्स, मुग, य, एवमादि **आद्यादि** ।

[ससख्येहि तन्तुल्येहि चापञ्चभ्यन्तहि यहि तो दिस्सति ते आद्यादिसु दट्ठब्बा।]

(इति णादिकण्डो चतुत्थो)

पञ्चमो कण्डो

सद्दादीनि करोति। ५ १०

सद्द, वेर, कलह, धूप, अब्भ, मेघ, अट्ट, सुदिन, दुद्दिन, नीहार, इच्चादि **सद्दादि।**

सच्चादीहापि। ५ १३

सच्च, अत्थ, वेद, सुक्ख, सुख, दुक्ख, एवमादि **सच्चादि।**

चुरादितो णि। ५ १५

चुरादि, भुवादि, रुधादि, दिवादि, तुदादि, ज्यादि, क्यादि, स्वादि, तनादि, इच्चेते धातुगणा **धातुपाठतो येवावगन्तब्बा।**

वदादीहि यो। ५ ३०

वद=वचने, मद=उम्मादे, अम, गम=गमने, गद=वचने, पद=गमने, अद, खाद=भक्खने, दन=दमने, (अन्ते'भिधेय्ये) भुज=पालनज्झोहारेसु (सञ्ञाय वत्तब्बाय), भर=भरणे एवमादि **वदादि**। (आकतिगणोय)

गुहादीहि यक्। ५ ३२

गुह=सवरणे, दुह=प्पपूरणे, सास=अनुसिट्ठिय, एवमादि **गुहादि**। (आकतिगणोय)

समानञ्ञभवन्तयादितूपमाना दिसा कम्मे रीरिक्खका। ५,४३

य, त्य, त, एत, इम, अमु, कि, एक, तुम्ह, अम्ह, इति **यादि**।

वमादीहथु। ५ ४६

वम=उग्गिरणे, वेप, कम्प=चलने, दू=परितापे, सी=सये इति **वमादि**।

पदादीन क्वचि। ५ ९२

पद=गमने, मद=उम्मादे, बुध=ञाणे, युध=सम्पहारे, मन=ञाणे, रुध=आवरणे, मुह=वेचित्ते, तुस=तुट्ठिय, नस=अदस्सने, भस=अधोपतने, सुस=सोसे, कुप=कोपे, सीव=तन्तुसन्ताने, पूज=पूजाय इच्चादि **पदादि**। (आकतिगणोय)

गमादिरान लोपो'न्तस्स। ५ १०९

अम, गम=गमने, खन, खण=अवदारणे, हन=हिंसाय, मन=ञाणे, तन=वित्थारे, यम=उपरमे, रम=कीळाय, नम=नमने, एवमादि **गमादि**। (आकतिगणोय)

ञादिस्सास्सि क्ये। ५ १३७

ञा=अवबोधने, ता=पालने, पा=रक्खने, खा-रया=कथने, वा=गमने, झा=चिन्ताय, दा=अवखण्डने, गिला=हासक्खये, मिला=गत्तविनामे इच्चादि **ञादि**। (आकतिगणोय)

पुच्छादितो। ५ १४३

पुच्छ=पुच्छने, भज्ज=पाके, यज=देवपूजासङ्गतिकरणदानेसु, सज=सङ्गे, सज=विस्सज्जनालिङ्गननिम्मानेसु, मज्ज=ससुद्धिय, हर=हरणे, इच्चादि **पुच्छादि**। (आकतिगणोय)

रुहादीहि हो ळ च। ५ १४८

रुह=जनने, गुह=संवरणे, वह=पापुणने, वह-ब्रह-ब्रूह=वुद्धिय, इच्चादि **रुहादि**। (आकतिगणोय)

भिदादितो नो क्तक्तवन्तून। ५ १५०

भिद=विदारणे, छिद=द्वेधाकरणे, छद=संवरणे, खिद=असहने, पद=गमने, सिद=पाके, सद=विसरणगत्यवसादनादानेसु, पी=तप्पने, सु=पसवे, दी=खये, डी-ळी=आकासगमने, ली=सिलेसने, लू=च्छेदने, रुद=रोदने, एवमादि **भिदादि**। (आकतिगणोय)

किरादीहि णो। ५ १५२

किर=विकिरणे, पूर=पूरणे, खी=खये, तुद=व्यथने, एवमादि **किरादि**। (आकतिगणोय)

तरादीहि रिण्णो। ५ १५३

तर=तरणे, जर=वयोहानिय, चि=चये, एवमादि **तरादि**। (आकतिगणोय)

गो भञ्जादीहि। ५ १५४

भञ्ज=ओमद्दने, लभ=सङ्गे, मुज्ज=मुज्जने, विज=भयचलनेसु एवमादि भञ्जादि। (आकतिगणोय)

(इति खादिकण्डो पञ्चमो)

(इधाम्हेहि आकतिगणत्तेन नोपदिट्ठापि आदिसद्दोपलक्खिता सब्बे आकतिगणोयेव। यतो इध वुत्तानमादिसद्दोपलक्खितगणानमाकारमादस्सयमिदमाह सद्-

लक्खणकत्तायेव। यथा चायमाकतिगणो तथा ञ्ञत्रापि आदिसद्दोपलक्खिता गणा आकतिगणाति दस्सेतुमाह एवमञ्ञत्रापि।

आकति इति

च जाति वुच्चति तप्पधाना गणा आकतिगणा।)

इति मोग्गल्लान गण-पाठो

चौथा परिशिष्ट

समास, स्त्री-प्रत्यय, समासान्त

समास-तालिका

पुव पद	उत्तर पद	विकार	उदाहरण	सुत्त संख्या	पृष्ठ संख्या
न	×	अ ×	न ब्राह्मणो–अब्राह्मणो	३ १२, ७४	२७४
कुच्छितो	×	कु ×	कुच्छितो ब्राह्मणो–कुब्राह्मणो	३ १३	२७५
ईसक	×	कद ×	ईसक उण्ह–कदुण्ह	३ १३	२७५
×	(अप्रधान) घ, प	× ह्रस्व	बहुमालो पोम्पो । निक्कोसम्बि	३ २४	२७०
×	गो	× गु	चित्ता गावो यस्स–चित्तगु	३ २५	२७०
इम	×	इद ×	इमेस पच्चया–इदप्पच्चया	३ ५५	२७३
पुम	×	पु ×	पुमस्स लिङ्ग–पुलिङ्ग	३ ५६	२७३
न्त, न्तु	×	अ ×	भवम्पतिट्ठा मय–भगवम्मूलको नो धम्मो ।	३ ५७	२७०
न्तु	×	न्त ×	गुणवन्तपतिट्ठो	३ ५८	२७०
मन	×	मनो ×	मनोसेट्ठा । मनोमया	३ ५९	२७०
पर	(संख्यावाचक)	परो ×	परोसत । परोसहस्स	३ ६०	२६९
पुथ	जनो	पुथु ×	पुथुज्जनो	३ ६१	२७५
छ	अह । आयतन	स ×	साह (=छाह) । सळायतन	३ ६२	२७५
ल्तु	×	तार ×	सत्थुनो दस्सन–सत्थारदस्सन	३ ६३	२७३
ल्तु	(विज्जा, योनि)	ता ×	होतापोतारो	३ ६४	२८०
पितु	पुत्त	पिता ×	पितापुत्ता	३ ६५	२८०
(इत्थिय)	(समानाधिकरण)	(पुमेव) ×	कुमारी भरिया यस्स सो–कुमारभरियो	३ ६७	२७१
(इत्थिय) सब्बादि	(वुत्तिमत्त)	(पुमेव) ×	तस्सा मुख–तम्मुख	३ ६९	२७४
जाया	पति	जय ×	जाया च पति च–जयम्पती	३ ७०	२८०
उदक	× (सञ्ञाय)	उद ×	उदकस्स पान–उदपान	३ ७१	२७८

पूव पद	उत्तर पद	विकार	उदाहरण	सूत्र सख्या	पृष्ठ सख्या
उदक	सोत	दक ×	उदकस्स सोत—**दकसोत**	३ ७३	२७४
न	(स्वर)	अन ×	न अक्खात—**अनक्खात**	३ ७५	२७४
सह	×(अञ्ञ-त्थे)	स ×	**सपुत्तो** (सहपुत्तो)	३ ७८-८२	२६८,२७१
समान	(पक्खादि)	स ×	समानो पक्खो—**सपक्खो**	३ ८३-८५	२७१,२७६
तुम्ह	×	त ×	**तसरणा। तन्दीपा**	३ ८६	२७१
अम्ह	×	म ×	**मसरणा। मन्दीपा**	३ ८६	२७१
द्वि	विध(आ-दि)	दु ×	**दुविधो। दुप्पट**	३ ९१	२७२
द्वि	गुण(आदि)	दि ×	**दिगुण। दिरत्त। दिगु**	३ ९२	२७२
द्वि	ति	द्व ×	**द्वत्तिखत्तु**	३ ९३	२७२
द्वि	(असातादि सख्या)	द्वा ×	**द्वादस। द्वावीसति**	३ ९४	१६८
ति	,,	ते ×	**तेरस। तेवीसति।**	३ ९५	१६८
ति	(चत्तालीसादि)	ति, ते×	**तेचत्तालीस। तिचत्तालीस**	३ ९६	१७१
द्वि	(अचत्तालीसादि)	बा ×	**बारस। बावीसति**	३ ९८	१६८
पञ्च	दस	पन्न ×	**पन्नरस** (पञ्चदस)	३ ९९	१६८
पञ्च	बीसति	पण्ण ×	**पण्णुवीसति** (पञ्चवीसति)	३ ९९	१६८
चतु	दस	चु, चो×	**चुद्दस, चोद्दस, चतुद्दस**	३ १००	१६८
छ	दस	सो ×	**सोळस**	३ १०१	१६९
एक	दस	एका×	**एकादस**	३ १०२	१६८
अट्ठ	दस	अट्ठा×	**अट्ठादस**	३ १०२	१६८
(सख्यावाचक)	दस	× रस	**एकारस** (एकादस)	३ १०३	१६८
छ। ति	दस	× ळस	**सोळस**(सोरस)। **तेळस** (तेरस)	३ १०४	१६८
कु (अप्पत्थे)	×	का ×	अप्पक लवण—**कालवण**	३ १०८	२७५
कु	पुरिस	का ×	**कापुरिसो**	३ १०९	२७५
(पुब्बादि)	अह	× अन्ह	**पुब्बन्हो। सायन्हो**	३ ११०	२७६

स्त्रि. प्रत्यय

प्रत्यय	प्रयोग-स्थान	उदाहरण	सूत्र सख्या	पृष्ठ
आ	अकारान्ततो	धम्मदिन्ना	३ २६	२३९,२४२
ङी	नदादितो	नदी, मही, कुमारी	३ २७	२४०
ङी	न्तन्तून तो वा	गच्छती, गच्छन्ती। सील-वती, सीलवन्ती।	३ ३६	२४०
ङी	भवतो भोतो	भोती, भवन्ती	३ ३७	२४०
ङी	गोस्सावङ्	गावी	३ ३८	२४०
ङी	पुथुस्स पथव-पुथवा	पथवी, पुथवी	३ ४०	२४०
इनी	यक्खादितो	यक्खिनी, यक्खी	३ २८	२४०
इनी	आरामिकादीहि	आरामिकिनी	३ २९	२४१
नी	इ-उवण्णेहि	दण्डिनी, भिक्खुनी	३ ३०	२४१
नी	क्तिम्हा अञ्ञत्थे	साह अहिंसारतिनी	३ ३१	२४१
आनी	मातुलादितो	मातुलानी (भरियाय)	३ ३३	२४२
ऊ	उपमानादिपुब्बा	करभोरू, वामोरू	३ ३४	२४२
ति	युवा	युवति	३ ३५	२४२

समासान्त प्रत्यय

अ	पापादीहि भूमिया	पापभूम। जातिभूम	३ ४१	२८४
अ	सख्याहि भूमिया	द्विभूम। तिभूम	३ ४२	२८४
अ	नदी गोदावरीन	पञ्चनद। सत्तगोदावर	३ ४३	२८४
अ	अङ्गुल्या	निग्गतमङ्गुलीहि—निरङ्गुल	३ ४४	२८४
अ	रत्तिया	दीघरत्त। अहोरत्त	३ ४५	२८४
अ	'गो' सद्दा	राजगवो। परमगवो	३ ४६	२८५
अ	अक्खिस्मा	विसालक्खो	३ ४९	२८५
अ	अङ्गुलन्ता (दारुम्हि)	पञ्चङ्गुल दारु	३ ५०	२८५
चि	वीतिहारे	केसाकेसि। दण्डादण्डि	३ ५१	२८५
क	ल्तु-ई-ऊ कारन्तेहि	बहुकत्तुको। बहुकुमारिको	३ ५२	२८६
क	अञ्ञेहि अञ्ञपदत्थे	बहुमालको	३ ५३	२८६

पाँचवाँ परिशिष्ट

तद्धित

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पाँचवाँ परिशिष्ट

तद्धित प्रत्यय लगाने के साधारण नियम

साधारण नियम

'ण' अनुबन्ध

१ प्रत्यय में यदि 'ण' अनुबन्ध लगा हो, तो शब्द के प्रथम 'अ', 'इ' तथा 'उ' का क्रमश 'आ', 'ए' तथा 'ओ' होता है। जैसे —रघु+ण=राघवो।

२ यदि 'ण' अनुबन्ध वाला कोई स्वरादि प्रत्यय हो, तो शब्द के अन्त्य 'उ' का 'अव' होता है। जैसे —रघु+ण=राघवो।

३ शब्द के प्रथम 'अ', 'इ' तथा 'उ' से परे, यदि कोई सयुक्त अक्षर हो, तो उनका कभी-कभी 'आ', 'ए' तथा 'ओ' नही भी होता है। जैसे —कत्तिका+णेय्य=कत्तिकेय्यो।

४ कभी-कभी, बीच के 'अ-इ-उ' का भी 'आ-ए-ओ' हो जाता है। जैसे —वसिट्ठ+ण=वासेट्ठो।

'र' अनुबन्ध

५ प्रत्यय में यदि 'र' अनुबन्ध लगा हो, तो शब्द के अन्तिम स्वर से ले कर आगे के अश का लोप होता है। जैसे—पितु+रेय्यण=('पितु' के 'इतु' का लोप) पेत्तेय्य।

---

(१) ४१२४। (२) ४१२६। (३) ४१२५। 'कात्तिकेय्यो' नही हुआ, क्योकि 'क' से परे सयुक्त अक्षर 'त्त' है। (४) ४१२६। (५) ४१३२।

'ड' प्रत्यय

६ 'ड' प्रत्यय आने से, 'सत्यन्त' संख्या वाचक शब्द* के 'ति' का लोप होता है। जैसे —वीसति+ड=वीस। तिस।

स्त्री प्रत्यय लगने पर

७ ककारान्त शब्द से परे, यदि स्त्री-प्रत्यय 'आ' आवे, तो 'क' के पव 'अ' का बहुधा 'इ' होता है। जैसे बालक+आ=बालिका। कारिका।

---

(६) ४ १३४।
* जैसे—विसति।
(७) ४ १४२।

तद्धित प्रत्ययों की सूची

क्रम सख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र सख्या	पृष्ठ सख्या
१	**अ**	सद्धो	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ८४	१९६
२	**अच्चो**	अमच्चो	तत्र भवे	४ २३	२६१
३	**अय**	उभय, द्वय	परिमाणे	४ ४९	२४८
४	**आकी**	एकाकी	असहाये	४ ५५	२४८
५	**आमह**	मातामहो	मातापितुसु	४ ३८	२६९
६	**आमी**	सामी	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ९०	१९७
७	**आलु**	अभिज्झालु	,,	४ ८६	१९६
८	**आवन्तु**	यावन्त, तावन्त	,,	४ ४३	२४६
९	**इक**	दण्डिको	,,	४ ८०	१९४
१०	**इक**	कथिको	तत्थ साधु	४ ७४	२६३
११	**इट्ठ**	पापिट्ठो	अतिसये	४ ६४	२४८
१२	**इत**	तारकित	सजात इच्चत्थे	४ ४५	२४७
१३	**इम**	पाकिम	भावा तेन निब्बते	४ ६३	२५२
१४	**इम**	अणिमा, लघिमा	भावे	४ ६२	२०६
१५	**इम**	सतिमो, सहस्सिमो	पूरणे	४ ५३	१७६
१६	**इम**	मज्झिमो, अन्तिमो	तत्र भवे	४ २४	२६२
१७	**इम**	पुत्तिमो	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ९४	१९२
१८	**इय**	पापियो	अतिसये	४ ६४	२४८
१९	**इय**	अधिपतिय, पण्डि-तिय	भावे	४ ५९	२०३
२०	**इय**	देवियो	तेन दत्ते	४ ५८	२५२
२१	**इय**	गामियो, उदरियो	तत्र भवे	४ २५	२६२
२२	**इय**	खत्तियो	अपच्चे	४ ७	२५६
२३	**इय**	पुत्तियो	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ९४	१९२
२४	**इय**	उपादानिय	तस्स हिते	४ ७०	
२५	**इल**	पिच्छिलो	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ८७	१९६
२६	**इस्सिक**	पापिस्सिको	अतिसये	४ ६४	२४८
२७	**ई**	दण्डी	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ८०	१९४
२८	**उवामी**	सुवामी	,,	४ ९०	१९७
२९	**एधा**	द्वेधा	पकारे	४ ११२	२१९

क्रम सख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र सख्या	पृष्ठ सख्या
३०	क	राजञ्ञकमानुस्सक	समूहे	४ ६८	२६०
३१	क	एको	असहाये	४ ५५	२४८
३२	क	एकको	असहाये	४ ५५	२४८
३३	क	पञ्चक, छक्क	त अस्स परिमाण	४ ४१	२४६
३४	क	समणको	निन्दिते	४ ४०	२४६
३५	क	अस्सको(कस्साय?)	अञ्ञाते	४ ४०	२४६
३६	क	तेलक, घतक	अप्पत्थे	४ ४०	,,
३७	क	बलिवद्दको (बलि-वद्दो विय)	पटिभागत्थे	४ ४०	,,
३८	क	मानुसको, रुक्खको	रस्से	४ ४०	,,
३९	क	पुत्तको, वच्छको	दयाय	४ ४०	,,
४०	क	मोरको	सञ्ञाय	४ ४०	,,
४१	क	पदको	त अधीते,त जानाति	४ १४	२४९
४२	कण्	मागधको,आरञ्ञको	तत्र भवे	४ २५	२६२
४३	क्खत्तु	द्विक्खत्तु	वारे	४ ११४	२१९
४४	ची	धवली (करोति)	अभूततब्भावे	४ ११९	२२०
४५	छ	मातुच्छा	मातितो, पितितो भगिनिय	४ ३७	२५८
४६	जातियो	पटुजातियो	पकारे	४ ११३	२६०
४७	ज्झ	एकज्झ	,,	४ १११	२१९
४८	ञो	राजञ्ञो	जातिय	४ ६	२५६
४९	ञ्ञ	कम्मञ्ञ	तत्थ साधु	४ ७३	२७३
५०	ट्ठ	छट्ठो	पूरणे	४ ५४	१७५
५१	ट्ठम	छट्ठमो	पूरणे	४ ५४	१७५
५२	ड	एकादसो, वीसो	तस्स पूरणे	४ ५१	१७५
५३	ड	वीस (सत)	अधिकाय सख्याय	४ ५०	१७३
५४	ण	काक	समूहे	४ ६८	२६०
५५	ण	आयस, ओदुम्बर	तस्स विकारावयेसु	४ ६६	२५९
५६	ण	कच्चायन	तस्सेद	४ ३४	२५८
५७	ण	गारव, अज्जव	भावे	४ ५९	२०३
५८	ण	पोरिस	उद्ध परिमाणे	४ ४८	२४८
५९	ण	पुराणो	तत्र भवे	४ २८	२५०

क्रम सख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र सख्या	पृष्ठ सख्या
६०	ण	ओदको, मागधो	तत्र भवे	४२०	२६१
६१	ण	ओदुम्बरो	त इध अत्थि	४१९	२६५
६२	ण	कोसम्बी	तेन निब्बते	४१८	२५१
६३	ण	वेदिस	अदूर-भवे	४१७	२५७
६४	ण	सेव्यो	निवासे	४१६	२५७
६५	ण	वास्यतो	तस्स विमये देसे	४१५	२५७
६६	ण	वेय्याकरणो	त अधीते, त जानाति	४१४	२४९
६७	ण	सोगतो	सास्स दवता	४१३	२४४
६८	ण	फुस्सी (रत्ति)	नक्खत्तेन युत्ते	४१२	२५१
६९	ण	हालिद्द	तेन रक्त	४११	२५१
७०	ण	मागधो	अपच्चे	४९	२५७
७१	ण	वासिट्ठो	अपच्चे	४१	२५४
७२	ण (अवयव)	लक्खणो	त एत्थ अस्स अत्थि	४८१	१९५
७३	ण	तापसो	,,	४८५	१९६
७४	णान	वच्छानो	अपच्चे	४२	२५४
७५	णायन	वच्छायनो	अपच्चे	४२	२५४
७६	णि	वारुणि	,,	४५	२५६
७७	णिक	वेनयिको, सुत्तन्तिको	त अधीते, त जानाति	४१४	२४९
७८	णिक	सारदिको	तत्र भवे	४२६	२६२
७९	णिक	वेणिको	तमस्स सिप्प	४२७	२४५
८०	णिक	पसुकूलिको	तमस्स सील	४२७	,,
८१	णिक	तेलिको	तमस्स पण्य	४२७	,,
८२	णिक	चापिको, मुग्गरिको	तमस्स पहरण	४२७	,,
८३	णिक	ओपधिक	तमस्स पय्योजन	४२७	,,
८४	णिक	साकुणिको	त हन्ति	४२८	२५०
८५	णिक	सन्दिट्ठिक	त अरहति	४२८	,,
८६	णिक	पारदारिको, मग्गिको	त गच्छति	४२८	,,
८७	णिक	सामाकिको	त उञ्छति	४२८	,,
८८	णिक	धम्मिको	त चरति	४२८	,,
८९	णिक	कायिक	तेन कत	४२९	२११

क्रम सख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र सख्या	पृष्ठ सख्या
९०	णिक	सातिक	तेन कीत	४२९	२११
९१	णिक	आयसिको,पासिको	तेन बद्ध	४२९	,,
९२	णिक	घातिक, दाधिक	तेन अभिसङ्खत, ससट्ठ	४२९	,,
९३	णिक	जालिको	तेन हतहन्ति वा	४२९	,,
९४	णिक	अक्खिक	तेन जित जयति वा	४२९	,,
९५	णिक	कुद्दालिको	तेन खणति	४२९	,,
९६	णिक	नाविको,गोपुच्छिको	तेन तरति	४२९	,,
९७	णिक	रथिको	तेन चरति	४२९	,,
९८	णिक	असिको, सीसिको	तेन वहति	४२९	,,
९९	णिक	वेतनिको, भतिको	तेन जीवति	४२९	,,
१००	णिक	पोनोभविको	तस्स सवत्तति	४३०	२५२
१०१	णिक	मत्तिक, पेत्तिक	ततो सभूतमागत	४३१	२५३
१०२	णिक	रुक्खमूलिको	तत्थ वसति	४३२	२६२
१०३	णिक	लोकिको	तत्थ विदितो	४३२	,,
१०४	णिक	चातुम्महाराजिको	तत्थ भत्तो	४३२	,,
१०५	णिक	दोवारिको	तत्थ नियुत्तो	४३२	,,
१०६	णिक	सङ्घिक	तस्सेद	४३३	२५७
१०७	णिक	दोणिको	त अस्स परिमाण	४४१	२४६
१०८	णिक	कप्पासिक	तस्स विकारावयेसु	४६६	२५९
१०९	णिक	आपूपिक	समूहे (=अचतेनमें)	४६८	२६०
११०	णिय	आलसिय, कालुसिय	भावे	४५९	२०३
१११	णेय्य	पब्बतेय्यो	तत्र भवे	४२५	२६२
११२	णेय्य	दक्खिणेय्यो	अरहत्थे	४७६	२५०
११३	णेय्य	पाथेय्य	तत्थ साधु	४७५	२६३
११४	णेय्य	एणेय्य, कोसेय्य	तस्स विकारावयेसु	४६६	२५९
११५	णेय्य	सोचेय्य,आधिपत्तेय्य	भावे	४५९	२०३
११६	णेय्यक	बाराणसेय्यको	तत्र भवे	४२५	२६२
११७	ण्य	सब्भो, पारिसज्जो	तत्थ साधु	४७२	२६३
११८	ण्य	आलस्य, ब्राह्मञ्ञ	भावे	४५९	२०३
११९	ण्य	कोरव्यो	रञ्ञे	४१०	२५७
१२०	तग्घ	जाणुतग्घ	उद्ध पारिमाणे	४४७	२४७

क्रम सख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र सख्या	पृष्ठ सख्या
१२१	**तन**	अज्जतनो	तत्र भवे	८२१	२६१
१२२	**तम**	तापतमो	अतिसये	४६४	२४८
१२३	**तर**	पापतरो	अतिसये	४६४	२४८
१२४	**तर**	वच्छतरो	तनुत्ते	४५६	२५६
१२५	**ता**	नीलता	भावे	४५६	२०३
१२६	**ता**	जनता	समूहे	४६६	२६०
१२७	**ति**	युवति	स्त्री	४३५	२५८
१२८	**तो**	गामतो	पञ्चम्यत्ये	८६५	२१५
१२९	**त्त**	नीलत्त	भावे	८५६	२०३
१३०	**त्तक**	यत्तक	त अस्स परिमाण	४८२	२८६
१३१	**त्तन**	वेदनत्तन,पुथुज्जन-त्तन	भावे	८५६	२०३
१३२	**त्थ**	सब्बत्थ	सत्तम्यन्ते	८६६	२१६
१३३	**त्र**	सब्बत्र	,,	४,६६	२१६
१३४	**था**	सब्बथा	पकारे	४१०८	२१०
१३५	**दा**	सब्बदा	सत्तम्यन्ते	४१०५	२१७
१३६	**धा**	द्विधा, बहुधा	पकारे	४११०	२१८
१३७	**धि**	सब्बधि	सत्तम्यन्ते	४१०१	२१६
१३८	**नण्**	योब्बन	भावे	४६१	२०६
१३९	**निय**	कम्मनिय	तत्थ साधु	४७३	२६३
१४०	**नो**	अङ्गना	त एत्थ अस्स अत्थि	४८२	१९५
१४१	**ब्य**	दासब्य	भावे	४६०	२०६
१४२	**भ**	तुण्डिभो	त एत्थ अस्स अत्थि	४८३	१९५
१४३	**म**	पञ्चमो	पूरणे	४५२	१७८
१४४	**मत्त**	पलमत्त	तमस्स परिमाण	४४६	२४७
१४५	**मन्तु**	बुद्धिमा	त एत्थ अस्स अत्थि	४७८	१९४
१४६	**मय**	तिणमय	तस्स विकारावयेसु	४६६	२५९
१४७	**य**	दिब्बो, गम्मो	तत्र भवे	४२५	२६२
१४८	**य**	खत्यो	अपच्चे	४७	२५६
१४९	**रतम**	कतमो	निद्धारणे	४५७	२४८
१५०	**रतर**	कतरो	,,	४५७	,,
१५१	**रति**	कति, तति		४४४	२४७

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१५२	ताय	घातेताय, पब्बाजे-ताय	अरहत्थे	४ ७७	२५०
१५३	रित्तक	कित्तक	तमस्स परिमाण	४ ४४	२४७
१५४	रीव	कीव	,,	४ ४४	,,
१५५	रीवतक	कीवतक	तमस्स परिमाण	४ ४०	२४६
१५६	रेय्यण	मत्तेय्यो	हिते	४ ३९	२५९
१५७	रेय्यण	पेत्तेय्यो	पितितो भातरि	४ ३६	२५८
१५८	रो	मुखरो	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ८२	१९५
१५९	ल	देवलो	तेन दत्ते	४ ५८	२५२
१६०	ल्ल	दुट्ठुल्ल, वेदल्ल	तन्निस्सिते	४ ६५	२५०
१६१	वन्तु	गुणवा	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ७९	१५४
१६२	वो	सीलवो	,,	४ ८८	१५७
१६३	वी	मायावी	,,	४ ८९	१५७
१६४	स	खण्डसो, एकसो	वीच्छाय	४ ११८	२२०
१६५	स	लोमसो	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ९३	१९८
१६६	सण्	मानुसो	अपच्चे	४ ८	२५६
१६७	स्सी	तपस्सी	त एत्थ अस्स अत्थि	४ ८१	१९५
१६८	स्स	मनुस्सो	अपच्चे	४ ८	२५६
१६९	स्स	चक्खुस्स	तस्स हिते	४ ७१	२६०
१७०	स्सण्	जातुस्स	तस्स विकारावयेसु	४ ६७	२५९
१७१	ह	तह	सत्तम्यन्ते	४ १०३	२७१
१७२	हिं	यहिं	,,	४ १०२	२१७

छठा परिशिष्ट

कृदन्त

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

छठा परिशिष्ट

कृदन्त प्रत्ययों के लगाने के साधारण नियम

१ धातु के उपान्त 'इ' तथा 'उ' का, क्रमश 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे —

इस+तब्ब=एसितब्ब। कुस+तब्ब=कोसितब्ब।

२ प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' ताथा 'उ' का, क्रमश 'ए' तथा 'ओ' होता है। जैसे —

नी+तब्ब=नेतब्ब। सु+तब्ब=सोतब्ब।

३ स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमश 'अय' तथा 'अव' होता है। जैसे —

जि+अ=जे+अ=जयो। भू+अ=भो+अ=भवो।

४ स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' का क्रमश 'इय' तथा 'उव' होता है। जैसे —

वेदि+अ-ति=वेदियति। ब्रू+अ+अन्ति=ब्रुवन्ति।

५ रकारान्त धातु से परे, प्रत्यय के 'न' का 'ण' होता है। जैसे —अर+अन=अरण।

'ण'-अनुबन्ध

६ 'ण'-अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' होता है।

---

(१) सूत्र–५ ८३। (२) ५ ८२। (३) ५ ८६। (४) ५ १३६। (५) ५ १७१। (६) ५ ८४।

पठ+णक=पाठको।

७ 'ण' अनुबन्ध वाला स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमश 'आय' तथा 'आव' होता है। जैसे —

नी+णी-ति=ने+णि-ति=नायति। भू+णि-ति=भो+णि-ति=भावयति।

८ 'णापि' को छोड, अन्य 'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो आकारान्त धातु से परे 'य' का आगम होता है। जैसे —

दा+णक=दायको।

'क' अनुबन्ध

९ 'क' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के उपान्त 'इ', 'उ' या 'अ' का 'ए', 'ओ' तथा 'आ' नही होता है। जैसे —

दिस+क्त=दिट्ठो।

'र' अनुबन्ध

१० 'र' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्तिम स्वर से ले कर आगे के भाग का लोप होता है। जैसे —

वेद-गम+रू=वेद-ग्+रू=वेदगू।

'घ' अनुबन्ध

११ 'घ' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्तस्थित 'च' तथा 'ज' का क्रमश 'क' तथा 'ग' हो जाता है। जैसे —

वच+घ्यण=वाक्य। भज+घ्यण्=भाग्य।

ख-छ-स प्रत्यय

१२ 'ख-छ-स' प्रत्यय परे हो, तो धातु के 'प्रथम एकस्वर शब्दरूप' का द्वित्व होता है जैसे —

---

(७) ५ ६१। (८) ५ ६२। (९) ५ ८५। (१०) ४ १३२। (११) ५ ६२। (१२) ५ ६६।

तिज+ख-अ=तितिक्खा। जिगुच्छा। वीमसा।

१३ द्वित्व होने पर, पूर्व 'अ' का 'इ' होता है। जैसे —

पा+स-ति=पिपासति।

१४ द्वित्व होने पर, पूर्व चतुर्थ तथा द्वितीय वर्ण का क्रमश तृतीय तथा प्रथम वर्ण होता है। जैसे —

भुज+ख-ति=बुभुक्खति।

'क्वि' प्रत्यय

१५ धातु से परे, 'क्वि' प्रत्यय का लोप होता है। जैसे —

अभिभू+क्वि=अभिभू।

१६ 'क्वि' प्रत्यय परे हो, तो अन्त्य व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे —

भत्त गसन्ति एत्थाति=भत्तग्ग। भत्त-गस+क्वि=भत्त-ग=(सरम्हा द्वे) भत्तग्ग।

*'क्य' प्रत्यय

(कम, भाव)

१७ 'क्य' प्रत्यय के पूर्व, 'ई' का विकल्प से आगम होता है। जैसे —

पच+क्य-ति=पचीयति।

१८ 'ञा' धातु को छोड, अन्य धातु के अन्त्य 'आ' का 'ई' होता है। जैसे —

दा+क्य-ति=दीयति।

१९ स्वरान्त धातु का दीर्घ होता है। जैसे —

चि+क्य+ते=चीयते।

'ञि' (आगम)

२० व्यञ्जनादि प्रत्यय के पूव, विकल्प से 'इ' का आगम होता है। जैसे —

भुञ्जितु, भोत्तु।

---

(१३) ५७६। (१४) ५७८। (१५) ५१५९। (१६) ५९४। (१७) ६३७। (१८) ५१३७। (१९) ५१३९। (२०) ५१७०।

* 'क्य' का 'य' रह जाता है। 'क्' अनुबन्ध है।

कृदन्त प्रत्ययों की सूची

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र सख्या	पृष्ठ सख्या
अ	जयो, पग्गहो	भाव-कारकेसु	५ ४४	२००
अ	तितिक्खा, वीमसा	,, इत्थिय	५ ४९	२०१
अक	जीवको, नन्दको	कत्तरि (आशीर्वादे)	५ ३५	१९२
अण	कुम्भाकारो	कत्तरि (कम्मतो)	५ ४१	१९३
अथु	वमथु, वेपथु	भाव-कारकेसु	५ ४६	२०१
अनीय	करणीयो	भाव-कम्मेसु	५ २७	१५०
अनो	गमन, दान	भाव-कारकेसु	५ ४८	२०२,२७८
अस्स	नमस्सति	त करोति, (नामधातु)	५ ११	२३६
आपि	सच्चापेति	नाम धातु	५ १३	२३७
आय	सद्दायति	त करोति (नाम धातु)	५ १०	२३६
आय	भुसायति	च्यत्थे (नाम धातु)	५ ४	२३२
आय	पब्बतायति	कत्तुतो उपमानाधरे	५ ८	२३६
आवी	भयदस्सावी	कत्तरि	५ ३४	१९२
इ	अतिहत्थयति	नाम धातु	५ १२	२३७
इ	वचि	सरूपे	५ ५२	२०३
ईय	पुत्तीयति	उपमानाचारे (कम्मा) नाम धातु	५ ५६	१४२
ईय	कुटीयति	,, (आधारा)	५ ७	२३६
क	पियो, आयुध	भाव-कारकेसु	५ ४४	२००
क	सदिसो	कम्म-कारके	५ ४३	२७६
क	गुहा, रुजा	भाव-कारकेसु (इत्थिय)	५ ४९	२०१
कि	युधि	सरूपे	५ ५२	२०३
कू	सब्बञ्ञ	कत्तरि (कम्मा)	५ ४०	१९२
कू	विञ्ञू	कत्तरि	५ ३९	१९२
कू	लोकविदू	,,	५ ३८	१९२
क्त	आसित, कतो	भाव कम्मेसु	५ ५६	१४२
क्त	पकतो	कत्तरि च आरम्भे	५ ५७	१४३
क्त	यात (इदमेस)	कत्तरि, कम्मे, भावे	५ ५९	१४३
क्त	उपट्ठितो	,,	५ ५५	१४२
क्त	भुत्त (इदमेस)	,,	५ ६०	१४३

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
क्तवन्तु	विजितवन्त	कत्तरि भूते	५ ५५	१४२
क्तावी	विजितावी	(कत्तरि) भूते	५ ५५	,,
क्ति	इट्ठि, भूति	भावकारकेसु (इत्थिय)	५ ४६	२०१
क्य	ठीयते, सूयते	कम्मे, भाव	५ १७	१८०
क्वि	अभिभू, स्यम्भ	भाव-कारकेसु	५ ४७	२०१
ख	बुभुक्खति	इच्छाय	५ ४	२३२
ख	तितिक्खा	खन्तिय	५ १	१८६
घ	वको, निपको	भाव-कारकेसु	५ ४४	२००
घण्	पाको, चागो	,,	५ ४४	,,
घ्यण्	वाक्य	भाव-कम्मेसु	५ २८	१५०
घ्यण्	देय्य	,,	५ २९	१५०
छ	जिघच्छति	इच्छाय	५ ४	२३२
छ	जिगुच्छा, वीभच्छा	निन्दाय	५ ३	१८७
छ	तिकिच्छा, विचिकिच्छा	तिकिच्छा-संसयेसु	५ २	१८६
ण	कारा, हारा	भाव-कारकेसु (इत्थिय)	५ ४९	२०१
णक	पाठको	कत्तरि	५,३०	१५१
णन	हायनो	,,	५ ३७	१९२
णन	कारणन	,,	५ ३६	१९२
णापि	कारापेति	प्रेरणार्थक	५ १४	२१०
णि	कारेति	,,	५ १६	२०९
णी	उण्ह भोजी	सीले (कत्तरि)	५ ५३	१९३
तब्ब	कत्तब्ब	भाव-कम्मेसु	५ २७	१५०
तवे	कातवे	तदत्थाय (निमित्तार्थक)	५ ६१	१५२
तायें	कत्तायें	,,	५ ६१	,,
ति	पचति	सरूपे	५ ५२	२०३
तु	कातु	तदत्थाय (निमित्तार्थ)	५ ६१	१५२
तून(अल)	अल सोतून	पटिसेधे	५ ६२	१५४
त्वा	अल सुत्वा	पटिसेधे	५ ६२	,,
त्वा	सुत्वा	पूर्वकालिक अव्यय	५ ६३	,,
त्वान	अल सुत्वान	पटिसेधे	५ ६२	,,

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र सख्या	पृष्ठ सख्या
त्वान	सुत्वान	पूर्वकालिक	५ ६३	१५४
नि	हानि	भाव-कारकेसु (इत्थिय)	५ ५०	२०३
न्त	तिट्ठन्तो	वत्तमाने कत्तरि (करते हुए)	५ ६४	६२
मान	ठीयमान, पच्चमानो	भावे, कम्मे	५ ६६	१८०
मान	तिट्ठमानो	वत्तमाने कत्तरि (करते हुए)	५ ६५	६२
य	वज्ज	भाव-कम्मेसु	५ ३०	१५१
य	सेय्या, समज्जा	भाव-कारकेसु	५ ४६	२०१
यक्	विज्जा	,, (इत्थिय)	५ ४६	,,
यक्	गुय्ह	भाव-कम्मेसु	५ ३२	१५२
रिक्ख	सदिक्खो	कम्म-कारकेसु	५ ४३	२७६
रिरिय	किरिया	,, (इत्थिय)	५ ६१	१५२
री	सदी	कम्म-कारकेसु	५ ४३	२७६
रू	वेदगू	कत्तरि (कम्मतो)	५ ४२	१६३
ल	पचति, न्त, मान (अपरोक्खे)	+	५ १२	२३७
ल	कारेति, कारयति	+	५ २०	२१०
ल्तु	पठिता	कत्तरि	५ ३३	६४, १६१
स	जिगिसति	इच्छाय	५ ४	२३२
स्सन्त	ठस्सन्तो	अनागते कत्तरि	५ ६७	६२
स्समान	ठस्समानो	,,	५ ६७	६२

सातवाँ परिशिष्ट

१. सूत्र-सूची

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

सातवाँ परिशिष्ट

मोग्गल्लान सूत्र-सूची

आठवाँ परिशिष्ट

एवादि वृत्ति मे सिद्ध किए गए शब्दों की अनुक्रमणिका

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

आठवाँ परिशिष्ट

'णवादि' वृत्ति में सिद्ध किए गए शब्दों की अनुक्रमणिका

अ

णवादि
सूत्र-सख्या

१४ अक्को, (अर=गमने, क)=सूर
८ अक्खि, (इक्ख, चक्ख=दस्सने, इ नपु०)=आख
३१ अक्खो, (अर=गमने, ख)=अक्ष, पासा
१६४ अगार, (अग=कुटिलगमने, आर)=घर
३२ अग्गो, (अज, वज=गमने, गक्)=अग्र
३४ अग्गि, (अग=कुटिल गमने, गि)=आग
१४७ अङ्कुरो, (अङ्क=लक्खणे, उर)=अङ्कुर
२१५ अङ्कुसो, (अङ्क=लक्खणे, सक्)=अङ्कुश
१६४ अङ्गारो, (अङ्ग=गमनत्थे, आर)=आग
१६५ अङ्गुल, (अङ्ग=गमनत्थे, उल)=अङ्गुली, एक नाप
१६५ अङ्गुलि, (अङ्ग=गमनत्थे, उलि)=अङ्गली
७ अच्चि, (अच्च, अञ्च=पूजाय, इ)=ऑच
४३ अच्छो, (अस=खेपने, छ)=भालू
१५६ अच्छरा, (अस=खेपने, छर)=देवकन्या, चुटकी
१०२ अजिन, (अज, वज=गमने, इन)=चमडा
१०२ अजिर, (अज, वज=गमने, किर)=आँगन
१०१ अज्जुनो, (अज्ज, सज्ज=अज्जने, कुन)=राजा, वृक्ष विशेष

ण्वादि

सूत्र-सख्या

१६६ **अञ्जलि,** (अञ्ज=व्यत्तिमक्खनगतिकन्तिसु, **अलि**) =अञ्जलि
११२ **अटनि,** (अट, पट=गमनत्थे, **अनि**) =पाया
२ **अणु,** (अण=सद्दत्थे, **उ**) =सूक्ष्म, धान्य विशेष
५८ **अण्डो,** (अम=गमने, **ड**) =अण्डा
२१७ **अतसो,** (अत=सातच्चगमने, **अस**)=वायु
६३ **अतिथि,** (अत=सातच्चगमने, **इथि**) =पाहुन
८२ **अत्ता,** (अत=सातच्चगमने, **त**)=मन
८८ **अत्थो,** (अर=गमने, **थक्**) =धन
६६ **अद्ध,** (अर=गमने, **ध**) =माग, काल
६६ **अद्धा,** (अर=गमने, **ध**) =माग, काल
१३७ **अधमो,** (अस=खेपने, **म**) =नीच
१८६ **अनिलो,** (अन=पाणने, **इल**) =हवा
८२ **अन्तो,** (अम, गम=गमने, **त**) =समाप्ति, आँत
२ **अन्दु,** (अ द=वन्धने, **उ**) =जजीर
६८ **अन्धो,** (अन=पाणने, **ध**) =अधा
११४ **अप्प,** (आप=पापुणने, **प**) =थोडा
१२८ **अब्भ,** (अव=रक्खने, **भ**) =मेघ ।
८१ **अमत्त,** (अम=गमने, **अत्त**) =भाजन
१२१ **अम्बो, अम्बा,** (अम=गमने, **ब**) =आम
२ **अम्बु,** (अम्ब=सद्दे, **उ**) =जल
१३६ **अम्मा,** (अम=गमने, **म**) =माता
२२२ **अम्ह,** (अम=गमने, **ह**) =पत्थर
५१ **अरञ्ञ,** (अर=गमने, **ञ**) =जगल
६२ **अरणि,** (अर=गमने, **अणि**) =अरणि
२ **अरु,** (अर=गमने, **उ**) =व्रण
१०१ **अरुणो,** (अर=गमने, **कुन**) =सूरज
२१७ **अलसो,** (अल=बन्धने, **अस**) =आलसी

णवादि

सूत्र-सरया

८० **अलात**, (अल=बन्धने, **आतक**)=तिनकी, लकारी
४ **अलाबू**, (लम्ब=अवससने, ऊ)=तुम्वा, लाका
२१ **अलिक**, (अल=बन्धने, **किक**)=झूठा
१९८ **अल्लि**, (अर=गमने, लि)=वृक्ष
११२ **अवनि**, (अव=रक्खने, **अनि**)=पथ्वी
७६ **अवन्ती**, अव=रक्खने, **अन्त**=इस नाम का जनपद
११२ **असनि**, अस=खेपने, **अनि**=वज्र
७ **असि**, अस=खेपने, **इ**=तलवार
२ **असु**, अस=खेपने, **उ**=प्राण
१४७ **असुरो**, अस=खेपने, **उर**=दैत्य
२१३ **अस्सो**, अस=खेपने, **स**=घोडा
२१२ **अस्सु**, अस=खेपने, **सु**=आंसू
८ **अहि**, अह=गमने, **इ**=साँप
१६४ **अळारो**, अल=वन्धने, **आर**=मटमैला रग
२१३ **असो**, अन=पाणने, **स**=कधा, हिस्सा
६ **आखु**, खण=अवदारणे, **कु**=चूहा
२१४ **आमिस**, मि=पक्खेपे, **सक्**=आहारादि
१ **आयु**, अय=गमनत्थे, **णु**=आयु
२०२ **आलुवो**, अल=बन्धने, **णुव**=एक गाछ
८५ **आवसथो**, वस=निवासे, **अथ**=घर
५४ **आवाटो**, अव=रक्खने, **आटण्**=गढा
१ **आसु**, अस=खेपने, **णु**=शीघ्र
२९ **इट्ठका**, इस=इच्छाय, **ठकण्**=इट
९४ **इत्थी**, इस=इच्छाय, **थी**=स्त्री
१०५ **इनो**, इ=अज्झेनगतिसु, **नक्**=स्वामी
२ **इन्दु**, इन्द=परमिस्सरिये, **उ**=चाँद
१२७ **इभो**, इ=अज्झेनगतिसु, **भक**=हाथी

णवादि

सूत्र-सख्या

६७ **इरिण,** ईर=कम्पने, **ण**=ऊसर

९ **इसि,** इस=इच्छाय, **कि**=ऋषि

२३ **इसीका,** इस=इच्छाय, **कीक**=उजला

१५ **उक्का,** उस=दाहे, **क**=उल्का

३१ **उक्खो,** उस=दाहे, **ख**=बैल

८ **उक्खलि,** उस=दाहे, **इ**=ओखल

३३ **उच्चालिङ्गो,** चल=कम्पने, **गक्**=एक उजला कीडा

४२ **उच्छु,** उस=दाहे, **छुक**=ईख

४५ **उजु,** अर=गमने, **जु**=सीधा

७१ **उतु,** अर=गमने, **तु**=ऋतु

१५ **उदक,** उन्द=किलेदने, **क**=जल

९६ **उद्दो,** उन्द=किलेदने, **दक्**=ऊद बिलाव

१४८ **उन्दुरो,** उन्द=किलेदने, **उर**=चूहा

१५ **उपचिका,** चि=चये, **क**=दीमक

८६ **उपोसथो,** वस=निवासे, **अथ**=तिथि विषेश, हस्ति-कुल

१८४ **उप्पल,** पा=पाने, **कल**=कमल

१५ **उम्मुक,** उस=दाहे, **क**=लुआठी, मशाल

१४६ **उरो,** उस=दाहे, **रक्**=छाती

६ **उरु,** अर=गमने, **कु**=बडा

२६ **उलूको,** उल=पवेसने, **णूक**=उल्ल

१२६ **उसभो,** उस=दाहे, **कभ**=श्रेष्ठ

१६९ **उसीर,** वस=निवासे, **कीर**=खस

५ **उसु,** उस=दाहे, **कु**=वाण

१३० **उसुम,** उस=दाहे, **कुम**=गरम

१३७ **उस्मा,** उस=दाहे, **म**=तेजो धातु

२२४ **उस्सोळ्ही,** सह=सहने, **ही**=वीय

१५ **ऊका,** ऊह=वितक्के, **क**=जूँ

णवादि
सूत्र-सख्या

१०७ **ऊनो**, ऊह्=वितक्के, **न**=कम
१३६ **ऊमि**, ऊह्=वितक्के, **मि**=तरग
६ **ऊरु**, अर=गमने, **कु**=जाँघ
१४ **एको**, इ=अज्झेनगतिकन्तिसु, **क**=अकेला
५६ **एरण्डो**, ईर=क्खेपे, **ड**=रेड, व्याघ्रपुच्छ
१८८ **एला**, इ=अज्झेन गतिकन्तिसु, **ल**=मुँह का लार
५५ **ओट्ठो**, उस=दाहे, **ठ**=ओठ, ऊँट
१०७ **ओदनो**, उन्द=किलेदने, **न**=भात
१४ **कक्को**, कर=करणे, **क**=एक तरह का रग
४ **कक्कन्धु**, कर=करणे, **ऊ**=बैर का फल
२१८ **कक्कसो**, कर=करणे, **कस**=ककश
२२७ **कक्खळो**, कर=करणे, **ळक्**=क्रूर
३६ **कङ्गु**, कम=इच्छाय, **गु**=वान्य विशेष
४३ **कच्छो**, कच्=बन्धने, **छ**=तराई
४२ **कच्छु**, कस=विलेखने, **छुक्**=खुजली
४६ **कञ्ञा**, कम=इच्छाय, **ञ**=कुमारी
१८ **कटक**, कट=मद्दने, **अक**=नगर
२२३ **कटाहो**, कट=मद्दने, **ह**=कडाही
१८२ **कठल**, कठ=किच्छजीवने, **अल**=कपाल-खड
१७३ **कठोरो**, कठ=किच्छजीवने, **ओर**=कठोर
५५ **कट्ठ**, कस=गमने, **ठ**=काठ
५५ **कण्ठो**, कम=इच्छाय, **ठ**=कण्ठ
५८ **कण्डो**, कम=पदविक्खेपे, **ड**=वाण, परिच्छेद
१६२ **कण्डुलो**, कण्ड=च्छेदने, **कुल**=वृक्ष
६५ **कण्णो**, कर=करणे, **ण**=कान
२२३ **कण्हो**, कस=विलेखने, **ह**=काला
७३ **कतु**, कर=करणे, **रतु**=यज्ञ

ण्वादि

सूत्र-सख्या

२८ **कत्तिका**, कर=करणे, **तिक**=कार्तिक
१२२ **कदम्बो**, कद=सुत्तियोधातु, **ब**=वृक्ष
१८ **कनक**, कन=दित्तिगतिकन्तिसु, **अक**=सोना
९५ **कन्दो**, कम=इच्छाय, **दक**=मूल विशेष
१५९ **कन्दरो**, कन्द=व्हानरोदनेसु, **अर**=कदरा
१८६ **कपाल**, कप्प=सामत्थिये, **काल**=घटादि खड
८ **कपि**, कम्प=चलने, **इ**=बानर
१९१ **कपिलो** कम्प=चलने, कव=वण्णे, **कील**=मटमैला रग
७५ **कपोतो**, कप=अच्छादने, **ओत**=कबूतर
१९४ **कपोलो**, कप=अच्छादने, **ओल**=गाल
२१८ **कप्पासो**, कर=करणे, **पास**=कपास
१०३ **कप्पिनो**, कप्प=सामत्थिये, **इन**=राजा
१७२ **कप्पूर**, कप्प=सामत्थिये, **ऊर**=कपूर, घनसार
५३ **कमटो**, कम=इच्छाय, **अट**=बौना
५६ **कमठो**, कम=इच्छाय, **ठ**=भिक्षा-भाजन
१८२ **कमल**, कम=इच्छाय, **अल**=कमल
२ **कम्बु**, कम्ब=सवरणे, **उ**=शङ्ख
१३६ **कम्म**, कर=करणे, **म**=कम, सुखदुक्खफलद
१६७ **कम्मारो**, कर=करणे, **मार**=लोहार
२१५ **कम्मासो**, **कम्मास**, कल=सङ्ख्याने, **सक्**=चितकबरा
१८ **करको**, **करका**, कर=करणे, **अक**=बनउरी, ओला
५३ **करटो**, कर=करणे, **अट**=कौआ
५७ **करण्डो**, कर=करणे, **अण्ड**=भाण्ड विशेष
१२४ **करभो**, कर=करणे, **अभ**=ऊँट
२१० **करीस**, कर=करणे, **ईस**=गुह
१०१ **करुणा**, कर=करणे, **कुन**=दया
८१ **कलत्त**, कल=सख्याने, **अत्त**=भार्या

ण्वादि
सूत्र-सख्या

१२४ **कलभो, कळभो,** कल=सख्याने, **अभ**=हाथी का बच्चा
१८२ **कलल,** कल=सख्याने, **अल**=गर्भ की एक अवस्था, कीचड
२१७ **कलसो,** कल=सङ्ख्याने, **अस**=कलश
२२३ **कलहो,** कल=सख्याने, ह=विवाद
७ **कलि,** कल=सख्याने, **इ**=पाप
२२ **कलिका,** कल=सख्याने, **कीक**=कली
३३ **कलिङ्गो,** कल=सद्दे, **गक्**=एक जनपद
१८६ **कलिल,** कल=सख्याने, **इल**=गहन
१६६ **कलीरो,** कल=सख्याने, **कीर**=बॉस का कोपल (अकुर)
१८८ **कल्ल,** कल=सख्याने, ल=युक्त
१६४ **कल्लोलो,** कल्ल=सद्दे, **ओल**=समुद्र की लहर
५४ **कवाट,** कु=सद्दे, **आट**=किवाड
७ **कवि,** कु=सद्दे, **इ**=कवि
५३ **कसट,** कस=गमने, **अट**=बुरा, अप्रिय
७ **कसि,** कस=विलेखने, **इ**=कृषि
६० **कसिण,** कस=गमने, **किण**=अशेष
१४६ **कसिर,** कस=गमने, **किर**=थोडा
१७७ **कसेरु,** सी=सये, **रु**=पानी मे जमने वाला एक कन्द
२७ **कस्सको,** कस=विलेखने, **सक**=कृषक
२१३ **कसो,** कम=इच्छाय, **स**=एक नाप
१६४ **कळारो,** कल=सख्याने, **आर**=मटमैला रग
१४ **काको,** का=सद्दे, **क**=कौवा
२४ **कामुको,** कम=इच्छाय, **णुक्**=कामी
१ **कारु,** कर=करणे, **णु**=शिल्पी, इन्द्र, विश्वकर्मा
१ **कासु,** कस=विलेखने, **णु**=गढा
२२५ **काळो, काळि,** का=सद्दे, **ळ**=जगली जानवर
२०० **कितवो,** किन=निवासे, **अव**=ठग, जुवारी

ण्वादि

सूत्र-सरया

२१२ **किब्बिस**, कर=करणे, **रिब्बिस**=पाप
८ **किमि**, कम=पद विक्खेपे, **इ**=कीडा
१०८ **किरणा**, किर=विकिरणे, **कन**=किरण
८० **किरातो**, किर=विकिरणे, **आतक्**=एक जगली जात
५२ **किरीट**, किर=विकिरणे, **कीट**=मुकुट
८५ **किलमथो**, किलम, क्रम=गिलाने, **अथ**=परिश्रम
८० **किलातो**, किर=विकिरणे, **आतक्**=एक जगली जात
१४२ **किसलय**, कस=गमने, **य**=पल्लव
१७४ **किसोरो**, कस=गमने, **ओर**=किशोर, अश्व
२२ **किङ्कणिका**, कण=सद्दत्थे, **कीक**=छोटी घण्टियाँ
५८ **कुक्कुटो**, कुक, वक=आदाने, **कुटक**=मुर्गा
१४८ **कुक्कुरो**, कुक, वक=आदाने, **उर**=कुत्ता
२२७ **कुक्कुळ**, **कुक्कुळो**, कुक, वक=आदाने, **ळ**=एक नरक
१३१ **कुङ्कुम**, कम, इच्छाय, **कुम**=केसर
४१ **कुच्छि**, कुस=अक्कोसे, **छिक**=पेट
१९० **कुटिलो**, कुट=कोटिल्ये, **किल**=टेढा
१२२ **कुटुम्ब**, कुट=कोटिल्ये, **ब**=परिवार, कुटुम्ब
५६ **कुट्ठ**, कुस=अक्कोसे, **ठ**=कुष्ट
१२२ **कुडुबो**, कण्ड=च्छेदने, **ब**=पैला
११९ **कुणपो**, कुथ=पतिभावे, **अप**=मतक
१८६ **कुणालो**, कुण=सद्दत्थे, **काल**=एक महासर
५६ **कुण्ठो**, कुण=सद्दत्ये, **ठ**=जिसका हाथ पैर कटा हो
५९ **कुण्ड**, कम=इच्छाय, **ड**=भाजन
१८२ **कुण्डल**, कुण्ड=दाहे, **अल**=कुण्डल
८४ **कुत्त**, कर=करणे, **तक्**=क्रिया
८४ **कुन्तो**, कम=पदविक्खेये, **तक**=एक हथियार
९६ **कुन्दो**, कम=इच्छाय, **दक्**=एक प्रकार का फूल

ण्वादि
सूत्र-संख्या

१६५ **कुमारो,** कम=इच्छाय, **आर**=कुमार
१०३ **कुमिन,** कम=पदविक्खेपे, **इन**=मछली बझाने का टाप (टाप)
१२६ **कुम्भो,** कम=इच्छाय, अथवा उम्भ=पूरणे, ह=घड़ा
१३७ **कुम्मो,** कर=करणे, **म**=कछुआ
२१५ **कुम्मासो,** कुल=सन्तान, **सक**=एक खाद्य
१४२ **कुर,** कु=सद्दे, **रक्**=भात
१५५ **कुररो, कुररी,** कुर=सद्दे, **कुर**=एक पक्षी (कुररी)
५ **कुरु,** कुर=सद्दे, **कु**=राजा
५ **कुरवो,** कुर=सद्दे, **कु**=जनपद
१७२ **कुरूरो,** कर=करणे, **ऊर**=पापकारी
१८५ **कुललो,** कुल=सन्ताने, **काल**=टिटिहरी (पक्षी विशेष)
१८५ **कुलालो,** कुल=सन्ताने, **काल**=कुम्भकार, कोहार
२१५ **कुलिस,** कुल=संवरणे, **सक्**=वज्र
१७५ **कुवेरो,** कु=सद्दे, **एरक्**=कुवेर महाराज
२१८ **कुसो,** कु=सद्दे, **सक्**=कुश घास
८४ **कुसीतो,** कुस=अक्कोसे, **तक**=काहिल
१३० **कुसुम,** कुस=अक्कोसे अव्हाने च, **कुम**=फूल
१२६ **कुसुम्भ,** कुस=अक्कोसे अव्हाने च, भ=एक फूल जिससे रंग तैयार किया जाता है।
१२६ **कुसुम्भो,** कुस=अक्कोसे अव्हाने भ=सोना
१७० **कुलीरो, कुळीरो,** कुल=सन्ताने, **कीर**=ककट, केकडा
११५ **कूपो,** कु=सद्दे, **प**=कूआ
६१ **केणि, केणी,** की=दब्बविनिमये, **णि**=क्रय
२ **केतु,** कित=निवासे, **उ**=ध्वजा
१६६ **केदार,** क्लेद, क्लिद=अल्लाभावे, **आर**=खेत
१८२ **केवल,** केव=सेवने, **अल**=सारा
८ **केळि,** कीळ=विहारे, **इ**=क्रीडा

ण्वादि

सूत्र-सख्या

१८९ **कोकिलो,** कुक, वक=आदाने, **इल**=कोयल

४३ **कोच्छो,** कुच=सकोचे, **छ**=पीढा

५५ **कोट्ठो,** कुस=अक्कोसे, **ठ**=अनाज रखने की कोठी

६५ **कोणो,** कु=सद्दे, **ण**=पास, अश, बीणा आदि का दण्ड

५६ **कोण्ठो,** कुस=अक्कोसे, **ठ**=जिसका हाथ पैर कटा हो

८९ **कोत्थु,** कुस=अक्कोसे, **थु**=सियार

१८ **कोरको,** कुर=सद्दे, **अक्**=कली

७८ **कोलितो,** कुल=सन्ताने, **इत**=द्वितीय अग्र श्रावक (एक ग्राम का नाम)

१६६ **कोविळारो,** विद=लाभे, **आर** दुगना हुआ

१२२ **कोसम्बो,** कुस=अक्कोसे, **ब**=वृक्ष

१७१ **खज्जूरो-खज्जूरी,** खज्ज=खज्जने, **ऊर**=खजूर

५८ **खण्डो,** खन, खण=अवदारणे, **ड**=खाड

१५० **खदिरो,** अद, खाद=भक्खने, **किर**=खैर

९८ **खन्धो,** खन, खण=अवदारणे, **ध**=स्कन्ध, समूह

६४ **खाणु,** खन, खण=अवदारणे, **णु**=ठूठ

११६ **खिप्प,** खिप=प्पेरणे, **पक्**=शीघ्र

१४३ **खीर,** खी=खये, **रक्**=दूध

९५ **खुद्दो,** खिद=असहने, **दक्**=क्षुद्र

८२ **खेत्त,** खिप=प्परणे, **त**=खेत

१३६ **खेमो,** खी=खये, **म**=क्षेम, कुशल

२२५ **खेळो,** खी=खये, **ळ**=थूक

१३६ **खोम,** खु=सद्दे, **म**=अतसि

१०७ गगन, गम=गमने, **न**=आकाश

३२ **गग्गो,** गद=वचने, **गक्**=एक ऋषि

१५२ **गग्गरो,** गर, घर=सेचने, **गर**=गडगडाहट, हस की आवाज़

३२ **गङ्गा,** गम=गमने, **गक**=गगा नदी

७ **गण्ठि,** गन्थ=गन्थने, **इ**=गाँठ

ण्वादि
सूत्र-सख्या
५८ **गण्डो**, गम=गमने, ड=व्याधि, गाल
८२ **गत्त**, गह=उपादाने, त=शरीर
९९ **गद्धो**, गिध=अभिकङ्खाय, ध=गिज्झो अन्यन लोभाभिभूत
१२५ **गद्रभो**, गद=व्यत्तवचने, रभ=गदहा
७० **गन्तु**, गम= गमने, तु=जाने वाला
१२१ **गब्बो**, गर=सेपने, ब=अभिमान
१५१ **गब्भर**, गर=सेचने, भर,=गुहा
१२८ **गब्भो**, गर=सेचने, भ=गभ
१७० **गभीरो**, **गम्भीरो**, गम=गमने, कीर=गहरा
२१ **गमिको**, गम=गमने, किक=जाने वाला
२ **गरु**, गर=सेचने, उ=गुरु, आचाय
६२ **गहणि**, गह=उपादाने, अणि=जठराग्नि
८८ **गाथा**, गा=सद्दे, थक्=पद्यविशेप
१३६ **गामो**, गा=सद्दे, म=गॉव
११ **गामी**, गम=गमने, ईण्=जानेवाला
२२३ **गाळ्ह**, गाह=विलोळने, ह=दृढ
४० **गिज्झो**, गिध=अभिकङ्खाय, झक्=गीध
२२३ **गिम्हो**, गम=गमने, ह=ग्रीष्म
९ **गिरि**, गिर=निगिरणे, कि=पहाड
२०३ **गीवा**, गा=सद्दे, ईव=गला
४४ **गुच्छो**, गुप=गोपने, छ=गुच्छा
२० **गुवाको**, गु=सद्दे, आक्=सुपारी
२२६ **गुळो**, गु=सद्दे, ळक्=गुड
८८ **गूथो**, गुप=गोपने, थक्=गूह
६७ **गोणो**, गम=गमने, ण=बैल
८२ **गोत्त**, गुप=गोपने, त=गोत्र
१४६ **गोत्र**, गुप=गोपने, रक्=गोत्र

ण्वादि

सूत्र-सख्या

१३२ **गोधुमो,** गुध=परिवेठने, **उम**=गेहूँ

१२० **गोप्फो,** गुप=गोपने, **फ**=गुल्फ, पैर की एँडी के ऊपर का भाग

२२६ **गोळो,** गु=सद्दे, **ळक्**=गुड

३ **घत,** घर=सेचने, **तक**=घी

१३६ **घम्मो,** गर, घर=सेचने, **म**=ग्रीष्म

१० **घाति,** हन=हिसाय, **इण्**=हथियार

१७३ **चकोरो,** चक=परिवितक्के, **ओर**=पक्षी विशेष

२ **चक्खु,** चक्ख=दस्सने, **उ**=आख

१५२ **चच्चर,** चर=गतिभक्खनेसु, **चर**=चौराहा

१६२ **चटुलो,** चट=भेदने, **कुल**=खुसामदी

१८७ **चण्डालो,** चण्ड=चण्डिको, **णाल**=चाण्डाल

१४७ **चतुरो,** चत=याचने, **उर**=चतुर

१८४ **चपलो,** चुप=मन्दगमने, **कल**=चपल, चञ्चल

२१७ **चमसो,** चम=अदने, **अस**=चमचा, श्रुवा

४ **चमू,** चम=अदने, **ऊ**=सेना

११४ **चम्पा,** चम=अदने, **प**=एक नगर (वतमान 'भागलपुर')

१३३ **चरिम,** चर=गतिभक्खनेसु, **इम**=पिछला

२ **चरु,** चर=गतिभक्खनेसु, **उ**=हव्यपाक

१ **चाटु,** चट, पुट=भेदने, **णु**=खुसामद

१ **चारु,** चर=गतिभक्खनेसु, **णु**=सुन्दर

८३ **चित्त,** चित=सञ्चेतने, **तक्**=विज्ञान, चित्र

८० **चिलातो,** चिल=वसने, **आतक**=एक प्रकार की मछली

१०७ **चीनो,** चि=चये, **न**=चीन देश

१४४ **चीर,** चि=चये, **रक्**=वल्कल

१५४ **चीवर,** चि=चये, **क्वर**=कषाय वस्त्र

१९८ **चुल्लि,** चुद=चोदने, **लि**=चूल्हा

२२५ **चूळा,** चु=चवने, **ळ**=जूरा

ण्वादि

सूत्र-सरया

१६७ **छल्लि**, छद=मवरणे, **लि**=छल्ली
२०८ **छवि**, छद=सवरणे, **रवि**=शोभा,
१४० **छाया**, छा=छादने, **य**=छाया
६५ **छिद्द**, छिद=द्वेधाकरणे, **दक्**=छेद
११७ **छेप्प**, छुप=सम्फस्से, **पक्**=अँगूठा
१०७ **जघन**, हन=हिसाय, **न**=जाघ
३७ **जङ्घा**, जन=जनने, **घ**=जाघ
१५२ **जज्जरो**, जर=वयोहानिय, **जर**=जजर
१६१ **जठर**, जन=जनने, **अर**=उदर, पेट
६४ **जण्णु**, जन=जनने, **णु**=घुटना
७३ **जतु**, जन=जनने, **रतु**=लाह
७० **जत्तु**, जर=वयोहानिय, **तु**=पसली
१८ **जनको**, जन=जनने, **अक**=पिता
७० **जन्तु**, जन=जनने, **तु**=जीव
४ **जम्बू**, जन=जनने, **ऊ**=जामुन
१३६ **जम्मो**, जम=अदने, **म**=नीच, मूख
२६ **जलूका**, जल=दित्तिय, **णुक**=जोक
१६४ **जाणु**, जन=जनने, **णु**=घुटना
७२ **जामाता**, जन=जनने, **तु**=दामाद
१४१ **जाया**, जन=जनने, **य**=स्त्री
१०५ **जिनो**, जि=जये, **नक्**=वुद्ध
२२२ **जिव्हा**, जीव=पाणधारणे, **ह**=जीभ
७६ **जीवन्ती**, जीव=पाणधारणे, **अन्त**=एक औपधि
२२३ **जुण्हा**, जुत=दित्तिय, **ह**=चाँदनी
१६४ तक्कोल, तक्क=वितक्के, **ओल**=एक फल
१६३ **तण्डुलो**, तम=छेदने, **कुल**=चावल
२२३ **तण्हा**, तस=पियासाय, **ह**=तष्णा

ण्वादि
सूत्र-सख्या

१४२ **तनयो**, तन=वित्थारे, **य**=पुत्र
२ **तनु**, तन=वित्थारे, **उ**=शरीर
४ **तनू**, तन=वित्थारे, **ऊ**=शरीर
८२ **तन्त**, तन=वित्थारे, **त**=ताँत
७० **तन्तु**, तन=वित्थारे, **तु**=सूत्र
१२ **तन्दी**, तन्द=आलस्से, **ई**=आलस्य
१८० **तम्बुल**, तम=भूसने, **बूल**=पान
१८ **तरको**, तर=तरणे, **अक**=नाव
६२ **तरणि**, तर=तरणे, **अणि**=समुद्र, सूरज
२ **तरु**, तर=तरणे, **उ**=वक्ष
१०१ **तरुणो**, तर=तरणे, **कुन**=तरुण
१५९ **तसरो**, तस, त्रस=पिपासाय, **अर**
६० **तसिणा**, तस=पिपासाय, **किन**=तृष्णा
६५ **ताण**, ता=पालने, **ण**=त्राण
८२ **तातो**, ता=पालने, **त**=पिता
२११ **तालीस**, तल=पतिट्ठाय, **ईस**=एक दवा का गाछ
१ **तालु**, तल=पतिट्ठाय, **णु**=तालु
६० **तिखिण**, तिज=निसाने, **किण**=तेज
६७ **तिण**, तिज=निसाने, **ण**=तृण
८ **तित्तिर**, तर=तरणे, **इ**=तितर पक्षी
८८ **तित्थ**, तर=तरणे, **थक्**=घाट
९३ **तिथि**, ता=पालने, **इथि**=तारीख
५ **तिपु**, तप=सन्तापे, **कु**=सीसा धातु
१४९ **तिमिर**, तिम=तेमने, **किर**=अन्धकार, जल
२०९ **तिमिस**, तिम=तेमने, **किस**=अन्धकार
५२ **तिरीट**, तर=तरणे, **कीट**=पगडी
१४५ **तीर**, ता=पालने, **रक्**=किनारा

ण्वादि
सूत्र-सख्या

१५४ **तीवरो**, ता=पालने, **क्वर**=एक नीच जाति
४४ **तुच्छ**, तुस=तुट्ठिय, **छ**=असत्य, सारहीन
५६ **तुण्ड**, तनु=वित्थारे, **ड**=मुँह, चोंच
८८ **तुत्थ**, तुद=व्यथने, **थक्**=दवा
१६३ **तुमुलो**, तम=छेदने, **कुल**=व्याप्त, सङ्कुल
१०३ **तुहिन**, तुद=व्यथने, **इन**=पाला
७ **थनि**, थन=सद्दे, **इ**=शब्द
६ **थरु**, तर=तरणे, **कु**=तलवार की मूठ
१८४ **थल**, ठा=गतिनिवत्तिय, **कल**=स्थल
१८ **थवको**, थु=अभित्थवे, **अक**=फूल का गुच्छा
१५० **थिर**, ठा=गतिनिवत्तिय, **किर**=स्थिर
२१४ **थुसो**, थु=अभित्थवे, **सक्**=भूसा
६७ **थूण**, थु=अभित्थवे, **ण**=एक नगर, **थूणो**=खम्भा
११५ **थूपो**, थु=अभित्थवे, **प**=चैत्य
१०७ **थेनो**, ठा=गतिनिवत्तिय, **न**=चोर
२०६ **थेवो**, थु=अभित्थवे, **रेव**=जलविन्दु
६० दक्खिणा, दक्ख=वुड्ढिय, **किण**=दक्षिणा, पूजा
५८ **दण्डो**, दम=उपसमे, **उ**=दण्ड
१५२ **दद्दर**, दर=विदारणे, **दर**=एक पक्षी
६७ **दद्दु**, दद=दाने, **दु**=दाद
१५१ **दद्दुरो**, दद=दाने, **दुर**=मेढक
८ **दधि**, धा=धारणे, **इ**=दही
८२ **दन्तो**, दम=उपसमे, **त**=दाँत
६८ **दन्धो**, दम=उपसमे, **ध**=मूढ
१२३ **दब्बि-दब्बी**, दर=विदारणे, **बि**=कलछूल
८५ **दमथो**, दम=उपसमे, **अथ**=इन्द्रिय-दमन
२१६ **दस्सु**, दस, डस=दसने, **सु**=चोर

ण्वादि

सूत्र-सरया

२२३ **दळ्ह,** दह=दाहे, ह=दृढ

५६ **दाठा,** दस, डस=दसने, ड=दाढ

१ **दारु,** दर= दरणे, णु=लकडी

१०१ **दारुणो,** दर=विदारणे, **कुन**=ककश

१०३ **दिन,** दा=दाने, **इन**=दिन

२१८ **दिवसो,** दिव=कीळाविजिगिसावोहारज्जुतिथुतिगतिसु, **सक्**=दिन

१०५ **दीनो,** दी=खये, **नक्**=दीन

६ **दुट्ठु,** ठा=गतिनिवत्तिय, **कु**= बुरा

७२ **दुहिता,** दुह='पपूरणे, **तु**=बेटी

८३ **दूतो,** दू=परितापे, **तक्**=दूत

१४४ **दूर,** दु=गमने, **रक्**=दूर

५३ **देवटो,** देव=देवने (पूजने) **अट**=ऋषि

१५६ **देवरो,** दिव=कीळादिसु, **अर**=देवर

६५, **दोणो,** दु=गमने, **ण**=द्रोण

६१ **दोणि-दोणी,** दु=गमने, **णि**=नाव

१८८ **दोला,** दु=परितापे, **ल**=हिंडोला

२ धनु, धन=सद्दे, **उ**=धनुष

११२ **धमनि-धमनी,** धम=सद्दे, **अनि**=सिरा

१३६ **धम्मो,** धर=धारणे, **म**=धर्म

६२ **धरणि,** धर=धारणे, **अणि**=पृथ्वी

७२ **धातु,** धा=धारणे, **तु**=धातु

१०६ **धाना,** धा=धारणे, **न**=भूजा

७२ **धीता,** धा=धारणे, **तु**=बेटी

१४५ **धीरो,** धा=धारणे, **रक्**=धैर्य

१५४ **धीवरो,** धा=धारणे, **क्वर**=मल्लाह

१३४ **धूमो,** धु=कम्पने, **मक्**=धूँआ

१५८ धूसरो, धू=कम्पने, **सर**=धूसर

ण्वादि
सूत्र-सख्या

१११ **धेनु**, धा=धारणे, **नुक्**=गौ
७२ **नत्ता**, नह=बन्धने, **तु**=नाती
७६ **नन्दन्ती**, नन्द=समिद्धिय, **अन्त**=सखी
१८ **नरको**, नर=नये, **अक**=नरक
१० **नाभि**, नभ=हिसाय, **इण्** नाभी
३१ **निक्खो**, कन=दित्तिगतिकन्तिसु, **ख**=निष्क
१६३ **निचुलो**, चि=चये, **कुल**=एक गाछ
३८ **निदाघो**, दह=भस्मीकरणे, **घ**=ग्रीष्म
६६ **निद्दा**, निन्द=गरहाय, **दक्**=निद्रा
१३६ **निमि**, नी=पापुणने, **मि**=एक राजा
१२२ **निम्बो**, नम=नमने, **ब**=नीम
१६८ **निल्लि**, **निल्ली**, **नीलि**, **नीली**, नी=नये, **लि**=वृक्षविशेष
६१ **निस्सेणि**, **निस्सेणी**, सि=सेवाय, **णि**=निसेनी
११६ **नीपो**, नी=नये, **पक्**=वृक्ष
१४३ **नीर**, नी=पापुणने, **रक**=जल
१५४ **नीवर**, नी=पापुणने, **क्वर**=घर
८४ **नेत्त**, नी=पापुणने, **तक्**=आख
८४ **नेता**, नी=पापुणने, **तक्**=नेता
१३८ **नेमि**, नी=पापुणने, **मि**=चक्के की परिधि
१७७ **नेरु**, नी=नये, **रु**=सुमेरु पहाड
१५ **पङ्को**, कम्प=चलने, **क**=कीचड
२२७ **पङ्गुळो**, खञ्ज=गतिवेकल्ले, **लक्**=लगडा
७६ **पचतो**, पच=पाके, **अत**=रसोइया
४१ **पच्छि**, पस=बाधने, **छिक्**=खाँची, डाली
१०७ **पज्जुन्नो**, पद=गमने, **न**=इन्द्र, मेघ
३३ **पटगो-पटङ्गो**, पत, पथ=गमने, **गक्**=फतिङ्गा
१८२ **पटल**, पट=गमने, **अल**=समूह

णवादि

सूत्र-सख्या

२२३ **पटहो**, पट=गमने, ह=एक बाजा

२ **पटु**, पट=गमने, उ=दक्ष, पटु

१६४ **पटोलो**, पट=गमने, **ओल**=एक सब्जी

१३३ **पठम**, पठ=उच्चारणे, **अम**=प्रथम् श्रेष्ट

१६६ **पणवो**, पण=व्यवहारत्थुतिसु, **अव**=एक तरह का ढोल

६५ **पण्णो**, पण=व्यवहारत्थुतिसु, **ण**=पत्ता

२२४ **पण्हि**, पण=व्यवहारत्थुतिसु, **हि**=एँडी

१६ **पताका**, पत, पथ=गमने, **आक**=ध्वजा

६६ **पति**, पा=रक्खने, **अति**=पति

१०८ **पत्तन**, पत, पथ=गमने, **तन**=नगर

१३० **पदुम**, पद=गमने, **कुम**=कमल

२१७ **पनसो**, पन=थुतिय, **अस**=कटहल

२१५ **पप्फास**, फाय=वुड्ढिय, **सक्**=फुसफुस

६ **पभङ्गु**, भञ्ज=ओमद्दने, **कु**=अकुर

२२२ **पाम्ह**, अम, गम=गमने, **ह**=प्रमुख

१८६ **पलाल**, पल=गमने, **काल**=पुआर

८४ **पलित**, पाल=रक्खने, **तक**=बाल का पकना

१८२ **पल्लल**, पल्ल=गमने, **अल**=जलाशय

१६६ **पल्लव**, पल्ल=गमने, **अव**=पल्लव

१६८ **पल्लि**, पाल=रक्खने, **लि**=कुटी, छोटी बस्ती

२ **पसु**, पस=बाधने, **उ**=चौपाय

१७२ **पसूरो**, पस=बाधने, **ऊर**=दूर, ब्यञ्जन

२ **पसु**, पस=नासने, **उ**=धूलि

१८४ **पाटल**, पत, पथ=गमने, **कल**=फल

१० **पाणि**, पण=व्यवहारत्थुतिसु, **इण्**=हाथ

१८७ **पाताल**, पत, पथ=गमने, **णाल**=रसातल

२४ **पादुका**, पद=गमने, **णुक**=खडाउ

ण्वादि

सूत्र-सख्या

११४ **पाप**, पा=रक्खने, **प**=अकुशल कम
१९८ **पालि-पाली**, पाल=रक्खने, **लि**=पक्ति, बुद्ध-वचन, मूल
२२८ **पाळि**, पा=रक्खने, **ळि**=तन्ति भाषा
२० **पिञ्ञा को**, पण=व्यवहारत्थुतिसु, **आक**=तिल का पीना, खरी
१६२ **पिठरो**, पच=पाके, **अर**=पकाने का बतन
७२ **पिता**, पा=रक्खने, **तु**=पिता
२० **पिनाको**, पा=पाने, **आक**=शिवजी का धनुष
१८६ **पियाल्पे**, पी=नप्पने, **काल**=एक फल
२१५ **पीयूस**, पी=तप्पने, **सक्**=अमृत
१५३ **पीवर**, पी=तप्पने, **क्वर**=स्थूल
४४ **पुच्छो**, पुस=पोसने, **छ**=पूँछ
५० **पुञ्ञ**, पुण=कम्मनि सुभे, **ञ**=कुशल कम
८३ **पुत्तो**, पुस=पोसने, **तक्**=पुत्र
५ **पुथु**, पुथ, पथ=वित्थारे, **कु**=फैलाव
१५ **पुथुको**, पुथ, पथ=वित्थारे, **क**=अज्ञ
१९२ **पुथुलो**, पुथ, पथ=वित्थारे, **कुल**=विस्तृत
२०९ **पुरिसो**, पूर=पूरणे, **किस**=आदमी
२११ **पुरीस**, पूर=पूरणे, **ईस**=गूह
९६ **पुलिन्दो**, पुल=महत्तहिंसाजाणेसु, **दक्**=एक नीच जाति
२१५ **पुस्स**, पुस=पोसने, **सक**=एक फल
११६ **पूपो**, पू=पवने, **पक्**=पूआ
६८ **पूरणो**, पूर=पूरणे, **अण**=पूरा करने वाला
१९९ **पेलवो**, पिल=वत्तने, **अव**=पतला
१८८ **पेलो**, पी=तप्पने, **ल**=बेत की बनी डलिया
१८२ **पेसलो**, पिस=गमने, **अल**=प्रियशील
२२५ **पेळा**, पी=तप्पने, **ळ**=पेडा
१६८ **पोक्खर**, पुस=पोसने, **खर**=कमल

ण्वादि

सूत्र-सख्या

८२ **पोतो**, पू = पवने, **त** = बच्चा

२१५ **फस्सो**, फुस = सम्फस्से, **सक्** = स्पश

५६ **फुट्ठो**, फुस = सम्फस्से, **ठ** = स्पश

३३ **फुलिङ्गो**, फुट = चलने, **गक्** = चिनगारी

२१५ **फुस्सो**, फुस = सम्फस्से, **सक्** = एक नक्षत्र

३६ **फेग्गु**, फल = निप्फत्तिय, **गु** = असार

१६० **बदर-बदरी**, वद = वचने, **अर** = बैर का फल

१४६ **बधिरो**, बध = बाधने, **कीर** = बहरा

२ **बन्धु**, बन्ध = बन्धने, **उ** = बन्धु

११७ **बप्पो**, वम = उग्गिरणे, **पक्** = आसू

१६ **बलाका**, बल = पाणने, **आक** = एक पक्षी

७ **बलि**, बल = पाणने, **इ** = सिकुडन

१८४ **बहल**, बह = वुद्धिय, **कल** = घना

२ **बहु**, वह = वुद्धिय, **उ** = बहुत

२१५ **बळिसो**, बल = सवरणे, **सक्** = बसी

६ **बाहु**, वह = पापुणने, अथवा **बाध** = विबाधाय, **कु** = भुजा

२२३ **बाळ्ह**, बह = वुद्धिय, **ह** = दृढ, बहुत अधिक

६ **बिन्दु**, विद = लाभे, **कु** = स्वल्प

१२२ **बिम्ब**, वम = उग्गिलणे, **ब** = शरीर

१८६ **बिळालो**, बल = पाणने, **काल** = बिलाव

६६ **बुन्दो**, बु = सवलणे, **दक** = मूल, जड, वृक्ष का मूल

२०२ **बेलुवो**, बिल = भेजने, **णुव** = एक लता

३६ **भगु**, भर = भरणे, **गु** = एक ऋषि

७६ **भदन्तो**, भद्द = कल्याणे, **अन्त** = प्रव्रजित

१४६ **भद्र**, भद्द = कल्याणे, **रक्** = सुन्दर

१५६ **भमरो**, भम = अनवट्ठाने, **अर** = भौरा

२ **भमु**, भम = अनवट्ठाने, **उ** = भौं

ण्वादि
सूत्र-सख्या

१६ **भयानको,** भी=भये, **आनक**=भयानक
७६ **भरतो,** भर=भरणे, **अत**=नत्तक
२ **भरु,** भर=भरणे, **उ**=पति
१४६ **भस्त्रा,** भस=भस्मीकरणे, **रक**=भाथी
१३७ **भस्म,** भस=भस्मीकरणे, **म**=राख
६३ **भाणु,** भा=दित्तिय, **णु**=किरण
७२ **भाता,** भा=दित्तिय, **तु**=भाई
११० **भानु,** भा=दित्तिय, **नुक्**=सूरज
११ **भावी,** भू=सत्ताय, **ईण्**=होने वाला
२ **भिक्खु,** भिक्ख=याचने, **उ**=श्रमण
१६६ **भिङ्कारो,** भर=भरणे, **आर**=सोने की झारी
३३ **भिङ्गो,** भम=अनवट्ठाने, **गक्**=भौरा
१५ **भीको,** भी=भये, **क**=भीरु
१३५ **भीमो,** भी=भये, **मक्**=भयानक
१७६ **भीरु,** भी=भये, **रुक्**=भयानक (?) डरपोक
१३५ **भीसनो,** भी=भये, **रीसनो**=भयानक
२१५ **भुस,** भू=सत्ताय, **सक्**=भुस्सा
४ **भू,** भम=अनवट्ठाने, **ऊ**=भो
१३६ **भूमि,** भू=सत्ताय, **मि**=पृथ्वी
१७६ **भूरि,** भू=सत्ताय, **रिक्**=बहुत
१७६ **भूरी,** भू=सवाय, **रिक्**=मेधा
१४ **भेको,** भी=भये, **क**=मेढक
१४६ **भेरी,** भी=भये, **रक्**=भेरी
१३७ **भेस्मा,** भी=भये, **म**=भयानक
५४ **मकुट,** मङ्क=मण्डने, **उट**=मुकुट
१४८ **मकुरो,** मङ्क=मण्डने, **उर**=आइना, रथ, मछली
२२७ **मकुळो,** मङ्क=मण्डने, **ळक्**=कली

ण्वादि

सूत्र-सख्या

३८ **मघा,** मह=पूजाय, **घ**=मघा नक्षत्र

१८२ **मङ्गल,** मङ्ग=मङ्गल्ये, **अल**=मङ्गल

१४८ **मङ्गुरो,** मङ्ग=मङ्गल्ये, **उर**=एक तरह की मछली

४० **मच्चु,** मर=पाणचागे, **च्चु**=मृत्यु

४० **मच्चो,** मर=पाणचागे, **चो**=मनुष्य

४३ **मच्छो,** मस=आमसने, **छ**=मछली

१५७ **मच्छर, मच्छेर,** मस=आमसने, **छर, छेर**=मात्सय

१६४ **मज्जारो,** मज्ज=ससुद्धिय, **आर**=बिलाव

४६ **मञ्जु,** मन=आणे, **जु**=मञ्जुल

२१५ **मञ्जूसा,** मन=आणे, **सक्**=बक्सा

८ **मणि,** मन=आणे, **इ**=मणि

५८ **मण्डो,** मन=आणे, **ड**=माड

११६ **मण्डपो,** मण्ड=भूसने, **अप**=मण्डप

१८२ **मण्डल,** मण्ड=भूसने, **अल**=गोलाकार

२५ **मण्डूको,** मण्ड=भूसने, **णुक**=मेढक

८१ **मत्त,** मा=माने, **अत्त**=मात्र

१५ **मत्थक,** मस=आमसने, **क**=माथा

८६ **मत्थु,** मस=आमसने, **थु**=मट्ठा

१४७ **मथुरा,** मथ मन्थ=विलोळने, **उर**=एक शहर

१४६ **मदिरा,** मद=उम्मादे, **किर**=शराब

६५ **मद्दो,** मद=हासे, **दक्**=एक जनपद

६ **मधु,** मन=आणे, **कु**=मधु

२६ **मधुको,** मन=आणे, **णुक**=वृक्ष

२ **मनु,** मन=आणे, **उ**=प्रजापति, महासम्मत

६६ **मन्दो,** मन=आणे, **दक्**=मढ

१५६ **मन्दरो,** मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेसु, **अर**=एक पर्वत

१४६ **मन्दिर,** मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेसु, **किर**=घर

ण्वादि

सूत्र-सख्या

१४० **मन्दुरा,** मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेसु, **उर**=अस्तबल

१३६ **मम्म,** मर=पाणचागे, **म**=मर्मस्थान

१५२ मम्मरो, मर=पाणचागे, **मर**=ममर शब्द

३१ **मयूखो,** मय=गमने, **ख**=किरण

४० **मरीचि,** मर=पाणचागे, **ईचि**=किरण

२ **मरु,** मर=पाणचागे, **उ**=देव

७ **मसि,** मस=आमसने, **इ**=राख

१७१ **मसूरो,** मस=आमसने, **ऊर**=एक दाल

२१६ **मस्सु,** मस=आमसने, **सु**=दाढी

२२ **महिका,** मह=पूजाय, **किक**=हिम

१८६ **महिला,** मह=पूजाय, **इल**=स्त्री

२१५ **महेसी,** मह=पूजाय, **सक्**=पटरानी

१७४ **महोरो,** मह=पूजाय, ओर=वल्मीक

२१३ **मस,** मन=आणे, **स**=मास

७२ **माता,** पा=पाने, **तु**=मा

२०२ **मालुवा,** मल, मल्ल=धारणे, **णुव**=एक लता (अमरबेल)

२२५ **माळो,** मा=माने, **ळ**=एक कूट वाला

८३ **मित्तो,** मिद्=स्नेहने, **तक**=मित्र

१६१ **मिथिला,** मथ, मन्थ=विलोळने, **किल**=एक जनपद

१०१ **मिथुन,** मिथ=सङ्गमे, **कुन**=जोडा

८४ **मिहित,** मिह=ईसहसने, **तक**=मुस्कुराहट

१०५ **मीनो,** मी=हिसाय, **नक्**=मछली

१४४ **मीरो,** मि=पक्खेपने, **रक्**=समुद्र

२२३ **मीळ्ह,** मील=निमीलने, **ह**=गूह

३१ **मुख,** मू=बन्धने, **ख**=मुँह

३२ **मुग्गो,** मुद=तोसे, **गक्**=मूग

५६ **मुण्डो,** मन=आणे, **ड**=शिर मुडाया हुआ

ण्वादि

सूत्र-सख्या

२०० **मुतवो**, मू = बन्धने, **अव** = चण्डाल
८४ **मुत्त**, मिह = सेचने, **तक्** = मूत्र
५ **मुदु**, मुद = तोसे = नरम
६५ **मुद्दा**, मुद = तोसे, **दक** = अगूठी
२२ **मुद्दिका**, मुद = तोसे, **किक** = अगूठी
६६ **मुद्धा**, मुद = तोसे, **ध** = शिर
८ **मुनि**, मन = आणे, **इ** = श्रमण
२०० **मुरवो**, मुर = सवेठने, **अव** = मृदङ्ग
१८३ **मुसलो**, मुस = खण्डने, **कल** = अयोग्य
१८६ **मुळाल**, मील = निमीलने, **काल** = मृणाल
२१ **मूसिको**, मुस = थेय्ये = चूहा
३८ **मेघो**, मिह = सेचने, **घ** = मेघ, बादल
१७७ **मेरु**, मी = हिसाय, **रु** = मेरु पवत
२२५ **मेळा**, मि = पक्खेपे, **ळ** = राख
३८ **मोघो**, मुह = मुच्छाय, **घ** = निकम्मा
१७४ **मोरो**, मी = हिसाय, **ओर** = मोर
३१ **यक्खो**, यस = पयतने, **ख** = यक्ष
७६ **यजतो**, यज = देवपूजाय, **अत** = अग्नि
२ **यजु**, यज = देवपूजाय, **उ** = एक वेद
४६ **यञ्जो**, यज = देवपूजासगतिकरणदानेसु, **ञ** = यज्ञ
१०१ **यमुना**, यम = उपरमे, **कुन** = एक नदी
२१७ **यवसो**, यु = मिस्सने, **अस** = तृणविशेप
३५ **यागु**, या = पापुणने, **गु** = यवागू
१४६ **यात्रा**, या = पापुणने, **रक्** = यात्रा
१३६ **यामो**, या = पापुणने, **म** = दिन का छठा या आठवाँ भाग
८८ **यूथो**, यु = मिस्सने, **थक्** = झुण्ड
११५ **यूपो**, यु = मिस्सने, **प** = यज्ञ की लाठ

णवादि

सूत्र-सख्या

८२ योत्त, युज=सयमने, त=रस्सी
११३ योनि, यु=मिस्सने, नि=भग-इन्द्रिय
६ रघु, रङ्घ=गमने, कु=एक राजा
७६ रजत, रञ्ज=रागे, अत=चाँदी
१०७ रजनी, रञ्ज=रागे, न=रात
४६ रज्जु, रुध=आवरणे, जु=रस्सी
५८ रण्डा, रम=कीळाय, ड=विधवा
१०६ रतन, रम=कीळाय, तनक्=रत्न
८७ रथो, रम=कीळाय, थक्=रथ
६८ रन्ध, रम=कीळाय, ध=बिल
६८ रवणो, रु=सद्दे, अण=कोयल
७ रवि, रु=सद्दे, इ=सूरज
१३६ रस्मि, रस=अस्सादने, मि=किरण
७ राजि, राज=दित्तिय, इ=पंक्ति
१२६ रासभो, रास=सद्दे, कभ=गदहा
१० रासि, रस=अस्सादने, इण्=समूह
१ राहु, रह=चागे, णु=इस नाम का असुरेन्द्र
६ रिपु, रप=वचने, कु=शत्रु
३१ रुक्खो, रुह=जनने, ख=वृक्ष
६ रुचि, रुच=दित्तिय, कि=अभिलाषा
१४६ रुचिर, रुच=दित्तिय, किर=सुन्दर
६५ रुद्दो, रुद=अस्सुविमोचने, दक्=रुद्र
१४६ रुधिर, रुध=आवरणे, किर=लहू
१७६ रुरु, रु=सद्दे, रुक्=मिगो
७६ रुहन्तो, रुह=जनने, अन्त=वृक्ष
१४६ रुहिर, रुह=जनने, किर=लहू
११७ रूप, रूप=रुप्पने, पक्=रूप

णवादि
सूत्र-सख्या

६३ **रेणु,** री=पस्सवने, **णु**=धूलि
७६ **रोदन्ती,** रुद=रोदने, **अन्त**=एक औषधि
१२ **लक्खी,** लक्ख=दस्सने, **ई**=लक्ष्मी
६ **लघु,** लङ्घ=गतिसोसनेसु, **कु**=हलका
५८ **लण्डो,** लम=हिसाय, **ड**=लेड
६७ **लवण,** ली=सिलेसनद्रवीकरणेसु, **लिह**=अस्सादने, साद **अस्सादने,** क्लेद=अद्दभावे, **णक**=नमक
६ **लघु,** लङ्घ=गतिसोखनेसु, **कु**=हलका
९५ **लुद्दो,** रुद=अस्सुविमोचने, **दक्**=बहेलिया
६५ **लेण,** ली=निलीयने, **ण**=गुहा
६७ **लोण,** ली=लिह=साद=क्लेदान लोआदेसे रूप, **णक=नमक**
१३६ **लोम,** लू=च्छेदने, **म**=रोआ
२२३ **लोह,** लू=च्छेदने, **ह**=लोहा
१४ **वक्क,** कुक वक=आदाने, **क**=वृक्क (Kidney)
३२ **वग्गो,** अज, वज=गमने, **गक्**=समूह
३५ **वग्गु,** वल् वल्ल=सवरणे, **गु**=मनोज्ञ
३९ **वच्च,** वर=वरणसम्मत्तिसु, **च**=गूह
४३ **वच्छो,** वद=वचने, **छ**=वत्स
१५६ **वच्छरो,** वस=निवासे, **छर**=बरस
१४९ **वजिर,** अज, वज=गमने, **किर**=वज्र
४८ **वञ्झो, वञ्झा,** वन=याचने, **झक्**=बाँझ
१३१ **वटुम,** अज, वज=गमने, **कुम**=माग
१९२ **वट्टुलो,** वट्ट=वट्टने, **कुल**=परिमण्डल
१६१ **वठरो,** वद=वचने, **अर**=मूख
६५ **वण्णो,** वर=वरणे, **ण**=रग
८३ **वत्त,** वर=वरणसम्भत्तिसु, **तक्**=व्रत
११२ **वत्तनि,** वत्त=वत्तने, **अनि**=माग

णवादि
सूत्र-सख्या

११२ **वत्तनी,** वत्त=वत्तने, **अनि**=माग
९० **वत्थि,** वस=निवासे, **थि**=पेडू
८९ **वत्थु,** वस=निवासे, **थु**=वस्तु
३ **वधू,** बन्ध=बन्धने, **ऊ**=बहू
११४ **वप्पो,** वप=बीजनिक्खेपे, **प**=खेत
१५ **वम्मिको,** वम=उग्गिरणे, **क**=दीयड
१८ **वरको,** वर=वरणसम्भत्तिसु, **अक**=धान्य विशेष
६८ **वरणो,** वर=वरणे, **अण**=चहार दिवारी
५७ **वरण्डो,** वर=वरणे, **अण्ड**=मुखरोग
८१ **वरत्त,** वर=वरणे, **अत्त**=रस्सी लगाम
२२३ **वराहो,** वर=वरणे, **ह**=सूअर
१०१ **वरुणो,** वर=वरणसम्भत्तिसु, **कुन**=वरुण
७ **वलि-वली,** वल, वल्ल=सवरणे, **इ**=सिकुडन
१२४ **वल्लभो,** वल, वल्ल=सवरणे, **अभ**=प्रिय
७ **वल्लि, वल्ली,** वल, वल्ल=सवरणे, **इ**=लता
१७१ **वल्लूरो,** वल, वल्ल=सवरणे, **ऊर**=सूखा मास
६९ **वसति,** वस=निवासे, **अति**=घर, वस्ती
७६ **वसन्तो,** वस=निवासे, **अन्त**=वसन्त ऋतु
१२४ **वसभो,** वस=निवासे, **अभ**=बैल
१८२ **वसलो,** वस=निवासे, **अल**=शूद्र
२ **वसु,** वस=निवासे, **उ**=धन
२१३ **वस्स,** वस=निवासे, **स**=वर्ष
२१३ **वसो,** वन सन=सम्भत्तिय, **स**=वश, बॉस
२०० **वळवा,** वल, वल्ल=सवरणे, **अव**=अश्वराज
१४ **वाको,** वा=गतिबन्धनेसु, **क**=वल्कल
१६३ **वाकरा,** कुक वक=आदाने, **अरण्**=जाल
८२ **वातो,** वी वा=गमने, **त**=हवा

णवादि

सूत्र-सरया

१०६ **वान,** वी, वा=गमने, **न**=तृष्णा
१० **वापि,** वप=बीजनिक्खेपे, **इण्**=कूआ
२१८ **वायसो,** अय=वय=पय=मय=रय=नय गमनत्था, **असण्**=कोआ
१ **वायु,** वा=गतिबन्धनेसु, **णु**=हवा
१० **वारि,** वर=वरणसम्भत्तिसु, **इण्**=जल
१५८ **वासरो,** वी वा=गमने, **सर**=दिन
१० **वासि,** वस=निवासे, **इण**=बसुला
२२५ **वाळो,** वी, वा=गमने, **ळ**=जगली जान
१४६ **विचित्र,** चित=सचेतने, **रक**=विचित्र
२१ **विच्छिको,** विच्छ=गमने, **किक**=विच्छू
४८ **विज्झो,** वन=याचने, **झक्**=एक पवत
११६ **विटपो,** वट=वेठने, **अप**=डाली
८३ **वित्त,** विद=लाभे, **तक**=वन
२० **विदाको,** विद=आणे, **आक**=पण्डित
२२० **विद्दसु,** विद=आणे, **दसुक्**=पण्डित
६६ **विद्ध,** विध=वेधने, **ध**=निमल
२०५ **विद्वा,** विद=आणे, **क्वा**=पण्डित
५ **विधु,** विध=वेधने, **कु**=चाँद
१४८ **विधुरो,** विध=वेधने, **उर**=रडुआ
१०३ **विपिन,** वप=बीजनिक्खेपे, **इन**=जगल
११७ **विप्पो,** वप=बीजनिक्खेपे, **पक**=ब्राह्मण
१८६ **विसालो,** विस=प्पवेसने, **काल**=विशाल
३१ **विसिखा,** सि=सेवाय, विस=प्पवेसने, **ख**=गली
६६ **वीणा,** वी=तन्तसन्ताने, **णक्**=वीणा
६१ **वीथि,** वी, वा=गमने, **थिक्**=गली
१४३ **वीरो,** वी, वा=गमने, **रक्**=वीर
६१ **वेणि-वेणी,** वी=तन्तसन्ताने, **णि**=जूरा

णवादि

सूत्र-सरया

६३ **वेणु,** वी, वा=गमने, **णु**=बॉस

१०८ **वेतन,** वी, वा=गमने, **तन**=वेतन

२१७ **वेतसो,** वेत=सुत्तियोधातु, **अस**=बेत

१०६ **वेनो,** वी, वा=गमने, **न**=एक नीच जाति

१३६ **वेमो,** वी=तन्तसन्ताने, **म**=करघा

१३७ **वेस्म,** विस=प्पवेसने **म**=घर

२२६ **वेळु,** वी, वमने, **ळु**=बॉस

५३ **सकटो,** सक=सत्तिय, **अट**=गाडी

१८२ **सकल,** यक=सत्तिय, **अल**=सारा

१०१ **सकुणो-सकुणी,** सक=सत्तिय, **कुन**=पक्षी

१०१ **सकुनो-सकुनी,** सक=सत्तिय, **कुन**=पक्षी

७४ **सकुन्तो,** सक=सत्तिय, **उन्त**=पक्षी

१४ **सक्को,** सक=सत्तिय, **क**=इन्द्र

१६८ **सक्खरा,** सर=गतिहिंसाचिन्तासु, **खर**=सक्कर

३१ **सखो,** सह=मरिसने, **ख**=मित्र

२ **सङ्कु,** सङ्क=सङ्काय, **उ**=शूल

३० **सङ्खो,** सम=उपसमखेदेसु, **ख**=शङ्ख

३६ **सच्च,** सर=गतिहिसाचिन्तासु, **च**=सत्य

४८ **सज्झ,** सज्झ=सङ्गे, **झक्**=रजत

१८६ **सठिलो,** सठ=केतवे, **इल**=शठ

५८ **सण्ड,** सम=उपसमे, **ड**=समूह

७० **सत्तु,** सच=समवासे, **तु**=सत्तू

६० **सत्थि,** सक=सत्तिय, **थि**=जाँघ

६५ **सद्दो,** सप=गमने, **दक्**=शब्द

८५ **सपथो,** सप=अक्कोसे, **अथ**=कसम

७ **सप्पि,** सप्प=गमने, **इ**=घी

१८२ **सम्बल,** सम्ब=मण्डने, **अल**=पाथेय, राह-खरच

ण्वादि
सूत्र-सख्या

१५ **सम्बुको,** सम्ब = मण्डने, **क** = एक जल-जन्तु
१३६ **सम्मा,** सम = उपसमे, **म** = यथार्थ, ठीक तरह
१८ **सरको,** सर = गतिहिंसाचिन्तासु, **अक** = प्याला
६२ **सरणि,** सर = गतिहिंसा चिन्तासु, **अणि** = माग
१२४ **सरभो,** सर = गतिहिसाचिन्तासु, **अभ** = एक मृग
४ **सरभू,** सर = गतिहिसाचिन्तासु, **ऊ** = एक नदी
२०१ **सरावो,** सर = गतिहिंसाचिन्तासु, **आव** = प्याला
१६६ **सरीर,** सर गतिहिंसाचिन्तासु, **कीर** = शरीर
१२४ **सलभो,** पिलु = प्लु = हुल—गमनत्था, **अभ** = फतिगा
२० **सलाका,** पिलु = हुल-गमनत्था, **आक** = वैद्यो के चीर-फाड का एक औजार
१८६ **सलिल,** पिलु = हुल—गमनत्था, **इल** = जल
७६ **सवन्ती,** सू = पसवे, **अन्त** = नदी
१४७ **ससुरो,** सस = गति हिसापाणनेसु, **उर** = ससुर
२१३ **सस्स,** सस = गतिहिसापाणनेसु, **स** = धान
२१६ **सस्सु,** सस = गतिहिसापाणनेसु, **सु** = सास
१५६ **सवच्छरो,** वस = निवासे, **छर** = वष
१५४ **सवरी,** सम = उपसमे, **क्वर** = रात
१ **सादु,** सद = अस्सादने, **णु** = स्वादु
१ **साधु,** इव = सिध = राध = साध-ससिद्धिय, **णु** = साधु
१ **सानु,** वन, सन = सम्भत्तिय, **णु** = चोरी
१३६ **सामो,** सा = तनुकरणावसानेसु, **म** = काल
२० **सामाको,** सा = तनुकरणावसानेसु, **आक** = तृणधान्य
६२ **सारथि,** सर = गतिहिसाचिन्तासु, **रथिण्** = सारथि
२५ **सालूक,** सल = गमनत्थोदण्डकोधातु, **णुक** = उत्पल कन्द
११८ **सासपो,** सास = अनुसिट्ठिय, **अप** = सरसो
२०० **साळवो,** सल = गमने, **अव** = एक खाद्य
१५ **सिक्का,** सक = सत्तिय, **क** = उपकरण विशेष

ण्वादि

सूत्र-सख्या

५९ **सिखण्डो**, सि=सेवाय, ड=चोरी
३१ **सिखा**, सि=सेवाय, सी=सये, ख=शिखा
३३ **सिङ्ग**, सी=सये, गक्=सीग
१६४ **सिङ्गारो**, सिङ्गि=नामधातु, **आर**=शृङ्गार
१८६ **सिङ्गालो-सिगालो**, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, **काल**=सियार
१७ **सिङ्घाणिका**, सिङ्घ=घायने, **आणिक**=पोटा
८३ **सितो**, सि=सेवाय, **तक**=उजला
८४ **सित**, मिह=ईसहसने, **तक्**=मुस्कुराहट
८८ **सित्थ**, सिच=क्खरणे, **थक्**=मोम
१९१ **शिथिल**, सह=खमाय, **किल**=पृथिल
१७८ **सिनेरु**, सिना=रोचेय्ये, **एरु**=सुमेरु पर्वत
६ **सिन्धु**, सन्द=पस्सवने, **कु**=एक नदी
११७ **सिप्प**, सप=गमने, **पक्**=शिल्प
२२ **सिप्पिका**, सप्प=गमने, **किक**=सीपी
१४३ **सिरो**, सि=सेवाय, **रक्**=शिर
१४३ **सिरा**, सि=बन्धने, **रक्**=नाडी
२११ **सिरीसो**, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, **ईस**=वृक्ष
१८१ **सिला**, सि=सेवाय, **लक्**=शिला
१३१ **सिलेसुमो**, सिलिस=आलिङ्गने, **कुम**=कफ
२०७ **सिवो**, सम=उपसमे, **रिव**=शिव, **सिव**=शान्ति, **सिवा**
१५० **सिसिरो**, इस, सिस=इच्छाय, **किर**=एक ऋतु
३८ **सीघ**, सी=सये, **घ**=शीघ्र
८४ **सीता**, सि=बन्धने, **तक्**=हल की जोत
१०० **सीधु**, सी=सये, **धुक्**=एक प्रकार की सुरा
७७ **सीमन्तो**, सी=सये, **अन्त**=माँग (केश की रेखा)
१४३ **सीरो**, सी=सये, **रक्**=फाल
२१४ **सीस**, सी=सये, **सक्**=शिर, सीसा

ण्वादि

सूत्र-सख्या

२२१ **सीहो**, सस =गति-हिसा-पाणनेसु, **रीह** =सिह
१५ **सुक्क**, सुच =सोके, **क** =उजला
१३० **सुखुम**, सुख =तक्रियाय, **कुम** =सूक्ष्म
६ **सुचि**, सुच =सूचने, **कि** =पवित्र
६ **सुट्ठु**, ठा =गतिनिवत्तिय, **कु** =अच्छा
६६ **सुणो**, सु =सवने, **णक्** =कुत्ता
२१६ **सुणिसा**, सु =सवने, **णिसक्** =पतोहू
६५ **सुद्दो**, सूद =क्खरणे, **दक्** =शूद्र
१०३ **सुपिन**, सुप =सये, **इन** =नीद, सपना
११६ **सुप्प**, सुप =सये, **पक्** =सूप
१४३ **सुरा**, सु =सवने, **रक्** =देवता
१४३ **सुरा**, सु =सवने, **रक्** =मदिरा
१४२ **सुरियो**, सर =गति-हिसा-चिन्तासु, **य** =सूरज
२०४ **सूवो**, सु =सवने, **क्व** =सुग्गा
२०४ **सुवा**, सु =सवने, **क्वा** =सुग्गा
६ **सुसु**, सस =गति-हिसा-पाणनेसु, **कु** =शिशु
११० **सूनु**, सू =पसवे, **नुक्** =पुत्र
११६ **सूपो**, सू =पसवे, **पक्** =व्यञ्जन
८४ **सूरतो**, रम =कीळाय, **तक्** =सुख सवास
१७६ **सूरि**, सू =पसवे, **रिक** =विचक्षण
६१ **सेणि**, सेणी, **सि** =सेवाय, **णि** =समान शिल्पियो का समूह (श्रेणि)
८२ **सेतो**, सि =सेवाय, **त** =उजला
७० **सेतु**, सि =सेवाय, **तु** =पुल
१०६ **सेना**, सि =बन्धने, **न** =सेना
१०६ **सेनो**, सि =बन्धने, **न** =बाज
१८१ **सेलो**, सि =सेवाय, **लक्** =पवत
१८१ **सेवालो**, सि =सेवाय, **वाल** =सेवाट

ण्वादि

सूत्र-सरया

६५ **सोणो**, सु=सवने, **ण**=कुत्ता, मनुष्य
६१ **सोणि**, सु=पसवे, **णि**=चूतड
८२ **सोत**, सु=सवने, **त**=कान
१२६ **सोब्भ**, सिद=सीदने, **भ**=दरार
१२६ **सोब्भो**, सिद=सीदने, **भ**=एक जलाशय
१३६ **सोमो**, सु=सवने, **म**=चाँद
८८ **हत्थो**, हस=हसने, **थक्**=हाथ
१४२ **हदय**, हर=हरणे, **य**=हृदय
२ **हनु**, हन=हिसाय, **उ**=ठुड्ढी
१४२ **हम्मिय**, हर=हरणे, **य**=प्रासाद
६७ **हरिणो**, हर=हरणे, **ण**=मृग
७८ **हरितो**, हर=हरणे, **इत**=हरा रग
६४ **हरेणु**, हर=हरणे, **णु**=गन्ध-द्रव्य
२१३ **हसो**, हन=हिसाय, **स**=हस
१५ **हाको**, हा=चागे, **क**=क्रोध
१० **हारि**, हर=हरणे, **इण्**=मनोज्ञ
३६ **हिङ्गु**, हि=गतिय, **गु**=हीग
१३४ **हिम**, हि=गतिय, **मक्**=हिम, पाला
५१ **हिरञ्ज**, हा=चागे, **ञ**=धन, सोना
१०७ **हीनो**, हि=गतिय, **न**=हीन
१४४ **हीर**, हि=गतिय, **रक्**=हीरा
७० **हेतु**, हि=गतिय, **तु**=कारण
१३६ **हेम**, हि=गतिय, **म**=सुवण, सोना
७७ **हेमन्तो**, हि=गतिय, **अन्त**=हेमन्त-ऋतु
७२ **होता**, हु=हवने, **तु**=हवन करने वाला
१३६ **होमो**, हु=हवने, **म**=होम
५३ **मक्कटो** मक्क=सुत्तियो धातु (श्रौत धातु), **अट**=वानर
१८८ **माला**, मा=माने, **ल**=माला

नवाँ परिशिष्ट

उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

नवाँ परिशिष्ट

उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका

अ

-o-

ख

-o-

म

-o-

य

-o-

ल

-o-

अभ्यासों के लिए संकेत

अभ्यासो के लिए सकेत

दूसरा अभ्यास

१—**गाथा**=श्लोक। **मेत्ताय—मेत्ता**=मैत्री।

३—प्रज्ञा=**पञ्ञा**। मैत्री=**मेत्ता**।

तीसरा अभ्यास

१—**सङ्खारा**=सस्कार। **अनत्ता**=अनात्म। **"दण्डस्स तसन्ति"**=दण्ड से डरते है (यहाँ, 'दण्डस्स' पद मे पञ्चमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी का प्रयोग किया गया है। पालि मे ऐसे विभक्ति-व्यत्यय बहुत देखे जाते है)। **पत्तिया—पत्ति**=योग। **सम्बोधिया—सम्बोधि**=परम ज्ञान।

चौथा अभ्यास

१—**तावतिंसेहि**=त्रयस्त्रिंश नामक देवता। **पञ्च सिखो**=गन्धव का नाम। **वेद-पटिलाभ सोमनस्स-पटिलाभ**=उत्साह—उमङ्ग। **निब्बिदाय**=निवेद के लिए=वैराग्य के लिए। **सबोधाय**=ज्ञान-लाभ के लिए। **सक्को**=शक्र। **वेय्याकरणस्मि**=धार्मिक व्याख्या।

२—**चङ्कमेन**=चक्रमण करते हुए, चहल कदमी करते हुए। **आवरणेहि धम्मेहि**=अज्ञान-मूलक धर्मों से। **मारो**=यम=पाप-राज। **बोधिमण्ड**=वह आसन जिस पर भगवान ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। **जातिया खो सति**=जन्म ग्रहण करने पर। **विञ्ञाणे**=विज्ञान। **नाम-रूप**=चित्त और शरीर। **आसवेहि**=आश्रव।

पाँचवाँ अभ्यास

१—**जिनो**=बुद्ध। **निच्च पज्जलिते सति**=(ससार के) नित्य प्रज्वलित होते रहने पर। **अब्भा**=बादल से। **पापो**=पापी। **खमनीय, यापनीय**=कुशल

मगल। **यस्स दानि काल मञ्ञसि**=अब आप जैसा उचित समझ। **उय्यान-भूमिं**=उद्यान। **जिण्णो**=बूढा। **ओरको**=बुरा। **कारुञ्ञत परिच्च**=करुणा करके। **उप्पलिनिय वा पदुमिनिय वा पुण्डरीकिनिय**=उत्पल-पद्म-पुण्डरीक वाले जलाशय मे। **अन्तो निमुग्गपोसीनि**=जो पानी के भीतर ही भीतर बढ रहे हो। **समोदक**=पानी के बराबर। **अप्परजक्खे**=अल्प 'रज' वाले।

छठा अभ्यास

१—**पसहति**=गिरा देता है। **तप्पति**=अनुताप करता है। **मग्ग न विन्दति**=पीछा नही करता है। **परिळाहो**=चित्त-सताप।

२—सङ्घ के शरण=**सङ्घ सरण**।

सातवॉ अभ्यास

१—**कल्याणे मित्ते**=सन्माग पर ले जाने वाले मित्रो को। **चारित्त न आपज्जितब्ब**=बहुत हेल-मेल नही करना चाहिए। **समन्नागतो**=युक्त। **सयनासनो**=वास-स्थान। **विपाको**=फल। **गहपतानी**=गृहस्थ स्त्री। पतिट्ठा-पेतु वट्टति=स्थापित करना चाहिए।

२—**निदान**=अवसर, आधार।

आठवॉ अभ्यास

१—**सबोधि**=बुद्धत्व। **गहकारक**=घर बनाने वाला=तृष्णा।

नवॉ अभ्यास

१—**उट्ठानवतो**=उत्साह-शील। **सतिमतो**=स्मृति-युक्त। **मेत्ताविहारी**=मैत्री का अभ्यास करने वाला। **पसन्नो**=श्रद्धायुक्त। **अत्तना अत्तान चोदयति-पटिवासेति**=जो अपने आप को (योगाभ्यास मे) प्रेरित करता है, लगाता है। **काये कायानुपस्सी**=काया मे कायानुपश्यी (योगाभ्यास की एक क्रिया—देखिए—'दीघनिकाय'—महासतिपट्ठान सूत्र)। **आतापी**=अपने क्लेशो को (=चित्त-मलो को) तपाने वाला। **सम्पजानो**=सम्प्रज्ञ। **सन्थव**=साथ।

दसवाँ अभ्यास

१—**सम्पटिच्छि**=मान लिया। **साणि परिक्खिपिंसु**=पर्दा डाल दिया। **सम्पटिच्छिसु**=ले लिया। **अत्तमना**=प्रसन्न। **ओळारिक**=गौरव-पूण।

३—कापाय=**कासाव**। घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ=**अगारस्मा अनगारियं पब्बजि**।

ग्यारहवाँ अभ्यास

१—**अयोनिसो**=बेठीक से। **उपट्ठान**=सेवा टहल। **पटिजग्गितब्बा**=उनका भरण-पोषण करना चाहिए।

बारहवाँ अभ्यास

१—**साराणीय वीतिसारेत्वा**=कुशल-क्षेम पूछ कर। **सन्निपतितान**=एकत्रित हुए। **पुब्बे-निवास-पटिसयुत्ता कथा**=पूव-जन्म के विषय मे बातचीत। **पञ्ञत्ते आसने**=बिछे आसन पर। **अनुलोम**=सल्टा। **पटिलोम**=उल्टा। **अनेकचित्त विमान**='अनेक चित्त' नामक देवताओ के आवास। **तमोक्खन्ध पदालयिं**=(अज्ञान) अधकार को दूर कर दिया। **कता ते अनुसासनी**=बुद्ध के निर्दिष्ट माग को तै कर लिया। **तथागत**=बुद्ध। **पटिपन्ना**=माग पर आरूढ।

तेरहवाँ अभ्यास

१—**अभिसमयो**=धम-ज्ञान। **चतु-सच्च**=चार आय सत्य—दु ख, दु ख का कारण, दु ख का निरोध, दु ख-निरोध का उपाय। **बाळ्हगिलानो**=बहुत बीमार। **समादियिसु**=ग्रहण किया। **पधान**=योगाभ्यास। **कम्मट्ठान**=कमस्थान (योगाभ्यास का आलम्बन)।

चौदहवाँ अभ्यास

१—**पटिरूपे**=उचित माग पर। **लोक-वड्ढनो**=ससार को बढाने वाला=आवा-गमन के फेर मे पडा रहने वाला। **मिच्छा दिट्ठि**=मिथ्या-दृष्टि, गलत धारणा।

धारणा। **पधान पदहेय्य**=योगाभ्यास मे लग जाना चाहिए। **पटिभातु आयुस्मन्त एतस्स भासितस्स अत्थोति**=आयुस्मान् इस कहे गए का अर्थ बतावे।

पन्द्रहवाँ अभ्यास

१—**सज्झायति**=पाठ करता है। फ.सु=आराम। **सप्पिस्स**=सप्पिना (विभक्ति-व्यत्यय)। **पुत्तस्स**=पुत्त (विभक्ति-व्यत्यय)। **पसन्नो**=श्रद्धायुक्त। **वज्जेसु**=निन्द्य कर्मो मे।

सोलहवाँ अभ्यास

१—**अस्सुतवा**=अश्रुतवान्=अपण्डित। **पुथुज्जनो**=पृथक्जन=तृष्णा के बन्धन मे पडा। **सप्पुरिस-धम्मे**=सत्पुरुष के धम्म मे=बुद्ध के धम मे। **अविनीतो**=अशिक्षित। **सब्ब अभिनन्दति**=सभी मे आनन्द=मौज करता है। **वुसितवन्तान**=ब्रह्मचयवास जिनका पूरा हो गया है=अहत्। **भव-सयोजन**=ससार का बन्ध। **मुत**=सूँघा, चखा, और स्पश किया गया। **सब्ब अनिच्चतो पच्चवेक्खितब्ब**=सभी को अनित्य के ऐसा प्रत्यवेक्षण करना चाहिए।

गतद्धिनो=जिसने अध्व=माग को तै कर लिया है। **परिलाहो**=सताप। **सम्मदञ्ञविमुत्तस्स**=सम्यक् प्रज्ञा से विमुक्त हो गया।

सत्तरहवाँ अभ्यास

१—**कुसल**=पुण्य। **अकुशल**=पाप। **कल्याण-मित्तो**=धर्म के माग पर लाने वाला मित्र। **भोग-क्खन्ध विस्सज्जेत्वा**=सारी भोग-विलास की चीजो को हटा कर। **चङ्कम च मापेत्वा**=चहल कदमी करने के लिए स्थान बनवा।

अट्ठारहवाँ अभ्यास

१—**ब्यापादो पट्ठीयति**=द्वेष-भाव शान्त हो जाता है। **आरञ्ञिको**=जगल मे वास करने वाला। **भत्त-समोदन**=भोजन कर लेने के बाद, दाता के दान का सम्मोदन करना। **अञ्ञातावी**=जिसने प्रज्ञा का लाभ कर लिया है।

उन्नीसवाँ अभ्यास

१—**सञ्ओजन**=बन्धन। **सम्बोज्झङ्ग**=सम्बोध्यङ्ग=सम्बोधि लाभ

करने के अङ्ग। **अनुपस्सना**=योग की एक क्रिया। **सम्मप्पधान**=सच्चा उत्साह। **बहुली करणीया**=खूब अभ्यास करना चाहिए।

बीसवॉ अभ्यास

१—**उदान उदानेति**=प्रीति-वाक्य निकालते है। **फस्स-पच्चया**=स्पर्श के प्रत्यय (=हेतु) से। **सति अधिट्ठातब्बा**=स्मति उपस्थित करनी चाहिए। **ब्रह्म-विहार**=योग का एक अभ्यास। **बुद्ध-धातु**=बुद्ध के फूल।

इक्कीसवॉ अभ्यास

१—**पाटिहीर**=ऋद्धि-सिद्धि के काय। **सन्धाविस्स**=भटकता रहा (काल-व्यत्यय)।

२—बुद्ध-मन्दिर=विहार।

बाइसवॉ अभ्यास

१—**थेय्यसखात**=चोरी करने की नियत से। **सम्पजान-मुसा**=जान-बूझ कर झूठ। **कतञ्ञू**=कृतज्ञ। **अकथकथी**=सशय-रहित।

तेइसवॉ अभ्यास

१—**वज्ज**=दोष। **जानि**=हानि। **इन्द्रिय-गुत्ति**=इन्द्रिय-सयम। **सवरो**=सयम। **पटिसन्थार-वुत्ति**=मीठा आचरण वाला। **समथ, दमथ** इत्यादि=योग के अभ्यास।, **विपस्सना**=विदशना।

२—सब दिशाओ मे व्याप्त करना=**सब्बासु दिसासु फरण**।

पच्चीसवॉ अभ्यास

२—दिन दोपहर को=**दिवाबिव**।

इकतीसवॉ अभ्यास

१—**कायगता-सति**=शरीर की गन्दगियो पर मनन करना। **तिरो-कुड्ड**=दीवाल के आर पार। **अनुलोम पटिलोम**=सलटा-पलटा।

वेल्लितग्गा=जिसका अग्र भाग घुघरूदार। **साणवास-सदिसा**=सन की तरह।
